ॐ

विचार-चन्द्रोदय

श्रुतिषड्लिंग संग्रह सहित

ब्रह्मनिष्ठ पं० पीताम्बर जी कृत

प्रकाशक :

पं० ब्रजवल्लभ हरिप्रसाद बम्बई वालों की

आज्ञा से

रघुनाथदास पुरुषोत्तमदास अग्रवाल बुकसेलर

छत्ता बाजार, मथुरा

तथा

विशन बुकडिपो,

मातागली, मथुरा

सं० १९५०]

[मूल्य २।।।)



मुद्रा श्री शरीफ सालमुहम्मद नूरानी



ब्रह्मनिष्ठ पं० पीताम्बर जी

पुस्तक मिलने का पता—

(१) फर्म–रघुनाथदास पुरुषोत्तमदास अग्रवाल,
छत्ता बाजार, मथुरा।

(२) फर्म–विशन बुकडिपो, माता गली, मथुरा।

फार्म १ से ६ तक मुद्रक : राष्ट्रीय प्रेस, हाथरस
फार्म १० से १८ तक तथा कवर मुद्रक :
अग्रवाल प्रेस, मथुरा।

* श्री *

विचारचन्द्रोदय।

ब्रह्मनिष्ठ पण्डित श्री पीताम्बर जी कृत

उनके जीवनचरित्र और सटीक

श्रुतिषड्लिङ्गसंग्रहसहित।

नवीनरूढ़ियुक्त।

१४ वीं आवृत्ति।

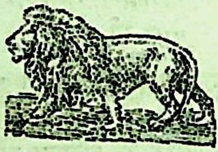
प्रकाशक—

पं० वृजवल्लभ हरीप्रसाद जी की आज्ञा से

रघुनाथदास पुरुषोत्तमदास अग्रवाल,

छत्ता बाजार मथुरा।

किशन बुकडिपो मातागली मथुरा।



तावद्गर्जन्ति शास्त्राणि जम्बुका विपिने यथा ।
न गर्जति महाशक्तिर्यावद्वेदान्तकेसरी ॥ १ ॥

ॐ तत्सद्ब्रह्मणे नमः ।

प्रस्तावना ।

सर्वमत शिरोमणि श्रीवेदान्त सिद्धांत है । ताके जानने वास्ते कनिष्ठ औ मध्यम आदिक अधिकारिन के अर्थ अनेक संस्कृत औ प्राकृत ग्रन्थ हैं । परन्तु जाकी बुद्धि मैं विशेष शंका होवै नहीं ऐसा मन्दमतिमान् परमआस्तिक, शुद्ध-चित्तवाला जो उत्तम अधिकारी है, ताके अर्थ सरल, श्रेष्ठ, अल्प औ विख्यात वेदांतप्रक्रिया का ग्रंथ कोउ नहीं है, यातैं मैंने यह विचारचंद्रोदय नामक वेदांतप्रक्रिया का प्रश्नोत्तररूप ग्रंथ किया है । यामैं षोडश प्रकरण हैं । तिनका "कला" ऐसा नाम धन्या है । एक एक कलाविषै एक एक विलक्षण प्रक्रिया धरी है । मुमुक्षुकूं ब्रह्मसाक्षात्कारविषै अवश्य उपयोगी जे प्रक्रियाहैं ये सर्व संक्षेपतैं यामैं हैं । अन्त की षोडशवीं कलाविषै अनेक वेदांतपदार्थन के नाम रखे हैं । वे धारनेसैं अन्य महद्ग्रन्थन के श्रवणविषै उपयोगी होवैंगे ॥ या ग्रन्थकूं ब्रह्मनिष्ठ गुरु के मुखसैं जो मुमुक्षु श्रवण करैगा वा याके अर्थकूं बुद्धिमैं

धारण करैगा, वाके चित्तरूप आकाशमैं अवश्य ज्ञानरूप युवा अवस्थाकूं धारनैवाला विचाररूप चन्द्रमा उदय होवैगा औ संशय अरु भ्रान्तिसहित अज्ञानरूप अन्धकारकूं दूरी करैगा; याहीतैं याका नाम विचारचंद्रोदय है। याका विषय नीचे धरी अनुक्रमणिकाविषै स्पष्ट लिख्या है। तहां देख लेना। (या ग्रन्थ के विशेषज्ञानविषै उपयोगी श्रीसटीकबालबोध हमनै किया है। ताकी २१० टिप्पण अरु मूलटीकागत वृद्धिसहित द्वितीय आवृत्ति अबी छपी है। जाकूं इच्छा होवै सो देखे) विशेष विज्ञाप्ति यह है कि:—यह ग्रन्थ ब्रह्मनिष्ठ गुरु के मुखसैंही श्रद्धापूर्वक पढ़ना। स्वतन्त्र नहीं। काहेतैं गुरू विना सिद्धान्त के रहस्य का ज्ञान होता नहीं औ गुरु मुखसैं सकल अभिप्राय जान्या जावै है। यातैं गुरुके मुखसैंही पढ़ना चाहिए।

लि॰ पंडितपीताम्बरजी।

श्रीविचारचन्द्रोदय।

अष्टमावृत्तिकी प्रस्तावना।

संवत् १९७०–सन् १९१४ में शरीफ सालेमहम्मद नूरानीकी प्रकाशित की हुई सप्तमावृत्तिकी प्रतिसे यह अष्टमावृत्तिका संस्करण हमने यथाप्रांत ज्योंका त्यों प्रकाशित किया है। किसी प्रकारका परिवर्तन अथवा न्यूनाधिक भाव नहीं किया है। क्योंकि शरीफ सालेमहम्मद नूरानीके सुयोग्य पुत्र दाउद भाई और अलादीन भाई इन बन्धुद्वयके पाससे सब प्रकारके रजिस्टरी के हक सहित इसे हमने ले लिया है। अतः वेदान्तानुरागी मुमुक्षु जनोंसे सविनय प्रार्थना है कि इसका सदाकी भांति सादर संग्रह करनेमें अग्रसर हों।

अडवल्लभ हरिप्रसाद बम्बई।

ॐ गुरुदेवाय नमः ।

❀ श्रीविचारचन्द्रोदय ❀

* अथ सप्तमावृत्तिकी प्रस्तावना *

यह ग्रन्थ वेदान्तविद्याकी प्रथमपोथीरूप होनेतैं मुमुक्षुजनोंकूं अत्यन्त उपयोगी भया है। तातैं यह सप्तमावृत्ति सहित इस ग्रन्थकी आजपर्यन्त अनुमान १५००० प्रति छापी गई है।

इस ग्रन्थके कर्त्ता ब्रह्मश्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ पंडितश्रीपीताम्बरजी महाराजका पूर्वावस्थाका फोटोग्राफ पूर्वआवृत्तियोंमें रखा है और इस आवृत्तिमें तिनोंका उत्तरावस्थाका फोटोग्राफ तिनोंके जीवन चरित्रके आरम्भमें रक्खा है।

औ यह आवृत्तिविषै श्रीश्रुतिषड्लिंगसंग्रह नामके लघुग्रन्थकूं प्रविष्ट करीके पद्यावृत्तितैं

नवीनता करीहै। तातें इस आवृत्तिमें ८५ पृष्टकी अधिकता भई है।

श्रीश्रुतिपड्लिंगसंग्रह। हमारे परमपूज्य गुरु पंडित श्रीपीताम्बरजी महाराजनें श्रीवृहदारण्यकउपनिषद् छाप्याहै। तिसपरसैं लियाहै। तथापि हमनें मुद्रणशैलिविषै भिन्नप्रकारकी रचना करीके प्रत्येकस्थलमें ६ लिंगोंकूं प्रत्यक्ष दृश्यमान कियेहैं। तातें मुमुक्षुजनोंकूं अभ्यासविषै अत्यन्तसुलभता होवेंगी॥ यह श्रीश्रुतिपड्लिंगसंग्रह इस ग्रन्थविषै मुद्रांकित करनेंमें ऐसा हेतु रखा है कि:—आज कल वेदांतविचारविषै मुमुक्षुजनोंकी प्रवृत्ति अधिकाधिक होती जाती है तातें श्रीविचारचन्द्रोदय के अभ्यास किये पीछे। वेदांतके मूल रूप कितनेक उपनिषद् हैं। ताके तात्पर्यसैं ज्ञात होना आवश्यक

है॥ उपनिषदोंके ऊपर रामानुज आदिक द्वैतवादिओंनें जे भाष्य किये हैं। तिनमें "वेदका अभिप्राय द्वैतविषैहीं है" ऐसें प्रतिपादन करनेंका परिश्रम कियाहै। परन्तु वे परिश्रम निष्फलहीं हैं। कारण कि जगत्‌विषै द्वैत तौ विचारसैं विना सिद्धहीं पडाहै! यातैंऐसैं विषयकूं सिद्ध करनेंविषै वेदका अभिप्राय संभवित नहीं है॥ "एक परमात्मतत्त्वविना अन्य जो कछु प्रतीत होवैहै! सो सर्व मायाकृत भ्रान्तिकरिहीं प्रतीत होवै है!" ऐसे प्रतिपादन करनेंका वेदका अभिप्राय जगद्‌गुरु श्रीमच्छंकराचार्यनें उपनिषदोंके भाष्यसैं सिद्ध कियाहै॥ कोइबी ग्रन्थके तात्पर्य शोधनअर्थ ताके षट्‌लिंगनकूं अवलोकन किये चाहिये॥ इस कारणतैं प्रत्येक उपनिषद्‌के ६ लिंग श्रीश्रुतिषड्‌लिंगसंग्रहविषै

दिखाये हैं ॥ यह लिंगोंका श्रवण कोई महा त्माके मुखद्वाराहीं करना उचित है ! काहेतें कि तैसें करनेतें वेदान्तविद्याकी महत्ताका भान होवैगा औ तदनंतर वे उपनिषदोंका भाष्यसहित अभ्यास करनेकी जिज्ञासा वी उत्पन्न होयेगी !

इस ग्रन्थका वा कोईवी अन्यशास्त्रका अभ्यास करनेकी रीतिविषै हमारा आधीन अभिप्राय एक दृष्टांतसैं प्रथम स्फुट करै हैं:—

दृष्टांत:—एक जौहरीका पुत्र अपनें मृत-पिताके मित्रसमीप एकछोटीसी मुद्रांकितमंजूष लेके गया औ कहने लगा कि:—मेरे पितानें अपनें अंतकालसमय यह मंजूष मेरे स्वाधीन करी औकहा है कि तिसमें एक अमूल्य हीरा है सो मेरे मित्रके पास तूं लेजाना तौ वे मित्र बडी कीमतसैं बेच देवेंगा !! जौहरीकी

आज्ञासैं तिसने मन्जूस खोलके देखी तौ एक बड़ा प्रकाशित हीरा देखनेमें आया ॥ हीरेस-हित वह मन्जूष पुनः बंध कीन्हीं औ तिसकूं प्रथमकी न्यांई मुद्रितकरीके पै मित्रनैं कहा कि यह हीरा बहुतमूल्यका है। जब कोई योग्य दाम देनेवाला ग्राहक मिलैगा तब बेचैंगे। यातैं अब इस मंजूषकूं रख छोड़ो ॥ जौहरीने उस पुत्रकूँ अपनी दुकानपर बिठाया औ हीरेमाणि-क्यआदिककी परीक्षा करनेकूँ सिखाया। जब प्रवीण भया तब वे मित्रनैं तिसकूं कहा कि हे पुत्र ! वह हीरेकी मँजूष लेआव। तब वह उक्तमंजूषकूं ले आया औ खोलके हस्तमैं लेके परीक्षा करी तब ज्ञात हुवा कि वह हीरा नहीं परन्तु काच का टुकड़ा है।

सिद्धांतः—जैसैं उक्त जौहरी का पुत्र

काचकूं हीरा मानिके तिसद्वारा धनाढ्य होनेंकी मिथ्याआशाकूं रखताभया। तैसैं मनुष्य बी बालपनसैंहिं जगत्के पदार्थोंकूँ चणिक औ नाशवान देखते हुये बी यथार्थज्ञानके अभावतैं तिननिषै सत्यताकी बुद्धिकूं धारणकरिके सुख-की मिथ्याआशा रखते हैं औ अनेक तौ "यह जगत्के पदार्थनसैं विना अन्य कछबी सत्य नहीं है" ऐसैं बी मानते हैं।

उपरि कहा तैसैं मनुष्यमात्र मायाकरि भ्रांति विषै भ्रमण करी रहे हैं तिन्मेंसैं कचित् कोईकूंही "मैं कौन हूं"। "जगत् क्या है। "मेरा औ जगत्का अवसान क्या है' इत्यादि अनेकानेक प्रश्न उद्भवै हैं॥ जैसैं कोई कंटकके जङ्गलविषै फसा हुवा दुःखकूँ पावता है। तैसैं संशय औ [illegible]

हैं। वे मात्र ता दुःखसैं मुक्त होनेकी इच्छा करते हैं !! परीक्षित राजाकूं जन्मेजयने जो उपदेश किया सो सहस्रनमनुष्योंनैं श्रवण किया परन्तु मोक्षप्राप्ति मात्र परीक्षित राजाकूं भई ! कारण कि तिसका मृत्यु सप्तम दिन निश्चित भया था औ अन्य श्रोताओंकूं तैसा कोई भय नहीं था॥ अज वी वही श्रीमद्भागवतकी सप्ताह पारायण असख्यजन श्रवण करते हैं !

आधुनिक समयसैं कोई कोई इंग्रेजीभाषाज्ञानविषैं कुशल पुरुष गुरुगम्य उपनिषद् आदिकमहत्ग्रंथोंका स्वतन्त्र अवलोकन करैं हैं औतदनंतर आपकूं वेदांतसिद्धांतके वेत्ता मानिके अन्यजनोंकूं वेदान्तका बोध देने वास्ते इंग्रेजीमें ग्रन्थ लिखते हैं वा मासिक अङ्कनविषैं लेख प्रकट करते हैं। परन्तु वे लेखमें मुख्यकरिके हैतप्र-

पक्षका प्रतिपादनमात्र देखनेमें आता है। तैसें थीयोसाफि नामक मण्डलके नेता बी वेदान्त-सिद्धान्तकूं कछुक स्वतन्त्र देखिके मुख्य द्वैत का ही वर्णन करे हैं औ अदृश्य महात्माओं की सहायतासैं असंख्य वर्षों के पीछे मुक्त होने की आशा रखते हैं। ऐसैं होनै का प्रधान कारण वेदान्तविद्याका स्वतन्त्र अभ्यास है। इसविषै श्रीविचारसागरमैं सम्यक् कहा है किः—

दोहा-वेद अब्धि बिन गुरुलेखैं,लागैलौन समान।
बादर गुरु मुख द्वार है, अमृततैं अधिकान॥

पुरातनकालसैं प्रचलित हुई रूढि अनु-सार अनेक स्थलविषै जो वेदान्तकी कथा होती है। तामें कोई एक शास्त्रका पठन करिके तिसपर कोई महात्मा पुरुष विवेचन करे है! तातैं यद्यपि श्रोताजनोंकूं लाभ होवे है तथापि शास्त्रा-भ्यास की पद्धति तो विलक्षण ही है।

जैसैं दृष्टांतगत जौहरी का पुत्र जौहरी की सहायतासैं हीरेकी परीक्षा करनैमें कुशल भया। तैसैं ब्रह्मविद्या का अभ्यास बी कोई ब्रह्मश्रोत्रियब्रह्मनिष्ठगुरु द्वारा करनैमें आवे। तबीहीं तामें कुशलता प्राप्त होवै॥

अब वेदांतशास्त्र का अभ्यास कोई महात्माके समीप किस रीतिसैं करना आवश्यक है सो नीचे वर्णन करे हैं:—

श्रीविचारचंद्रोदय ग्रंथ वेदांतकी प्रथम पोथीरूप है। यह ग्रंथ प्रश्नोत्तररूपहोनेतें प्रथम मुमुक्षु ताका व्याख्यासहित प्रतिदिन श्रवण करै औ ताके पीछे जहांपर्यन्त अभ्यास किया होवै। तहांपर्यन्त क्रमसैं विना पूछनेमें आवे तिनके उत्तर मुमुक्षु देवें। इस रीतिसैं ग्रंथ

पूर्ण करिके पीछे श्रुतिषड्लिङ्गसंग्रह का मात्र श्रवण करै । तदनन्तर—

मुमुक्षु श्रीविचारसागरका श्रवण करै औ जितनै भागका अभ्यास पक्कहुआ होवै । तितनै भागगत मुख्य पारिभाषिक शब्द, प्रक्रिया वा प्रसङ्गके प्रश्न महात्मा उत्पन्न करिके पूछे ताके उत्तर वह मुमुक्षु देवै। यह ग्रंथकी समाप्ती पीछे श्रीपञ्चदशीग्रंथका बी तिसीहीं रीतिसैं दृढ़ अभ्यास करै औ श्रीविचारसागरके छंदनमैंसैं तथा श्रीपंचदशी के श्लोकनमैंसैं जितनै कण्ठ करनेकी महात्मा आज्ञा करे तितनै मुमुक्षु कंठ करै । गत अभ्यास की वारम्वार पुनरावृत्ति करनी बी अत्यंत आवश्यक है ।

उपरोक्तरीतिसैं उक्त ग्रंथन का अथवा अन्यवेदांत ग्रंथनका खंतऔ श्रद्धापूर्वक मुमुक्षु अभ्यास करै तौ ब्रह्मविद्याविषै कुशल होवै

तामैं शङ्का नहीं । तथापि ब्रह्मनिष्ठ होना तौ अत्यन्त विकट है काहेतैं कि जगत्‌विषै सत्यताकी बुद्धिकूं दूरी करिके असत्यता की बुद्धि दृढ़ करनी होवे है और अपनेविषै शुद्ध निर्विकार ब्रह्मस्वरूप की बुद्धिकूं स्थापित करनी होवे है । इस प्रकारकी बुद्धि हुई है वा नहीं सो आप ही अपने आंतरमैं पूछनैसैं उत्तर मिलता है । यह ज्ञान स्वसंवेद्य ही है ।

ब्रह्मनिष्ठपनैको दुर्लभताविषै श्रीमद्भगवद्गीतामें कहा है कि:—

मनुष्याणां सहस्रेषु कश्चिद्यतति सिद्धये । यततामपि सिद्धानां कश्चिन्मां वेत्ति तत्त्वतः ॥७-३॥

ऊपर कहे अनुक्रमसैं अभ्यासकी पूर्णता हुये पीछे कोई महात्मा द्वारा श्रीमच्छंकराचार्य

कृत उपनिषद् भाष्य, सूत्र भाष्य औ गीता भाष्याका अवलोकन करनेसे आनन्दसहितब्रह्मनिष्ठाकी दृढ़तामें अधिकता होवेगी । तदनन्तर इच्छा होवे तौ श्रीयोगवासिष्ठादिक अनेक वेदान्तके ग्रंथ हैं सो बी देखना । संक्षेपमें इतनही कहना है कि जगत्व्यवहारोपयोगी अनेक विषयनका जैसे आदर औ दृढ़तापूर्वक आधुनिक शालाओंविषै विद्यार्थीजन अ यास करते हैं । तैसे दीर्घ अभ्यास विना वास्तविक लाभ होने का नहीं । बहुतग्रंथनके पठनसैंही ब्रह्मज्ञान होवै ऐसा नियम नहीं । उत्तम अधिकारी मात्र एक श्रीविचारसागर अथवा श्रीपंचदशी श्रद्धापूर्वक गुरुद्वारा विचारिके नियमित विचारपूर्वक अभ्यास करै तौ ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति अवश्य होवै ।

जिसकूं आधुनिककालसम्बंधी अने शङ्का उद्भव होती होवैं । सो शास्त्रअभ्या के पीछे इंग्रेजीमें फिलसुफी से औ सायंस अनेक ग्रंथ हैं ये देखें तौ ता बुद्धिकाक्षेत्र अत्यं विस्तृत होवेगा औ जगत्की मायिकता आदि अत्यंत स्पष्ट होवैंगी ऐसा स्वानुभव है।

थोड़े समयसें हमने कुलनाम "नूरानी" क हमारी संज्ञाके अंत में प्रवेश किया है ॥इति

श० सा० नू० ।

ॐ गुरुदेवाय नमः ।

❀ श्रीविचारचन्द्रोदय ❀

अथ षष्ठावृत्तिकी प्रस्तावना।

इस ग्रंथकी पंचमावृत्तिमें पूर्वकी आवृत्तिसैं नवीनता करी थी तैसैं इस आवृत्ति विषै बी जो नवीनता औ अधिकता करी है! सो नीचे दिखावे हैं :—

१ इस ग्रंथ के कर्त्ता ब्रह्मनिष्टपण्डित श्रीपीताम्बरजी महाराज ने मुमुक्षुनके उपरि अत्यंत अनुग्रह करिके इस आवृत्तिके लिये ग्रंथ भाग औ टिप्पणभागका पुनः संशोधन किया है। तथा टिप्पणोंविषै कहिं कहिं अधिकता करिके गहन अर्थ की विस्पष्टता करी है।

२ पूर्वमीमांसा, उत्तरमीमांसा (वेदांत), न्याय आदिक षटदर्शनोंविषै जीव, जगत, बंध,

मोक्ष आदिक मुख्यपदार्थोंके कैसे भिन्न-भि
लक्षण कियेहैं! औ ते लक्षणविषै उत्तरोत्तर कै
समानता असमानता है। सो दृष्टिपात मात्रसैं इ
होवैं ऐसा "षट्दर्शनसारदर्शकपत्रक" श्रीपञ्च
दशी सटीका सभाषाकी द्वितीयावृत्ति औ श्रीवि
चारसागरकी चतुर्थावृत्तिविषै हमने दिया है
तैसाही पत्रक इस ग्रंथके अभ्यासीन के अव
लोकनार्थ इस आवृत्तिमें अंतविषै छाप्या है

३ इस आवृत्तिमें ग्रंथारम्भविषै बहु
खर्चके योगसैं चार चित्र दिये गये हैं। तिनविषै

(१) प्रथमचित्र पूजाविषै स्थित हुये द्विजका है
[२] दूसरा चित्र राजा का है।
[३] तीसरा व्यापारीका है। औ
[४] चतुर्थ चित्र घट बनानेविषै प्रवृत्त भये
कुलालका है।

इस रीतिसैं यद्यपि ब्राह्मण, क्षत्रिय, वै

औशूद्र । यह चारिजाति दृश्यमान होवै हैं तथापि तिन च्यारिचित्रनविषै स्थित जो पुरुष है । तिसकी मुखाकृति लक्षपूर्वक अवलोकन करनेमैं ज्ञात होवैगा कि ये च्यारिचित्र एक हीं पुरुषके हैं । मात्र तिनोंकी भिन्नभिन्न वस्त्र औ सामग्रीरूप उपाधिके भेदसैं एक हीं पुरुष भिन्नभिन्न च्यारि वर्णका प्रतीत होवै है । अर्थात् तिनों की उपाधिके बाध कियेतें वे च्यारिपुरुषनका परस्परकेवल अभेद है।

जीवब्रह्मकाभेद सत्य नहीं किंतु मात्र उपाधिकृतहीं है। ऐसा सर्वमतशिरोमणि वेदांतमतका जो महान् औ अबाधित सिद्धांत है औ जो इस ग्रंथकी 'तत्त्वं पदार्थैक्यनिरूपण' नामक ११वीं कलाविषै अनेकदृष्टांतसैं निरूपण किया है, तिसकूं यथास्थित समजनेमैं औ तदनुसारदृढनिश्चयकरनेमैं मुमुक्षुनकूं सहायभूत होवैंगे । इतनाहीं नहीं । परंतु दृष्टिगोचर होतेहीं वे महान् सिद्धांतकूं स्-

रण करावैंगे। ऐसैं मनिके उक्त चित्रनकं छापेहैं।

इस ग्रंथके कर्ता ब्रह्मनिष्ठ पंडित श्रीपीतांबरजी महाराज। जिनोंका जीवनचरित्र इस आवृत्ति विषै बी छाप्या है औ जिनोंनैं मुमुक्षुनके कल्याण अर्थहीं जन्म धारण किया थां ऐसैं कहिये तौ तामैं किंचित् बी अतिशयोक्ति नहीं है। औ जिनोंनैं अत्यंतदयातैं अनेक ग्रंथनकूं रचिके तथा श्रीपंचदशी, श्रीमद्भगवद्गीता औ वेदांतके मुख्यदशोपनिषद् आदिमहद्ग्रंथोंकी भाषाटीकाकरीके मुमुक्षुजनोंकूं ज्ञानमार्ग सुलभ औ सुगम किया है। वे महात्मा श्रीकच्छदेशगत गढसीसा ग्रामविषै संवत् १९६१ के वैशाख कृष्णपक्ष ७ गुरुवारके दिन इस क्षणभंगुर जगत्का त्याग करीके विदेहमुक्त भयेहैं ॥ तिनोंनैं तिस वर्षके चैत्र कृष्णपक्ष १३ भौमवारके रोज संन्यास ग्रहण करीके परमानंदसरस्वती नाम धारण किया था।

९/११४

ॐ गुरुदेवाय नमः।

* श्रीविचारचन्द्रोदय *

अथ पंचनाशृत्तिकी प्रस्तावना।

यह ग्रन्थ ब्रह्मनिष्ठपंडित श्रीपीताम्बरजी महाराजकरि स्वतन्त्र रचित है। यामैं षोडशप्रकरणरूप षोडशकला हैं। औ तिन प्रत्येक कलाविषै एकएक विलक्षण प्रक्रिया धरी है। यद्यपि ये सर्वप्रक्रिया सद्विप्राकारसैं धरी हैं तथापि मुमुक्षुनकूं ब्रह्मसाक्षात्कार की प्राप्ति करनैमैं सहायकारिणी होवै हैं। यहग्रन्थ आदिसैं अन्तपर्यंत प्रश्नोत्तररूप होनैतैं औ श्रेष्ठ अक्षर औ विख्यात वेदान्तप्रकृयाकरि युक्त होनैतैं। औ सर्वशास्त्रशिरोमणि वेदान्तशास्त्र के अभ्यास के आरम्भकालमैंजो जो अवश्यज्ञातव्य है सो सर्व इस लघुग्रन्थविषै समाविष्ट किया होनैतैं।

वेदान्तअभ्यासविषै नवीनजनोंकूं तौ यह ग्रन्थ वेदान्त की प्रथमपोथीरूप है।

ग्रन्थकारमहात्मानै इसकासारभूत पद्यात्मक "वेदान्तपदावली" नामक लघुग्रन्थ किया है। सो "वेदान्तविनोद" के प्रथम अङ्करूपसैं प्रसिद्ध है। काव्य कण्ठ करनैमैं सुगम औ व्याख्यान किये विस्तृत अर्थ का स्मार कहोवे है। इस वास्ते मुमुक्षुनकूं उपयोगी जानिके वेदान्तपदावलीगत वे छन्द इस ग्रन्थविषै प्रत्येककला के आरम्भ मैं छापे हैं।

अन्त की षोडशवीं कलाविषै ३०० सैं अधिक वेदान्तपारिभाषिकशब्दन के अर्थ धरे हैं। वे बी ग्रन्थकर्त्ता महाराजश्रीकी करुणाकाहीं फल हैं। यह लघुवेदान्तकोष अन्य महद्ग्रन्थन के श्रवणविषै अत्यन्त सहायभूत होवै हैं।

याके आरम्भमैं बड़ी अकारादि अनुक्रम-

णिका धरी है। तिसकरि वांछितविषय का पृष्ठाङ्क विनाश्रम प्राप्त होवै है। इस अनुक्रमणिकाविषै लघुवेदान्तकोशगत शब्दनकूं बी प्रविष्ट किये हैं।

अङ्कयुक्त पारेग्राफन की जो नवीनमुद्रणशैलि हमारे छापे हुवे श्रीपञ्चदशी सटीकासभापा द्वितीयावृत्ति औ श्रीविचारसागरचातुर्थावृत्ति के ग्रन्थों में प्रवृत्ति करी है। तैसीही रूढि सें इस ग्रन्थ की यह पञ्चमावृत्ति छापी है। इस रूढिसें अभ्यासीनकूं अत्यन्त सुलभता होवै है। कारण कि ग्रन्थ के भिन्न भिन्न विषयों का समानासमानपना। उत्तरोत्तरक्रम। तद्गत शङ्कासमाधान। दृष्टांतसिद्धांत औ विकल्प। दृष्टिपातमात्रसैंही ज्ञात होवैहैं। इस रूढिसैं ग्रन्थकूं छापनै आदिकतैं इस आवृत्ति का विस्तार गत आवृत्तिसें अनुमान १०० पृष्टों का अधिक हुवा है औ कागज बी उत्तम डाले हैं।

ग्रन्थकारमहात्मा ब्रह्मनिष्ठ पंडित श्रीपीताम्बरजी महाराज। जिनोंने अनेक स्वतन्त्र ग्रन्थ रचिके। श्रीपञ्चदशी औ दशोपनिषद् आदिक महद्ग्रन्थों के भाषांतर करीके। औ विचारसागरादिक अनेक ग्रन्थनपर टिप्पण करिके। अखिल मुमुक्षुसमुदायउपरि महान् अनुग्रह किया है। तिनों के जीवनचरित्रके लिए अनेक मुमुक्षुन की तीव्र आकांक्षाकूं देखिके। सो जीवनचरित्र इस आवृत्तिविषै विस्तारसैं छाप्या है। तदुपरि दर्शनकरनै योग्य पूज्य महाराजश्री की कल्याणकारी यथास्थितचित्रितमूर्ति तिनों के हस्ताक्षरसहित ग्रन्थारम्भमैं स्थापित करी है।

ग्रन्थविषै मुमुक्षुन की प्रवृत्तिमैं मनोरञ्जक ग्रन्थ की सुन्दरता बी सहायक है। ऐसैं मानके इस ग्रन्थ के पूँठे सुन्दर किये हैं। परन्तु सुन्दरता के साथि सिद्धान्त का स्मरणरूप लाभ होवै इस हेतुसैं इस पञ्चमावृत्तिके पूँठे अति खर्च करीके विलायतसें मँगवाये हैं औ रूपेरी आदिक रङ्गसैं चित्ताकर्षक किये हैं। पूंठे ऊपर

जे भ्रान्ति आदिक चित्र छापे गये हैं तिनके अर्थ का विवेचन नीचे करै हैं:—

निर्गुणउपासनाचक्र:—हमारे छपाये श्रीविचारसागरविषै निर्गुणउपासनाचक्र धरया है। तिसका एक संक्षिप्तचित्र या पूंठेके मुखभागपर रखा है। इसमैं प्रत्येक पदार्थन के आदिके अक्षरमात्र तिन पदार्थन की स्मृतिके लिये रखे हैं। सुगमता का अर्थ स्पष्टता करिये हैं:—

अ–अकार
वि–विराट
वि–विश्व
} ॥ १ ॥ इन तीनउपाधिवानकी एकता चिंतनीय है ॥

उ–उकार
हि–हिरण्यगर्भ
तै–तैजस
} ॥ २ ॥ इन तीनउपाधिवान्की एकता चिंतनीय है ॥

म–मकार
ई–ईश्वर
प्रा–प्राज्ञ
} ॥ ३ ॥ इन तीनउपाधिवान्की एकता चिंतनीय है ॥

अ–अमात्र
ब्र–ब्रह्म
तु–तुरीय
} ॥ ४ ॥ इन तीनशुद्धनकी एकता चिंतनीय है ॥

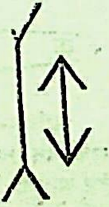
प्रथमत्रिपुटीकी द्वितीयके साथि औ तिसकी

तृतीयके साथि औ तिसकी चतुर्थके साथि एकता चिंतनीय है ॥ उक्तअर्थ श्रीविचारसागरकी चतुर्थआवृत्तिके २८१ सैं ३०२ अङ्कपर्यन्त ग्रन्थकर्त्तानैं विस्तारसैं दिखायो हैं।

दो सीधी रेपायुक्त आकृतिः—जिल्द के मुखभागउपरि चन्द्राकारविषै ग्रन्थ का नाम छाप्याहै। ताके नीचे दो सीधीरेपावाली एक आकृति है ॥ ये दोनूं रेपा दक्षिणदिशा तरफ संकोचित औ वामदिशातरफ विकासित हुई भासतीहै। परन्तु वास्तविक तैसैं नहीं हैं किन्तु सर्वस्थलमैं ही समान अन्तरवालीहीं है । यह वार्ता दोनूं रेपाओंके आदिभागकूं अन्तभागके साथि लक्ष्यकरिके देखनैंसैं निर्विवाद सिद्ध होवै हैं ॥



परिमाणभ्रांतिदर्शक दो आकृतिः—जिल्दकी
ीठविपै चतुलाकारमैं "शरीफ"
ाम है। ताके ऊपर उक्त दो-
प्राकृतियाँ छापी हैं। सो नीचे
दिखावेहैं:—



उभयचित्रोंकी दोनूं सीधीमध्यरेषा यद्यपि
ामानपरिमाणकी हैं। तथापि तिसके अग्रभा-
गविपै धरीहुई तिर्यक्रेषारूप उपाधि के बलसैं
ांतिद्वारा वामिचित्रकी मध्यरेषा दक्षिणचित्रकी
ध्यरेषा सैं बडी प्रतीत होवैहैं।

दीर्घरेषायुक्त दो आकृतिः—पूंठके पृष्ठ-
ागपर। मध्यमैं षटचक्राकार औ उपरि तथा
चे दीर्घरेषायुक्त। ऐसैं सर्व तीन आकृति
ीहैं। तिनमैंसैं दीर्घरेषायुक्त आकृतिनका
र्णन करैहैं:—

पूंठेके पृष्ठभागके उपरिकी दो दीर्घरेषा नीचे प्रथमआकृतिसमान दृष्ट आवती हैं:—

१ प्रथम आकृति.

क ख क

उपरिकी दोरेषा.

आदिअन्तमैं दोनूं दीर्घरेषाका क क भाग संकोचित तथा मध्यका ख भाग विकासित दृष्ट आवता है।

यातैं वे रेषा चक्राकार हैं। ऐसैं प्रतीत होवै है।

पूंठेके पृष्ठभागके नीचेकी दोदीर्घरेषा। नीचेकी दूसरी आकृतिसदृश भासती हैं:—

२ दूसरी आकृति.

क ख क

नीचेकी दोरेषा.

आदिअन्तमैं दोनूं दीर्घरेषाका क क भाग विकासित तथा मध्यका ख भाग संकोचित देखनैमैं आवताहै। अर्थात् प्रथम आकृतितैं विपरीत वक्रआकर प्रतीत होवै है॥

तथापि पूंठे के पृष्ठभाग के उपरिकी औ
चे की दो दीर्घरेषा । प्रथम औ दूसरी आकृति
समान वक्र नहीं है । सी धीही हैं । मात्रभ्रांति
वक्ररेखाकार प्रतीत होवे है । यह वार्ता
यचरूप चाक्षुपप्रमाणसैं जैसैं सिद्ध होवै है ।
सैं स्पष्ट करे हैं:—

जैसै कोई बाणकूं छोडनै के
मयपर बाणकूं लक्ष्यके साथि
ऐसैं सांधता है । तैसैं उक्त
चे ऊपरको दोनूं रेषाओं आदि
साथि अंतकूं लक्ष्य करिके
भनैसैं वे दोनूं रेषा । बाजू की
सरी आकृत समान सीधीही
आवैगी ।

यातें पूंठे के पृष्ठभागपर उक्त
माकृतसदृश ख भाग विस्तृत
ा दूसरी आकृतसदृश ख
ा संकोचित दृष्ट आवते हैं
भ्रांतिकरिकेहीं भासते हैं ।
सहजही सिद्ध होवै है ।



३ तीसरी आकृति.

भ्रांति का कारण:—प्रत्येक दीर्घरेखा ऊपर तथा नीचे जे अनुमान १८ वा २० छो टेढ़ी रेषा है। वे इहाँ उपाधिरूप हैं औ वे उपा रूप रेषाहीं इस चित्रितदृष्टान्तविषै भ्रान्ति कारण हैं।

जैसैं मरुभूमिविषै मृगजल का भान भ्रां रूप है। तैसैं इहां चित्रितदृष्टान्तविषै (१) प्र तथा (२) दूसरी आकृतगत ख भाग के वि सित औ संकोचितपनेका भान बी भ्रांतिरूप

जैसैं मरुभूमिविषै "व्यावहारिक जल न हैं। प्रातिभासिक ही है" ऐसैं निश्चित बी उपरभूमि के साथि सूर्यकिरण के सम्ब न्धरूप उपाधि के बल सैं जल की प्रतीति नहीं होवै है। तैसैं इहां दो रेषारूप चित्रित ष्टान्तविषै बी प्रथम तथा दूसरी आकृति "ख भाग विकासित और संकोचित नहीं, किन्तु आदि अन्तपर्यंत समानहीं हैं" निश्चित भये पीछे बी छोटी टेढ़ीरेखाके सम न्धरूप उपाधि के बलसैं (१) प्रथम तथा (दूसरी आकृतिकी न्याँई ख भागके विकास संकोचकी प्रतीति दूरी नहीं होव है।

सिद्धान्तः—श्रुतिः—"पराञ्चि खानि व्यतृणत्स्वयंभूस्तस्मात्पराङ् पश्यति नान्तरात्मन्" अर्थः—स्वयम्भू (परमात्मा) इन्द्रियनकूं बहिर्मुख रचता भया। यातें देवतिर्यग्मनुष्यादिक। बाह्यवस्तुनकूं देखते हैं। अन्तरात्माकूं नहीं।" टीका-यद्यपि इस सृष्टिविषै सर्वप्राणी बहिर्मुखहीं वर्तते हैं। काहेतें जातें तिनोंकी इन्द्रियनकी रचना स्वयम्भूनैं तिस प्रकारकीहीं करीहै। इन्द्रियनकी तृप्ति करनैंविषैहीं सर्वजीवोंकी प्रवृत्ति होवै है यौ याहीतैं मनुष्यनसैं विना अन्यप्राणी तौ ता प्रवाहके रोकनविषै सर्वथा बहिर्मुखप्रबल प्रवृत्तिप्रवाहके बलसैं हत भये असमर्थ हैं। वे अन्तरात्माकूं देखी शकते नहीं। कहिये अपने आपकूं अपरोक्ष निश्चय करी शकते नहीं। यह स्पष्टहीं है। काहेतें तिन शरीरोंविषै अन्तर्मुखतारूप विरोधीप्रवाह करनैंवास्ते समर्थबुद्धिरूप साधन है नहीं। तथापि केवलमनुष्यशरीरविषै ही यह सर्वोत्तमसाधन बी स्वयंभूपरमात्मानै रख्याहै। यातें स्वस्वरूप ज्ञानके अधिकारी मनुष्योंविषै केईक कदाचित् गुरुकृपासैं बहिर्मुख प्रवृत्तिप्रवाहके विरोधी अन्तर्मुखप्रवाहके साधन

विचारादिकक्ं संपादन करैहैं औ अंतरआत्माकं
ब्रह्मस्वरूप अपना आपकरिके निश्चय करैहैं ॥ ऐसैं
मुक्तमनुष्य । जे पूर्व स्वयंभूरचित इंद्रियनसैं
प्रथम अज्ञानदशाविषै केवल रूपरसआदिकक्ंहीं
देखतेथे । वे गुरुकृपासैं ज्ञानभये पीछे जीवन्मु-
क्तदशाविषै दोर्दीघेरेपारूप चित्रित भ्रांतिके दृष्टां-
तकी न्यांई । सर्वरूपरसआदिकक्ं देखतेहुये वे
अंतमुखप्रवाहके बलसैं "सर्व रूपरसआदि
मिथ्याहीं हैं । " ऐसैं भ्रांतिकूं बाधकरिके तिस
भ्रांतिके अधिष्ठान ब्रह्मस्वरूप आत्माकूं अप-
रोक्ष निश्चय करैहैं ॥

पट्चक्रयुक्तआकृति:—पृंठके पृष्ठभागपै
मध्यविषै पट्चक्रनकरि युक्त जो आकृति है
तिसका उपयोग अब दिखावैहैं:- ग्रंथकूं दक्षिण
हस्तविषै सन्मुख धरिके । वामसैं दक्षिणकी
तरफ त्वरासैं लघुचक्राकार फेरनेकरि पट्चक्र
हैं वे दक्षिणकी तरफ फिरते दृष्ट पड़ेंगे औ इस
आकृतिके मध्यविषै दंतयुक्तचक्र है सो पट्चक्र-
नसैं विपरीत कहिये वामकी तरफ फिरता देखने-
मैं आवेगा । यह बी भ्रांतिविषै चित्रितदृष्टांत है

रंगितपट औ स्याहीका दृष्टांतः—इस ग्रन्थके पूंठेके मुख औ पृष्ठभागविषै जितनी आकृति दृष्ट आवती हैं । तिन सर्वविषै रंगितअक्षररेखाआदिक देखनेमैं आवतेहैं वे भ्रांतिकरिहीं भासते हैं । कारण कि:—स्याहीरूप उपाधिसैं रंगितपटविषैं रंगितअक्षरआदिककी कल्पना होवेहै ॥ स्याहीरूप उपाधिके बाध किये "वास्तविक कोई अक्षररेखादि हैं नहीं परन्तु सब रंगितपटहीं है" ॥ तसैं सिद्धान्तमैं । परमात्मतत्वविषै यह जो जगत् भासता है सो केवलभ्रांतिकरिहीं भासताहै । कारण कि:—मायारूप अज्ञानउपाधिसैं परमतत्वविषै जगत्की कल्पना होवेहै । तातैं तिस मायारूप अज्ञानउपाधिकूं गुरुमुखद्वारा बाध करिके "वास्तविक जगत् कछु बी है नहीं किंतु सर्व आत्माहीं है" ऐसा निश्चयरूप मोक्षका साधन जो तत्वज्ञान सो उक्तचित्रितदृष्टांतनके दर्शन स्मरणकरि मुमुक्षुनकूं होहु ॥

शरीफ सालेमहंमद ॥

ओ३म्

* मङ्गलाचरणम् *

ब्रह्मनिष्ठ पण्डित श्री पीताम्बर जी कृतम् ।

* नाराचवृत्तम् *

कल कलङ्क कज्जलं तमो निवारि सज्जलं ।
गतातिचञ्चलाचलं सुशान्तिशीलमुज्ज्वलम् ॥
सदा सुखादिकन्दलं त्रितापपापशामकं ।
नमामि ब्रह्मधामकं सयापुरामनामजम् ॥ १ ॥

समानदानदायकं भवाब्धवाक्यसायकं ।
सुशुद्ध धीविधायकं मुनीन्द्रमौलिनायकम् ॥
स्वसङ्गीतगायकं व्यकं लित्रोकरामकं ।
नमामि ब्रह्मधामकं सयापुरामनामकम् ॥ २ ॥

शमक्षमादिलक्षणं प्रतिक्षणं स्वशिक्षणं ।
मुमुक्षुरक्षणे क्षमं क्षमेषु वै विलक्षणम् ॥

सुलक्ष्य लक्ष्य संशयं हरं गुरु हिं मामकं ।
नमामि ब्रह्मधामकं सचापुरामनानकम् ॥ ३ ॥

क्लेशलेशशेशशून्यदेशके प्रवेशकं ।
गताविशेपशेपकं ह्यशेपवेपदेशकम् ॥
परेशकं भवेशकं समस्तभूपभामकं ।
नमामि ब्रह्मधामकं सचापुरामनामकम् ॥ ४ ॥

सकालकालिजालभालभेदिभानभल्लकं ।
प्रभिन्नखिन्ननुन्नभाविजन्ममत्तमल्लकम् ॥
सभेदखेदछेदवेदवाक्ययूथयामकं ।
नमामि ब्रह्मधामकं सचापुरामनामकम् ॥ ५ ॥

भवाष्टकष्टपाशदासभावभासनाशकं ।
सुशुद्धसत्वबुद्धतत्वब्रह्मतत्वभासकम् ॥
स्वंलोकशोकशोपकं चितोपद्दोपचामकं ।
नमामि ब्रह्मधामकं सचापुरामनानकम् ॥ ६ ॥

सबंधुजन्मसिंधुपारकारिकर्णधारकं ।
सलोभशोभकोपगोपरूपमारमारकम् ॥

खयालकालवारकं समासमर्दकामकं ।
नमामि ब्रह्मधामकं सदापुरामनामकम् ॥ ७ ॥
स्वलक्ष्यदत्तचत्तुपं स्वरूपसौख्यसंजुपं ।
कृतार्थचेतनायुपं गतार्थगामितस्थुपम् ।
त्रिभोग्यजातद्विपं सुपं गुणातिदामकं ।
नमामि ब्रह्मधामकं सदापुरामनामकम् ॥ ८ ॥
भवाटवीविहारकारि जीवपांथपारदं ।
सुयुक्तिमुक्तिहारसारद सुबुद्धिशारदम् ॥
सतीतपादकांवरो ब्रवीति तं स्वरामकं ।
नमामि ब्रह्मधामकं सदापुरामनामकम् ॥ ९ ॥

श्रीमन्मंगलमूर्तिपूर्तिसुयशःस्थानन्दवायुल्लसन् ।
शोभायैकसरित्पतिं प्रतिहतप्रोत्म तत्तापत्रयम् ॥
नंमारस्मृतिलग्नमग्नमलस्यामुद्धारकं यद्गतं ।
प्रस्कृतत्यसुचित्स्वरूपमुगुरुं रामं भजेऽहंमुदा ॥ १ ॥
(श्रीपद्मार्थमंजूपातः)

* श्रीसद्गुरुभ्यो नमः *

अथ

पण्डित श्रीपीताम्बरजीका

जीवनचरित्र ।

❀ उपोद्घात ❀

* श्लोकः *

पीतांबराह्वविदुषश्चरितं विचित्रम्
यद्वै वरिष्ठनरसद्गुणरत्नशुभम् ॥
ज्ञानादिसद्गुणगणैर्ग्रथितं स्वकीय-
ज्ञानान्मुमुक्षमतिशुद्धिकरं च वक्ष्ये ॥ १ ॥

टीकाः—

पीतांबर है नाम जिनका ऐसे जे

पंडितजी तिनका चरित्र कहिये जीवनचरित्र। अर्थ यह जोः—जन्मसैं आरंभकरिके अद्य-पर्यंत जीवत्अवस्थाविषै तिनोंका आचरण! ताकूं मैं कहूंगा ॥

१ सो चरित्र कैसा है? विचित्र है कहिये अद्भुत (आश्चर्यरूप) है ॥

२ फेर कैसा है? जो प्रसिद्ध अत्यन्तश्रेष्टपुरुषों के सद्गुणरूप रत्नोंकरि युक्त है ॥

३ फेर कैसा है? ज्ञानादिसद्गुणों के गणों(समूहों) कर गुम्फित है ॥

अर्थ यह जोः—जिस चरितविषै पंडित जीके औ तिनसैं संबंधवाले सत्पुरुषनके नामोंसैं स्मारित ज्ञान भक्ति वैराग्य उपरतिआदिकगुणोंका वर्णन किया है ।

४ फेर कैसा है? जो चरित्र पने अज्ञानतैं

स्त्रअन्तर्गत पुण्योत्पादक औ स्वजातीय-गुणोत्पादक महात्माओंके गुणोंके विज्ञापन-द्वारा याके विचारनैवाले मुमुक्षुनकी बुद्धिकी शुद्धिका करनैवाला है।

इस श्लोकविषै आरम्भ में।

१ "पीतांबर" शब्दकरिके ब्रह्मनिष्ठसद्गुरु श्री-पीतांबरजीका औ।

२ पीत है अम्बर नाम वस्त्र जिसका। ऐसैं विष्णुरूप सगुणब्रह्मका। औ

३ पीत कहिये स्वसत्तासैं कवलित किया है अंबर कहिये आकाशादिप्रपंचरूप गर्भसहित अव्याकृत (माया) रूप आकाश जिसनैं ऐसे सर्वाधिष्ठान निर्गुणपरब्रह्मका स्मरण-रूप तीनमंगलोंके आचरणपूर्वक इस जीवन-चरित्ररूप ग्रंथ के आरंभकी प्रतिज्ञा करी॥१॥

अब द्वितीयश्लोकविषै इस वर्णन करनैं-योग्य महात्माके विशेषणभूत "पंडित" शब्दके अर्थकूं हेतुसहित कहे हैं:—

* श्लोक *

वंशावटंकनिगमागमशालिबुद्धि
विज्ञानशालिमतियुक्ततया हि लोके ॥
यः पंडितात्मकविशेषणयुक्तनाम्ना
पीतांबरेति प्रथितः पुरुपुण्यपुंजः ॥ २ ॥

टीका:—

१ स्वकुल के "पंडित" ऐसे अवटंककरि । अरु
२ वेदशास्त्रकी बुद्धिरूप ज्ञानकरि । अरु
३ ब्रह्मात्मैक्यनिष्ठारूप विज्ञानकरि

विशिष्टमतियुक्त ह्वानैंकरि जो लोकविषै "पंडित" रूप विशेषणयुक्त "नामसैं पीतांबर" ऐसैं प्रसिद्ध बहुपुण्यके पुञ्जरूप हैं ॥

इहां "पंडित" पदके उक्तत्रिविध अर्थनके मध्य प्रथम अरु द्वितीय अर्थ गौण हैं औ तृतीयअर्थ मुख्य है। काहेतें

"यस्य सर्वे समारंभाः कामसंकल्पवर्जिताः ॥
ज्ञानाग्निदग्धकर्माणं तमाहुः पंडित बुधाः ॥१॥

अस्यार्थ—जिसके लौकिकवैदिकसमारंभकामना अरु संकल्पसैं वर्जित हैं। याहीतें ज्ञानरूप अग्निकरि दग्ध भये हैं संचित अरु क्रियमाणरूप कर्म जिसके। ऐसा जो पुरुष है ताकूं बुधजन "पंडित" कहते हैं। इस गीता स्मृतितें ज्ञाननिष्ठपुरुषविषैहीं "पंडित" पदकी वाच्यताके निश्चयतें ॥ २ ॥

—::—

❀ कुलपरंपरा ❀

कच्छदेशविषै अंजारनामा नगर है। तामैं राजपूज्य महाज्योतिषीपंडित "नरेडत्र" भयेथे जिसकी विद्वत्ताके माहात्म्यसैं अद्यापि ताका सारा वंश "पंडित" इस अवटंक-करि युक्त भया है। तिनके च्यारिपुत्र थे। तिनमैंसैं

१ एक भुजनगरमैं रहिके श्रीमहाराजाओंका दानाध्यक्ष भया।

२ द्वितीयपुत्र नारायणसरोवरतीर्थका पुरोहित भया।

३ तृतीयपुत्र अंजारनगरमैंहीं ज्योतिषीपंडित पदकूं पाया। औ

४ ताका चतुर्थ अवरजपुत्र चागला भया। सो आसंबीया नामक ग्राममैं ग्रामाधीशके अतिआदरसैं निवास करता भया।

एक समयमैं गढसीसाग्रामनिवासी सारस्वत गंगाधरशर्मा था। सो ओडायग्राममैं पाठशाला पढावताहुया रात्रकूं अश्वारूढ होयके चारकोशपर आसंवियाग्राममैं पंडितजीकेपास ज्योतिषशास्त्रके पढने निमित्त प्रतिदिन जाता था। सो गुरुचरणोंकूं गोदमैं लेके मुखमैं पढ़ता था। एक दिन पण्डितजीकूं निद्रा आगई और गङ्गाधरजी गुरुआज्ञाविना चरणोंकूं न छोड़िके बैठा रहा। सवेरमैं सो देखिके ताकूं वर दिया किः— "तेरेकूं सरस्वती मुहूर्तप्रश्न कर्णमैं कहैंगी" ऐसैं प्रसादितसरस्वतीवाले वे चागला नामक पण्डित थे। तिनके पुत्र दामोदरजी परमज्योतिषी भये। तिनके १लीलाधर २प्रेमजीऔ ३गोवर्धन ये तीन पुत्रथे। तिनमें लीलाधरजी परमज्योतिषी औ भगवद्भक्त थे। वे आसंवियाग्रामसैं कदाचित् मङ्गलग्राममैं पर्यटन करने जाते थे। तहां ग्रामा-

चमत्कृति दिखाई थी। तिस करिके तीनोंमें सत्कारपूर्वक गृह अरु जमीन देके तिनकूं मञ्जलग्राममें स्थापित किये। ये वार्धक्यमें तीर्थयात्रा करनेकूं गये। सो पीछे लौटे नहीं।

लीलाधरजी के पुत्र १—गोपालजी तथा २—अमरसिंहजी थे। तिनमें गोपालजीके पुत्र पण्डित १ लद्धाराम २ पुरुषोत्तमजी तथा ३ पारपेया। ये तीन थे। तिनमें पुरुषोत्तम जितेन्द्रिय निष्कपट जपतपसंयुक्त अरु मुहूर्त प्रश्नमें वाक्सिद्धिवान्के तुल्य थे।

❀ जन्मवृत्तान्त ❀

पंडितश्रीपुरुषोत्तमजीके पुत्र पण्डित १मूलराज तथा २ पीतांबरजी तथा ३ लालजी! ये तीनभये। तिनकी माताका नाम वीरबाई (वीरवती) था। सो बी वेदान्तशास्त्रतें जानत विवेकवती थी

मूलराजके जन्मके अनन्तर । सप्तभगिनिया ।८
भइयाँ । अनन्तर पंडितपीतांबरजी का जन्म
विक्रम संवत् १९०३ के ज्येष्ठशुद्ध १० रूपगंगा
जयंतीके दिन भया है । तिनके जन्मदिनमें माता
पिताकूं औ भगिनियोंकूं औ सुहृदलोकनकूं
"भगवत्का जन्म भया" ऐसा उत्साह भया
था ।। यथाशास्त्रजातकर्मपुण्यदानादिक्रियागया।।
वे गर्भवासमें थे तब माताकूं नारायणसर आदिक
तीर्थयात्रा भई थी औ वेदांतश्रवण अरु अन-
वच्छिन्नसत्संग भया था तिस हेतुसैं वे बाल्या-
वस्थासैंहि वेदांतशास्त्रमें रुचिवाले भये ।। वृद्ध
कहते हैंकिः—षट्मास के गर्भके हुए जोमाताकूं
सत्शास्त्रका श्रवण होता रहे तो पुत्र भी शास्त्र-
संस्कारवान् होता है ।। यह वार्ता प्रह्लादअष्टा-
वक्रादिकमें प्रसिद्ध है ।

कौमार औ पौगण्डसैं लेके किशोरवयका वृत्तान्त।

पंडितपीतांबरजीके जन्मअनन्तर तिनके पिताकी दिनदिन भाग्यवृद्धि होती गई॥ ऐसैं तिनके लालनपालन पोषण करते हुए तिनविषै मातापिताकी प्रीति बढ़ती गई। पांचवर्षके अनन्तर लघुवयविषै तिनके पिता सुभाषित प्रकीर्ण श्लोकादि मुखपाठ पढ़ाते थे सोधारण करते रहे। तदनन्तर पिताद्वाराही देवनागरी लिपिका ज्ञान भया। तदन्तर मंदिरादिकमें जाते आते सन्यासी साधु ब्राह्मणोंके पास बी स्तोत्रपाठादिकी शिक्षा लेते भये औ तिनोंसैं तीर्थादिककी वार्ता औ प्राचीन इतिहास प्रेमसैं सुनते रहे। अनन्तर अष्टवर्षकी वयमें इनों का विधिपूर्वक उपनीत भया था।

फेर श्रोतियब्रह्मनिष्ठसद्गुरु श्रीबापुमहाराजब्रह्मचारी जे दशवर्षसैं रामगुरुकी आज्ञा करि सतसंगीजनोंकी भक्तिपूर्वक प्रार्थना सैं मञ्जलग्राममैं रहते थे। तिनोंके पास अक्षरवाचनकी परिपक्वता अरु संध्यावन्त उपनिषद्पाठ गीतापाठ अरु रुद्राध्यायादिवेदके प्रकरणों का पठन दोवर्षतक करते भये। तिनके साथि अन्य बी सहाध्यायी थे। परंतु इनके सदृश किसीकी धारणशक्ति नहीं थी। सो देखिके तिनके उपरि गुरुकी पूर्ण कृपा रहती थी। याहितैं तिनकी बुद्धिमैं ब्रह्मविद्याके संस्कार डालते रहते थे। तबही "मैं देहेन्द्रियादिसंघात सैं भिन्न साक्षीरूप हौं"। यह निश्चय दृढ़ होरहा था अरु तिन महात्माविषै तिनकी गुरुनिष्ठा बी दृढ़तर हो रही थी। तब कौपीनधारण गुरुसमीपवास गुरुसुश्रूषा इत्यादि। ब्रह्मचारीके

धर्म संपूर्ण पालनकरिके रहते थे। आधुनि
रूढिसैं तिनका उद्वाह १० वर्षके अनंतर भय
था। तदनंतर श्रीसद्गुरुका वटपत्तनमैं निर्ग
न भया॥ तिनके वियोगके समयमैं प्रेमपूर्व
गद्गदकंठादिप्रेमके चिन्ह बी होते रहे औं
गुरुके साथिहीं अध्ययनके निमित्त जाने
बहुत आग्रह भयाथा। परंतु माता.पिता ने ब
हठलेके निवारण किया॥

यज्ञोपवीतके अनंतर सोमप्रदोष एका
शीआदि शास्त्रोक्तव्रत अनवच्छिन्न करतेहैं
व्रतके दिनमैं योग्यदेवका पूजन औ प्रतिदि
स्व.पिताके पंचायतनपूजाका स्वीकार आप
किया था॥ तिस तिस स्तोत्रादिकके पठन
भजनमैं काल व्यतीत करते थे। प्रासादि
लघुस्तवस्तोत्रका पाठ प्रतिदिन नियमसैं क
तेथे औ महाराजश्रीके निर्गमन भये पीछे औ

रामगुरुकी चरणपादुका मङ्गलग्राममें महाराजकेहीं स्थानमें स्थापित थी उसकी पूजाअर्चादि नहीं करतेरहे ॥ तिस वयमें स्वमित्रोंके पास "चलो हम स्वगृह छोडिके तीर्थयात्रादिक करें वा विद्याध्ययन करें वा सत्समागम करें"। ऐसी शुभ वासना तिनोंके चित्तमें उदय होती रही। परंतु वे मित्र सलाह देते नहीं थे। महाराजके गमनानंतर तिनोंकेहीं स्थानमें कोई देशांतरवासी रामचरण नामक वेदांतसंस्कारयुक्त विरक्तसाधु रहतेथे। तिनके साथि बहुत परिचय रखतेही रहे॥ पीछे सो साधु रामगुरुकी पादुकाका पूजनभी करतेथे औ प्रतिदिन ब्राह्ममुहूर्तमें स्नानादिक्रिया तथा सम्पूर्ण गीतापाठ औ अनुक्षण रामनामका भजन करतेथे औ रामायण भागवत वेदांतके प्रकरणग्रंथोंकी कथा करते थे।

पंडितजीनें कितनेककाल गढसीसाग्र
स्वस्वसापति देवचन्द्र नामक ज्योतिर्विदके
मुहूर्त ज्योतिष आदिकका कछुक अभ्या
किया था ! तिस प्रसंगमैं तहांसैं सन्निकट
प्रतिष्ठित विल्वेश्वर नामक महादेवका विल्व
विषै प्राचीन धामहै तहां पूजनकूं गयेथे
श्रावण मासमैं बहुतदेशभरके विद्वान ब्राह्म
पूजननिमित्त आते हैं ! तिन्होंसैं अनेकशास्त्र
सङ्ग औ वार्तालाप किया था ।

तदनंतर मञलग्राममैं एक व्याकरण
दिकविद्याविषैं कुशल लब्धिविजय नामक य
वर थे तिनके पासपिताकी आज्ञासैं व्याकर
भ्यास करते रहे ! कदाचित् तहां देशांतरप
नशील परमविरक्त क्षमा दया धैर्य मौन
दा आदिक अनेकसद्गुणसंपन्न पद्मविज

जी नामक यतिवरिष्ठ आयेथे। तिनके पास व्याकरणाभ्यासनिमित्त जातेआते रहे ॥ इनोंकी सुशीलतादिकशुभगुण देखिके तिनोंकी भी परमप्रीति भयीथी ॥ परस्परचित्त बहुत मिलता रहा ॥ फेर कितनेक कालपर्यंत वह पिताकी आज्ञासैं तिनके साथि विचरतेरहे औ व्याकरणाभ्यास करतेरहे ॥ अंतमैं कितनैक काल भुजनगरमैं तिनके साथि रहतेथे ॥ जितना कछु प्रतिदिन पाठ लेतेथे तितना कंठहु करलेतेथे ॥ बहुतसा व्याकरणाभ्यास तहां पूर्ण भया ॥ फेर तिस महात्माकी देशांतरविषै तीर्थयात्राके निमित्त जिगमिषा भई। तिनके साथिहीं पिताकी आज्ञासैं पंडितजी निर्गमन करतेभये। परंतु माताके अतिस्नेहसैं दूतद्वारा मध्यसैं बुलाये गये ॥

❀ मध्यवयोवृत्तांत: ❀

फेर साधु श्रीरामचरणदासजीके साथ
रामायणादिग्रंथनका विचार करतेरहे। कदा-
चित् काकतालीयन्यायकरि कोइक ब्रह्मनि-
परम्हंस स्वगृहमें आयके रहेथे तिनोंनें वेदां-
के संस्कारका उज्जीवन किया। फेर पिता-
के साथि नौकाद्वारा श्रीमुंबईनगरविषे गम-
किया। तहां नासिकनगरनिवासी संसारोप-
श्रीनारायणशास्त्रीके विद्यार्थी श्रीसूर्यरामशास्त्र-
के पास काव्यकोश व्याकरण भागवता-
शास्त्रनका अध्ययन करिके संस्कृतवाणी-
व्युत्पन्न मतिवाले भये॥ फेर वेदांतीर्थकी जि-
ज्ञासाकरिके स्वामीश्रीरामगिरीजीके पास पंच-
दशीका अभ्यास करतेरहे॥

तावत् पूर्वपुण्यपुञ्जपरिपाकके बलतें सद्गु-

श्रीबापुमहाराजजी अरु मात् मुम्बईमें पधारे ।
तिनोंके पास विधिपूर्वक गमनकरिके पंचदशी
आदिकग्रंथनका अध्ययन तथा श्रवण करतेहुये
श्रीगुरुके साथि नासिकक्षेत्रमें जाय आयके
नौका द्वारा श्रीकच्छदेशविषै आयके स्वकीयश्री
मञ्जलग्राममें पधारे ॥ तहां स्वतंत्र वेदांतग्रंथनका
अध्ययन तथा अनेक मुमुक्षुनके साथि अध्ययन
औ श्रवण करतेरहे ॥ तब श्रीसद्गुरु जहां
जहां सत्संगीजनोंके ग्रामोंमें विचरतेथे । तहां
तहां सहचारी होयके अध्ययन औ श्रवण
करतेरहे ! दोवर्षपर्यन्त श्रीगुरु कच्छदेशमें विच-
रिके फेर जब वटपत्तन (वडोदरानगर) के
प्रति पधारे तब श्रीभुजनगरपर्यन्त बहुतसतसं-
गीजनसहित श्रीगुरुके साथि आयके फेरतिनों
की आज्ञाके अनुसार मञ्जलग्राममें आवतेभये ।

तहां कछुक्काल स्वगुरुभ्राता रामचं
शर्मा ब्रह्मचारी और बुद्धिशालि यदुवंशी
जी वर्मा चत्रिय आदिसत्संगीजनोंकूं पंच
उपदेशसहस्री नैष्कर्म्यसिद्धि तत्त्वानुसं
विचारसागरआदिक प्रकरणग्रंथोंका
करावतेथे।

फेर संवत् १९२४ की शालमैं ति
गृहमैं देवकृष्णशम पुत्रका जन्म भया।
नन्तर मासत्रय पीछे तिनोंके पिता परमप
पाये। पीछे त्वरितहीं आप मुंबईमैं पध
सोनपरमपुण्यके वशतैं श्रीविष्णुदासजी
तब परमहंसके शिष्य औ पंडित श्रीनि
दासजीके विद्यार्थी औ कविराज परमअ
महात्मा श्रीगिरिधरकविजीके साधक स
साधुगुणसम्पन्न स्वामीश्रीत्रिलोकरामजी
मंडलीसहित श्रीमुम्बईमैं पधारे। तहां सन्त

स साह नारायणजी त्रिविक्रमजी आदिक त्सङ्गीजनोंकी प्रार्थनासैं एकोनविंशति (१९) सपर्यन्त श्रीमुम्बईमैं निवास करतेभये। तब ीवृत्तिप्रभाकर तथा श्रीचारसागर इन दो- थनका सम्यक्श्रवण होतारहा औ अहर्निश तिन महात्माके पास एकान्तवासविषै रहिके त्कपापूर्वक अनेकवेदांतके पदार्थनका शंका- समाधानपूर्वक निर्णय करतेरहे औ तिन महा- माके मुखसैं सुनिके अरु देखिके अनेककल्या- णकारी सद्गुणोंका स्वचित्तमैं आधान करते- भये। बीचमैं अवकाश देखिके पंडितश्रीजय- कृष्णजीमहात्माके पास श्रीआत्मपुराणआदिक ग्रंथनका बी श्रवण करतेरहे। औ भट्टाचार्य- श्रीभिक्षुशास्त्रीके विद्यार्थी श्रीभीमाचार्यशर्मनै- शा येकके पास न्यायग्रन्थनका अभ्यास बी करतेरहे औ तहाँ आयके प्राप्त भये निर्मल-

साधु श्रीगंगासंगजीके पास वेदांतके प्र
देखतेरहे ॥

किसी दिन स्वामीराघवानंदजीनें पं
तनकी सभा करवाईथी तहाँ पण्डितजीनें
तद्विषयक पूर्वपक्ष कियाथा ताका सम
आशुकवि श्रीगट्टूलालोपनामक गोवर्धनेश
किया था औ श्रेष्ठबुद्धि देखिके प्रसन्न हं
कहा कि:—हमारे वहाँ कछु अध्ययन क
आतेरहो ॥ तब तिनोंके पास शांकरउपनि
भाष्यका अध्ययन करते रहे ॥

फेर संवत् १९२६ के वर्षमें
मंडलीसहित स्वामीश्रीत्रिलोकरामजी के
श्रीप्रयागराजके कुम्भपर जायके कल्प
किया । तहां पंडितश्रीकाकारामजीके वि
प्रयागवासी महोपराम संतोषरूप ख
महात्माश्रीब्रह्म विज्ञानजी तथा तिनके

उत्तमपरमहंस श्रीकाशीवाले अमरदासजी। कनखलवाले अमरदासजी। बडे आत्मस्वरूपजी। महापण्डित ज्योतिःस्वरूपजी। तथा मंडलेश्वर आदित्यगिरजी। आदित्यपुरीजी फणीन्द्रयति। ब्रह्मानंदजी। महंतहरिप्रसादजी। सुमेरगिरिजी। बलदेवानदजी आदिक अनेकमहात्माओंका समागम भया॥ तहां किसी प्रसंगसैं महात्मा काशीवाले अमरदासजी के पास पण्डितजीनैं प्रश्न किया:—

१ (१) प्रश्नः—किं विदुषो लक्षण ?
(२) उत्तरः—रागादिदोषराहित्यम्॥

२ (१) प्रश्नः—रागाद्यभावे संति इष्टानिष्टयोः प्रवृत्तिनिवृत्त्यनुपपत्तेर्विदुपः प्रारब्धभोगो न स्यात् ?
(२) उत्तरः—अदृढरागादित्वं विदुषो लक्षणम्॥

३ (२) प्रश्नः—अदृढरागादेः किं लक्षण
(२) उत्तरः—नैरंतर्येण रागाद्यभा
(विचारनिवर्त्यरागादित्वं) ६
रागादित्वं ॥

४ (१) प्रश्नः—सुषुप्तौ सर्वप्राणिनां रा
द्यभावेन नैरंतर्येण रागाद्यभा
अज्ञेष्वपि तज्ज्ञलक्षणस्यातिव्या
सेत्स्यति ?।
(२) उत्तरः—यद्यपि सुषुप्तौ अन्तःकर
भावात्त्वेवमस्तु तथापि जाग्रदाद ७
करणसबंधे सति नैरंतर्येण रा
भावत्वमदृढरागादित्वंइति तु नातिव्या

५ (१) प्रश्नः—सुषुप्तौ संस्काररूपेणांतःक
सद्भावेनांतःकरणसंबंधसत्वादुक्त
णस्याज्ञेष्वतिव्याप्तिः ?

(२) उत्तरः—स्थूलांतःकरणसंबंधे सति इति स्थूलपदस्य निवेशे कृते नातिव्याप्तिः।

६ (१) प्रश्न—कृष्यादिकर्मणि संलग्नस्याज्ञस्यापि स्थूलांतःकरणसंबधे सत्यपि रागाद्य भावादुक्तलक्षणस्याज्ञेष्वतिव्याप्तिः ?

(२) उत्तरः—स्त्रीशत्रुप्रभृत्यनुकूलप्रतिकूलपदार्थसान्निध्ये स्थूलांतःकरणसंबंधे च सति नैरंतर्येण रागाद्यभावत्वं अदृढरागादित्वं तदेव विदुषो लक्षणम्।

७ (१) प्रश्नः—षष्ठसप्तमभूम्योस्तु सर्वथा रागाद्य भावेनादृढरागाद्य भावादुक्तलक्षणस्य तत्राव्याप्तिः।

(२) उत्तरः—दृढरागादिराहित्यं विदुषां लक्षणा सिद्धमिति वाच्यम्।

इसरीतिसैं प्रयागमैं प्रश्नोत्तर याथा ॥

वर्षरोजकी तीर्थयात्राके मिषकरि श्र
निर्गत औ तहांहीं प्राप्त भये श्रीगुरुका द
करिके तिनोंकी आज्ञासैं श्रीकाशीपुरीमें प
तहाँ गौघाटपर स्थित अपूर्व परमोपरत स्व
नादिरहित एक तवासी समाहित प्राकृत
रहित किंचित्संस्कृतालापी श्रीरामनिरञ्ज
नामक पदवाक्यप्रमाणज्ञ स्वामीश्रीमहादेव
जीके पास जतेआते रहे। तिनोके पास
कछु प्रश्नोत्तर भया सो पण्डितजीकृत प्र
त्तरकदम्ब नामक ग्रन्थमें प्रसिद्ध है।

तहां दर्शनस्पर्शन करिके श्रीगयाश्राद्ध
आयेतब श्रीकाशीराजकेमंत्रीने मिलनेकी इ
विज्ञापन करीथी।अनवकाशतैं मिलाप न भ
फेर तहांसें गोकुलमथुराआदि व्रजमण्डल
यात्रा करीके पुनः मुम्बई पधारे। तहां
श्रीगुरुका कछुकदिन समागम भया।

फेर तदाज्ञापूर्वक कच्छदेशमें आयके स्वानुजलालजीका विवाह किया ॥ पीछे रामबाई नामक स्वकन्याका जन्म भयाहीथा । तदनंतर गार्हस्थ्यसुखभोगविषै उदासीन हुये पादोनद्विवर्षपर्यंतकर्णपुरनामकग्राममेंग्रामाधीशोंके गृहमें पूज्य होयके स्थित एकांतभजनशीलताआदिक अनेकसद्गुणालंकृत देशप्रतिष्ठित महात्मासाधु श्रीमानईश्वरदासजीकूं श्रीवृत्तिप्रभाकररूप भाषा ग्रन्थ औ श्रीपंचदशीआदिक संस्कृतग्रन्थनका अध्ययन करातेहुये रहेथे । वे महात्मा पंडित जीविषै देहांतपर्यन्त कृतघ्नतानाशक गुरुबुद्धि धारतेथे ॥ ताके मध्य कोटडी महादेवपुरीविषै स्थित श्रीमानअर्जुनश्रेष्ठ नामक महात्माकूं मिलने गयेथे । तहां तिनोंकी इच्छासें सार्धद्विमासपर्यन्त रहिके सानन्दगिरिश्रीगीताभाष्यका परस्पर विचार करते भये ॥

फेर तहां कच्छदेशमें द्वितीयवार श्रीगु
का आगमन भया। तब तिनोंके साथि वि
रतेहुये श्रवणाध्ययन करतेरहें। तब तिनों
साथिहीं शंखोद्धार (बेट) औ द्वारिकामें
जायके स्वदेशमें आये॥ फेर गुरुआज्ञापूर्व
मुंबई पधारे तब उत्तमसंस्कारवान उत्तमा
कारी रा. रा. श्रेष्ठशरीफभाई सालेमहंमद त
परमविद्वान् सुसुहृत् उत्तमाधिकारी रा. रा. मन
सुखराम सूर्यरामभाई त्रिपाठी इन दोअधिक
रिनकूं श्रवणाध्ययन करावतेरहे॥ तब प्रसं
प्राप्त तैलंगदेशीय पदवाक्यप्रमाणज्ञ याज्ञिक
ब्रह्मण्यमर्थीद्रशर्माशास्त्रीजी तहां विरा
तिनोंके पास शारीरभाष्यसहित ब्रह्मसूत्रन
शांतिपाठपूर्वक श्रवण करतेरहे। तब श्रीस्वाम
स्वरूपानंदजी सहाध्यायी थे॥

अनंतर शरीफभाईआदिककी प्रार्थनासैं श्रीपंचदशीकी भाषाटीका तथा श्रीविचारसागरके मंगलके पंचदोहाकी टीकापूर्वक टिप्पणिका तथा श्रीसुंदरविलासके त्रिंशतितमें त्रिपर्यंयनामक अंगको टीकासहित टिप्पणिका तथा श्रीविचारचंद्रोदय । वृत्तिरत्नावली । सटीक बालबोध । संस्कृत श्रुतिषड्लिंग संग्रह । श्रीवेदस्तुतिकी टीका । स्वामीश्रीत्रिलोकरामजीकृत मनोहरमालाकी टिप्पणिकासहित सर्वात्मभावप्रदीप आदिकग्रंथनकूं रचतेभये ॥ उक्त सर्व ग्रन्थ छपेहैं औ श्रीवेदांतकोश । बोधरत्नाकर । प्रमादमुद्गर । प्रश्नोत्तरकदंब । पट्दर्शनसारावलि । मोहजित्कथा । सदाचारदर्पण । ज्ञानागरित् । भूमिभाग्योदय रूपकादर्श औ संशयसुदर्शनआदिकग्रंथ किंचित्अपूर्ण होनेतें छपे नहीं है । पूर्ण होयके छपेंगे ॥

संवत् १९३० की शालमें आप बडोद
पधारे थे। सार्धमासपर्यंत रहे ॥ वहाँसैं मुं
पधारे पीछे श्रीगुरु परब्रह्मसमरसभावकूं प्र
भये। जब पंडितजी महोत्सवपर पधारेथे
संवत् १९३३ की शालमें भावनगरके म
राजा तख्तसिंहजी तथा महामंत्री गौरीशं
उदयशङ्कर तथा उपमंत्री श्यामलदास
परमानंददास मुंबईविषैं मिले औ तिसीव
स्वज्येष्ठभ्राता मूलराज अरु धर्मपत्नीका दे
भया औ जूनागढके महामंत्री ब्रह्मनिष्ठ
गोकलजी झाला मुम्बईगत चीनावागमें मि
तहाँ प्रथम अज्ञातहुये पीछे किसी स्वामीकेवा
सैं विदितभये। यातैं वीतरागताकरि उपमित भ
त्रिपाठी रा. रा. मनःसुखराम सूर्य
शर्माकी श्रीकच्छमहाराजाश्रोंकी आज्ञाप
राओबहादुर दिवानबहादुर महामंत्री श्रीम

भाई यशभईद्वारा पूर्णसहायताप्रदानपूर्वक
ार्थनासैं तथा श्रीभावनगरके महाराज तथा
श्रीवढवाणके महाराज तथा श्रेष्ठ हरसुखराय
वितसीदास तथा श्रेष्ठ प्रयागजी मूलजीआदिक
नद् गृहस्थनकी सहायताप्रदानपूर्वक इच्छासैं
ईशा केन कठवल्ली प्रश्न मुंडक मांडूक्य तैत्ति
रीय औ ऐतरेय इन अष्टउपनिषदनका सटीक
श्रीशङ्करभाष्यके व्याख्यानसहित व्याख्यान-
ारिके छपवाया है ॥

तदनन्तर संवत् १९३९ की शालमें भाव-
नगर जायके तहां राज्यादिकसैं योग्यसत्कार-
कूं पायके श्रीप्रयागके कुम्भपर द्वितीयवार
धारे ॥ तहां महात्मा स्वामी श्रीत्रिलोकराम-
जी तथा श्रीमद्मरदासजी तथा खेरपुरके महंत
जन्मतैं वाक्सिद्धिवान् साधुश्रीगुरुपतिजी ताके
शिष्य संगतिदासजी तथा साधबेलाके महंत

श्रीहरिप्रसादजी तथा श्रीत्रिलोकराम
शिष्य पंडितअनंतानंदजी तथा पण्डितकेश
दजी तथा पण्डितभोलारामजी तथा पंडित
दासजी तथा परमविरक्त मंडलेश्वर स
ब्रह्मानंदजी तथा साधुश्रीदयालदासजी
श्रीमयागजीआदिक अवधूतमंडल इ
अनेक महात्माओंका दर्शनसंभाषण कि
फेर श्रीकाशीजीमें आये ॥ तहां
त्रिलोकरामजीकी मंडलीके साथिही पंचक्र
की यात्रा करी औ ब्रह्मनिष्ठ महात्मा पं
अमरदासजी तथा श्रीद्वितीयतुलसीदा
शिष्य वरणानदीपर विराजित साधुश्री
दासजीका दर्शन भाषण किया। तथा श्री
दंडीस्वामी श्रीभास्करानंदजीका तथा
स्वामी पंडित श्रीविशुद्धानंदजीका तथा
श्रीतारकाश्रमजीका तथा द्रवेश्वरमठाधी

मी श्रीरामगिरिजीका तथा तिनके शिष्य योगि-
राज श्रीरुद्रानंदजीका तथा त्रिशूलयतिके मठमें
स्थित स्वामी श्रीवीरगिरिजीका औ भरूचवासी
स्वामी श्रीअद्वैतानंदजी आदिकका दर्शन संभा-
षण किया ॥ पीछे स्वामी श्रीत्रिलोकरामजी-
की आज्ञासैं श्रीअयोध्याके प्रति पधारे। सर्वदा
स्वकन्या रामबाई तथा भ्रातृपुत्री लील बाई
साथि रही ॥ तहां भगवन्मंदिरोंके दर्शनपूर्वक
सिद्ध श्रीरघुनाथदासजी तथा सिद्ध श्रीमाधव-
दासजीके दर्शन था सरयूस्नान करिकें श्री
नैमिषारण्यविषै पर्यटन करिकें ब्रजमंडलमें
विचरिके श्रीपुष्करराज तथा सिद्धपुरके सन्निध
सरस्वतीका स्नानादि करिके श्रीडाकोरनाथका
तथा वडोदानगरगत ज्ञानमठमें श्रीरामगुरुकी
तथा श्रीसद्गुरुचापुसरस्वतीकी समाधिके तथा
चरणपादुकाके दर्शनपूर्वक मंत्रीवर श्रीमणि-

भाई यशभाईका मिलाप करिके फेर मुम्बईमें पधारे ॥ तहांसे श्रीकच्छदेशविषे आये तहां मणिभाई मंत्रीसहित श्रीकच्छमहात्माओंका मिलाप भया ॥

फेर संवत् १९४० की शालमें महाराजाधिराजश्री ५ मत्हयुआवीशकृष्णप्रतापसाहिबहादुरशर्मांका प्रेमपत्र आया सो बांचिके बड़ा हर्ष भया ॥ फेर श्रीहथुवासें काश्मीरी पंडित जनार्दनजीकूं दर्शनके निमित्त मजल ग्राममें भेजा था। अनन्तर बहुत मुमुक्षु जनोंकी जिज्ञासापूर्वक प्रार्थनासें यजुर्वेदीय श्रीबृहदारण्यकोपनिषद्के हिंदीभाषा में व्याख्यान के लिखानेका स्वपुत्रके हस्तसें ही प्रारंभ करिके पांच वर्षोंसें ताकी समाप्ति करी। बीचमें श्रीकच्छमहाराजाओंकी आज्ञासें श्रीसिहशीशगढ ग्राममें मकान बनायके निवास किया। अबां

तत्कालमैं ही श्रीहथुआमहाराजकी तीव्र जिज्ञासासैं आकर्षित हुए स्वानुज लालजीसहित श्रीकाशीपुरीके प्रति जिगमिषा करिके मुंबईमें आये ॥ तहां तीन दिनके अनन्तर महाराजके भेजे पंडित जनार्दनजी सामने लेनेकूं आये। श्रीपुरीमें पहुँचे तब श्रीहथुवामहाराज सन्मुख पधारे औ दंडवत् प्रणाम किया औ दुर्गाघाटपर महाराज श्रीडुमरांवोके बगीचेमें श्रेष्ठसत्कारपूर्वक निवास करवाया था। तहां प्रतिदिवस आप मुखचर्चाश्रवणअर्थ पधारते थे। फिर पंडितजीके साथिहो स्वसद्गुरु दंडीस्वामी श्रीमाधवाश्रमजीकी सन्निधिमें चैतन्यमठविषै राजा पधारते थे। तहां बी परमानन्दकारी प्रश्नोत्तररूपवचनविलास होता रहा तिस प्रसङ्गमें अनेक महात्माओंके दर्शनअर्थ महाराजकेसहचारी ब्राह्मणोंके सहित प्रतिदिन पंडितजी प-

धारते थे ॥ फेर महाराजकी आज्ञासैं मुं
पर्यंत पंडितजनार्दनजीरूप सार्थवाहकके
पधारे ॥ मध्यमैं जाके हस्तसें निवेदित
साक्षात् हरि भोगते हैं ऐसी सुभक्ता
हीरबाई ब्राह्मणीकूं दर्शन देने अर्थ
ग्राममैं ७ दिन वसिके मुंबईद्वारा फेर श्री
देशमैं स्वानुजसहित आयके उक्त
समाप्त किया ॥

कछुक काल स्वदेशगत सत्संगी
ग्रामोंमैं विचरते रहे। फेर संवत् १९४
शालमैं श्रीहरिद्वारके कुंभपर गमनअर्थ
श्रीईश्वरदासजीके शिष्य प्रेमदास सहि
कराचीनगरमैं पधारे ॥ तहां पण्डित
रामकेतनुज पंडित श्रीजयकृष्णजीआदि
सत्संगी जन वाहनोंसैं सन्मुख आयके
तहां दश दिन कथा-श्रवण भया तब

वादके केइक सत्संगी लेनेकूं आये तिसकरि-के तहां पधारे। तब पंडित जयकृष्णजी साथि-ही रहे॥ फेर कोटडोमें आयके ताकी सन्निधिमें स्थित गोधुमलकेटंडेमें पंडित स्थाणुरामजीके गृहमें एक रात्रि रहे। सवेरमें सिंधदफ्तरदार-साहेबका अवलकारकुन मिस्टर तजुमल चोइथ-राम, विष्णुराम' केवलराम औ छत्तमल ये गृहस्थ अश्वशकटिकासें लेनेकूं आये तब तदा-रूढ होयके शहर हैदराबादको शोभा देखते हुए नगरसें बाहिर छत्तमलके शिवालयमें चार दिवस निवास किया। तहां अहर्निश ईश्वर-भजनपरायण मौनी दुग्धाहारी एक अपूर्व ब्रह्मचारीका दर्शन भया औ नगरमें एक पर-मोत्तम ज्ञानादिगुणसं पन्न कलाचंदनामक भक्त-का दर्शन भया औ केइक उत्तम भजनवानोंके स्थान देखे। स्वनिवासस्थानमें सत्संगीजन

प्रतिदिन श्रवणअर्थ आते थे अरु दर्शननिमि
नरनारीका प्रवाह प्रचलित भया था ॥ वहां
चलनेके दिनमें पंडित युक्तिरामनामक संत
स्वस्थानमें आग्रहपूर्वक बुलायके पूजा सत्का
किया ॥ वहांसें लेआनैच ले गृहस्थही रेलतल
छोड़नेकूं आये। फेर तहांसें शिखर सह
आयके एक रात्रि रहे ॥ साधबेलानाम
सन्तनके स्थानका दर्शन किया औ रोडीग्राम
जायके उदासीनपरमहंस पण्डित केशवानन्द
जो अमूलकदासजी महात्मा के शिष्यथे उन
मिले औ परमार्थी वसणभक्तकूं बी मिले ॥

फेर वहांसें मुलतान तथा लाहोरके मा
र्गसें अमृतसरमें आये। तहां शेठ ताराचन्द
चेलारामकी दुकानपर एक रात्रि रहे ॥ व
महाराजा श्रीकृष्ण प्रतापसाहिबहादुर शर्मा क
प्रेमपत्रक आया था सो वांचिके प्रसन्न भये

प्रातःकालमें श्रीगुरुनानकजी के दरबार का सरोवरके मध्य दर्शन भया ॥ फेर वहांसैं श्रीहरिद्वारपुरीमें पधारे। तहां नीलधारापर महात्मा श्रीत्रिलोकरामजीकी मंडलीका निवास था। वहाँ वसति करी ॥ ब्रह्मकुण्डका स्नान महज्जनोंका दर्शन सम्भाषण भया ॥ फेर वहांसैं उक्त मंडलीके साथि ही हृषीकेश पधारे ॥ वहां परोपकारक कमलीवाले महात्मा श्रीविशुद्धानन्दजी मिले औ गंगातीरनिवासी तपस्वीजी श्रीगुरुमुखदासजी मयारामजी अवधूत आदिक अनेक उत्तम सन्तोंका दर्शन भया। वहांसैं लौटिके श्रीअयोध्यापुरीमें आये। वहांसैं रेलमें बैठिके श्रीहथुवानगरमें जानैअर्थ अलीगंजमें आये। तहां अश्वशकटिकासहित महाराजका पंडित सामने लेनेकूं आया था सो श्रीहथुवानगरमें लेगया ॥ उसी दिनमें महा-

राजकी मुलाकात भई। प्रतिदिन महाराजकी मुलाकात भई। प्रतिदिन महाराजका समागम होतारहा। बीचमें श्रीसालिग्रामी नारायणी गंडकीनामक महानदीपर स्वामीआदिक सामग्री सहित स्नान करिआये औ स्थानापुरवासिनी देवीका दर्शन भी किया। फेर वहांसैं महाराजकी आज्ञासैं गयाजी गये। तहां श्राद्ध करिके गंगातीरवर्ति दिगाघाटपर महाराजके स्थानमें पधारे। उसी दिनमें संकेतसैं महाराजाधिराज श्रीकृष्णप्रतापसाहिबहादुर श्रीमान् भी तहां पधारे अक्षयतृतीया तहां भई। तीन दिन महाराजका समागम होतारहा। फेर वहांसैं थानापुर आयके धूम्रशकटिका महाराजके साथि ही बैठिके श्रीवाराणसी आये। तहां पिशाचमोचनपर स्थित हथुआधीशके बगीचेमें तीन दिन निवास भया। गं

स्नान औ महात्माओंका दर्शन संभाषण भया ॥
फेर वहांसैं महाराजाकी तरफसैं मिलित भेट औ पौशाक स्वीकार करिके तदाज्ञापूर्वक श्रीप्रयाग चित्रकूट पुण्डरीकपूर औ पुन्यनगरके मार्गसैं श्रीमुम्बईमें आयके शेठ श्रीयादवजी जयरामके स्थानमें चातुर्मास्यपर्यंत वसिके ब्रह्मसत्रकी सामग्री संपादन करिके रेलके रस्ते स्वदेशविषै आयके संवत् १९४८ के अश्विन शुद्ध १० सैं आरंभिके भगवन्महोत्सव नामक ब्रह्मसत्र किया। तहाँ केइक अपूर्व सन्यासी साधु ब्राह्मण औ सत्समागमीजनोंका अपूर्व समाज एकत्र भया था ॥ सभा संभाषणादि अद्भुत आल्हाद भया था। सो समाप्त करिके श्रीमुंबईमें आयके भाषाटीकायुक्त श्रीबृहदारण्यक तथा छांदोग्य ये दो उपनिषद् सार्ध द्विवर्षमें छपवाये ॥

फेर श्रीप्रयागराजके कुम्भपर जा स्वामिश्रीत्रिलोकरामजीकी गंगापार मंडलीमें कल्पवास किया॥ वहां हथुआवी मनुष्य आये थे तिनके साथि राजानै पत्रसां रौप्यशतक भेज्या था सो स्वामीजीके तिनोंकी आज्ञासैं गंगातीरस्थ पण्डितनके यथायोग्य विभक्त किया गया॥

फेर वहांसैं वे मंडलीसहित श्रीकाशीपु पधारे॥ स्वामीजी दुर्गाघाटपर रहे। पण्डि पिशाचमोचनपर स्थित महाराजके वगीचे २५ दिन रहे। प्रतिदिन महाराजका समा होतारहा॥ चार वजे बाद नित्य अश्वशक कासैं महाराजाके सहचारियोंकरिसहित भि भिन्न स्थानमें महात्माओं दर्शनकूं जाते थे। स्वामी श्रीमाधवाश्रमजी। स्वामी श्रीविशु

नंदजी । स्वामी श्रीभास्करानंदजी । स्वामी श्रीपूर्णनंदजी । म ात्मा श्री अमरदासजी ॥ पंडित श्रीरामदत्तजी । महांत श्रीपवारिजी । साधु श्रीविक्रमदासजी आदिक अनेक उपरतिशील महात्माओंका दर्शन भापण भया ॥ महाराज की यज्ञशालाका भी इष्टिसहित दर्शन भया ॥ फेर चलनेके पहिले दिन सायंकालमें पंडित शिवकुमारजी । राखालदासन्यायरत्नभट्टाचार्य । कैलाशचंद्रभट्टाचार्य आदिक उत्तमपंडितनकी सभा करवाई थी । तिन विद्वद्वरोंका दर्शन संभाषण भया ॥ पंडितनके विदा हुए पीछे स्वकृत आशीर्वचनरूप श्लोक महाराजके समक्ष अर्थसहित उच्चारया ॥

॥ श्लोक ॥

श्रीमत्कृष्णप्रतापतुल्यनृपति-
लोंकेऽधुना दुर्लभः
श्रीमद्रामसमोऽस्त्यसौ शुभगुणैः
सद्धर्मसत्सेतुकृत् ।
स्वाज्ञानैककुरावण य कहरो
मुक्त्येकलंकासुजित्
शांतिश्रीजनकात्मजाप्तिसहितो
भूयात्स्वग्रामैकराट् ॥ १ ॥

सो चतुर्था अर्थसहित सुनिके पण्डित-सभासहित नृपति परमप्रसन्न भये ॥ उत्थान करिके अभिनंदन किया। आनदमैं आलिंगित होयके मिले भेटें औ पोशाक समर्पिके विदा करी। प्रातःकालमैं वहाँसे प्रयाण करिके पण्डितजी श्रीमुम्बईमें पधारे॥ पीछे श्रीकच्छ

देशमें पधारे। फेर संवत् १९५१ के वर्षमें प्रभासादियात्राकी जिगमिषा करिके गृहसैं निर्गत हुए अगनबोट (धूमनौका) सैं वेरावल पधारे। तहाँ रावबहादुर जूनागढ़के दीवानजीसाहेब श्री हरिदास विहारीदास जालीबोटमें बिठायके बंदरपर लेगये॥ वहाँ शेठ शरीफ स.लेमहंमदादि सद्गृहस्थोंका मिलाप भया॥ तिनकी भ.वन.सैं २५ रोज तक श्रीजूनागढ़ सरकारके मकानमें निवास भया॥ मध्यमें प्रभास औ प्राचीननामक तीर्थकी यात्रा करि आये॥ फेर धूम्रशकटिकाद्वारा श्रीजूनागढ़ पधारे। तहां श्रीदिवानसाहेबकी आज्ञासैं शकटिका सैं छापखानेका मेनेजर महादेवभाई सामने आयके लेगया॥ औ नायबदिवानसाहेब श्रीपुरुषोत्तमरायके नवीन गृहमें निवास करवाया॥ तहाँ एक मासभर रहे॥ वहाँ श्रीनरसिंहमेहेता,

दामोदरकुंड, मुचुकुंदगुफा और शहरके मुख्य
स्थानोंका प्रदर्शन भया और रैवताचल (गिरि-
नारपर्वत) की यात्रा भई ॥ एकत्र भई सभामें
मध्य श्रीदिवानसाहेबके गृहमें पंडितजीका
वेदांतविषयक संभाषण भया ॥ फेर वहांसैं
विदा होयके वेरावल आये ॥ तहां वेवठदार
साहेब और व्यापाराधिकारी शेठ शरीफ भा
रेलपर सामने आयके निवासस्थानमें लेगये।

फेर वहांसैं धूम्र नौकाद्वारा श्रीमुंबई
आगमन भया। तहां महाराज श्रीजयकृष्ण
तथा साधु श्रीसङ्गतिदासजी और परमगुरु
श्रीमन्‌:सुखराम सूर्यरामजीआदिक सज्जनोंका
समागम भया ॥ और स्वकीय दो पौत्रनके
मौंजीबंधनके प्रसङ्गसैं चारि यज्ञकी चिकीर्षाके
लिए सर्वसामग्री सम्पादनकरिके स्वदेशमें पधारे

संवत् १९५२ के वैशाख कृष्णद्वितीया द्वादशीपर्यन्त श्रीगायत्रीपुरश्वरण। श्रीमहारुद्र-यज्ञ। विष्णुयज्ञ औ शतचंडी येचारि यज्ञकिये तहां स्वामी श्रीआत्मानंदजी और केइक संत अरु सत्समागमियोंका बी आगमन भया था। अनन्तर सम्वत् १९५४ सालसैं आरम्भकरिके गढसीसासैं सार्द्धक्रोशपर पूर्वदिशामैं प्राचीन विल्ववनविषै प्राचीनकालमैं आविर्भूत देशप्रति-ष्ठित स्वयंभू श्रीविल्वेश्वर नामक महादेवका मंदिर स्वल्प होनेतैं श्रावणमासमैं बहुत पूजक ब्राह्मणोंके समावेशके अयोग्य जानिके और तहां जन्माष्टमीके दिन होते मेलामैं विष्णुदर्शन का अलाभ अरु दर्शनार्थीजनोंकूं मार्गका कष्ट जानिके कच्छदेशमैं पर्यटन करिके राज्यादि-कसैं प्राप्त द्रव्यसैं विस्तीर्ण सुन्दर शिवालय

तथा विष्णुमंदिर तथा वहांसैं गढसीसा तोड़
सड़क करावते भये ॥

अभी संवत् १९५६ के वर्ष में आ
स्वदेशमें ही जीवन्मुक्ति के विलक्षणआनंदअ
अल्पायासयुक्त हुए स्थित भये हैं ।

उक्तप्रकारके सत्कर्मोंके करने की इच्छ
इनकूं सर्वदा रहती है॥ ये महात्मा राग, द्वे
मत्सर, वैर, विषमता, निंदा, असूया-आदि
दुर्गुणोंतैं रहित हैं । और अमानित्व, अदंभि
त्व, अहिंसा, क्षमा, सौशील्य, सौजन्य, अक्रो
शांति, धैर्य, मोह,शोकरहित्य आस्तिक्य, भ
वैराग्य, ज्ञान अरु उपरति आदिक अने
सद्गुणोंकरि अलंकृत हैं ।

॥ इति ॥

ॐ

श्रीविचारचंद्रोदय

॥ नवमआवृत्तिकी अनुक्रमणिका ॥

कलाङ्कः	विषय	आरंभ-पृष्ठाङ्क.
१	उपोद्घातवर्णन	१
२	प्रपंचारोपापवाद	२०
३	देह तीनका मैं द्रष्टा हूं	२६
४	मैं पंचकोशातीत हूं	६६
५	तीनअवस्थाका मैं साक्षी हूं	११४
६	प्रपञ्चमिथ्यात्ववर्णन	१३२
७	आत्माके विशेषण...	१६६
८	सतचितआनंदका विशेषवर्णन	१८८
९	अबाच्यसिद्धांतवर्णन	२१२
१०	सामान्यविशेषचैतन्यवर्णन	२२३

॥ षोडशकला प्रथमविभागः ॥

॥ श्रीश्रुतिषड्लिङ्गसंग्रहकी अनुक्रमणिका ॥

विषय	पृष्ठा
१० छान्दोग्योपनिषल्लिङ्गकीर्तनम्	३
(६) षष्ठाध्यायलिङ्गकीर्तनम् ...	३
(७) सप्तमाध्यायलिङ्गकीर्तनम् ...	३
(८) अष्टमाध्यायलिङ्गकीर्तनम् ...	३
११ बृहदारण्यकोपनिषल्लिङ्गकीर्तनम् ...	३
(१) प्रथमाध्यायलिङ्गकीर्तनम् ...	३
(२) द्वितीयाध्यायलिङ्गकीर्तनम्	३
(३) तृतीयाध्यायलिङ्गकीर्तनम्	
(४) चतुर्थाध्यायलिङ्गकीर्तनम् ..	३

ॐ

❀ श्रीविचारचंद्रोदय ❀

नवनआवृत्तिकी अकारादिअनुक्रमणिका ।

टि:--टिप्पणांकनकूं सूचन करै है।
अन्य सर्व अङ्क पृष्ठांकनकूं सूचन करैहैं।

पृष्ठाङ्क.

पृष्ठाङ्क.

* ॐ गुरुपरमात्मने नमः *

श्रीविचारचन्द्रोदय ।

अथ प्रथमकलाप्रारभः ॥ १ ॥

❀ उपोद्घातवर्णन[1] ❀

* मनहर छन्द[2] *

पुरुषइच्छाविषय पुरुषार्थ जोई सोई ।
दुःखनाश सुखप्राप्तिरूप मोक्ष मानहु ॥
हेतु ताको ब्रह्मज्ञान सो परोक्ष अपरोक्ष ।
तामें अपरोक्ष दृढ अदृढ दो मानहु ॥
मोक्षको साक्षात्हेतु दृढअपरोक्षज्ञान ।
हेतु[3] ता विचार जीवब्रह्मजग जानहु ॥
तीनवस्तुरूप जड चेतनदो जड मिथ्या-
माया ब्रह्मचित् 'सो मैं' पीतांबर स्यानहु[4] १

* १ प्रश्नः—पुरुषार्थ सो क्या है ?

उत्तरः—सर्वपुरुषनकी इच्छाका जो विषय सो पुरुषार्थ[5] है ॥

* २ प्रश्नः—सर्वपुरुषनकूं किसकी इच्छा होवैहै

उत्तरः—सर्वपुरुषनकूं सर्वदुःखनकी निवृत्ति औ परमानंदकी प्राप्तिकी इच्छा होवैहै ॥

* ३ प्रश्नः—सर्वदुःखनकी निवृत्ति औ परमानंदकी प्राप्ति सो क्या है ?

उत्तरः—सर्वदुःखनकी[6] निवृत्ति[7] औ परमानंद[8] की प्राप्ति[9]। यह मोक्षका[10] स्वरूप है ॥

॥ १ ॥ प्रतिपादन करने योग्य अर्थकूं मनमैं राखि तिसके अर्थ अन्यअर्थका प्रतिपादन उपोद्घात है। जैसैं किसीकूं दूसरेके गृहसैं छाछ लेनेकी होवै। त यह बात मनमैं राखिके तिसके अर्थ "तुम्हारी दुग्ध देतीहै वा नही ?" इत्यादिरूप अन्यवार्ताका कथ उपोद्घात है। जैसैं इहां प्रतिपादन करनेयोग्य

वार। ताकूं मनमैं राखिके तिसके आरम्भअर्थ ग्रन्थ
के प्रतिपादनार्थका कथन उपोद्घात है ॥

॥ २ ॥ कोईयी रागके ध्रुवपदमैं गाया जावै है ॥

॥ ३ ॥ अन्वयः—ता (दृढअपरोक्षज्ञानका) हेतु
चार है ॥

॥ ४ ॥ ऐसैं निश्चय करो ॥

॥ ५ ॥ धर्म अर्थ काम मोक्ष। इन च्यारीका नाम
पुरुषार्थ है ॥ तिनमैं प्रथमके तीन गौण हैं। तिनकूं
छोडिके इहां अंतके मुख्य पुरुषार्थका ग्रहण है ॥

॥ ६ ॥ अज्ञानसहित जन्ममरणादिक दुःख कहियेहै॥

॥ ७ ॥ मिथ्यापनका निश्चयरूप बाध निवृत्ति है ॥

॥ ८ ॥ परमप्रेमका विषय परमानंद है ॥

॥ ९ ॥ इहां कंठभूषणकी न्यांई नित्यप्राप्तकी
प्राप्ति मानी है ॥

॥ १० ॥ कर्त्ताभोक्तापनैंआदिअन्यथाभावकूं छोडिके
स्वरूपसैं स्थितिहीं मोक्ष है ॥ कितनैक लोक तौ स्वर्ग
वैकुण्ठ गोलोक ब्रह्मलोक आदिककी प्राप्तिकूं मोक्ष

* ४ प्रश्नः—मोक्ष किससैं होवै है ?

उत्तरः—मोक्ष ब्रह्मज्ञानसैं[11] होवैहै ॥

* ५ प्रश्नः—ब्रह्मज्ञान[12] सो क्या ?

उत्तरः—ब्रह्मज्ञान । सो ब्रह्मस्वरूप यथार्थ जानना ॥

* ६ प्रश्नः—ब्रह्मज्ञान कितनै प्रकारका है ?

उत्तरः—ब्रह्मज्ञान । परोक्ष औ अपरोक्ष भेदतैं दो प्रकार है ।

* ७ प्रश्नः—परोक्षब्रह्मज्ञान सो क्या है ?

उत्तरः—(१ परोक्षब्रह्मज्ञानका स्वरूप

जानते हैं । सो वेदसैं विरुद्ध है । ऊपर कह्या मोक्ष स्वरूप वेदअनुसारी है ॥

॥ ११ ॥ कर्म औ उपासनासैं चित्तकी शुद्धि एकाग्रतारूप ज्ञानके साधन होवैं हैं । मोक्ष नहीं ॥

॥ १२ ॥ ब्रह्मसैं अभिन्न आत्माका ज्ञान । मोक्षका हेतु है ।

"सच्चिदानन्दरूप ब्रह्म है" ऐसा जो जानना[13] सो परोक्ष ब्रह्म ज्ञान है ॥

* ८ प्रश्नः-परोक्षब्रह्मज्ञान किससैं होवे है ?

उत्तरः-(२ परोक्षब्रह्मज्ञानका हेतु) सद्गुरु औ सत्शास्त्रके वचनमैं विश्वासके रखनैंसैं परोक्षब्रह्मज्ञान होवै है ॥

* ९ प्रश्नः—परोक्षब्रह्मज्ञानसैं क्या होवै है ?

उत्तरः-(३ परोक्षब्रह्मज्ञानका फल॰) [14]असत्त्वापादक आवरणकी निवृत्ति होवै है ॥

* १० प्रश्नः-परोक्षब्रह्मज्ञान कब पूर्ण होवैहै ?

॥ १३ ॥ परोक्षज्ञान। "तत्त्वमसि" महावाक्यगत "तत्" पदके अर्थकूं जनावताहै। यातैं सो अपरोक्षअद्वैतज्ञानविषै उपयोगी है ॥

॥ १४ ॥ "ब्रह्म नहीं है" इसरीतिसैं ब्रह्मके असत्त्वकूं आपादक कहिये संपादक आवरण। असत्त्वापादकआवरण है ॥

उत्तरः-(४ परोक्षब्रह्मज्ञानकी अवधि)
परोक्षब्रह्मज्ञान । ब्रह्मनिष्ठगुरु औ
शास्त्रके अनुसार ब्रह्मस्वरूपके निर्धार
पूर्ण होवैहै ॥

* ११ प्रश्नः-अपरोक्षब्रह्मज्ञान सो क्या है

उत्तरः-"सच्चिदानंदरूप ब्रह्म मैं हूं"
जो जानना । सो अपरोक्षब्रह्मज्ञान है ॥

* १२ प्रश्नः-अपरोक्षब्रह्मज्ञान किससैं होवै

उत्तरः-गुरुके मुखसैं "तत्त्वमसि" आदि
महावाक्यके श्रवणसैं अपरोक्षब्रह्मज्ञान होवै

* १३ प्रश्नः-अपरोक्षब्रह्मज्ञान कितने प्रकार

उत्तरः-अपरोक्षब्रह्मज्ञान अदृढ औ
इसभेदतैं दोप्रकारका है ॥

* १४ प्रश्नः-अदृढअपरोक्षब्रह्मज्ञान सो क्या

उत्तरः—

(१ अदृढअपरोक्षब्रह्मज्ञानका स्वरूप)

असंभावना[15] और विपरीतभावनासहित[16] जो ब्रह्मआत्माकी एकताका निश्चय होवै। सो प्रदृढअपरोक्षज्ञान है ॥

*१५ प्रश्नः—अदृढअपरोक्षब्रह्मज्ञान किससैं होवैहै? उत्तरः—

(२ अदृढअपरोक्षब्रह्मज्ञानका हेतु)

॥ १५ ॥

१ "वेदांतविषै जीवब्रह्मका भेद प्रतिपादन किया है किंवा अभेद ?" यह प्रमाणगतसंशय है ॥ औ

२ "जीवब्रह्मका भेद सत्य है वा अभेद सत्य है ?" यह प्रमेयगतसंशय है ॥

यह दोनूं प्रकारका संशय असम्भावना कहिये है ॥

॥ १६ ॥ "जीवब्रह्मका भेद सत्य है औ देहादिप्रपंच सत्य है" ऐसा जो विपरीतनिश्चय। सो विपरीतभावना है ॥

१ कलुक मलविक्षेपदोषके होते श्रुतिन
का ज्ञान । औ
२ ब्रह्मकी अद्वैततामैं असंभवका ज्ञान
३ भेदवादी अरु पामरपुरुषनके संगके
इनकरि सहित पुरुषकूं गुरुमुखद्वारा
क्यके श्रवणसैं अदृढअपरोक्षब्रह्मज्ञान हो
*१६ प्रश्नः–अदृढअपरोक्षब्रह्मज्ञानसैं क्या
उत्तरः—

(३ अदृढअपरोक्षब्रह्मज्ञानका फल)

अदृढअपरोक्षब्रह्मज्ञानसैं
१ उत्तमलोककी प्राप्ति होवैहै । औ
२ पवित्रश्रीमान्‌कुलविषै जन्म होवै है ।
निष्कामताके हुये ज्ञानीपुरुषके
जन्म होवैहै ॥
*१७प्रश्नः-अदृढअपरोक्षब्रह्मज्ञान कबपूर्व

उत्तरः—

(४ अदृढअपरोक्षब्रह्मज्ञानकी अवधि)

सत्-चित्-आनंद आदिक ब्रह्मके विशेषणनके अपरोक्षभान हुए भी संशय[17] औ विपरीत भावना[18]का सद्भाव होवै। तब अदृढअपरोक्ष ब्रह्मज्ञान पूर्ण होवैहै ॥

* १८ प्रश्नः–दृढअपरोक्षब्रह्मज्ञान सो क्या है?

उत्तरः—

(दृढअपरोक्षब्रह्मज्ञानका स्वरूप)

असंभावना औ विपरीतभावनासैं रहित जो ब्रह्मआत्माकी एकताका निश्चय होवै। सो दृढअपरोक्षब्रह्मज्ञान है ॥

* १९ प्रश्नः–दृढअपरोक्षब्रह्मज्ञान किससैं होवैहै?

॥ १७ ॥ दोकोटिवाला ज्ञान संशय कहियेहै ॥
॥ १८ ॥ विपरीतनिश्चयकूं विपरीतभावना कहैहैं ॥

उत्तर:—

(२ दृढअपरोक्षज्ञानका हेतु)

गुरुमुखसैं महावाक्यके[19] अर्थके श्रवण म
औ निदिध्यासनरूप विचारके किये सैं दृ
अपरोक्षब्रह्मज्ञान होवै है ॥

* २० प्रश्नः—दृढअपरोक्षब्रह्मज्ञानसैं क्या होवै

उत्तर:—

(३ दृढअपरोक्षब्रह्मज्ञानका फल)

अभानापदकआवरण[20] औ विक्षेपरूप[21] अ

॥ १९ ॥ जीवब्रह्मकी एकताके बोधक वाक्य। म
वाक्य कहिये हैं ॥

॥ २० ॥ "ब्रह्मभासता नहीं" इसरीतिसैं
जो ब्रह्मकी अप्रतीति। ताका आपादक कहिये सं
करनैवाला आवरण। अभानापादकआवरण है।

॥२१॥ स्थूलसूक्ष्मशरीरसहित चिदाभास औ
धर्म कर्तापना भोक्तापना जन्ममरण आदिका विदे

सहित अविद्याकी कहिये अज्ञानकी निवृत्ति होयके ब्रह्मकी प्राप्तिरूप मोक्ष होवे है ॥

* २१ प्रश्नः-दृढअपरोक्षब्रह्मज्ञान कब पूर्ण होवेहै?

उत्तरः—

(४ दृढअपरोक्षब्रह्मज्ञानकी अवधि)

देहविषै अहंपनैंके ज्ञानकी न्यांई। इसज्ञानका बाधकरिके ब्रह्मसैं अभिन्न आत्माविषै जब ज्ञान होवै। तब दृढअपरोक्षब्रह्मज्ञान पूर्ण होवै है॥

* २२ प्रश्नः-विचार सो क्या है?

उत्तरः-(१ विचारका स्वरूप)

आत्मा औ अनात्माकूं भिन्नकरिके जाननाया सो विचार है।

* २३ प्रश्नः-यह विचार किससैं होवै है?

उत्तरः-(२ विचारका हेतु)

यह विचार । ईश्वर । वेद गुरु औ अप
22
अन्तःकरण । इन च्यारीकी कृपासैं होवै है
* २४ प्रश्नः-इस विचारसैं क्या होवै है
उत्तरः-(३ विचारका फल)
इस विचारसैं दृढ अपरोक्षब्रह्मज्ञान होवै है
* २५ प्रश्नः-यह विचार कब पूर्ण होवै है
उत्तरः-(४ विचारकी अवधि)

॥ २२ ॥

१ सद्गुरुआदिकज्ञानसामग्रीकी प्राप्ति ईश्वरकृ
२ शास्त्रअर्थके धारणकी शक्ति वेद कृपा है ।
३ शास्त्र औ स्वअनुभवके अनुसार यथार्थ उ
करना गुरुकृपा है ॥ औ
४ शास्त्रगुरुके वचनानुसार साधनोंका संपाद
अपनै अन्तःकरणकी कृपा है ।

यह विचार दृढअपरोक्षब्रह्मज्ञानके भये पूर्ण होवै है ॥

* २६ प्रश्नः-विचार किसका करना ?

उत्तरः-(५ विचारका विषय)

मैं कौन हूं ? २ ब्रह्म कौन है ? औ ३ प्रपंच क्या है ? इन तीनवस्तुनका विचार करना ॥

* २७प्रश्नः-इन तीनवस्तुका साधारणरूप क्या ?

उत्तरः—

१-२ "मैं औ ब्रह्म" सो चैतन्य है। अरु ३ प्रपंच सो जड है ॥[33]

* २८ प्रश्नः-चैतन्य सो क्या है ?

उत्तरः—

(१) जो ज्ञानरूप है। औ

॥ ३३ ॥ समष्टिव्यष्टिस्थूलसूक्ष्मकारणदेह औ तिनकी अवस्था अरु धर्म । प्रपंच कहिये है ॥

(२) सर्वघटादिकप्रपंचकूं जानता है औ
(३) जिसकूं अन्य मनइन्द्रियआदिक
जानि सकते नहीं।
सो चैतन्य है॥

* २६ प्रश्नः—जड सो क्या है ?
उत्तरः—
(१) जो आपकूं न जानैं। औ
(२) दूसरेकूं बी न जानैं
ऐसे जो अज्ञान[24] औ तिनके कार्य
भौतिकपदार्थ[26]। सो जड है।

॥ २४ ॥ "नहीं जानताहूं" ऐसे व्यवहारका आवरणविक्षेपशक्तिवाला अनादिभावरूप पदार्थ है।

॥ २५ ॥ आकाशादिकपांचभूत।

॥ २६ ॥ भूतनके कार्य पिंडब्रह्मांडादिक भौतिक है।

* ३० प्रश्नः-पर कहे ऊतीन वस्तु के विचारका किस रीतिसैं उपयोग है ?

उत्तरः-(६ विचारका उपयोग)

१"तत्त्वमसि" महावाक्यमैं स्थित "त्वं" पद औ "तत्" पदका वाच्यअर्थ[27] जो जीव औ ईश्वर[28]। तिनकी उपाधिरूप जो प्रपंच[29]। तिसकूं जेवरीमैं सर्पकी न्याईं औ ठाँठमैं पुरुषकी न्याईं औ मरुभूमिमैं मृगजलकी न्याईं। विचारकरि मिथ्या जानिके त्याग करना। यह प्रपंचके विचारका उपयोग है॥

॥ २७ ॥ चिदाभासयुक्त अंतःकरणसहित कूटस्थ चैतन्य। सो जीव है॥

॥ २८ ॥ चिदाभासयुक्त मायासहित ब्रह्मचैतन्य। सो ईश्वर है॥

॥ २९ ॥ समिष्ट औ व्यष्टिरूप तीनशरीर। पंचकोश [illegible] प्रपंच कहियं है॥

२ "मैं जो ('त्वं' पदका लक्ष्यार्थ) आत्मा
सो ('तत्' पदका लक्ष्यार्थ) ब्रह्म हूं।" इ
रीतिसैं ब्रह्मआत्माकी एकताकूं विचार
सत्य जानिके अवशेष रखना। यह "मैं कौ
हूं" औ "ब्रह्म कौन है" इस विचार
उपयोग (फल) है॥

* ३१ प्रश्न:-इस विचारका अधिकारी कौन
औ सो क्या करै?

उत्तर:—(७ विचारका अधिकारी)

१ इस विचारका अधिकारी उत्तमजिज्ञासु है
२ सो अधिकारी सद्गुरुकी कृपासैं उपोद्घा

॥ ३० ॥ विवेक वैराग्य षट्संपत्ति औ मुमुक्ष
इन च्यारीसाधनकरि सहित होवै औ ब्रह्मवित्गुरु
वेदांतशास्त्रके वचनविषै परमविश्वासी होवै। कुतर्क
चिन्‌ करे नहीं। ऐसा जो स्वरूपके जाननेकी तीव्र
वाला अधिकारी सो उत्तमजिज्ञासु है॥

स्माप्रादिककी प्रक्रियाकूं विचारिके "मैंहीं आप ब्रह्म हूं" इसरीतिसैं ब्रह्मआत्माकूं अपरोक्ष करिजानै ॥

३२ प्रश्नः-तिन प्रक्रिया के नाम कौन हैं ?

उत्तरः—

(१) उपोद्घात ॥

(२) प्रपंचका आरोप औ अपवाद ॥

(३) देह तीनका मैं द्रष्टा हूं ॥

(४) मैं पंचकोशतीत हूं ॥

(५) तीन अवस्थाका मैं साक्षी हूं ॥

(६) प्रपंचका मिथ्यापना ॥

(७) आत्माके विशेषण ॥

(८) सच्चिदानंदविशेषवर्णन ।

(९) अवाच्यसिद्धांतवर्णन ॥

॥ ३१ ॥ अद्वैतके बोध करनेका ॥ कोई बी प्रकार सो प्रक्रिया है ॥

(१०) सामान्यचैतन्य और विशेषचैतन्
(११) "त्वं" पद औ "तत्" प
वाच्यअर्थ औ लक्ष्यअर्थ अरु दो
लक्ष्यअर्थकी एकता ॥
(१२) ज्ञानीके कर्मकी निवृत्ति ॥
(१३) सप्तज्ञानभूमिका ॥
(१४) जीवन्मुक्ति औ विदेहमुक्ति ॥
(१५) श्रीश्रुतिषड्लिंगसंग्रहः ॥
(१६) वेदांतप्रमेय ॥

ये तिन [32] प्रक्रियाके नाम हैं ॥

इति श्रीविचारचंद्रोदये उपोद्घातवर्णनात्मिका प्रथमकला समाप्ता ॥ १ ॥
॥ ३२ ॥

१ प्रपंचका विचार प्रथम द्वितीय षष्ठ द्वाद
त्रयोदशवीं प्रक्रियाविषै किया है । औ

२ "प्रपञ्चसहित मैं कौन हूँ ?" याका विचार तृतीय चतुर्थ औ पंचम प्रक्रियाविषय किया है। औ
३ परमात्मा कौन है ? याका विचार दशम प्रक्रियाविषै किया है। औ

४ ब्रह्म आत्मा दोनूंके स्वरूपका विचार सप्तम अष्टम नवम एकादश औ चतुर्दशवीं प्रक्रियाविषै किया है। औ

५ प्रपंच औ ब्रह्मआत्माके स्वरूपका विचार पंचदशवीं प्रक्रियाविषै किया है ॥

सर्वप्रक्रियाका "तत्" "त्वं" पदार्थका शोधन औ तिनकी एकता का निश्चय प्रयोजन है ॥

॥ अथ द्वितीयकलाप्रारंभः ॥ २०।

॥ प्रपंचारोपापवाद ॥

॥ मनहर छन्द ॥

प्रपंचारोपापवाद करि निष्प्रपंच वस्तु
ब्रह्मजानिके अवस्तु–मायादिक मानिये॥
ब्रह्म माया संबंध रु जीवईश भेद तिन।
षट् ये अनादि तामें ब्रह्मानंत मानिये॥
वस्तुमें अवस्तु कर कथन आरोप
अवस्तु वस्तुकथन अपवाद जानिये॥
गुरुके प्रसाद यह युक्ति जानि पीतांबर।
34
तज तमका रज आरंज निज जानिये॥

॥ ३३ ॥ अन्वयः—अवस्तु बाधि वस्तुकथन
जानिये ॥

॥ ३४ ॥ अन्वयः—हे आरज कहिये
तमका रज तज ॥ निज (स्वरूप) जानियें ॥

* ३३ प्रश्नः–शुद्धब्रह्मविषै प्रपंचका आरोप[35] कैसे हुवा है ?

उत्तरः–अनादिशुद्धब्रह्मकेविषैं अनादि-[36] कल्पितप्रकृति[37] है। तिस प्रकृतिका ब्रह्मके साथि अनादिकल्पिततादात्म्यसंबंध है कहिये कल्पित-भेदसहित वास्तवअभेदरूप संबंध है। सो प्रकृति १ माया औ २ अविद्या औ ३ तमः–

॥ ३५ ॥ ब्रह्मरूप वस्तुविषै अज्ञानतत्कार्य रूप अवस्तुका कथन आरोप है ॥ याहीकूं अध्यारोप बी कहैहैं

॥ ३६ ॥ उत्पत्तिरहित वस्तु। स्वरूपसैं अनादि है ॥ ऐसे शुद्धब्रह्म। कृति। तिनका संबंध। ईश्वर। जीव औ तिनका भेद। ये षट् है अरु प्रवाहरूपसैं प्रपंच बी अनादि है ॥

॥ ३७ ॥ जो होवै नहीं औ स्वप्नपदार्थकी न्याईं भ्रांतिसैं भासै सो कल्पित है ॥

प्रधानप्रकृतिरूपकरि त्रिभागकूं पावती है।
१ जो शुद्धसत्त्वगुणयुक्त सो माया है।
२ जो मलिनसत्त्वगुणयुक्त सो अविद्या है।
३ जो तमोगुणकी मुख्यताकरि युक्त है।
तमःप्रधान प्रकृति है ॥
१ मायाविषै जो ब्रह्मका प्रतिबिंब है।
अधिष्ठान [ब्रह्म] औ मायासहित अ
कर्त्ता सर्वज्ञईश्वर कहिये है। औ,
२ अविद्याविषै जो ब्रह्मका प्रतिबिंब है।
अधिष्ठान [कूटस्थ] औ अविद्या
भोक्ता अल्पज्ञजीव कहिये है।
१ सो ईश्वर औ जीव दो अनादि
हैं। तिनमें ईश्वरकी उपाधि माया
है औ आपेक्षिकव्यापक है। तिसतें
भी एक है औ व्यापक है। औ

॥ ३८ ॥ क्षत्रिय औ शुद्ररूप मंत्रीनसैं ब्राह्मण राजाकी न्यांई जो रजतमसैं दबै नहीं। किंतु रज-तमकूं आपदबावै। ऐसासत्वगुण शुद्धसत्वगुणहै।

॥ ३९ ॥ जो रजतमकूं दबावै नहीं। किंतु शूद्र-रूप दोनूं राजकुमारनसैं ब्राह्मणरूप एकमन्त्री की न्यांई रजतमसैं आप दबै। ऐसा सत्वगुण। मलि-नसत्वगुण है ॥

॥४०॥ इहां माया शब्दकरि मायाऔ तमःप्रधान-प्रकृतिइन दोनूं ईश्वरकी उपाधिनका ग्रहणहै तिनमैं

१ मायाउपाधिकूं लेके ईश्वर। कुलाली न्यांई जगत्का निमित्तकारण है। औ

२ तमःप्रधानप्रकृतिकूं लेके ईश्वर। मृत्तिकाकी न्यांई जगत्का उपादानकारण है॥

॥४१॥ जो किसीकी अपेक्षासैं व्यापक होवै औ किसीकी अपेक्षासैं परिच्छिन्न होवे। सो आपेक्षिक व्यापक कहिये है। जैसैं गृह जो है। सो घटादिककी अपेक्षासैं व्यापक है औ ग्रामकी अपेक्षासैं

२ जीवकी उपाधि अविद्या नाना है
परिच्छिन्न है। तिससैं जीव बी नान
औ परिच्छिन्न है॥

तिन जीवईश्वरका अनादिकल्पितभेद है॥
१ सृष्टिसैं पूर्व सो जीवनकी उपाधि अवि
जीवनके कर्मसहितहीं मायाविषै लीनहो
रहती हैं। सो माया सुषुप्तिविषै अवि
न्यांई ब्रह्मसैं भिन्न प्रतीत नाम सिद्ध
नहीं यातैं सृष्टिसैं पहिले सजातीय वि
तीय स्वगत भेदरहित एकहीं अद्वि
सच्चिदानन्दरूप ब्रह्म था।

परिच्छिन्न है। यातैं आपेक्षिकव्यापक हैं। तैसैं
बी पृथ्वीआदिककी अपेक्षासैं व्यापक कहिये अवि
यती है औ ब्रह्मकी अपेक्षासैं परिच्छिन्न है॥
आपेक्षिकव्यापक है॥

तिस ब्रह्मकूं सृष्टिके आरंभविषै जीवनके परिपक्क भये कर्मरूप निमित्तसैं "मैं एक हूं सो बहुरूप होऊं" ऐसी इच्छा भयी ॥

तिस इच्छासैं ब्रह्मकी उपाधि मायाविषै चोभ होयके क्रमतैं आकाश वायु तेज जल औ पृथ्वी । ये पंचमहाभूत उत्पन्न भये ॥

तिनका पचीकरण नहीं भयाथा । तब अपंचीकृत थे । तिनतैं समष्टिव्यष्टिरूप सूक्ष्मसृष्टि होयके । पीछे ईश्वरकी इच्छासैं जब तिनका पंचीकरण भया । तब सो भूत पंचीकृत भये । तिनतैं समष्टिव्यष्टिरूप स्थूलसृष्टिभयी ॥

५ तिनसैं समष्टिस्थूलसूक्ष्मकारणप्रपंचका अभिमानी जीवकी दृष्टिसैं ईश्वर है औ व्यष्टिस्थूलसूक्ष्मकारणप्रपञ्चका अभिमानी जीव-

है । तिनमें ईश्वर सर्वज्ञ होनेतें नि
है औ जीव अल्पज्ञ होनेतें बद्ध है
इसरीतिसें शुद्धब्रह्मविषै प्रपंच का नि
हुवा है ॥

* ३४ प्रश्नः—यह आरोप सत्य है वा मि

उत्तरः--यह आरोप जेवरीविषै सर्प
औ साक्षीविषै स्वप्नकी न्यांई औ द
नगरके प्रतिबिंबकी न्यांई मिथ्या है।

* ३५ प्रश्नः—यह आरोप किससें होवै

उत्तरः—यह आरोप अज्ञानसें होवै

* ३६ प्रश्नः—यह आरोप कबका औ
हुवा होवेगा। यह विचार कैसे होवै ?

उत्तरः--जैसें कोई पुरुषके वस्त्र उपर
दाग लग्याहोवै । तिसकूं जानिके ताकूं मि
का उपाय कियाचाहिये औ "यह दाग

काहेकूं लग्याहोवैगा ?" इस विचारकाकुछप्रयोजन नहीं है ॥ तैसैं "यह प्रपंचका आरोप किसका औ काहेकूं हुवा होवेगा ?" इस विचारका बी कछु प्रयोजन नहीं हैं परंतु इसकी निवृत्तिका उपाय करना योग्य है ॥

॥ २७ प्रश्न:—इस सर्वआरोपकी निवृत्ति किसरीतिसैं होवै है ?

उत्तरः---

१ ब्रह्मज्ञानसैं माया औ अविद्याकी निवृत्ति होवे है ?

२ तिसतैं कार्यसहित प्रकृतिकी निवृत्ति होवेहै

३ तिसतैं प्रकृति औ ब्रह्म के संबंधकी निवृत्ति होवे है ।

४ तिसतैं जीवभाव औ ईश्वरभावकी निवृत्ति होवे है ।

५ तिसतैं जीवईश्वरके भेदकी निवृत्ति हो
६ तिसतैं बंधकी निवृत्ति होयके मोक्ष
होवै है ।

इसरीतिसैं एककालविषैहीं सर्व आरो
निवृत्तिरूप अपवाद[42] होवै है ॥

* ३८ प्रश्नः—यह ब्रह्मज्ञान किससैं होवै

उत्तरः—यह ब्रह्मज्ञान आगे कहिये
विचार । तिससैं होवै है ॥

इति श्रीविचारचंद्रोदये प्रपञ्चारोपापवाद
वर्णननामिका द्वितीयकला समाप्ता ।

॥ ४२ ॥ सर्पका औ ताके ज्ञानका बाधकरि
रूप अधिष्ठानके अवशेषकी न्यांई । प्रपञ्च
ज्ञानका बाधकरिके अधिष्ठानरूप शुद्धब्रह्मका अ
सो अपवाद है ॥

॥ अथ तृतीयकलाप्रारंभः ॥ ३ ॥

॥ देह तीनका मैं द्रष्टा हूँ ॥

॥ मनोहर छंद ॥

द्रष्टा तीनदेहको मैं स्थूल सूक्ष्म कारण ये
तीनदे दृश्य अरु अमातमा मानियो ॥
पंचीकृतपंचभूतके पचीसयत्त्वनको
स्थूलदेह एह भोगआयतन गानियो ॥
अपंचीकृतभूतके सप्तदशतत्त्वनको
सूक्ष्मदेह होई भोगसाधन प्रमानियो ॥
अज्ञान कारणदेह घटवत दृश्य यह
पीतांबर द्रष्टा आप जानि दृश्य मानियो ३

* ३६ प्रश्नः—पहिली प्रक्रिया । "देह तीनका मैं द्रष्टा हूँ" ॥ सो देह तीन कौनसे हैं ?

उत्तरः--स्थूलदेह सूक्ष्मदेह औ कार
ये देह तीन हैं ॥

॥ १ ॥ स्थूलदेहका मैं द्रष्टा हूं ॥

* ४० प्रश्नः-स्थूलदेह सो क्या है?
उत्तरः---पंचीकृतपंचमहाभूतके पचीस
का स्थूलदेह है।

* ४१ प्रश्नः--पंचमहाभूत कौनसे हैं?
उत्तरः---आकाश, वायु, तेज, जल
पृथ्वी। ये पंचमहाभूत हैं।

* ४२ प्रश्नः-पंचमहा भूतकेपचीसतत्त्व
पदार्थ कौनसे हैं?

उत्तरः---

१--५ आकाशके पांचतत्त्वः--काम,
शोक, मोह औ भय ॥

॥ ४३ ॥ कोई बी भोगकी इच्छा। काम कहिये
॥ ४४ ॥ अहंताममतारूप बुद्धि। सो मोह

-१० वायुके पांचतत्त्वः—चलन, वलन, धावन, प्रसारण औ आकुञ्चन ॥

१-१५ तेजके पांचतत्त्वः-क्षुधा, तृषा, आलस्य, निद्रा, औ कांति ॥

१-२० जलके पांचतत्त्वः-शुक्र कहिये वीर्य। शोणित नाम रुधिर। लाल मूत्र औ स्वेद कहिये पसीना ॥

१-२५ पृथ्वीके पांचतत्त्वः—अस्थि नाम हाड़, मांस, नाडी, त्वचा औ रोम ॥

पंचमहाभूतके पचीसतत्त्वन के नाम हैं ॥

* ४३ प्रश्नः—पंचीकृतपंचमहाभूत कौनकूं कहिये ?

४५

त्तरः-जिन भूतनका पंचीकरण भया है तिन तनकूं पंचीकृतपंचमहाभूत कहिये हैं ॥

॥४२॥ प्रथम अपंचीकृतपंचमहाभूत थे। तिनका श्वरकी इच्छासैं स्थूलसृष्टिद्वारी जीवनके भोगअर्थ स्पर मिलापरूप पंचीकरण भया है ॥

* प्रश्नः—पंचीकरण सो क्या है?

उत्तरः—पंचभूतनमेंसें एकएकके
किये। सो भये दश ॥ तिनमेंसें पं
भाग रहनेदिये औ दूसरेपांचभागनमें
भागके च्यारीच्यारीभाग किये॥
च्यारी भाग। आकाशादिकभूतनका
काजो अर्धअर्धमुख्यभाग रहनेदिया है
न मिलायके आपआपसैं भिन्न च्या
अर्धअर्धभागनविषै मिले। सो
कहिये है॥

* ४५ प्रश्नः—पांचभूतनका पर
किसरीतिसैं है?

उत्तरः—दृष्टांतः—जैसें कोईके
आंबकेलाआदिक एकएक फलकूं
लागे॥ तब सर्व आपआपके फलके
करीके अर्धअर्धभाग आपके वास्ते

अवशेष अर्धअर्धभागमैंसैं च्यारीच्यारीभाग करीकै च्यारीमित्रनकूं विभाग करीदेवैं। तब पांचफलनका परस्परमिलाप होवै है। तैसैं

सिन्द्धान्तः—

१ आकाश के दो भाग किये। तिनमैंसैं
(१) एक भाग रहनेदिया। औ
(२) दूसरेभागके च्यारीभाग किये। तिनमैंसैं आकाशविषै न मिले। औ
[१] एक वायुविषै मिले।
[२] एक तेजविषै मिले।
[३] एक जलविषै मिले। अरु
[४] एक पृथ्वीविषै मिले॥

२ ऐसैंही वायु के दो भाग किये। तिनमैंसैं
(१) एक भाग रहनेदिया। औ

(२) दूसरे भाग. के च्यारीभाग कि
तिनमैंसैं वायुविषै न मिले ।
[१] एक आकाशविषै मिले।
[२] एक तेजविषै मिले।
[३] एक जलविषै मिले। अ
[४] एक पृथ्वीविषै मिले।

३ ऐसैंहीं तेजके दो भाग किये । ति

(१) एकभाग रहनैंदिया । औ
(२) दूसरेभागके च्यारीभाग किये।
तिनमैंसैं तेजसैं तेजविषै न मिले
[१] एक आकाश विषै मिले
[२] एक वायुविषै मिले।
[३] एक जलविषै मिले। अ
[४] एक पृथ्वीविषै मिले।

ऐसैंहीं जलके दो भाग किये हैं। तिनमैंसैं

(१) एक भाग रहनै दिया औ

(२) दूसरेभागके च्यारीभाग किये। तिनमैंसैं जलविषै न मिले। औ

[१] एक आकाशविषै मिले।
[२] एक वायुविषै मिले।
[३] एक तेजविषै मिले। अरु
[४] एक पृथ्वीविषै मिले।

ऐसैंहीं पृथ्वीके दो भाग किये। तिनमैंसैं

(१) एकभाग रहनै दिया। औ

(२) दूसरे भागके च्यारीभाग किये। तिनमैंसैं पृथ्वीविषै न मिले औ

[१] एक आकाशविषै मिले।
[२] एक वायुविषै मिले।
[३] एक तेजविषै मिले। अरु
[४] एक जलविषै मिले।

इसरीतिसैं पचीसतत्त्व होयके पंचमहा
पर परमिलाप है।

* ४६ प्रश्नः—पंचमहाभूतनके पची
कैसे भये ?

उत्तरः—सर्वभूतनका आपका एकए
भाग है औ अमुख्यच्यारीभाग अन्य
मिलेहैं ॥ तिसतैं एकएकभूतके पांच
भये। सो सब मिलिके पचीसतत्त्व भये

* ४७ प्रश्नः—स्थूलदेहविषै ये प
कैसें भये ?

उत्तरः—

46 १—५ आकाशके पाँचतत्वः
शोक (२) काम (३) क्रोध (
औ (५) भय। तिनमेंसें

॥ ४६ ॥ कोई ग्रन्थविषै शिर कंठहृदय उद
गत आकाश। ये आकाश के पांचतत्व

शिरोदेशगतआकाश आकाशका मुख्यभाग है। अनाहतशब्दका आश्रय होनेतें ॥

कंठदेशगतआकाश वायुका भाग है। श्वासप्रश्वासका आश्रय होनेतें ॥

हृदयदेशगतआकाश तेजका भाग है। पित्तका आश्रय होनेतें ॥

उदरदेशगतआकाश जलका भाग है। पान किये जलका आश्रय होनेतें ॥

कटिदेशगतआकाश पृथ्वीका भाग है। गंधका आश्रय होनेतें ॥

सरीतिसें कामक्रोधादिक स्थूलदेहके तत्व नहीं। किंतु लिंगदेहके धर्म हैं औ अन्यग्रन्थनकी रीतिसें तौ कामादिक लिंगदेहके मुख्यधर्म हैं औ स्थूलदेहविषै घटमैं जलकी शीतलताके आवेशकी न्यांई इनका आवेश होवैहै। यातैं स्थूलदेहके यौ गौणधर्म कहिये हैं।

(१) शोकः[47]–आकाशका मुख्यभाग
काहेतें शोक उत्पन्नहोवें तब शरी
जैसा होवेंहै औ आकाश बी शून्य
है । यातें यह आकाश का
भाग है ॥

(२) कामः[48]–आकाशविषै वायुका

॥ ४७ ॥ यद्यपि वायुआदिकभूतनके भाग
आकाशके अन्यच्यारीभागनमैंसैं एकएकभाग
सो आकाशका मुख्यभाग नहीं कहियेहै । तथा
औ आकाशकी अतिशयतुल्यता है । यातें
आकाशका मुख्यभाग है ।

कहिक लोभ बी आकाशकी न्यांई पदार्थ
कार अपूर्ण होनेतें आकाश मुख्यभाग कहा
इसरीतिसैं अन्यभूतनविषै बी मान लेना ॥

॥ ४८ ॥ पिताके तुल्य पुत्रकी न्यांई । का
के तुल्य है तातें वायुका भाग है । ऐसे
तत्वनविषै बी जानि लेना ॥

मिल्याहै। काहेतें कापनारूप वृत्ति चंचल है औ वायु बी चंचल है। यातें यह वायुका भाग है ॥

(३) क्रोधः—आकाशविषै तेजका भाग मिल्याहै। काहेतें क्रोध आवताहै तब शरीर तपायमान होता है औ तेज बी तपायमानहै। यातें यह तेजका भाग है॥

(४) मोहः—आकाशविषै जलका भाग मिल्याहै। काहेतें मोह पुत्रादिकविषै प्रसारता है औ जलका बिंदु बी प्रसारता है। यातें यह जलका भाग है ॥

(५) भयः—आकाशविषै पृथ्वीका भाग मिल्याहै। काहेतें भय होवै तब शरीर जड़ कहिये अक्रिय होयके रहता है औ पृथ्वी बी जड़तास्वभाववाली है। यातें यह पृथ्वीका भाग है॥

६-१० वायुके पांचतत्त्वः-[६] प्र
[७] धावन [८] वलन [९] क
[१०] आकुञ्चत । तिनमैंसैं

(६) प्रसारणः-वायुविषैं आ
भाग मिल्या है। काहेतैं प्रसार
प्रसरनैंका है औ आकाश बी
हुवा है । यातैं यह आकाशका भ

(७) धावनः-वायुका मुख्यभाग
काहेतैं धावन नाम दौडनैंका
वायु बी दौडता है। यातैं यह
मुख्यभाग है ॥

(८) वलनः-वायुविषैं तेजका भाग
है। काहेतैं वलन नाम अङ्गके
है। औ तेजका प्रकाश बी वल
यातैं यह तेजका भाग है ॥

[९] चलनः—वायुविषै जलका भाग मिल्याहै। काहेतें चलन नाम चलनेका है औ जल वी चलताहै यातें यह जलका भाग है॥

[१०] आकुंचनः—वायुविषै पृथ्वीका भाग मिल्याहै। काहेतें आकुञ्चन नाम संकोच करनेका है औ पृथ्वी वी संकोचकूं पायी हुयी है यातें यह पृथ्वी का भाग है॥

११-१५ तेजके पांचतत्त्वः-(११) निद्रा [१२] तृषा [१३] क्षुधा [१४] क्रांति औ [१५] आलस्य। तिनमैंसैं

[११] निद्राः—तेजविषै आकाशका भाग मिल्याहै। काहेतें निद्रा आवे तब शरीर शून्य होवेहै औ आकाश वी शून्यतावाला है। यातें यह आकाशका भागहै॥

(१२) तृषाः—तेजविषै वायुका भाग है। काहेतैं तृषा कंठकूं शोषै है औ वायु बी गीलेवस्त्रादिककूं सुकावै है। यातैं यह वायुका भाग है॥

(१३) क्षुधातेजका मुख्य भाग है। क्षुधा लगे तब जो खावैं सो भस्म होवै है औ अग्निविषै बी जो डारैं सो भस्म होवैहै। यातैं यह तेजका मुख्यभाग है॥

(१४) कांतिः—तेजविषै जलका भाग है। काहेतैं कांति धूप घटै है औ जल बी धूपसैं घटैहै। यातैं यह जलका भाग है॥

(१५) आलस्यः—तेजविषै पृथ्वीका भाग मिल्याहै। काहेतैं आलस्य आवैतब जड होय जावै है औ पृथ्वी बी जड भाववालीहै यातैं यह पृथ्वीका भाग है॥

१६–२० जलके पांचतत्त्वः—(१६) लाल (१७) स्वेद (१८) मूत्र (१९) शुक्र औ (२०) शोणित। तिनमैंसैं

(१६) लालः–जलविषै आकाशका भाग मिल्याहै ॥ काहेतैं लाल ऊँचा नीचा होवैहै औ आकाश बी ऊँचा नीचा है। यातैं यह आकाशका भाग है॥

(१७) स्वेदः—जलविषै वायुका भाग मिल्या-है। काहेतैं पसीना श्रम करनेसैं होवैहै औ वायु बी पंखाआदिकसैं श्रम करनेसैं होवैहै यातैं यह वायुका भाग है॥

(१८) मूत्रः—जलविषै तेजका भाग मिल्या-है। काहेतैं धर्म है औ तेज बी धर्म है। यातैं यह तेजका भाग है॥

(१९) शुक्रः—जलका मुख्यभाग है। काहेतैं

शुक्र श्वेतवर्ण है औ गर्भका हे[illegible]
जल भी श्वेतवर्ण है औ वृक्ष
है। यातैं यह जलका मुख्य भा[illegible]
[२०] शोणितः—जलविषै पृथ्वीका
मिल्या है। काहेतैं शोणित रक्त
औ पृथ्वी भी कहिक रक्त है
यह पृथ्वीका भाग है॥
२१–२५ पृथ्वीके पांचतत्वः—
रोम [२२] त्वचा [२३] नाडी
मांस। औ [२५] अस्थि। तिनमें
[२१] रोमः—पृथ्वीविषै आकाश[illegible]
मिल्या है। काहेतैं रोम शून्य है
नैमें पीडा होवै नहीं औ आ[illegible]
शून्य है। यातैं यह आकाशका [illegible]

॥ ४६ ॥ केश जो मस्तकके बाल। [illegible]
शरीरके बालविषै अन्तर्भाव है।

२२] त्वचाः—पृथ्वी वायु का भाग मिल्या है। काहेतैं त्वचासैं शीत उष्ण कठिन कोमल स्पर्शकी मालुम होवैं है औ वायु बी स्पर्शगुणवाला है। यातैं यह वायुका भाग है॥

२३] नाडीः—पृथ्वीविषै तेजका भाग मिल्या है। काहे हैं नाडीसैं तापकी परीक्षा होवै है। औ तेज बी तापरूप है यातैं यह तेजका भाग है॥

२४] मांसः—पृथ्वीविषै जलका भाग मिल्या है। काहेतैं मांस गीला है औ जल बी गीला है। यातैं यह जलका भाग है।

२५] अस्थिः—पृथ्वीका मुख्य भाग है।

॥ ५० ॥ नख औ दन्तनका हड्डीमें अंतर्भाव है॥

काहेतैं कठिन हैं औ पीतवर्ण हैं
ची कठिन हैं अरु कहीक पीत
हैं। यातैं यह पृथ्वीका मुख्य
इसरीतिसैं स्थूलदेहविषै पचीसतत्त्व
*४७प्रश्नः-पचीसतत्व जाननैका क्या प्र

उत्तरः—

१ पचीसतत्त्व मैं नहीं औ
२ ये पचीसतत्त्व मेरे नहीं।
३ ये पचीसतत्त्व पंचीकृतपंचमहाभू
४ इन पचीसतत्त्वनका जाननैहारा
घटद्रष्टाकी न्यांई इनतैं न्यारा हूं।
ऐसा निश्चय करना। यह पचीसतत्त्व
नैका प्रयोजन है॥

* ४८ प्रश्नः-"पचीसतत्व मैं नहीं
नहीं" सो किसरीतिसैं जानना ?

उत्तरः—

१-५ आकाशके पांचतत्त्वविषैः-

[१] शोक होवै तब बी मैं जानता हूँ। औ
[२] शोक न होवै तब तिसके अभावकूं बी मैं जानता हूँ।

यातैं

[१] यह शोक मैं नहीं। औ
[२] यह शोक मेरा नहीं।
[३] यह शोक आकाशका है।
[४] मैं इस शोकका जाननेहारा द्रष्टा घटद्रष्टाकी न्यांई इसते न्यारा हूँ॥

ऐसैं शोक मैं नहीं औ मेरा नहीं यह जानना॥

[१] काम होवै तब बी मैं जानताहूँ। औ
[२] काम न होवै तब तिसके अभावकूं बी मैं जानता हूँ।

॥ २१ ॥ कार्यकी उत्पत्तिसैं पूर्व जो अभाव। सो प्रागभाव है

यातैं

[१] यह काम मैं नहीं । औ

[२] यह काम मेरा नहीं ।

[३] यह काम आकाशका है ।

[३] मैं इस कामका जाननैंहारा घटद्रष्टाकी न्यांई इसतैं न्यारा हूं

ऐसैं काम मैं नहीं औ मेरा नहीं यह अ

३ (१) क्रोध होवै तब बी मैं जानता हूं

(२) क्रोध न होवै तब तिसके अ बी मैं जानता हूं ।

यातैं

२ नाशके अनन्तर जो अभाव सो प्रध्वंसाभाव
३ तीनकालमैं जो अभाव सो अत्यंताभाव है
४ अन्यवस्तुमैं जो अन्यवस्तुका भेद । सो अन्योन्याभाव है ॥
इसरीतिसैं अभाव च्यारीप्रकारका है।

(१) यह क्रोध मैं नहीं। औ

(२) यह क्रोध मेरा नहीं।

(३) यह क्रोध आकाशका है।

(४) मैं इस क्रोधका जाननेहारा द्रष्टा घटद्रष्टाकी न्यांई इसतैं न्यारा हूं॥

ऐसैं क्रोध मैं नहीं औ मेरा नहीं। यह जानना।

१२ (१) मोह होवैं तब बी मैं जानताहूं। औ

(२) मोह न होवैं तब तिसके अभावकूं बी मैं जानता हूं।

यातैं

[१] यह मोह मैं नहीं। औ

[२] यह मोह मेरा नहीं।

[३] यह मोह आकाशका है।

[४] मैं इस मोहका जाननेहारा द्रष्टा घटद्रष्टाकी न्यांई इसतैं न्यारा हूं॥

ऐसैं मोह मैं नहीं औ मेरा नहीं। यह जानना॥

५ [१] भय होवै तब बी मैं जानता
[२] भय न होवै तब तिसके
बी मैं जानता हूँ।
यातैं
[१] यह भय मैं नहीं। औ
[२] यह भय मेरा नहीं।
[३] यह भय आकाशका है।
[४] मैं इस भयका जाननैहारा
द्रष्टाकी न्यांई इसतैं न्यारा है।
ऐसैं भय मैं नहीं औ मेरा नहीं। यह
६-१० वायुके पांचतत्त्वविषै:-
६ [१] प्रसारण:-शरीर प्रसरै
मैं जानताहूँ॥ औ
[२] शरीर न प्रसरै तब तिस
अभावकूं बी मैं जानताहूँ॥
यातैं

[१] यह प्रसारण मैं नहीं ॥ औ
[२] यह प्रसारण मेरा नहीं !
[३] यह प्रसारण वायुका है !
[४] मैं इस प्रसारणका जाननैहारा द्रष्टा घटद्रष्टाकी न्यांई इसतैं न्यारा हूं ॥

ऐसे प्रसारण मैं नहीं औ मेरा नहीं ! यह जानना !

७ [१] धावनः—शरीर दौड़ै तब बी मैं जानताहूं ! औ
[२] शरीर न दौडै तब तिस दौडनैके अभावकूं बी मैं जानताहूं ! यातैं
[१] यह धावन मैं नहीं ! औ
[२] यह धावन मेरा नहीं !
[३] यह धावन वायुका है !
[४] मैं इस धावनका जाननैहारा द्रष्टा घटद्रष्टाकी न्यांई इसतैं न्यारा हूं ॥

ऐसैं धावन मैं नहीं औ मेरा नहीं ! यह जानना !

८ (१) वलनः—शरीर वलै तब
जानता हूं। औ
(२) शरीर न वलै तब तिस
अभावकूं बी मैं जानता हूं
यातैं
(१) यह वलन मैं नहीं ! औ
(२) यह वलन मेरा नहीं !
(३) यह वलन वायुका है !
(४) मैं इस वलनका जाननेहारा
घटद्रष्टाकी न्यांई इसतैं न्यारा
ऐसैं वलन मैं नहीं औ मेरा नहीं ! यह
९ (१) चलनः—शरीर चलै तब
जानता हूं। औ
(२) शरीर न चलै तब तिस
अभावकूं बी मैं जानताहूं
यातैं

(१) यह चलन मैं नहीं। औ
(२) यह चलन मेरा नहीं।
(३) यह चलन वांयुका है।
(४) मैं इस चलन का जाननैंहारा द्रष्टा घटद्रष्टाकी न्यांई इसतैं न्यारा हूं ॥

ऐसैं चलन मैं नहीं औ मेरा नहीं। यह जानना॥

०(१) आकुञ्चनः—शरीर संकोचकूं पावै तब बी मैं जानता हूं। औ
(२) शरीर संकोचकूं न पावै तब तिसके अभावकुं बी मैं जानता हूं। यासैं
(१) एह आकुञ्चन मैं नहीं। औ
(२) यह आकुञ्चन मेरा नहीं।
(३) मैं इस आकुञ्चनका जाननैंहारा द्रष्टा घटद्रष्टाकी न्यांई इसतैं न्यारा हूं ॥

ऐसैं आकुञ्चन मैं नहीं औ मेरा नहीं। यह जानना

११-१५ तेजके पांचतत्त्वविषै

११[१] निद्रा होवे तिसकूं वी मैं जानता

[२] निद्रा न होवै तब तिसके अ

वी मैं जानता हूं ।

यातैं

[१] यह निद्रा मैं नहीं । औ

[२] यह निद्रा मेरी नहीं ।

[३] यह निद्रा तेजकी है ।

[४] मैं इस निद्राका जाननैहारा

घटद्रष्टाकी न्यांई इसतैं न्यारा हूं

ऐसैं निद्रा मैं नहीं औ मेरी नहीं । यह जा

१२[१] तृषा लगै तिसकूं वी मैं जानता

[२] तृषा न होवै तब तिसके अ

वी मैं जानता हूं ।

यातैं

(१) यह तृषा मैं नहीं । औ
(२) यह तृषा मेरी नहीं ।
(३) यह तृषा तेजकी है ।
(४) मैं इस तृषाका जाननैहारा द्रष्टा घट-द्रष्टाकी न्यांई इसतैं न्यारा हूं ॥

ऐसैं तृषा मैं नहीं औ मेरी नहीं ।यह जानना ॥

१३ (१) क्षुधा लगै तिसकूं बी मैं जानताहूं। औ
(२) क्षुधा न होवै तब तिसके अभावकूं बी मैं जानता हूं ॥

यातैं

(१) यह क्षुधा मैं नहीं । औ
(२) यह क्षुधा मेरी नहीं ।
(३) यह क्षुधा तेजकी है ।
(४) मैं इस क्षुधाका जाननैहारा द्रष्टा घट-द्रष्टाकी न्यांई इसतैं न्यारा हूं ॥

ऐसैं क्षुधा मैं नहीं औ मेरी नहीं । यह जानना ॥

१४(१) कांति होवै तिसकूं वी मैं जानता हूं और

(२) कांति न होवै तब तिसके अभावकूं मैं जानता हूं।

यातैं

(१) यह कांति मैं नहीं। औ

(२) यह कांति मेरी नहीं।

(३) यह कांति तेजकी है।

(४) मैं इस कांतिका जाननैहारा द्रष्टा द्रष्टाकी न्यांई इसतैं न्यारा हूं॥

ऐसैं कांति मैं नहीं औ मेरी नहीं। यह जा

१५(१) आलस्य होवै तिसकूं जानता हूं। औ

(२) आलस्य न होवै तब तिसके अभावकूं वी मैं जानता हूं।

यातैं

(१) यह आलस्य मैं नहीं । औ
(२) यह आलस्य मेरा नहीं ।
(३) यह आलस्य तेजका है ।
(४) मैं इस आलस्यका जाननेहारा द्रष्टा घटद्रष्टाकी न्यांई इसतैं न्यारा हूं ॥
ऐसैं आलस्य मैं नहीं औ मेरा न ीं। यह जानना॥
१६-२० जलके पांचतत्त्वविषै:-
(१) लाल गिरे तिसकूं बी मैं जानता हूं। औ
(२) लाल न गिरे तब तिसके अभावकूं बी मैं जानता हूं। यातैं
[१] यह लाल मैं नहीं । औ
[२] यह लाल मेरा नहीं ।
[३] यह लाल जलका है ।
[४] मैं इस लालका जाननेहारा द्रष्टा घटद्रष्टाकी न्यांई इनतैं न्यारा हूं ॥
ऐसे लाल मैं नहीं औ मेरा नहीं । यह जानना ॥

१७[१] स्वदेश नाम प्रसीना होवै ति
मैं जानता हूं । औ
[२] प्रसीना न होवै तब तिसके
कूं बी मैं जानता हूं ।
यातैं
[१] यह प्रसीना मैं नहीं । औ
[२] यह प्रसीना मेरा नहीं ।
[३] यह प्रसीना जलका है ।
[४] मैं इस प्रसीनेका जाननैहारा
घटद्रष्टाकी न्यांई इसतैं न्यारा हूं
ऐसे स्वदेश मैं नहीं औ मेरा नहीं। यह
१८-[१] मूत्र आवै तिसकूं मैं जानता हूं
[२] मूत्र न आवै तब तिसके अ
बी मैं जानता हूं।
यातैं

(१) यह मूत्र मैं नहीं। औ
(२) यह मूत्र मेरा नहीं।
(३) यह मूत्र जलका है।
(४) मैं इस मूत्रका जाननैहारा द्रष्टा घट-द्रष्टाकी न्यांई इसतैं न्यारा हूं ॥

ऐसैं मूत्र मैं नहीं औ मेरा नहीं। यह जानना ॥

१९(१) शुक्र कहिये वीर्य शरीरविषै बढै तिसकूं बी मैं जानता हूं। औ
(२) वीर्य घटै तब तिसके अभावकूं बी मैं जानता हूं। यातैं
(१) यह वीर्य मैं नहीं। औ
(२) यह वीर्य मेरा नहीं।
(३) यह वीर्य जलका है।
(४) मैं इस वीर्यका जाननैहारा द्रष्टा घट-द्रष्टाकी न्यांई इसतैं न्यारा हूं ॥

ऐसैं शुक्र मैं नहीं औ मेरा नहीं। यह जानना ॥

२०(१) शोणित नाम रुधिर शरीरविषै बढै तिसकूं बी मैं जानता हूं। औ

(२) रुधिर घटै तब तिसके अभावकूं बी मैं जानता हूं।

यातैं

(१) यह रुधिर मैं नहीं। औ

(२) यह रुधिर मेरा नहीं।

[३] यह रुधिर जलका है।

[४] मैं इस रुधिरका जाननेहारा द्रष्टा घटद्रष्टाकी न्याई इसतैं न्यारा हूं॥

ऐसें शोणितमैं नहीं औ मेरा नहीं। यह जानना॥

२१-२५ पृथ्वीके पांचतत्त्वविषै:—

२१[१] रोम बहुत होवैं तिनकूं बी मैं जानता हूं। औ

[२] रोम कमती होवैं तब तिनके कमतीपनकूं बी मैं जानता हूं। यातैं

[१] ये रोम मैं नहीं। औ
[२] ये रोम मेरे नहीं।
[३] ये रोम पृथिवीके हैं।
[४] मैं इन रोमनका जाननेहारा द्रष्टा घट-
द्रष्टाकी न्यांई इनतैं न्यारा हूं॥
ऐसें रोम मैं नहीं औ मेरे नहीं। यह जानना॥

२३[१] त्वचा स्पर्शकूं ग्रहण करैं तिसकूं
बी मैं जानता हूं। औ
[२] स्पर्शकूं ग्रहण न करैं तब तिसके
अभावकूं बी मैं जानता हूं। यातैं
[१] यह त्वचा मैं नहीं। औ
[२] यह त्वचा मेरी नहीं।
[३] यह त्वचा पृथिवीकी है।
[४] मैं इस त्वचाका जाननेहारा द्रष्टा घट-
द्रष्टाकी न्यांई इसतैं न्यारा हूं॥
ऐसें त्वचा मैं नहीं औ मेरी नहीं। यह जानना॥

२३(१)नाडी चलैं तिनकूं बी मैं जानताहूं।औ
(२) नाडी न चलैं तब तिनके अभावकूं बी मैं जानताहूं। यातैं
(१) ये नाडी मैं नहीं। औ
(२) ये नाडी मेरी नहीं।
(३) ये नाडी पृथ्वीकी हैं।
(४) मैं इन नाडीनका जाननैहारा द्रष्टा घट-द्रष्टाकी न्यांई इनतैं न्यारा हूं॥
ऐसैं नाडी मैं नहीं औ मेरी नहीं। यह जानना॥
२४(१)मांस बढै तिसकूं बी मैं जानताहूं। औ
(२) मांस घटै तब तिसके अभावकूं बी मैं जानता हूं।
यातैं
(१) यह मांस मैं नहीं। औ
(२) यह मांस मेरा नहीं।
(३) यह मांस पृथ्वीका है।

[४]मैं इस मांसका जाननैंहारा द्रष्टा घट-
द्रष्टाकी न्यांई इसतैं न्यारा हूं ॥
औ मेरा नहीं । यह जानना ॥
२५[१] आस्थ नाम हाड सूधे होवैं तिसकूं
वी मैं जानता हूं । औ
[२] हाड सूधे न होवैं तब तिनके अभा-
वकूं वी मैं जानता हूं ।
यातैं
[१] ये हाड मैं नहीं । औ
[२] ये हाड मेरे नहीं ।
[३] ये हाड पृथ्वीके हैं ।
[४] मैं इन हाडनका जाननैंहारा द्रष्टा घट-
द्रष्टाकी न्यांई इनतैं न्यारा हूं ॥
ऐसैं हाड मैं नहीं औ मेरे नहीं । यह जानना ॥
इसरीतिसैं पचीसतत्त्व मैं नहीं औ मेरे नहीं यह
जानना ॥

* ४९. प्रश्नः—"पचीसतत्त्व मैं नहीं औ मेरे नहीं" इस जाननैसैं क्या निश्चय भया?

उत्तरः—स्थूलदेह औ तिसके धर्म १ नाम। २ जाति। ३ आश्रम। ४ वर्ण। ५ सम्बंध। ६ परिणाम। ७ जन्ममरण। इत्यादिक मैं नहीं और मेरे नहीं। यह निश्चय भया॥

* ५० प्रश्नः—१ नाम मैं नहीं औ मेरा नहीं। यह कैसैं जानना?

उत्तरः—

१ जन्मसैं प्रथम नाम नहीं था। औ
२ जन्म के अनन्तर नाम कल्पित है। औ
३ शरीरके भिन्नभिन्न अङ्गनविषै विचार कियेतैं नाम मिलता नहीं।

यातैं

१ यह नाम मैं नहीं। औ
२ यह नाम मेरा नहीं।

३ यह नाम स्थूलदेहविषै कल्पित है।

४ मैं इस नामका जाननेहारा द्रष्टा घटद्रष्टाकी न्यांई इसतैं न्यारा हूं॥

ऐसैं नाम मैं नहीं औ मेरा नहीं। यह जानना॥

॥ ९१ प्रश्नः—२ जाति जो वर्ण सो मैं नहीं औ मेरी नहीं। यह कैसे जानना ?

उत्तरः—

१ ब्राह्मणादिकजाति स्थूलदेहका धर्म है। सूक्ष्मदेह औ आत्माका धर्म नहीं। काहेतैं लिंगदेह औ आत्मा तौ जो पूर्वदेहविषै होवै सोई इस वर्त्तमानदेहविषै औ भावीदेहविषै रहता है औ जाति तौ जो पूर्वदेहविषै थी सो आगिलेदेहविषै रहेगी नहीं। यातैं जाति स्थूलदेहकाही धर्म है। लिंगदेहका औ आत्माका धर्म नहीं है औ

२ शरीरके अङ्गनविषै विचारिके देखिये तौ देहविषै जाति मिलै नहीं ।

यातैं

१ यह जाति मैं नहीं । औ

२ यह जाति मेरी नहीं ।

३ यह जाति स्थूलदेहविषै आरोपित है ।

४ मैं इस जातिका जाननैहारा द्रष्टा घट द्रष्टा·की न्याईं इसतैं न्यारा हूं ॥

ऐसैं जाति मैं नहीं औ मेरी नहीं । यह जानना।

* ५२ प्रश्नः—३ आश्रम मैं नहीं औ मेरा नहीं। यह कैसैं जानना ?

उत्तरः—

१ ब्रह्मचारी गृहस्थ वानप्रस्थ औ सन्यासी। ये च्यारीआश्रम भिन्नभिन्नकर्म करावनेके लिये आरोपकरिके स्थूलदेहविषै माने हैं ।

२ सो बी मनुष्यमात्रविषै सम्भवतै नहीं। यातैं

१ ये आश्रम मैं नहीं । औ
२ ये आश्रम मेरे नहीं ।
३ ये आश्रम स्थूलदेहविषै आरोपित हैं ।
४ मैं इन आश्रमन का जाननैंहारा द्रष्टा घट-द्रष्टाकी न्यांई इनतैं न्यारा हूं ॥

ऐसैं आश्रम मैं नहीं औ मेरे नहीं । यह जानना ॥

*५३ प्रश्नः–४ वर्ण नाम रंग मैं नहीं औ मेरे नहीं । यह कैसैं जानना ?

उत्तरः—

१ गौर श्याम रक्त पीत इत्यादि जो रङ्ग हैं । सो स्थूलदेहविषै प्रत्यक्ष देखिये हैं । औ
२ सो स्थूलदेह मैं नहीं । यातैं

१ ये रङ्ग मैं नहीं । औ
२ ये रङ्ग मेरे नहीं ।
३ ये रङ्ग स्थूलदेहके हैं ।
४ मैं इन रंगोंका जाननैंहारा द्रष्टा घटाद्रष्टाकी न्यांई इनतैं न्यारा हूं ॥

ऐसैं वर्ण मैं नहीं औ मेरे नहीं । यह जानना ॥

* ५४ प्रश्नः—५ सम्बन्ध मैं नहीं औ मेरे नहीं। यह कैसैं जानना ?

उत्तरः—

१ पितापुत्र गुरुशिष्य स्त्रीपुरुष स्वामिसेवक। इत्यादिसंबंध स्थूलदेहके परस्पर प्रसिद्ध मिथ्या माने हैं ।

२ विचार कियेसैं मिलतै नहीं । औ

३ मैं स्थूलदेहसैं न्यारा असङ्ग हूं ।

यातैं

१ ये सम्बन्ध मैं नहीं । औ

२ ये सम्बन्ध मेरे नहीं ।

३ मैं इन सम्बन्धों का जाननेहारा द्रष्टा घट-द्रेष्टा की न्यांई इनतैं न्यारा हूं ॥

ऐसैं संबंध मैं नहीं औ मेरे नहीं। यह जानना॥

* ५५ प्रश्न:—६ परिणाम जो आकार सोमैं नहीं औ मेरे नहीं। यह कैसे जानना ?

उत्तर:—

१ लंबाटूंका जाड़ापतला टेढासूधा। इत्यादि आकार वी प्रसिद्ध स्थूलदेहविषै देखियेहैं। औ
२ मैं स्थूलदेहतें न्यारा निराकार हूं ।

यातैं

१ ये आकार मैं नहीं । औ
२ ये आकार मेरे नहीं ।
३ ये आकार स्थूलदेहके हैं ।
४ मैं इन आकारोंका जाननैहारा द्रष्टा घटद्रष्टा की न्यांई इनतें न्यारा हूं ॥

ऐसैं परिणाम मैं नहीं औ मेरे नहीं । यह जानना

* ५६ प्रश्न:–७ मैं जन्ममरणवान् नहीं औ मेरेकूं जन्ममरण होय नहीं। यह कैसैं जानना ?

उत्तरः—

१ आत्माका जन्म मानिये तौ आत्मा अनित्य होवैगा । सो वार्त्ता मीमांसकसैं आदिलेके परलोकवादी जे आस्तिक हैं । तिनकूं इष्ट नहीं काहेतैं जो आत्मा उत्पत्तिवान् होवै तौ नाशवान् बी होवैगा । तातैं

(१) पूर्वजन्मविषै नहीं किये कर्मसैं सुख-दुःखका भोग । औ

(२) इसजन्मविषै किये कर्मका भोगसैं विनाश ।

ये दोदूषण होवैंगे । यातैं कर्मवादीके मतसैं आत्माकूं जो कर्त्ताभोक्ता मानिये । तौ बी जन्म मरणरहितहीं मानना होवैगा । औ

२ आत्माके जन्मका कोई कारण बी संभवै नहीं । काहेतैं आत्माका जो कारण होवै सो आत्मातैं भिन्नहीं चाहिये औ

(१) आत्मातैं भिन्न तौ अनात्मा नामरूप हैं। सो तौ आत्माविषै रज्जुसर्पकी न्यांई कल्पित हैं यातैं कारण बनै नहीं। औ

(२) ब्रह्म तौ घटाकाशके स्वरूप महाकाश तिससैं भिन्न नहीं यातैं सो कारण बनै नहीं।

३ तातैं आत्माका जन्म नहीं॥ औ जातैं जन्म नहीं तातैं आत्माका मरण बी नहीं। औ

४ जातैं आत्माविषै जन्ममरणका अभाव है। तातैं जायते (जन्म)। अस्ति (प्रगटता) वर्धते (वृद्धि)। विपरिणमते (विपरिणाम) अपक्षीयते (अपक्षय)। नश्यति (मरण)। इन षट्विकारनतैं बी आत्म रहित है॥

यातैं

१ मैं जन्ममरणवान नहीं । और

२ मेरेकूं जन्ममरण होवै नहीं ।

३ ये जन्ममरण स्थूलदेहकूं कर्मसैं होवैं हैं।

४ मैं इन जन्ममरणोंका जाननैहारा द्रष्टा स-
द्रष्टाकी न्याई इनतैं न्यारा हूं ।

ऐसैं मैं जन्ममरणवान् नहीं औ मेरेकूं जन्म-
मरण होवैं नहीं । यह जानना ॥

* ४७ प्रश्नः—पञ्चमहाभूतनकी निवृत्तिविषै
दृष्टांत क्या है ?

उत्तरः—दृष्टांतः—जैसैं कोईकूं भू-
लग्याहोवै। सो धानकका नाम पारधीकूं बुला-
डमरू बजायके। लवणादिपांचवस्तु मिलायके
तिसका बलिदान देके । भूतकी निवृत्ति करै।
सिद्धांतः—तैसैं आकाशादिकपञ्चमहा-
शरीररूप होयके जीवकूं लगे हैं। तिनकी निवृ-

वास्ते ब्रह्मनिष्ठगुरुरूप धाननके विधिपूर्वकशरण जायके वेदशास्त्ररूप डमरू कहिये डाक वजाय के ऊपर कहे जो पचीसतत्त्व तिनमैंसैं पांच-पांचतत्त्वरूप वलिदान एकएकभूतकूं आप-आपका भाग अर्पण करिके। मैं इन पचीसतत्वनका

॥२२॥ विवेकादिशुभगुणसहित मोक्षकी इच्छावाला अधिकारी।

१ हाथमैं भेटा लेके गुरुके शरण होयके।
२ साष्टांग नमस्कार करीके।
३ " हे भगवान्! मेरकूं ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरो ऐसैं कहिके "बंध किसकूं कहिये? मोक्ष किसकूं कहिये? अविद्या किसकूं कहिये? औ विद्या किसकूं कहिये? इत्यादिप्रश्न करै। औ
४ गुरुकी प्रसन्नता वास्ते तन मन धन वाणी अर्पण करिके सेवा करै।
यह ब्रह्मविद्याके ग्रहणका विधि है॥

द्रष्टा हूँ। इसरीतिसैं निश्चय करनैतैं इन

पञ्चमहाभूतनकी अत्यंतनिवृत्ति होवै है॥
इसरीतिसैं स्थूलदेहका मैं द्रष्टा हूँ॥

॥ २ ॥ सूक्ष्मदेहकामैं द्रष्टा हूं॥

* ५८ प्रश्नः—सूक्ष्मदेह सो क्या है?

उत्तरः—अपंचीकृतपञ्चमहाभूतके सतरात्त्वनका सूक्ष्मदेह है॥

* ५९ प्रश्न—सूक्ष्मदेहके सतरातत्व कौनसैं हैं?

उत्तरः—१—५ पांचज्ञानइंद्रिय। ६—१० पांचकर्मइन्द्रिय। ११—१५ पांचप्राण। १६ मन औ १७ बुद्धि। ये सतरातत्त्व हैं॥

* ६० प्रश्न—पांचज्ञानइंद्रिय कौनसैं हैं?

उत्तरः—१—५ श्रोत्र त्वचा चक्षु जिव्हा औ घ्राण। ये पचज्ञानइंद्रिय हैं॥

॥ ५३ ॥ पीछे लगै नहीं। यह अत्यंतनिवृत्ति है।
॥ ५४ ॥ ज्ञानके साधन इंद्रिय ज्ञानइंद्रिय हैं।

६१ प्रश्नः—पांचकर्मइंद्रिय कौनसे हैं ?

उत्तरः—६-१० वाक् पाणि पाद उपस्थ औ गुद। ये पंचकर्मइंद्रिय हैं॥

६२ प्रश्नः—पांचप्राण-कौनसे हैं ?

उत्तरः—११-१५ प्राण अपान समान उदान औ व्यान। ये पांचप्राण हैं॥

६३ प्रश्न—मन कौनकूं कहिये ?

उत्तरः—१६ संकल्पविकल्प रूप जो वृत्ति ताकूं मन कहिये॥

६४ प्रश्नः—बुद्धि किसकूं कहिये ?

उत्तरः—१७ निश्चयरूप जो वृत्ति। ताकूं बुद्धि कहिये॥

६५ प्रश्नः-अपंचीकृतपंचमहाभूत कौनकूं कहिये?

॥ ...के साधन इंद्रिय कर्मइंद्रिय हैं॥

उत्तरः—जिन भूतनका पूर्व कही रीति,
पंचीकरण न भया होवै।

१ तिन भूतनकूं अपंचीकृतपंचमहाभूत
२ तिनहींकूं सूक्ष्मभूत कहैहैं ! औ
३ तिनहींकूं तन्मात्रा बी कहैहैं॥

७६६ प्रश्नः—अपंचीकृतपंचमहाभूतनके सतरा
कैसें जानने ?

उत्तरः—

पांचज्ञानइन्द्रिय औ पांचकर्मइन्द्रिय
१ आकाशके सत्त्वगुणका भागश्रोत्र
२ आकाशके रजोगुणका भाग वाक
(१) श्रोत्रइन्द्रिय शब्दकूं सुनता है।
(२) वाक्इन्द्रिय शब्दकूं बोलता
(१) श्रोत्र ज्ञानइन्द्रिय हैं। औ

॥ ५६ ॥ सर्वपदार्थनमैं सत्त्व रज तम।
गुण वर्त्ततेहैं ॥

(२) वाक् कर्म इन्द्रिय है।
इन दोनूं की मित्रता है ॥
३ वायुके सत्वगुणका भाग त्वचा है। औ
४ वायुके रजोगुणका भाग पाणि है।
(१) त्वचाइन्द्रिय स्पर्शकूं ग्रहण करै है। औ
(२) हस्तइन्द्रिय तिसका निर्वाह करै है ॥
(१) त्वचा ज्ञानेंद्रिय है। औ
(२) हस्त कर्मेंद्रिय है।
इन दोनूं की मित्रता है ॥
५ तेजके सत्वगुणका भाग चक्षु है ॥
६ तेजके रजोगुणका भाग पाद है ॥
(१) चक्षु इन्द्रिय रूपका ग्रहण करै है औ
(२) पादइन्द्रिय तहाँगमन करै है ॥
(१) चक्षु ज्ञानेंद्रिय है ॥
(२) पाद कर्मेंद्रिय है ॥
इन दोनूं की मित्रता है ॥

७ जलके सत्वगुणका भाग जिव्हा है।
८ जलके रजोगुणका भाग उपस्थ है ॥
(१) जिव्हाइन्द्रिय ग्रहण करै है। औ
(२) उपस्थइन्द्रिय रसका त्याग करै है॥
(१) जिव्हा (रसना) ज्ञानेंद्रिय है। औ
(२) उपस्थ कर्मेंद्रिय है ॥
इन दोनूं की मित्रता है।
९ पृथिवीके सत्वगुणका भाग घ्राण है।
१० पृथिवीके रजोगुणका भाग गुद है॥
(१) घ्राणइंद्रिय गंधका ग्रहण करै है। औ
(२) गुदइन्द्रय गंधका त्याग करै है॥
(१) घ्राण ज्ञानेंद्रिय है। औ
(२) गुद (पायु) कर्मेंद्रिय है ॥
इन दोनूंकी मित्रता है ॥

पांचप्राण औ मनबुद्धिविषैः—

११-१५ इन पांचभूतनके रजोगुणके भाग मिलके पांचप्राण भये हैं। औ १६-१७ इन पांचभूतनके सत्त्वगुणके भाग मिलिकेअंतःकरण भयाहै ॥ यहहीं अंतःकरण मन औ बुद्धिरूप है इहां चित्त औ अहंकारका मन औ बुद्धिविषै अंतर्भाव है। ऐसैं अपंचीकृतपंचमहाभूतनके कार्य। सतरातत्त्व जाननैं ॥

* ६७ प्रश्नः-सतरातत्त्वके समजनैका क्या फल है?

उत्तरः—ये सतरातत्त्व मैं नहीं औ मेरे नहीं। ये अपंचीकृतपंचमहाभूतनके हैं। यह सतरातत्त्वके समजनैका फल है॥

६८ प्रश्न-ये सतरातत्व मैं नहीं औ मेरे नहीं। यह किस कारणसैं जानना ?

उत्तरः—इन सतराच्चनका मैं जाननैहारा हूँ ॥ जो जिसकूं जानैं सो न्यारा होवैहै। यह नियम है॥ इस कारणसै ये सतरातत्त्व मैं नहीं औ मेरे नहीं। यह जानना ॥

* ६९ प्रश्नः—इसविषै दृष्टांत क्या समझना ?

उत्तरः—

दृष्टांतः-जैसैं [१] नृत्यशालाविषै स्थित। [२] दीपक। [३] राजा। [४] प्रधान। (५) अनुचर। (६) नायिका। (७) वाजंत्री औ (८) अन्य सभाके लोक (९) पेवैठे होवैं तब प्रकाशैहै औ (१०) सर्व उठि जावैं तब शून्यगृहकूं भी प्रकाशै है ॥

सिद्धांतः—तैसैं (१) स्थूलदेहरूप नृत्यशालाविषै (२) साक्षीरूप जो मैं दीपक हूँ। (३) सो चिदाभासरूप राजा औ (४) मनरूप प्रधान औ (५) पांचप्राणरूप अनुचार औ (६) बुद्धिरूप नायिका औ (७) दशइन्द्रियरूप वाजंत्री औ (८) शब्दादिपंचविषयरूप सभाके लोक (९) ये जाग्रत स्वप्न समयविषै होवैंतब इनकूं प्रकाशताहूँ औ [१०] सुषुप्तिसमयविषै ये न होवैं तब तिनके अभावकूं बी मैं प्रकाशताहूँ। इसविषै यह उक्त दृष्टांत समजना॥

॥ ७० प्रश्नः—सो कैसैं समजना?

उत्तरः—

१ जाग्रत्अवस्थाविषै इन्द्रिय औ अंतःकरण दोनूं की सहायतासैं मैं प्रकाशता हूँ कहिये जानताहूँ। औ

२ स्वप्नअवस्थाविषै इन्द्रियनसैं विना केवल अंतःकरणकी सहायतासैं मैं प्रकाशताहूं। औ

२ सुपुप्तिअवस्थाविषै इन्द्रिय औ अंतः-करण दोनूंकी सहायता विना केवल मैंही प्रकाशता हूं । ऐसैं समजना ॥

* ७१ प्रश्नः—इसविषै और दृष्टान्त क्या है ?

उत्तरः—दृष्टांतः—जैसैं [१] पांचछिद्र-वाले घटके भीतर पात्र तैल औ वत्तीसहित दीपक जलता है [२] सो दीपक । पात्र तैल वत्ती घट के भीतरके अवयव औ घटके छिद्रनकूं प्रकाशता हुया घटके वाहिर छिद्रनके सन्मुख क्रमतैं धरे जो वीणा। पुष्पनका गुच्छ। मणि । रसपात्र औ । अत्तरकी सीसी । तिन सर्वकूं छिद्रद्वारा प्रकाशताहै । औ [४] महा-तेजमय सामान्यरूपसैं सर्वव्यापी है ॥

सिद्धांतः—तैसैं [१] पांचज्ञानैंद्रियरूप छिद्रवाले स्थूलदेहरूप घटके भीतर हृदयकमलरूप पात्र है। तामैं मनरूप तैल है औ बुद्धिरूप वत्ती है। तापर आरूढ़ आत्मारूप दीपक है॥ [२] सो हृदयरूप पात्रकूं औ मनरूप तैलकूं औ बुद्धिरूप वत्तीकूं औ देहके भीतरके अवयवनकूं औइंद्रियरूप छिद्रनकूं प्रकाशता(जानता) हुया। इंद्रियनसैं संबंधवाले शब्दादिकविषयनकूं बी इंद्रियद्वारा प्रकाशताहै औ [३] ईश्वररूपसैं ब्रह्मांडादिसर्ववाह्यप्रपंचकूं प्रकाशताहै औ [४] सामान्यचैतन्य ब्रह्मरूपसैं सर्वव्यापी है॥

यह इसविषै और दृष्टांत है॥

॥ २७ ॥ इहां और यज्ञशालाका दृष्टांत है। सो आगे ७ वीं कलाविषै उपद्रष्टारूप आत्माके शिचेपणके प्रसंगमैं कहियेगा॥

* ७२ प्रश्न—ऐसैं कहनैसैं क्या निर्णय भया ?

उत्तरः—ये कहे जे सतरातत्त्व वे मैं नहीं औ ये मेरे नहीं। ये पंचमहाभूतनके हैं॥ मैं इनका जाननैंहारा द्रष्टा घटद्रष्टाकी न्यांई इनसैं न्यारा हूँ। यह निर्णय भया॥

* ७३ प्रश्नः—सतरातत्व मैं नहीं औ मेरे नहीं। सो किसरीतिसैं समझना ?

उत्तरः—

॥ १–५ ॥ पांचज्ञानइन्द्रियविषैंः—

१ श्रोत्रः—

[१] शब्दकूं सुनै तिसकूं बी मैं जानता हूं।

[२] न सुनै तब तिस सुननैंके अभावकूं बी मैं जानताहूँ।

यातैं यह श्रोत्र मैं नहीं औ मेरा नहीं। यह आकाशका है। मैं इसका जाननैंहारा द्रष्टा घटद्रष्टाकी न्यांई इसतैं न्यारा हूँ॥

२ त्वचा:—

[१] स्पर्शकूं ग्रहण करै तिसकूं वी मैं जानताहूं। औ

[२] ग्रहण न करै तब तिस ग्रहण करनेके अभावकूं वी मैं जानताहूँ।

यातैं यह त्वचा मैं नहीं औ मेरी नहीं। यह वायुकी है। मैं इसका जाननैहारा द्रष्टा घटद्रष्टाकी न्यांई इसतैं न्यारा हूँ॥

३ चक्षु:—

[१] रूपकूं देखै तिसकूं वी मैं जानताहूं। औ

[२] न देखै तब तिस देखनैके अभावकूं वी मैं जानताहूं।

यातैं यह चक्षु मैं नहीं औ मेरा नहीं। यह तेजका है। मैं इसका जाननैहारा द्रष्टा घटद्रष्टाकी न्यांई इसतैं न्यारा हूँ॥

४ जिह्वाः—

(१) रशका स्वाद लेवे तिसकूं बी मैं जानताहूं। औ

(२) स्वाद न लेवै तब तिस स्वाद लेनेके अभावकूं बी मैं जानताहूं।

यातैं यह जिह्वा मैं नहीं औ मेरी नहीं। यह जलकी है। मैं इसका जाननैहारा द्रष्टा घट-द्रष्टाकी न्यांई इसतैं न्यारा हूं॥

५ घ्राणः—

(१) गंधका ग्रहण करैं तिसकूं बी मैं जानताहूँ। औ

(२) न ग्रहणकरै तब तिस ग्रहण करनेके अभावकूं बी मैं जानताहूं।

यातैं यह घ्राण मैं नहीं। औ मेरा नहीं। यह पृथ्वीका है मैं इसका जाननैहारा द्रष्टा घट-द्रष्टाकी न्यांई इसतैं न्यारा हूं॥

॥ ६-१० ॥ पांचकर्मइंद्रियविषैः—

६ वाक्:–(वाचा)

(१) बोलै तिसकूं बी मैं जानताहूँ। औ (२) न बोले तब तिसके अभाकूं बी मैं जानताहूं। यौं यह वाक् मैं नहीं औ मेरी नही। यह आकाशकी है। मैं इसका जाननै हारा द्रष्टा घटद्रष्टाकी न्यांई इसतैं न्यारा हूं॥

६ पाणिः—(हस्त)

(१) लेना देना करैं तिसकूं बी मैं जानताहूं। औ

(२) न करैं तब तिसके अभावकूं बी मैं जानताहूं।

यातैं ये हस्त मैं नहीं औ मेरे नहीं। ये वायुके हैं। मैं इनका जाननैहारा द्रष्टा घटद्रष्टाकी न्यांई इनतैं न्यारा हूँ॥

८ पादः—

[१] चलैं तिसकूं बी मैं जानता हूं। औ

[२] न चलैं तब तिसके अभावकूं बी मैं जानता हूँ।

यातैं ये पाद मैं नहीं औ मेरे नहीं। ये तेज के हैं। मैं इनका जाननैहारा द्रष्टा घटद्रष्टा की न्यांई इनतैं न्यारा हूँ॥

९ उपस्थः—

[१] रस [मूत्र और वीर्य] का त्याग करै तिसकूं बी मैं जानता हूं। औ

[२] त्याग न करै तब तिसके अभावकूं बी मैं जानता हूं।

यातैं यह उपस्थ मैं नहीं औ मेरा नहीं। यह जलका है। मैं इसका जाननैहारा द्रष्टा घटद्रष्टाकी न्यांई इसतैं न्यारा हूं।

१० गुदः—

(१) मलका त्याग करै तब तिसकूं बी मैं जानता हूं। औ

(२) त्याग न करै तब तिसके अभावकूं बी मैं जानता हूं।

यातैं यह गुद मैं नहीं औ मेरा नहीं। यह पृथ्वीका है। मैं इसका जाननैहारा द्रष्टा घटद्रष्टाकी न्यांई इसतैं न्यारा हूं॥

॥ ११-१७ ॥ प्राण औ अंतःकरणविषै

११—१५ पांचप्राणः—

(१) क्रिया करैं तिसकूं बी मैं जानताहूं।औ

(२) क्रिया न करैं तब क्रियाके अभावकूं बी मैं जानता हूँ।

यातैं ये प्राण मैं नहीं औ मेरे नहीं। ये मिले-हुये पंचमहाभूतनके हैं। मैं इनका जाननैहारा द्रष्टा घटद्रष्टाकी न्यांई इनतैं न्यारा हूं॥

१६ मनः—

(१) सङ्कल्पविकल्प करै तिसकूं मैं जानताहूं
(२) सङ्कल्पविकल्प न करै तब तिसके अभावकूं बी मैं जानताहूं।

यातैं यह मन मैं नहीं औ मेरा नहीं। यह मिले हुये पंचमहाभूतनका है। मैं इसका जाननेहारा द्रष्टा घटद्रष्टा की न्यांई इससैं न्याराहूं॥

१७ बुद्धि—

(१) निश्चय करै तिसकूं बी मैं जानताहूँ। औ
[२] निश्चय न करै तब तिसके अभावकूं बी मैं जानताहूँ।

यातैं यह बुद्धि मैं औ मेरी नहीं। यह मिले हुये पंचमहाभूतनकी है। मैं इसका जाननेहारा द्रष्टा घटद्रष्टा की न्यांई इसतैं न्यारा है॥ इसरीतिसैं ये सतरातत्त्व मैं नहीं औ मेरे नहीं। यह समजना॥

॥ ७४ प्रश्नः—ऐसैं कहनैसैं क्या भया ?

उत्तरः—

१ लिंगदेह औ तिसके धर्म पुण्यपापका कर्त्तापना। तिनके फल सुखदुःखकाभोक्तापना। औ
२ इसलोक परलोकविषै गमनआगमन। औ
३ वैराग्यशमदमादिसात्त्विकीवृत्तियां औ रागद्वेषहर्षादिराजसीवृत्तियां। औ निद्राआलस्यप्रमादादितामसीवृत्तियां।
४ तैसैं क्षुधातृषा अंधपननाआदि अरु मंदपना औ पटुपना

इत्यादिक मैं नहीं औ मेरे नहीं। यह निश्चय भया ॥

॥ ७५ प्रश्नः—पुण्यपापका कर्त्ता औ तिनके फल सुखदुःखका भोक्ता मैं कैसैं नहीं औ कर्त्तापना भोक्तापना मेरा धर्म नहीं। यह कैसैं जानना ?

उत्तरः—१ जो वस्तु विकारी होवै सो क्रियावान् होनेतैं कर्त्ता कहिये है॥ मैं निर्विकार कूटस्थ होनेतैं क्रियाका आश्रय नहीं। यातैं पुण्यपापरूप क्रियाका मैं कर्त्ता नहीं। औ जो कर्त्ता नहीं सो भोक्ता बी होवै नहीं। यातैं ये अंतःकरणके धर्म हैं। मेरे नहीं। मैं इनका जाननेहारा द्रष्टा घटद्रष्टाकी न्यांई इनतैं न्यारा हूँ। ऐसैं जानना॥

* ७६ प्रश्नः–इसलोक परलोकविषै गमनआगमन मेरे धर्म नहीं। यह कैसैं जानना?

उत्तरः—२ अंतःकरण (लिंगदेह) परिच्छिन्न है। तिसका प्रारब्धकर्मके बलसैं गमन-आगमन संभवै है औ मैं आकाशकी न्यांई व्यापक हूं। यातैं मेरे धर्म गमन आगमन नहीं। ऐसैं जानना॥

॥ ७७ प्रश्नः—सात्विकी राजसी औ तामसी वृत्तियाँमैं नहीं औ मेरा धर्म नहीं। यह कैसैं जानना?

उत्तरः—३ दृष्टांत जैसैं (१) किसी महलमें बैठे (२) राजाके विनोदअर्थ (३) कोई कारीगर (४) कारंजा बनावै है। (५) तिस कारंजेकी कलके खोलनेसैं जलकी तीन-धारा निकसतीयां हैं [६] तिन तीनधारा के भीतर प्रवाहरूपसैं अनंत धारा निकसतीयां हैं [७] जब सो कल बंध करिये तब तीन धारा बध होयके अकेला राजाहीं बाकी रहता है

सिद्धांतः—तैसैं [१] स्थूलशरीररूप महलमें [२] अधिष्ठान कूटस्थरूपकरि स्थित परमात्मारूप राजा है। तिसके विनोदअर्थ

(३) माया [अज्ञान] रूपकारीगरनैं (४) अंतःकरणरूप कारंजा किया है। [५] जाग्रत स्वप्नविषै तिसकी प्रारब्धरूप कलके खोलनैंसैं तीनगुणके प्रवाहरूप तीनधारा निकसतीया है। [६] तिन तीनधाराके भीतरसैं अगणित-वृत्तियां उठतीयां हैं। [७] औ सुषुप्तिविषै प्रारब्धकर्मरूप कलके बंध हुयेतैं तिन वृत्तियांके भावअभावका प्रकाशक आनंदस्वरूप केवलपरमात्मारूप राजा बाकी रहता है॥ सोई मैं हूं। यातैं ये सात्विकी राजसी तामसी वृत्तियां मैं नहीं औ मेरी नहीं। ये अंतःकरणकी हैं। मैं इनका जाननैहारा द्रष्टा घटद्रष्टाकी न्यांई इनतैं न्यारा हूं। ऐसैं जानना॥

* ७८ प्रश्नः—अन्धपनाआदि अरु मंदपना औ पटुपना मैं नहीं औ मेरे नहीं। यह कैसैं जानना?

ला:—४

(१) नेत्रादिकइंद्रिय आपआपके विषयकूं कछू बी ग्रहण न करैं सो तिनका अंधपनाआदि है। तिसकूं बी मैं जानता हूं। औ

(२) विषयकूं स्वल्प ग्रहण करैसो तिनका मंदपना है। तिसकूं बी मैं जानता हूं। औ

(३) विषयकूं स्पष्ट ग्रहण करैं सो तिनका पटुपना है। तिसकूं बी मैं जानताहूं।

यातें ये मैं नहीं औ मेरे नहीं। ये इन्द्रियनके धर्म हैं। मैं इनका जाननैहारा द्रष्टा घटद्रष्टाकी न्याई इनतैं न्यारा हूं।

इसरीतिसैं सूक्ष्मदेहका मैं द्रष्टा हू ॥२॥

॥ ३ ॥ कारणशरीरका मैं द्रष्टा हूं ॥

* ७६ प्रश्नः-कारणदेह सो क्या है ?

उत्तरः—

१ पुरुष जब सुषुप्तिसैं उठे तब कहता है कि "आज मैं कुछ बी न जानताभया" इसतैं सुषुप्तिविषै अज्ञान है । ऐसा सिद्ध होवै है । औ

२ जाग्रत्‌विषै बी "मैं ब्रह्मकूं जानतानहीं" औ 'मेरी मुजकूं खबर नहीं है ।' 'मैं यह नहीं जानता हूं ।' 'मैं वह नहीं जानता हूं' इस अनुभवका विषय अज्ञान है । औ

॥ ९८ ॥ सुषुप्तिसैं उठाया जो पुरुष । तिसकूं "मैं कछुबी न जानताभया" ऐसा ज्ञान होवै है । सो ज्ञान अनुभवरूप नहीं है । किन्तु सुषुप्तिकालविषै अनुभव किये अज्ञानकी स्मृति है ॥ तिस स्मृतिका विषय सुषुप्तिकालका अज्ञान है ।

३ स्वप्नका कारण वी निद्रारूप अज्ञान है।

59

ऐसा जो अज्ञान सो कारणदेह है॥

॥ ८० प्रश्नः—कारणदेह मैं नहीं औ मेरा नहीं। यह कैसैं जानना?

उत्तरः—"मैं जानताहूं" औ "मैं न जानताहूं" ऐसी जे अंतःकरणकी वृत्तियां हैं। तिनकूं

॥ ४१ ॥

१ अज्ञान। स्थूलसूक्ष्मदेहका) हेतु है। यातें इसकूं कारण कहते हैं॥

२ तत्वज्ञानसैं इस अज्ञानका दाह होवै। यातें इसकूं देह कहते हैं॥

यह अज्ञान गर्भमंदिर के अंधकारकी न्यांई ब्रह्मके आश्रित होयके ब्रह्मकूं ही आवरण करता है।

ज्ञातअज्ञातवस्तुरूप विषयसहित मैं जानताहूं। यातैं यह कारणदेह मैं नहीं औ मेरा नहीं। यह
६०
अज्ञानका है। मैं इसका जाननैहारा द्रष्ट घट-द्रष्टा की न्याईं इसतैं न्यारा हूं। यह ऐसैं जानना ॥

इसरीतिसैं कारणदेहका मैं द्रष्टा हूं ॥ ३ ॥

इति श्रीविचारचंद्रोदयेदेहत्रयद्रष्टवर्णननामिका तृतीयकला समाप्ता ॥ ३ ॥

॥ ६० ॥ कारणदेह आप अज्ञान है। तिसकूं "अज्ञानका है" ऐसैं जो कह्या। सो जैसैं राहुकूं ही राहुका मस्तक कहते हैं। तैसैं है।

॥ अथ चतुर्थकलाप्रारंभः ॥ ४ ॥

❀ मैं पञ्चकोशातीत हूं ❀

॥ मनहर छंद ॥

पञ्चकोशातीत मैं हूं अन्न प्राण मनोमय[61]
विज्ञान आनंदमय पञ्चकोश नातमा ॥
स्थूलदेह अन्नमय–कोश लिंगदेह[62] प्राण-
मन रु विज्ञान तीनकोश कहें मातमा ॥
कारणआनंदमय–कोश ये कारज[63] जड़ ।
विकारी विनाशी व्यभिचारीहीं अनातमा
अज चित अविकारी नित्य व्यभिचारहीन
पीतांबर अनुभव करता मैं आतमा ॥४॥

* ८१ प्रश्नः—पंचकोशातीत कहिये क्या ?

उत्तरः—पंचकोशातीत कहिये पांचको-शनतैं मैं अतीत नाम न्यारा हूं ॥

* ८२ प्रश्नः—कोश कहिये क्या है ?

उत्तरः—

१ कोश नाम तलवारके म्यानका । औ

२ धनके भंडारका । औ

३ कोशकार नामक कीडेका है ॥

तिनकी न्यांई पंचकोश आत्माकूं ढांपैहैं।यातें अन्नमयादिक बी कोश कहावै हैं ॥

* ८३ प्रश्नः—पांचकोशके नाम क्या है ?

॥ ६१ ॥ आत्मा नहीं । अर्थ यह जो अनात्मा

॥ ६२ ॥ महात्मा लिंगदेहकूं प्राण मन

विज्ञान तीनकोशरूप कहै हैं ॥

॥ ६३ ॥ पंचकोश ।

उत्तरः—अन्नमयकोश । २ प्राणमयकोश । ३ मनोमयकोश । ४ विज्ञानमयकोश । औ ५ आनंदमयकोश । ये पांचकोशके नाम हैं॥

१८४ प्रश्नः—१ अन्नमयकोश सो क्या है?

उत्तरः—

१ मातापितानै खाया जो अन्न । तिसतैं भया जो रजवीर्य । तिसकरि जो माताके उदरविषै उत्पन्न होता है ।

२ फेर जन्मके अनंतर क्षीरादिकअन्नकरिके जो वृद्धिकूं पावता है ।

३ फेर मरणके अनंतर अन्नमयपृथिवीविषै लीन होता है ।

ऐसा जो स्थूलदेह सो अन्नमयकोश है ॥

१८५ प्रश्नः—अन्नमयकोश कैसा है?

उत्तरः—सुखदुःखके अनुभवरूप भोगका स्थान है ॥

॥ ८६ प्रश्नः—अन्नमयकोशतैं मैं न्यारा हूँ। यह कैसे जानना ?

उत्तरः----

१ जन्मतैं प्रथम औ मरणतैं पीछे अन्नमयकोश (थूलशरीर) का अभाव है। यातैं यह उत्पत्तिनाशवान् होनेतैं घटकी न्याईं कार्य है। औ २ मैं सदा भावरूप हूँ। तातैं उत्पत्तिनाशरहित होनेतैं इसतैं विलक्षण हूँ। यातैं यह अन्नमयकोश मैं नहीं औ मेरा नहीं। यह स्थूलदेहरूप है। मैं इसका जानहारा आत्मा इसतैं न्यारा हूँ॥ इस रीतिसैं अन्नमयकोशतैं मैं न्यारा हूं। यह जानना॥

॥ ८७ प्रश्न-२ प्राणमयकोश सो क्या है ?

उत्तरः--पांचकर्मइन्द्रियसहित पांच प्राण। सो प्राणमयकोश है॥

॥८८प्रश्नः-पांचकर्मइंद्रिय औपांचप्राण कौनसे हैं?

उत्तरः--पांचकर्मइन्द्रिय औ पांचप्राण पूर्व सूक्ष्मदेहकी प्रक्रियाविषै कहे हैं ॥

॥८९प्रश्न-पांचप्राणके स्थान औ क्रिया कौन हैं?

उत्तरः----

१ प्राणवायुः----

[१] हृदयस्थानविषै रहता है । औ

(२) प्रत्येकदिनरात्रिविषै २१६०० श्वास-उच्छ्वास लेनेरूप क्रियाकूं करता है ॥

२ अपानवायुः—

(१) गुदस्थानविषै रहता है । औ

(२) मलमूत्रके उत्सर्ग (त्याग) रूप क्रियाकूं करता है ॥

३ समानवायुः—

(१) नाभिस्थानविषै रहता है । औ

(२) कूपजलकूं बगीचेविषै मालीकी न्यां
भोजन किये अन्नके रसकूं निकासिके
नाडीद्वारा सर्वशरीरविषै पहुँचाव
नैरूप क्रियाकूं करता है ॥

४ उदानवायुः—

(१) कंठस्थान विषै रहताहै औ
(२) खाएपिए अन्न जलके विभागकूं करता
है। तथा वप्न हींचकी आदिक
दिखावनैरूप क्रियाकूं करता है।

५ व्यानवायुः—

(१) सर्वांगस्थानविषै रहता है। औ
(२) सर्वङ्गनकी संधिनके फेरनैरू
क्रियाकूं करता है ॥

इसरीतिसें पांचप्राणके मुख्यस्थान
क्रिया है ॥

* ६० प्रश्नः-प्रणादिवायु शरीरविषै क्या करतेहैं ?

उत्तरः-प्राणादिवायु

१ सारेशरीरविषै पूर्ण होयके शरीरकूं वल देते हैं। औ

२ इन्द्रियनकूं आप आपके कार्यविषै प्रवृत्ति रूप क्रियाके साधन होते हैं॥

* ६१ प्रश्न-प्राणमयकोशतैं मैं न्यारा हूँ। यह कैसैं जानना ?

उत्तरः—

१ निद्राविषै पुरुष सोयाहोवै। तब प्राण जागताहै। तौ वी कोई स्नेही आवै तिसका सन्मान करता नहीं। औ

२ चोर भूषण लेजावै तिसकूं निषेध करता नहीं।

यातें यह प्राणवायु घटको न्याईं जड है। औ

मैं चैतन्यरूप इसतैं विलक्षण हूँ। यातैं यह प्राणमयकोश मैं नहीं औ मेरा नहीं। यह सूक्ष्मदेहरूप है॥ मैं इसका जाननैंहारा आत्मा इसतैं न्यारा हूँ इसीरीतिसे प्राणमयकोशतैं मैं न्यारा हूँ। यह जानना॥

* ६२ प्रश्नः-३ मनोमयकोश सो क्या है?

उत्तरः---पांचज्ञानइन्द्रियसहित मन। सो मनोमयकोश है॥

* ६३ प्रश्नः-पांचज्ञानइंद्रिय औ मन कौन हैं?

उत्तरः—ये पूर्व सूक्ष्मदेहकी प्रक्रियाविषै कहे हैं॥

* ६४ प्रश्नः—मन कैसा है?

उत्तरः—देहविषै अहंता औ गृहादिकविषै ममतारूप अभिमानकूं करताहुआ इन्द्रियद्वारा बाहिर गमन करताहुआ कारणरूप है॥

* ६५ प्रश्नः-मनोमयकोषतैं मैं न्यारा हूँ। यह किसरीतसैं जानना ?

उत्तरः—

१ कामक्रोधादिवृत्तियुक्त होनेतैं मन नियम रहितस्वभाववाला है तातैं विकारी है। औ २ मैं सर्ववृत्तिनका साथी निर्विकार हूँ। यातैं यह मनोमयकोश मैं नहीं औ मेरा नहीं यह सूक्ष्मदेहरूप में। मैं इसका जाननैहारा आत्मा इसतैं न्यारा हूँ ॥ इसीरीतिसैं मनोमयकोशतैं मैं न्यारा हूँ। यह जानना ॥

* ६६ प्रश्नः-४ विज्ञानमयकोश क्या है ?

उत्तरः—पांचज्ञानइंद्रियसहित बुद्धि। सो विज्ञानमयकोश है।

* ६७ प्रश्नः -ज्ञानइंद्रिय औ बुद्धि कौन है ?

उत्तरः—ये पूर्व लिंगदेहकी प्रक्रियाविषै

* ६८ प्रश्न—बुद्धि कैसी है ?

उत्तरः—

१ सुषुप्तिविषैं चिदाभासयुक्त बुद्धि विलीन होवैहै। औ

२ जाग्रत्‌विषैं नखके अग्रभागसैं लेके शिख पर्यंत शरीरविषैं व्यापिके वर्त्तीहुयी कर्ता रूप है॥

* ६९ प्रश्नः—विज्ञानमयकोशतैं मैं न्यारा हूं। यह कैसैं जानना ?

उत्तरः—

१ बुद्धि। घटादिककी न्याईं विलयआदि अवस्थावाली होनैतैं विनाशी है। औ

२ मैं विलयआदि अवस्थारहित होनैतैं इस विलक्षण अविनाशी हूँ।

यातैं यह विज्ञानमयकोश मैं नहीं औ मे नहीं। यह सूक्ष्मदेहरूप है मैं इसका जान

हारा आत्मा इसतैं न्यारा हूँ ॥ इसरीतिसैं विज्ञानमयकोशतैं मैं न्यारा हूं । यह जानना ॥

* १०० प्रश्नः–५ आनंदमयकोश सो क्या है ?

उत्तरः—

१ पुण्यकर्मफलके अनुभवकालविषै कदाचित् बुद्धिकी वृत्ति अंतर्मुख हुयी आत्मस्वरूपभूत आनंदके प्रतिबिंबकूं भजतीहै । औ

॥ ९४ ॥

१ जैसे दीपकका प्रकाश औ आकाश अभिन्न प्रतीत होवै हैं । तौ बी भिन्न है । औ

२ जैसे तप्तलोहविषै अग्नि औ लोह अभिन्न प्रतीत होवै है । तौ बी भिन्न है ।

तैसे अंतःकरण औ आत्मा अभिन्न प्रतीत होवै हैं तौ बी भिन्न है । काहेतैं सुषुप्तिविषै अंतःकरणके लय हुये आत्माकूं अज्ञानका साक्षी होनैंकरि प्रतीयमान होनैहै ॥

२ जो प्रिय मोद प्रमोदरूप कहिये है।
३ सोई वृत्ति पुण्यकर्मफलके भोगकी निवृत्ति
के हुये निद्रारूपसैं विलीन होवै है।
सो वृत्ति आनदमयकोश है॥

*१०१ प्रश्न:—आनंदमयकोश कैसा है?

उत्तर:—

१ इष्टवस्तु केदर्शनसैं उत्पन्न प्रिय वृत्ति
जिसका शिर है। औ
२ इष्टवस्तुके लाभतैं उत्पन्न मोदवृत्ति जिसका
एक (दक्षिण) पक्ष है। औ
३ इष्टवस्तुके भोगसैं उत्पन्न प्रमोदवृत्ति जिसका
द्वितीय (वाम) पक्ष है। औ
४ बुद्धिवा अज्ञानकीवृत्तिविषै आरम द्दरः
आनंदका प्रतिबिंब जिसका स्वरूप है।इ

५ बिंबरूपआत्माका स्वरूपभूत आनंद जिसका पुच्छ[65] (आधार) है।
ऐसा पक्षीरूप भोक्ता आनंदमयकोश है ॥

ॐ १०२ प्रश्नः—आनंदमयकोशतैं मैं न्यारा हूँ। यह किसरीतिसैं जानना ?

उत्तरः—

१ आनंदमयकोश बादल आदिकपदार्थनकी-न्याईं कदाचित् होनेवाला है। यातैं दाचित्कहै। औ
२ मैं सर्वदा स्थित होनैतैं नित्य हूँ ।

॥६५॥ ब्रह्मरूप आनंद आधार होनैतैं तैत्तिरीयश्रुतिविषै पुच्छशब्द करि कहा है ॥

॥६६॥ऐसैं अन्यच्यारीकोशनकी पक्षीरूपता अस्मत्कृत तैत्तिरीयउपनिषद्की भाषाटीकाविषै सविस्तर लिखीहै। जाकूं इच्छा होवेसो तहां देख लेवै ॥

यातैं यह आनंदमयकोश मैं नहीं औ मेरा नहीं। यह कारणदेहरूप है। मैं इसका जानमैंहारा आत्मा इसतैं न्यारा हूँ॥ इसरीतिसैं आनंदमयकोशतैं मैं न्यारा हूं। यह जानना॥

* १०३ प्रश्नः-विद्यमानअन्नमयादिकोश जब आत्मा नहीं। तब कौन आत्मा हैं?

उत्तरः—

१ बुद्धि आदिविषै प्रतिबिंबरूपकरि स्थित। औ
२ प्रिय आदिकशब्दसैं कहियेहै।

ऐसा जो आनंदमयकोश है। तिसका बिंबरूप कारण जो आनंद है। सो नित्य होनैंतैं आत्मा है॥

* १०४ प्रश्नः—पांचकोश जे हैं वेहीं अनुभवविषै आवते तिनतैं न्यारा कोई आत्मा अनुभवविषै आवता नहीं। यातैं पांचकोशतैं न्यारा आत्मा है। यह निश्चय कैसै होवै?

उत्तर:—यद्यपि पांचकोशहीं अनुभवविषै आवतेहैं। इनतैं न्यारा कोई आत्मा अनुभवविषै आवता नहीं। यह वार्त्ता सत्य है। तथापि जिस अनुभवतैं ये पांचकोश जानियेहैं। तिस अनुभवकूं कौन निवारण करैगा? कोई बी निवारणकरि शके नहीं। यातैं पांचकोशन का अनुभवरूप जो चैतन्य है। सो पांचकोशनतैं न्यारा आत्मा है।

* १०५ प्रश्न:—आत्मा कैसा है ?

उत्तर:—सत् चित् आनंद आदि स्वरूप है।

इति श्रीविचारचंद्रोदये पञ्चकोशातीतवर्णननामिका चतुर्थकला समाप्ता । ४ ।

—

॥ अथ पञ्चमकला प्रारंभः ॥ ५ ॥

तीनअवस्थाका मैं साक्षी हूं ॥

॥ मनहर छंद ॥

अवस्था तीनकोसाक्षी आतमा अन्वययाको[67]
व्यभिचारीअवस्थाको व्यतिरेक[68] पाईयो ॥
त्रिपुटी चतुरदश करि व्यवहार जहां।
स्पष्ट सो जाग्रत् जूठ ताकूं दृश्य ध्याईयो ॥
देखे सुने वस्तुनके संस्कारसें सृष्टि जहां।
अस्पष्टप्रतीत स्वप्न मृषा लोक गाईयो ॥
सकलकरण लय होय जहां[69] सुषुप्ति सो,
पीतांबर तुरीयहीं प्रत्येक[70] प्रत्याईयो[71] ॥ ५ ॥

* १०६ प्रश्नः—तीन अवस्था कौनसी हैं?[73]

उत्तरः—१ जाग्रत[72]। २ स्वप्न। औ ३ सुषुप्ति[74]। ये तीन अवस्था हैं ॥

॥ ६७ ॥ या (आत्मा) को अन्वय कहिये पुष्पमालामैं सूत्रकी न्यांई तीन अवस्थामैं अनुस्यूतपना है यह अर्थ है।

॥ ६८ ॥ पुष्पनकी न्यांई तीनअवस्थाका परस्पर औअधिष्ठानतैं भेद ॥

॥६९॥ वद्योजना:–जहां सकलकरण लयश होय। सो सुषुप्ति है ॥

॥ ७० ॥ अंतरात्मा ॥ ७१ ॥निश्चय कीयो ॥

॥ ७२ ॥ स्वप्न औ सुषुप्तितैं भिन्न इन्द्रियजन्म ज्ञानका औ इन्द्रियजन्मज्ञानके संस्कारका आधारकाल। सो जाग्रत् अवस्था कहिये है ॥

॥ ७३ ॥ इन्द्रियसैं अजन्य। विषयगोचर अन्तः–करणकी अपरोक्षवृत्तिको काल। स्वप्न-अवस्था कहिये है ॥

॥ ७४ ॥ सुखगोचर औ अविद्यागोचर अविद्याकी वृत्तिका काल। सुषुप्तिअवस्था कहियेहै॥

॥ १ ॥ जाग्रत्अवस्थाका मैं साक्षी हूं ॥

* १०७ प्रश्नः—जाग्रत्अवस्था सो क्या है ?

उत्तरः—

१ चौदाइन्द्रिय अध्यात्म[75] हैं ॥

२ तिनके चौदादेवता अधिदैव[76] हैं ॥

३ तिनके चौदाविषय अधिभूत[77] हैं ॥

इन पैंचालीसतत्त्वसैं जिसविषै व्यवहार होवै ॥

सो जाग्रत्अवस्था[78] है ॥

॥ ७५ ॥ आत्माकूं आश्रयकरिके वर्त्तमान जे इन्द्रियादिक। वे अध्यात्म कहिये हैं ॥

॥ ७६ ॥ स्वसंघातसैं भिन्न होवै औ चक्षुइन्द्रियका अविषय होवै। सो अधिदैव कहिये है ॥

॥ ७७ ॥ स्वसंघातसैं भिन्न होवै औ चक्षुआदि इन्द्रियका विषय होवै सो अधिभूत कहिये है ॥

॥ ७८ ॥ यह स्थूलदृष्टिवाले पुरुषनकूं जाननैंयोग्य जाग्रत्का लक्षण है। तैसेही स्वप्नसुषुप्तिविषै बी जानना॥

*१०८ प्रश्नः—चौदाइन्द्रिय कौनसी हैं ?

उत्तरः—

१–५ ज्ञानइन्द्रिय पांचः—१ श्रोत्र। २ त्वचा। ३ चक्षु। ४ जिह्वा। औ ५ घ्राण॥

६–१० कर्मइन्द्रिय पांचः—६ वाक्। ७ पाणि। ८ पाद। ९ उपस्थ। औ १० गुद॥

११–१४ अन्तःकरण च्यारीः—११ मन। १२ बुद्धि। १३ चित्त औ १४ अहङ्कार॥

ये चौदाइन्द्रिय अध्यात्म है।

*१०९प्रश्नः—चौदाइन्द्रियनके चौदादेवता कौनसेंहैं?

उत्तरः—

१–५ ज्ञानइन्द्रिय पांचके देवताः—

[१] श्रोत्रइंद्रियका देवता। दिशा *॥

[२] त्वचाइंद्रियका देवता। वायु॥

[३] चक्षुइंद्रियका देवता। सूर्य॥

* दिक्पाल॥

(४) जिह्वाइन्द्रियका देवता। वरुण॥
(५) घ्राणइंद्रियका देवता। अश्विनीकुमार
६–१० कर्मइंद्रिय पांचके देवताः—
(६) वाक्इंद्रियका देवता। अग्नि॥
(७) हस्तइंद्रियका देवता। इन्द्र॥
(८) पादइंद्रियका देवता। वाननजी॥
(९) उपस्थइंद्रियका देवता। प्रजापति॥
(१० गुदइंद्रियका देवता। यम॥
११–१४ अन्तःकरण च्यारीके देवताः—
(११) मनइंद्रियका देवता। चंद्रमा॥
(१२) बुद्धिइंद्रियका देवता। ब्रह्मा॥
(१३) चित्तइंद्रियका देवता। वासुदेव॥
(१४) अहङ्कारइंद्रियका देवता। रुद्र॥
ये चोदादेवता अधिदैव हैं॥

॥ ७९॥ अन्तरिंद्रियरूप अन्तःकरण॥

*११०प्रश्नः-चौदाइंद्रियनके चौदाविषय कोनसेंहैं?

उत्तरः—

१-५ ज्ञानइंद्रिय पांचके विषयः—

१ शब्द । २ स्पर्श । ३ रूप । ४ रस । ५ गंध ॥

६-१० कर्मइंद्रिय पाँचके विषयः—

६ वचन । ७ आदान । ८ गमन । ९ रतिभोग । १० मलत्याग ॥

११-१४ अन्तःकरण च्यारीके विषयः—

११ संकल्पविकल्प[८०] । १२ निश्चय १३ चिंतन । १४ अहंपना ॥

ये चौदाविषय अधिभूत हैं ॥

॥ ८० ॥ मनका संकल्पविकल्प विषय नहीं। किंतु जिस वस्तुका संकल्प होवै। सो वस्तु विषय है। तैसैंही बुद्धि चित्त अहङ्कार औ कर्मइन्द्रियनविषै बी जानना ॥

* १११ प्रश्नः—अध्यात्म अधिदैव अधिभूत। ये तीनतीन मिलिके क्या कहिये हैं ?

उत्तरः—अध्यात्मादितीन–पुट (आकार) मिलिके त्रिपुटी कहिये हैं ॥

* ११२ प्रश्नः—चौदात्रिपुटी किसरीतिसैं जानती ?

उत्तरः—

१–५ ज्ञानइंद्रियनकी त्रिपुटी ॥

इंद्रिय —	देवता —	विषय —
अध्यात्म ॥	अधिदैव ॥	अधिभूत ॥
[१] श्रोत्र ।	दिशा ।	शब्द ॥
[२] त्वचा ।	वायु ।	स्पर्श ॥
[३] चक्षु ।	सूर्य ।	रूप ॥
[४] जिह्वा ।	वरुण !	रस ॥
[५] घ्राण ।	अश्विनी कुमार ।	गंध ॥

६-१० ॥ कर्मइंद्रियकी त्रिपुटी ॥

इंद्रिय —	देवता —	विषय—
अध्यात्म ॥	अधिदैव ॥	अधिभूत
[६] वाक्	अग्नि	वचन (क्रिया) ॥
[७] हस्त	इन्द्र	लेना देना ॥
[८] पाद	वामनजी	गमन ॥
[९] उपस्थ	प्रजापति	रतिभोग ॥
[१०] गुद	यम	मलत्याग ॥

११-१४ ॥ अन्तःकरण ४ की त्रिपुटी ॥

[११] मन	चन्द्रमा	संकल्प विकल्प ॥
[१२] बुद्धि	ब्रह्मा	निश्चय ॥
[१३] चित्त	वासुदेव	चिंतन ॥
[१४] अहंकार	रुद्र	अहंपना

इसरीतिसैं चौदात्रिपुटी जानना ॥

* ११३ प्रश्न:-इन त्रिपुटीनका क्या स्वभाव है?

उत्तर:-तीनतीनपदार्थनकी जे त्रिपुटी है। तिनमेंसैं एक न होवै तो तिसतिसका व्यवहार न चले। जैसैं

१ इंद्रिय और देवता होवै अरु तिसका विषय न होवै तौ बी व्यवहार न चले।

२ विषय औ इंद्रिय होवै अरु देवता न होवै तौ बी व्यवहार न चले।

ऐसैं सर्व त्रिपुटीनविषै जानना॥

* ११४ प्रश्न:-मेरा क्या स्वभाव है, यह कैसे जानना?

उत्तर:—

१ त्रिपुटी पूर्णहोवै तिसकूं बी मैं जानताहूं। औ
२ त्रिपुटी अपूर्ण होवै तिसकूं बी मैं जानताहूं।
३ तैसैं त्रिपुटीसैं व्यवहार चले तिसकूं बी मैं जानता हूं। औ

कला) तीनअवस्थाका मैं साक्षी हूँ-५ १२३

४ व्यवहार न चले तिसकूं बी मैं जानताहूं। ऐसा मेरा स्वभाव है । यह जानना ॥

* ११५ प्रश्न:-इस कथनसैं क्या सिद्ध भया ?

उत्तर:-त्रिपुटीसैं जिसविषै व्यवहार चलता है ऐसी जाग्रत्अवस्था है। यह सिद्ध भया ॥

*११६ प्रश्न:-जाग्रत्अवस्थाविषै जीवका स्थान वाचा भोग शक्ति गुण औ जाग्रतके अभिमायसैं तिस (जीव) का नाम क्या है ?

उत्तर:-जाग्रत्अवस्थाविषै जीवका

८१

१ नेत्र स्थान है ।

२ वैखरी वाचा है ।

॥ ८१ ॥ यद्यपि जाग्रत्विषै इस चिदाभासरूप जीवकी नखसैं लेके शिखापर्यंत सारेदेहविषै व्याप्ति है। तथापि मुख्यताकरिके सो नेत्रविषै रहता हैं। यातैं ताका नेत्र स्थान कहिये है ।

३ स्थूल भोग है।

४ क्रिया शक्ति है।

५ रजो गुण है। औ

६ जाग्रत्‌के अभिमानसैं विश्व नाम है॥

* ११७ प्रश्न:—जाग्रत्‌अवस्थाके कहनैसैं क्या सिद्ध भया ?

उत्तर:—

१ यह जाग्रत्‌अवस्था होवै तिसकूं बी मैं जानता हूं। औ

२ स्वप्न सुषुप्तिविषै न होवै तब तिसके अभावकूं बी मैं जानता हूं।

यातैं जाग्रत्‌अवस्था मैं नहीं औ मेरी नहीं। यह स्थूलदेहकी है। मैं इसका जाननैंहारा साक्षी घटसाक्षी की न्याईं इसतैं न्यारा हूं। इसरीतिसैं जाग्रत्‌अवस्थाका मैं साक्षी हूं॥

॥ २ ॥ स्वप्नअवस्थाका मैं साक्षी हूं ॥

* ११८ प्रश्नः—स्वप्नअवस्था सो क्या है ?

उत्तरः—जाग्रत्अवस्थाविषै जो पदार्थ देखे-होवैं। सुनेहोवैं। भोगेहोवैं। तिनका संस्कार वालके हजारवें भाग जैसी वारीक हिंतानामक नाडी जो कंठविषै है तिसविषै रहता है। तिससैं निद्राकालमैं पांचविषयआदिकपदार्थ औ तिनका ज्ञान उपजता है। तिनसैं जिसविषै व्यवहार होवैं। सो स्वप्नअवस्था है॥

* ११९ प्रश्नः—स्वप्नअवस्थाविषै जीवका स्थान वाचा भोग शक्ति गुण औ स्वप्नके अभिमानसैं तिस (जीव) का नाम क्याहै ?

उत्तरः—स्वप्नअवस्थाविषै जीवका

१ कंठ स्थान है।

२ मध्यमा वाचा है।

३ सूक्ष्म (वासनामय) भोग है।
४ ज्ञान शक्ति है।
82
५ सत्व गुण है। औ
६ स्वप्नके अभिमानसैं तैजस नाम है।

*१२०प्रश्नः–स्वप्नअवस्थाके कहनैसैं क्यासिद्ध भया ?

उत्तरः—

१ स्वप्नअवस्था होवै तिसकूं बी मैं जानताहूं औ
२ जागृत्सुषुप्तिविषै न होवै तब तिसके अभावकूं बी मैं जानता हूं।

यातैं यह स्वप्नअवस्था मैं नहीं औ मेरी नहीं। यह सूक्ष्मदेहकी है। मैं इसका जाननहारा साक्षी घटसाक्षीकी न्यांई इसतैं न्यारा हूं।

यह स्वप्नके कहनेसैं सिद्ध भया ॥
इसरीतिसैं स्वप्नअवस्था का मैं साक्षी हूं।

॥ ८२ ॥ कितनेक रजोगुण वी कहते हैं ॥

॥ ३ ॥ सुषुप्तिअवस्थाका मैं साक्षी हूं ॥

* १२१ प्रश्नः—सुषुप्तिअवस्था सो क्या है ?

उत्तरः—पुरुष जब निद्रासैं जागिकै उठे सुषुप्तिविषै अनुभव किये सुख औ अज्ञानका स्मरणकरिके कहता है । जो "आज मैं सुखमैं सोयाथा औ कछु बी न जानतामया" यह सुख औ अज्ञानका प्रकाश साक्षीचेतनरूप अनुभवसैं जिसविषै होवै है। ऐसी जो बुद्धिकी विलयअवस्था , सो सुषुप्तिअवस्था है ॥

*१२२प्रश्नः—सुषुप्तिअवस्थाविषै जीवका स्थान वाचा भोग शक्ति गुण औ सुषुप्तिके अभिमानसैं तिस (जीव) का नाम क्या है ?

उत्तरः—सुषुप्तिअवस्थाविषै जीवका

१ हृदय स्थान है ।
२ पश्यंती वाचा है ।
३ आनंद भोग है ।

४ द्रव्य शक्ति है।

५ तमो गुण है। औ

६ सुषुप्तिके अभिमानसैं प्राज्ञ नाम है॥

* १२३ प्रश्नः–सुषुप्तिअवस्थाविषै दृष्टांत क्या है?

उत्तरः—प्रथमदृष्टांत–(१) जैसैं कोई क[...] भूषण कूपविषै गिरयाहोवै तिसके निकासनें[...] कोई तारूपुरुष कूपविषै गिरे। सो पुरुष भूष[ण] मिले तिसकूं बी जानता है औ भूषण न मि[ले] तिनकूं बी जानता है। (२) परन्तु कहनेक[ा] साधन जो वाक्इंद्रिय है तिसके देवता अग्नि का जलके साथि विरोध होनेतें तिरो।न हो[त] है। यातें कहता नहीं। औ (३) जब पु[रुष] जलसैं बाहीर निकसै तब कहनेका साध[न] देवतासहित वाक्इन्द्रिय है। यातें भूषण मिल्या अथवा न मिल्या सो कहता है॥

सिद्धांतः—तैसैं (१) सुषुप्तिअवस्थाविषै सुख औ अज्ञानका साक्षीचेतनरूप सामान्यज्ञान है। (२) परंतु विशेषज्ञानके साधन से इंद्रिय औ अन्तःकरण तिनका तब अभाव है। यातैं सुख औ अज्ञानका विशेषज्ञान होता नहीं। (३) जब पुरुष जागताहै तब विशेषज्ञानके साधन इन्द्रिय औ अन्तःकरण होवैं हैं। यातैं सुषुप्तिविषै अनुभवकिये सुख औ अज्ञाका स्मृतिरूप विशेषज्ञान होवै है ॥

द्वितीयदृष्टांतः—जैसैं (१) आतपविषै पिगल्या घृत होवै। (२) सो छायाविषै स्थित होवै तौ गट्ठारूप होवैहै। (३) फेर आतपविषै स्थित होवै तौ पिगलता है ॥

सिद्धांतः—तैसैं (१) सुषुप्तिविषै कारणशरीररूप अज्ञानहै। (२) सो जाग्रत्स्वप्नविषै बुद्धिरूप होवैहै। (३) फेर सुषुप्तिविषै अज्ञानरूप होवैहै ॥

तृतीयदृष्टांतः—जैसें (१) कोई बालक लड़कनके साथि खेल करनेकूं जावै (२) सो जब श्रमकूं पावै तब माताके गोदमें सोयके गृहके सुखका अनुभव करता है। (३) फेर जब लड़के बुलावैंतबबाहीर जायकेखेलकू करताहै सिद्धांतः—तैसैं (१ कारणशरीर जो अज्ञान तिसरूप माताहै तिसका बुद्धिरूप बालक कर्मरूप लड़कनकेसाथि जाग्रत्स्वप्नरूप बहिर्भूमिविषै व्यवहाररूप खेलकूं करता है। (२) जब विक्षेपरूप श्रमकूं पावै। सुषुप्तिअवस्थारूप गृहविषै अज्ञानरूप मातामें लीन होयके ब्रह्मानंदका अनुभव करता है। (३) फेर जब कर्मरूप लड़के बुलावैंतब जाग्रत्स्वप्नरूप बहिर्भूमिविषै व्यवहाररूप खेलकूं करता है॥

चतुर्थदृष्टांतः—जैसें (१) समुद्रजलकरि पूर्ण घटकूं (२) गलेमें रस्सी बाँधिके समुद्रविषै

लीन करैं(३) तब घटविषै स्थित जलसमुद्र के जलसैं एकताकूं पावता है। (४) तौ वी घट-रूप उपाधिकरि भिन्नकी न्यांई है (५) फेर जब रस्सीकूं खीचीयें तब भेदकूं पावताहै।(६) परन्तु जल सहित घट औ समुद्रका आधार जो आकाश सो भिन्न होना नहीं। (७) किंतु तीन कालविषै एकरस है॥

सिद्धांतः—जैसैं (१) अज्ञानरूप समुद्र जलकरि पूर्ण जो लिंगदेहरूप घट है। (२) सो अदृष्टरूप रस्सीसैं बांध्याहुआ सुषुप्तिकालविषै औ तिसके अवांतरभेदरूप मरण मूर्छा अरु प्रलयकालविषै समष्टिअज्ञानरूपईश्वरकीउपाधि मायाविषै लीन होवै है। (४) तब सो व्यष्टि-अज्ञानरूप जीवकी उपाधि अविद्या। समष्टि-अज्ञानसैं एकताकूं पावै है। (४) तौ वी लिंग शरीरके संस्काररूप उपाधिकरि भिन्नकीन्यांई है

(५) फेर जब अदृष्टरूप रस्सीकूं अन्तर्यामी प्रेरत है। तबभेदकूं पावै है। (६) परंतु व्यष्टिअज्ञानरूप जलसहित लिंगदेहरूप घट औ समष्टिअज्ञानरूप समुद्रका आधार जो चिदाकाश सो भिन्न होता नहीं । (७) किंतु तीनकालविषै एकरस है॥

* १२४ प्रश्नः–सुषुप्तिके कहनैसैं क्या सिद्ध भया?

उत्तरः—

१ सुषुप्ति अवस्था होवै तिसकूं बी मैं जानताहूं औ

२ जाग्रत्स्वप्नविषै यह न होवै तब तिसके अभावकूं बी मैं जाता हूं ।

यातैं यह सुषुप्तिअवस्था मैं नहीं औ मेरी नहीं। यह कारणदेहकी है। मैं इसका जाननेहारा साक्षी घटसाक्षीकी न्यांई इसतैं न्यारा हूं ॥

इसरीतिसैं सुषुप्तिअवस्थाका मैं साक्षी हूं॥

इति श्री विचारचंद्रोदये अवस्थात्रयसाक्षीवर्णननामिका पंचमकला समाप्ता ॥ ५ ॥

॥ अथ षष्ठकला प्रारंभः ॥ ६ ॥

। प्रपंचमिथ्यात्ववर्णन ।

॥ [83] ललित छंदः ॥

सकलदृश्य सो-ऽभ्यास छोडना ।
जगअधारमें चित्त जोडना ॥
[84] त्रयदशाहि जो जाग्रदादि हैं ।
सबप्रपंच सो भिन्न नाहिं हैं ॥ ६ ॥
रजत आदि हैं सीपिमें यथा ।
त्रयदशा सु हैं ब्रह्ममें तथा ॥
रजतआदिवत् दृश्य ये मृषा ।
शुगतिकादिवत् ब्रह्म [85] अमृषा ॥ ७ ॥
व्यभिचरैं [86] मिथो [87] रजतआदि ज्यों ।
इनहिंकि मिथो [88] व्यावृती जु त्यों ॥
शुगति [89] सत्रवत् अनुग एक जो ।
[90] अनुवृत्तीयुतो ब्रह्म आपसो ॥ ८ ॥

[91] शुगतिकामहीं तीनअंश ज्यूं ।
अजडब्रह्ममें तीनअंश त्यूं ॥
[92] उभयअंशकूं सत्य जानिले ।
[93] त्रितिय त्यागदै मोक्ष तौ मिलै ॥ ९ ॥
[94] भिदभ्रमादि जो [95] पंचधाभवं ।
त्रिविधतापता तप्त सो [96] दवं ॥
[97] परशु पंचधा—युक्तियों करी ।
करि विचार तूं छेद ना डरी ॥ १० ॥
नहिं जु जाहिमें तीनकालमें ।
तहँहि भान है मध्यकलामें ॥
शुगति रौप्यवत् भ्यास सो भ्रमं ।
[98] अरथ ज्ञान दो—भ्रांतिका क्रमं ॥ ११ ॥
[99] द्विविधवेम है ज्ञान अर्थको ।
[100] अरथभ्रांति वा षड्विधा वको ॥

सकलध्यास जे जगतमें दसे[101] ।
सवसु याहिके वीचमें धसे[120] ॥ १२ ॥
निज चिदात्मकूं ब्रह्म जानिके ।
सकलवेमको[103] मूल भानि के ॥
[104]परममोदकूं आप बूजिले ।
इहहि मुक्ति पीतांवरो मिले ॥ १३ ॥

॥ ८३ ॥ श्रीमद्भागवतके दशमस्कंधके एकतीसवें अध्यायगत गोपिकागीतकी न्यांई यह छंद है ॥

॥ ८४ ॥ तीनअवस्था ॥

॥ ८५ ॥ सत्य ॥　　॥ ८६ ॥ परस्पर ॥

॥ ८७ ॥ इहां आदिशब्दकरि भोडल (अबरख) औं कागजका ग्रहण है ॥

॥ ८८ ॥ भेद कहिये अन्योन्याभाव ॥

॥ ८९ ॥ पुष्पमालामें सूत्र की न्यांई ॥

॥ ९० ॥ अनुस्यूतताकरि युक्त ॥

॥ ९१ ॥ सामान्य । विशेष । कल्पितविशेष । ये तीन अंश हैं ॥

॥ ९२ ॥ सामान्य औं विशेष । इन दोअंशनकूं ॥

॥ ९३ ॥ तृतीय कलिकाअंशकूं ॥

॥ ९४ ॥ भेदभ्रांतिसैं आदिलेके । इहां आदि शब्दकरि कर्त्ताभोक्तापनैकी भ्रांति । संगभ्रांति विकारभ्रांति । ब्रह्मतैं भिन्न जगत्‌के सत्यता की भ्रांति इन च्यारीभ्रांतिनका ग्रहण है ॥

॥ ९५ ॥ पांचप्रकारका संसार हैं ॥ ९६ ॥ बनै

॥ ९७ ॥ अन्वयः—पंचधा कहिये पांचप्रकार युक्तियों कहिये दृष्टांतरूप परशु कहिये कुठारकरि

॥ ९८ ॥ अन्वयः—सो भ्रम कहिये अध्यास अरथ कहिये अर्थाध्यास औ ज्ञान कहिये ज्ञानाध्यास या क्रमसैं दोभांतिका हैं ॥

॥ ९९ ॥ अंवयः—ज्ञान कहिये ज्ञानाध्यास अर्थ कहिये अर्थाध्यास । तिनको वेम कहिये अध्यास प्रत्येक कहिये एक एक द्विविध हैं ॥

॥ १०० ॥ वा अरथभ्रांति कहिये अर्थाध्यास षड्विधा कहिये षट्प्रकारको । याको नाम कहो ॥

॥ १०१ ॥ दिखाये ॥

॥ १०२ ॥ प्रवेशकूं पाये हैं ॥ ॥ १०३ ॥ अद्वै

। १०४ । परमानंदरूप ब्रह्मकूं आत्मा जानें

* १२५ प्रश्नः—आत्माविषै तीनवस्था किसकी न्याँई भासती हैं ?

उत्तरः—दृष्टांतः—जैसैं सीपीविषै रूपा अथवा भोडल (अभ्रक) अथवा कागज । ये तीन सीपीके अज्ञानसैं कल्पित भासतै हैं । तीन तीन वस्तुनका

१ परस्पर वा सीपीके साथ व्यतिरेक हैं । औ

२ सीपीका तीनवस्तुनविषै अन्वय है ॥

जैसैं किः—

१ [१] सीपीविषै जब रूपा भासै तब भोडल औ कागज भासता नहीं । औ

[२] जब भोडल भासै तब रूप औ कागज भासता नहीं । औ

[३] जब कागज भासै तब रूपा औ भोडल भासता नहीं । यह तीनवस्तुनका परस्पर व्यतिरेक है । सीपीविषै आदिमध्यअन्तमें इन तीनवस्तुनका व्यावहारिक औ पारमार्थिक अत्यंत-अभाव है। यह सीपीविषै भी तिन तीनवस्तुनका व्यतिरेक है । औ

२ भ्रांतिकालविषै

(१) "यह रूपा है"

(२) "यह भोडल है"

(३) "यह कागज है"

इसरीतिसैं सीपीका इदंअंश तिन तीनवस्तुनविषै अनुस्यूत भासता है । यह तिन तीनवस्तुनविषै सीपी का अन्वय है ।

इहां सीपीके तीनअंश हैं:–१ सामान्यअंश। २ विशेषअंश। ३ कल्पितविशेषअन्श ॥

१ इदंपनासामान्यअन्श है। काहेतैं जो अधिक कालविषै प्रतीत होवै सो सामान्यअन्श है। इदंपना जातैं

(१) भ्रांतिकालविषै प्रतीत होवै है। औ

(२) भ्रांतिके अभावकालविषै बी "यह सीपी है" ऐसैं प्रतीत होवै है।

यातैं यह इदं सामान्यअंश है औ आधार बी कहिये है।

२ नीलपृष्ठतीनकोणयुक्त सीपी विशेषअंश है। काहेतैं जो न्यूनकालविषै प्रतीत होवै सो विशेषअंश है।

(१) भ्रांतिकालविषै इन नीलपृष्ठ आदिककी प्रतीति होवै नहीं।

(२) किंतु इनकी प्रतीतिसैं भ्रांतिकी निवृत्ति होवै।

यातैं यह विशेषअंश है। औ अधिष्ठान बी कहियेहै॥

३ रूपाआदिक कल्पितविशेषअंश है। काहेतैं जो अधिष्ठानके ज्ञानकालमैं प्रतीत होवै नहीं। सो कल्पितविशेषअंश है॥ जैसैं

(१) रूपाआदिक। सीपी के अज्ञानकालविषै प्रतीत होवैहै। औ

(२) सीपीके ज्ञानकालविषै इनकी प्रतीति होवै नहीं।

(३) वा सीपीसैं व्यभिचारी है।

यातैं यह कल्पितविशेषअंश है औ भ्रांति बी कहियेहै॥

सिद्धांतः—तैसैं अधिष्ठान आत्माविषै जाग्रत अथवा स्वप्न अथवा सुषुप्ति। ये तीन भ्रांति आत्माके अज्ञानसैं होवै हैं। तिनका

१ परस्पर औ अधिष्ठान आत्माके साथि [105] व्यतिरेक है। औ

२ आत्माका तिनविषै अन्वय [106] है॥

जैसे किः—

१ (१) जाग्रत् भासैहै तब स्वप्न औ सुषुप्ति भासैनहीं। औ

(२) स्वप्न भासैहै तब जाग्रत् औ सुषुप्ति भासैनहीं। औ

(३) सुषुप्ति भासै है तब जाग्रत् औ स्वप्न भासैनहीं।

यह तीन अवस्थाका परस्परव्यतिरेक है। औ

१०५॥ अभाव या व्यावृत्ति सो व्यतिरेक है॥

१०६॥ भाव वा अनुवृत्ति। सो अन्वय है॥

अधिष्ठानविषै इन तीनअवस्थाका पारमार्थिक अत्यंतअभाव (नित्यनिवृत्ति) है यह तीन-अवस्थाका अधिष्ठानविषै व्यतिरेक है। औ

२ आत्मा इन तीनअवस्थाविषै अनुस्यूत होयके प्रकाशता है। यह आत्माका तीन-अवस्थाविषै अन्वय है।

इहां आत्माके अविद्याउपाधिसैं आरोपित तीनअंश हैः—१ सामान्यअंश। विशेषअंश ३ कल्पितविशेषअंश ॥

१ सत् ("है" पनं) रूप सामान्यअंश है। काहेतें

(१) "जाग्रत् है" "स्वप्न है" "सुषुप्ति है"। इसरीतिसैं आत्माका सत्पना भ्रांतिकालविषै पैं बी प्रतीत होवैहै। औ

(२) भ्रांतिकी निवृत्तिकालविषै "मैं सत् हूं। मैं चित् हूं। मैं आनंद हूं। मैं परिपूर्ण हूं। मैं असङ्ग हूं। मैं नित्यमुक्त हूं। मैं ब्रह्म हूं"। इसरीतिसैं आत्माके सत्पनैंकी प्रतीति होवैहै।

यातैं यह सत्‌रूप सामान्यअंश है औ आधार बी कहियेहै।

२ चेतन आनंद असंग अद्वितीयपनैंसैं आदि-लेके जे आत्माके विशेषण हैं। सो विशेषअंश है। काहेतैं

(१) भ्रांतिकालविषै इनकी प्रतीति होवै नहीं। किन्तु

(२) इनकी प्रतीतिसैं भ्रांतिकी निवृत्ति होवैहै।

यातैं यह विशेषअंश है औ अधिष्ठान बी कहिये।

३ तीनअवस्थारूप प्रपंच कल्पितविशेषअंश है । काहेतें
(१) ब्रह्मसें अभिन्न आत्माके अज्ञानकालविषै प्रतीत होवैहै । औ
(२) "मैं ब्रह्म हूँ" ऐसें आत्माके ज्ञानकालमें आत्मासें भिन्न सत् प्रतीत होवै नहीं ।
यातें यह तीनअवस्थारूप प्रपंच कल्पित विशेषअंश है औ भ्रांति बी कहियेहै ॥
इसरीतिसें ये तीनअवस्था आत्माविषै मिथ्या प्रतीत होवैं हैं ॥
* १२६ प्रश्नः-आत्माविषै मिथ्याप्रपंचकी प्रतीतमें अन्यदृष्टांत कौनसे हैं ?
उत्तरः—जैसें
स्थाणुविषै पुरुष प्रतीत होवैहै । औ

२ साक्षीविषै स्वप्न प्रतीत होवैहै। औ
३ मरुभूमिविषै जल प्रतीत होवै है। औ
४ आकाशविषै नीलता प्रतीत होवै है। औ
५ रज्जुविषै सर्प प्रतीत होवै है। औ
६ जलविषै अधोमुखपुरुष वा वृत्त प्रतीत होवै है। औ
७ दर्पणविषै नगरी प्रतीत होवै है। सो मिथ्या है॥

तैसैं आत्माविषै अपने अज्ञानतैं प्रपंच प्रतीत होवैहै। सो मिथ्या है॥

इस रीतिसैं प्रपंचके मिथ्यापनैका निश्चय करना। सोई प्रपंचका 107 बाध है॥

॥ १०७ ॥ मिथ्यापनैके निश्चयका नाम बाध है। सो शास्त्रीय यौक्तिक औ अपरोक्ष भेदतैं तीन-भांतिका है॥

* १२७ प्रश्न–भ्रांतिरूप संसार कितने प्रकारका है?

उत्तरः—

१ भेदभ्रांति[108]।

२ कर्त्ताभोक्तापनेकी[109] भ्रांति।

३ रज्जुकी[110] भ्रांति।

४ विकारकी[111] भ्रांति

५ ब्रह्मसैं भिन्न जगत् के सत्यताकी भ्रांति।

यह पांचप्रकारका, भ्रांतिरूप संसार है॥

* १२८ प्रश्नः–पांचप्रकारके भ्रमकी निवृत्ति कि दृष्टांतनसैं होवै है?

उत्तरः—

१ बिंबप्रतिबिंबके[112] दृष्टांतसैं भेदभ्रमकी निवृत्ति होवै है।

॥ १०८ ॥ जीवईश्वरका भेद। जीवनका परस्पर भेद। जडनका परस्परभेद जीवजडका भेद। ई जडईश्वरका भेद। यह पांचप्रकारकी भेदभ्रांति है।

॥ १०६ ॥ अंतःकरणके धर्म कर्त्तापनैभोक्तापनेको आत्माविषै प्रतीत होवै है । यह कर्त्ताभोक्तापनैकी भ्रांति है ॥

॥ ११० ॥ आत्माका देहादिकविषै अहंतारूप औ गृहादिकविषै ममतारूप संबंध है । वा सजातिय विजातीय स्वगत वस्तुके साथि संबंधकी प्रतीति । सो संगभ्रांति है ।

॥ १११ ॥ दुग्धके विचार दधिकी न्याई । ब्रह्मका विकार जीव तथा जगत् हैं । ऐसी जो प्रतीति । सो विकारभ्रांति है ।

॥ ११२ ॥ सूत्रभाष्यके उपरि पंचपादिकानामक टीका पद्मपादाचार्यनैं करी है । तिस पंचपादिकाका व्याख्यानरूप विवरणनामग्रन्थ है । तिसके कर्त्ता श्रीप्रकाशात्मचरणनामआचार्य है । तिसकी रीतिके अनुसार यह उपरि लिख्या बिंबप्रतिबिंबका दृष्टांत है ॥

२ स्फाटिकविषैं लालवस्त्रके लालरंगकी प्रतीतिके दृष्टांतसैं कर्त्ताभोक्तापनैकी भ्रांतिकी निवृत्ति होवैहै ॥

३ घटाकाशके दृष्टांतसैं संगभ्रांतिकी निवृत्ति होवैहै ॥

४ रज्जुविषैं कल्पितसर्पके दृष्टांतसैं ब्रह्मसैं भिन्न जगत्के सत्यपनैकी भ्रांतिकी निवृत्ति होवैहै ॥

* १२६ प्रश्नः–१ बिंबप्रतिबिंबके दृष्टांतसैं भेदभ्रांतिकी निवृत्ति किसरीतिसैं होवैहै ?

उत्तरः—जैसैं [१] दर्पणविषैं मुखका प्रतिबिंब भासता है सो प्रतिबिंब दर्पणविषैं नहीं है। किंतु दर्पणकूं देखनैवास्ते निक

जो नेत्रकी वृत्ति सो दर्पणकूं स्पर्शकरिके पीछे लौटिके मुखकूं हीं देखतीहै। यातैं बिंब जो मुख तिसके साथि प्रतिबिंब अभिन्न है। यातैं प्रतिबिंब मिथ्या नहीं। किंतु सत्य है। औ [२] प्रतिबिंबके धर्म जे बिंबसैं उलटे-पना। ये तीन औ तिनकी प्रतीतिरूप ज्ञान सो भ्रांति हैं ॥ [३] यातैं इन धर्मनको मिथ्या-पनेंका निश्चयरूप बाध करिके बिंबका पदार्थभेद निश्चय होवैहै ॥

सिद्धांतः—तैसैं (१) शुद्धब्रह्मरूप बिंब है। तिसका अज्ञानरूप दर्पणविषैं जीवरूप प्रतिबिंब भासताहै। तिनमैं स्वप्नकी न्यांई एक-जीव मुख्य है औ दूसरे स्थावर जंगमरूप नाना-जीव भासतेहैं। ये जीवाभास हैं ॥ सो

जीवरूप प्रतिबिंब ईश्वररूप बिंबके साथि सदा अभिन्न हैं ॥ परंतु (२) मायाकै बलसैं तिस जीवके धर्म। बिंबरूप ईश्वरसैं भेद। जीवपना। अल्पज्ञपना। अल्पशक्तिपना। परिच्छिन्नपना। नानापना इत्यादि औ तिनकी प्रतीतिरूप ज्ञान सो भ्रांति है (३) यातैं तिनका मिथ्यापनैका निश्चयरूप बाधकरिकै। जीवरूप प्रतिबिंब औ ईश्वररूप बिंबका सदा अभेद निश्चय होवैहै।

इसरीतिसैं बिंबप्रतिबिंबके दृष्टांतसैं भेद-भ्रांतिकी निवृत्ति होवैहै ॥

॥ ११३ ॥ मुख्य जीवईश्वरके भेदके निषेधसैं तिसके अंतर्गत च्यारीभेदनका निषेध सहज सिद्ध होवैहै॥ सर्व भेद उपाधिके कियेहैं। उपाधि सर्व मिथ्या है। यातैं तिनके किये भेद बी सर्व मिथ्या है। यातैं वास्तवअद्वैत ब्रह्मही अवशेष रहता है ॥

१३० प्रश्नः—२ स्फटिकविषै लालवस्त्रके लालरंग की प्रतीतिके दृष्टांतसैं कर्त्ताभोक्तापनैकी भ्रांति किसरीतिसैं निवृत्त होवै है ?

उत्तरः—जैसैं (१) लालवस्त्रके उपरि धरे स्फटिकमणिविषै वस्त्रका लालरङ्ग संयोगसंबंधसैं भासताहै (२) परंतु सो वस्त्रका धर्म है। (३) वस्त्र औ स्फटिकके वियोगके भये स्फटिकविषै भासता नहीं । (४) यातैं स्फटिकका धर्म नहीं है। (५) किंतु स्फटिकविषै भ्रांतिसैं भासता है ॥

सिद्धांत—तैसैं (१) अन्तःकरणका धर्म जो कर्त्ताभोक्तापना सो आत्माविषै तादात्म्यसंबंधसैं भासताहै । (२) परन्तु सो अन्तःकरणका धर्म है। (३) सुषुप्तिविषै अंतःकरण

औ आत्माके वियोगके भये आत्माविषै भासता नहीं। (४) यातें आत्माका धर्म नहीं है॥ (५) किंतु आत्माविषै भ्रांतिसैं भासताहै॥

इसरीतिसैं स्फटिकविषै लालरङ्गकी प्रतीतिके दृष्टांतसैं कर्त्ताभोक्तापनैकी भ्रांतिकी निवृत्ति होवैहै॥

* १३१ प्रश्नः—३ घटाकाशके दृष्टांतसैं संगभ्रांतिकी निवृत्ति किसरीतिसैं होवैहै ?

उत्तरः—जैसैं (१) घटउपाधिवाला आकाश घटाकाश कहियेहै। (२) सो आकाश घटके संघ भासताहै। (३) तौ बी घटके धर्म उत्पत्तिनाश गमनआगमनआदिक हैं। वे आकाशकूं स्पर्श करते नहीं। (४) यातें आकाश असङ्ग है। औ (५) आकाशका संबंध घटके साथि भासताहै। सो भ्रांति है॥

सिद्धांत—तैसैं (१) देहआदिकसंघात-रूप उपाधिवाला आत्मा जीव कहिये है। (२) सो आत्मा संघातके संग भासता है। (३) तौ बी संघातके धर्म जन्ममरणादिक हैं। वे आत्मा कूं स्पर्श करते नहीं। काहेतैं संघात दृश्य है औ आत्मा द्रष्टा है । (४) तातैं आत्मा संघातसैं न्यारा असङ्ग है ॥ (५) जातैं आत्मा संघातरूप नहीं। तातैं आत्माका संघातके साथि अहंतारूप सम्बंध बी नहीं औ जातैं आत्माका संघात नहीं। किंतु संघात पंचमहाभूतका है। तातैं आत्माका संघातके साथि ममतारूप संबंध बी नहीं ॥ जातैं आत्माका संघातसैं न्यारा है। तातैं आत्माका संघातके संबंधी स्त्रीपुत्र-गृहादिकनके साथि बी ममतारूप संबंध नहीं॥ ऐसैं आत्मा असंग है। इसका संघात के

माथि अहंताममतारूप सम्बन्ध भ्रांति है॥

इसरीतिसैं घटाकाशके दृष्टांतसैं संगभ्रांति-की निवृत्ति होवैहै ॥

* १३२ प्रश्नः—रज्जुविषै कल्पितसर्पके दृष्टांतसैं विकारभ्रांतिकी निवृत्ति किसरीतिसैं होवैहै?

उत्तरः—जैसैं (१) मन्द-अन्धकारविषै रज्जु स्थित होवै। तिसके देखनै वास्ते नेत्ररूप द्वारसैं अन्तःकरणकी वृत्ति निकसै है। सो वृत्ति अन्धका-रादि दोषसैं रज्जुके आकारकूं पावती नहीं। यातैं तिस वृत्तिसैं रज्जुके आवरणका भङ्ग होवै नहीं। तब रज्जुउपाधिवाले चैतन्य के आश्रित रही जो तूलाअविद्या[114]। सो क्षोभकूं पायके सर्परूप विका-रकूं धारतीहै॥ (२) सो सर्प। दुग्धके परिणाम दधिकीन्यांई अविद्याका परिणाम है।

॥ ११४ ॥ घटादिरूप उपाधिवाले चैतन्यकूं आव-रण करनैवाली जो अविद्या। सो तूलअविद्या है॥

औ (१) रज्जुउपाधिवाले चैतन्यका विवर्त है। परिणाम (विकार) नहीं ॥

सिद्धांत:—तैसैं (१) ब्रह्मचैतन्यके आश्रित रही जो मूलाअविद्या[115]। सो प्रारब्धादिकनिमित्तसैं क्षोभकूं[116] पायके जड़ चैतन्य (चिदाभास) प्रपंचरूप विकारकूं धारतीहै ॥ (२) सो प्रपंच अविद्याका परिणाम[117] है औ (३) अधिष्ठान[118]-ब्रह्मचैतन्यका विवर्त[119] है। परिणाम नहीं ॥ इसरीतिसैं रज्जुविषै कल्पितसर्पके दृष्टांतसैं विकारभ्रांतिकी निवृत्ति होवैहै ॥

॥ ११५ ॥ शुद्धब्रह्म औ आत्माकूं आवरण करनेवाली जो अविद्या। सो मूलाअविद्या है ॥

॥ ११६ ॥ कार्य करनेके सन्मुख होनेकूं क्षोभ कहेहैं ॥

॥ ११७ ॥ पूर्वरूपकूं त्यागिके अन्यरूपकी प्राप्ति परिणाम है ॥

२ वा उपादानके समानसत्तावाला जो अन्यथारूप कहिये उपादानतैं और प्रकारका आकार सो परिणाम है ॥
जैसैं दुग्धका परिणाम दधि है। याही कूं विकार बी कहै हैं ॥

॥ ११८ ॥ जो आप निर्विकाररूपसैं स्थित होवै औ अविद्याकृत कल्पितकार्यका आश्रय होवै। सो अधिष्ठान है ॥ जैसैं कल्पितसर्पका अधिष्ठान रज्जु है। याहीकूं परिणामीउपादानसैं विलक्षण दूसरा विवर्त उपादान बी कहते हैं ॥

॥ ११९ ॥ अधिष्ठानतैं विषमसत्तावाला कहिये अल्प अरु भिन्नसत्तावाला जो अधिष्ठानसैं अन्यथारूप नाम और प्रकारका आकार सो विवर्त है ॥ जैसैं रज्जुका विवर्त सर्प है। याहीकूं कल्पितकार्य औ कल्पितविशेष बी कहते हैं ॥

॥ १२३ प्रश्नः-५ कनकविषैं कुंडलकी प्रतीतिके दृष्टांतसैं भिन्न जगत्के सत्यताकी भ्रांति की निवृत्ति किसरीतिसैं होवै है ॥

उत्तरः—जैसें (१) कनक औ कुंडलका कार्यकारणभावकरि भेद भासता है सो कल्पित है। औ (२) कनकसैं कुंडलका भिन्नस्वरूप दीखता नहीं। (३) यातैं वाचारंभमात्र है। (४) तातैं कनकसैं भिन्न कुंडलकी सत्ता नहीं है ॥

सिद्धांतः—तैसें (१) ब्रह्म औ जगत्का कार्यकारणभावकरि अरु विशेषणकरि भेद भासता है सो कल्पित है। औ (२) विचारकरि देखिये तौ अस्तिभातिप्रियसैं भिन्न नाम-

रूपजगत् सत्य सिद्ध होवै नहीं । किंतु मिथ्या
सिद्ध होवैहै औ जो वस्तु जिसविषै कल्पित
होवै सो वस्तु तिसतैं भिन्न सिद्ध होवै नहीं।
(३) यातैं ब्रह्मसैं जगत्का वास्तवअभेद है।
(४) तातैं ब्रह्मसै जगत्की भिन्नसत्ता नहीं है।

इसरीतिसैं कनकविषै कुण्डलकी प्रतीतिके
दृष्टांतसैं ब्रह्मसैं भिन्न जगत्के सत्यताकी
भ्रांति निवृत्ति होवैहै ।

* १३४ प्रश्न—भ्रांति सो क्या है ?

उत्तरः—भ्रांति सो अध्यास है ।

* १३५ प्रश्न—अध्यास सो क्या है ?

उत्तरः—भ्रांतिज्ञानका विषय जो मिथ्या
वस्तु औ भ्रांतिज्ञान । तिसका नाम अध्यास है।

॰ १३६ प्रश्नः—यह अध्यास कितने प्रकारका है?

उत्तरः—ज्ञानाध्यास औ अर्थाध्यास । इस-भेदतें अध्यास दोभांतिका है ॥ तिनमें अर्थाध्यास । केवलसंबंधाध्यास सम्बन्ध रहित सम्बन्धी का अध्यास । केवलधर्माध्यास । धर्म-रहित धर्मीका अध्यास । अन्योन्याध्यास । अन्य-तराध्यास । इसभेदनें षट्प्रकारका है ।

अथवा स्वरूपाध्यास औ संसर्गाध्यास । इस भेदतें अर्थाध्यास दोप्रकार का है ।

१ ताके अन्तर्गत उक्त षड्भेद है । औ
२ और लिखे भेद भ्रांतिआदिकपाँचप्रकारके भ्रम भी याहीके अन्तर्गत हैं । औ
१ आगे नेडेहीं कहियेगा जो आत्माअनात्मा-के विशेषणोंका अन्योन्याध्यास सो भी याहीके अन्तर्गत हैं । सो ताके टिप्पणविषे दिखाया जायेगा ॥

॥ १२० ॥ अनात्माविषै आत्माका अध्यास होवै है। तहाँ आत्माका अनात्माके साथि तादात्म्यसंबंध अध्यस्त है। आत्माका स्वरूप नहीं। यातैं अनात्माविषै आत्माका केवलसंबंधाध्यास है ॥

॥ १२१ ॥ आत्माविषै अनात्माका संबंध औ स्वरूप दोनूं अध्यस्त हैं। यातैं आत्माविषै अनात्माके संबंध सहित संबंधीका अध्यास है।

॥ १२२ ॥ स्थूलदेहके गौरताआदिक औ इंद्रियनके दर्शनआदिकधर्मकाही आत्माविषै अध्यास होवै है। तिनके स्वरूपका नहीं। यातैं आत्माविषै देह औ इंद्रियनके केवलधर्मकाअध्यास है।

॥ १२३ ॥ अंतःकरणके कर्त्तापनाआदिकधर्म औ स्वरूप दोनूं आत्माविषै अध्यस्त हैं। यातैं अंतःकरणका आत्माविषै धर्मसहित धर्मीका अध्यास है।

॥ १२४ ॥ लोहे औ अग्निकी न्याईं आत्माविषै अनात्माका औ अनात्माविषै आत्मा का जो अध्यास है। सो अन्योन्याध्यास है ॥

॥ १२५ ॥ अनात्माविषै आत्माका स्वरूप अध्यस्त नहीं। किंतु आत्मविषै अनात्माका स्वरूप अध्यस्त है। यहीं अन्यतराध्यास है॥ दोमैंसैं एकका अध्यास अन्यतराध्यास कहिये हैं॥

॥ १२६ ॥ ज्ञानसैं बाध होनैयोग्य वस्तु। अधिष्ठानविषै स्वरूपसैं अध्यस्त होवै है। देहादिअनात्माका अधिष्ठानके ज्ञानसैं बाध होवै है। यातैं ताका आत्माविषै स्वरूपाध्यास है॥

॥ १२७ ॥ बाधके अयोग्य वस्तुका स्वरूप अध्यास होवै नहीं। किन्तु ताका सम्बन्ध अध्यस्त होवै है। जैसे ... आत्माका संसर्गाध्यास है॥ याही कूं संबंधाध्यास बी कहैहैं॥

॥ १२८ ॥ केवलधर्माध्यास। धर्मसहित धर्मीका अध्यास औ अन्यतराध्यास। ये तीन स्वरूपाध्यासके अंतर्गत हैं॥

केवलसंबंधाध्यास । संसर्गाध्यासही है ॥

सम्बन्धसहित संबंधका अध्यास । संसर्गाध्यासस-हित स्वरूपाध्यास है ॥

अन्यान्याध्यासमैं संसर्गाध्यास औ स्वरूपाध्यास दोनूं हैं । काहे

१ आत्माका स्वरूप तौ सत्य है । यातैं अध्यस्त नहीं किंतु ताका संसर्ग कहिये तादात्म्यसंबंध अनात्मामैं अध्यस्त है । यातैं ताका संसर्गाध्यास है औ

२ अनात्माका स्वरूपही आत्माविषैं अध्यस्त है। यातैं ताका स्वरूपाध्यास है ॥

तातैं अन्योन्याध्यास दोनूंके अन्तर्गत है ॥

॥ १२४ ॥ भेदभ्रांतिआदिकपांचप्रकारका भ्रम जो पूर्व लिख्याहै । तिनमैं

संगभ्रांतिकूं छोडिके च्यारि प्रकारका भ्रम । स्वरूपाध्यासके अंतर्गत हैं ।

संगभ्रांति । संसर्गाध्यासके भीतर है ॥

* १३७ प्रश्नः—अहंकारादिक आत्माका औ आत्मा
का अध्यास जाननेमें विशेषउपयोगी अर्थात्
सर्व अध्यासों में अनुस्यूत कौन अध्यास है ?

उत्तरः—अन्योन्याध्यास ॥

* १३८ प्रश्नः—अन्योन्याध्यास सो क्या है ?

उत्तरः—परस्परविषै परस्परके अध्यासका
130
नाम अन्योन्याध्यास है ॥

* १३९ प्रश्नः—आत्मा औ अनात्माका परस्पर-
अध्यास किसरीति सैं हैं।

उत्तरः—

१-४ सत् चित् आनंद औ अद्वैतपना। ये
च्यारीविशेषण आत्माके हैं ॥

१-४ असत् जड दुःख औ द्वैतसहितपना।
च्यारीविशेषण अनात्माके हैं।

तिनमैं

॥ १३० ॥ इहां सर्व अध्यासनके स्वरूप औ उदाहरण विस्तारके भयतैं विशेष लिखे नहीं। किंतु संक्षेपसैं लिखे हैं। परन्तु अन्योन्याध्यासका स्वरूप औ विशेषउपयोगी जानि स्पष्ट दिखाया है॥ तामैं

१ अनात्माके धर्म दुःख औ द्वैतसहितपना। आत्माके आनन्द औ अद्वैतपनैविषै स्वरूपसैं अध्यस्त होयके तिनकूं ढांपे हैं। औ

२ आत्मा के धर्म सत् अरु चित्। अनात्माके असत्ता औ जडताविषै संसर्ग (संबन्ध) द्वारा अध्यस्त होयके तिनकूं ढांपे हैं॥

कार्यसहित अज्ञानसैं जो आवृत (ढांप्या) होवै। सो अधिष्ठान कहिये है॥

इसरीतिसैं आत्मा का औ अनात्माका यह अन्योन्याध्यास बी संसर्गाध्यास औ स्वरूपाध्यासके अन्तर्गत है॥

३-२ अनात्माके दुःख औ द्वैतसहितपना। इन दोविशेषणोंनै आत्माके आनंद औ अद्वैतपनैकूं ढांपेहै। तातैं आत्माविषै

(१) "मैं आनंदरूप औ अद्वैतरूप हूँ" ऐसी प्रतीत होवै नहीं।

(२) किंतु "मैं दुःखी औ ईश्वरादिकसैं भिन्न हूँ" ऐसी प्रतीति होवै है॥

३-४ आत्माके सत् औ चित। इन दोविशेषणोंनैं अनात्माके असत् औ जड़पनैकूं ढांपेहैं तातैं अनात्मा जो अहंकारादिक। तिसविषै

(१) "असत् है। अभान (जड) रूप है" ऐसी प्रतीति होवै नहीं।

(२) किंतु "विद्यमान है औ भासता (चेतन) है" ऐसी प्रतीत होवै है॥

इसरीतिसैं आत्मा औ अनात्माका परस्पर अध्यास है ॥[131]

इति श्रीविचारचंद्रोदये प्रपंचमिथ्यात्ववर्णननामिका षट्कला समाप्ता ॥६॥

॥ अथ सप्तमकलाप्रारंभः ॥७॥

॥ आत्माके विशेषण ॥

॥ इन्द्रविजय छन्द ॥[132]

आत्मा विशेषण हैं जु दुभांति।
विधेय निषेध्य कहां निरधार ॥
ये सब जानि भलें गुरु शास्त्र सु।[133]
सो अपनो निजरूप निहारे ॥

॥ १३१ ॥ ब्रह्म औ ईश्वरका कहु कूटस्थ औ जीवका जो परस्पर अध्यास है सो आगे ध्यानदीपमैं कह्या है ॥

सच्चिदनंद रु ब्रह्म स्वयंपर-
काश कूटस्थ रु साक्षि विचारे ।
द्रष्ट्र अरु उपद्रष्ट्र रु एकहि ।
आदि विधेय विशेषण धारे ॥१३४॥
१३४
अंत विहीन अखंड असंग रु ।
१३५
उदय जन्मविना अविकारे ॥
१३६
आकार अकारविना अरुव्यक्त ।
१३७
न माननको विपयो जु निकारे ॥
कर्म कर्हाहि बढै न घटै इम
श्रुतिहि अकाग्य वेद पुकारे ॥
क्षर नाशविना कहिये इस
आदि निषेध्य पीतांबर मारे ॥१५॥

॥ १३२ ॥ द्वन्द्व विजयछंद तुमरो श्री लावनी में
सारा आवेंहें ॥ ॥ १३३ ॥ वे विधेय निषेध्य विशेषण ॥
॥ १३४ ॥ अनंत ॥ १३५ ॥ अजन्मा ॥
॥ १३६ ॥ निराकार ॥ १३७ ॥ अप्रमेय ॥

' १४० प्रश्नः—आत्मा के विशेषण कितने प्रकार के॥

उत्तरः—आत्माके विशेषण। वि

१३६

कहिये साचात्बोधक औ निषेध्य कहिये प्र
के निषेधद्वारा बोधक भेदतैं दो प्रकार के।

॥१३८॥ जैसें "सधवा" शब्द विधवा
निषेध करिके सुवासिनीस्त्री का साक्षात् बोधक है।
"सत्" आदिकविधेयाविशेषण "असत्" आदिक
के विशेषणों का निषेध करिके सद्रादिरूप
साक्षात् बोधक हैं। यातैं "विधेय" कहिये हैं।

॥१३९॥ जैसें अविधवाशब्द विधवा
निषेध करिके। अर्थात् तातैं विलक्षण सुवासिनी
बोधक है। तैसैं अनंतआदिक जे निषेधविशेष
वे अनंतआदिक प्रपंच के धर्मों का निषेध करिके
तिनतैं विलक्षण ब्रह्म के बोधक हैं। यातैं "निषे
कहिये हैं॥

* १४१ प्रश्नः—आत्माके विधेयविशेषण कौनसैं हैं?

उत्तरः—१ सत् २ चित् ३ आनंद ४ ब्रह्म ५ स्वयंप्रकाश ६ कूटस्थ ७ साक्षी ८ द्रष्टा ९ उपद्रष्टा १० एक इत्यादि हैं ॥

* १४२ प्रश्नः—सत् आत्मा कैसैं है?

उत्तरः—१ जिसकी ज्ञानसैं वा और किसी-सैं बी निवृत्ति होवै नहीं। सो सत् है ॥

आत्माकी जातैं ज्ञानसैं वा और किसीसैं बी निवृत्ति होवै नहीं। यातैं आत्मा सत् है।

* १४३ प्रश्नः—चित् आत्मा कैसैं है?

उत्तरः—२ अलुप्तप्रकाश सो चित् है ॥

आत्मा जातैं अलुप्तप्रकाशरूप है यातैं आत्मा चित् है ॥

※ १४४ प्रश्नः—आनंद आत्मा कैसैं है ?

उत्तरः—३ परम कहिये सर्वसैं अधिक प्रीतिका जो विषय । सो आनंद है ॥

आत्माविषैं जातैं सर्वकी परमप्रीति है। यातैं आत्मा आनन्द है ॥

※ १४५ प्रश्नः—ब्रह्मरूप आत्मा कैसैं है ?

उत्तरः—४

(१) आत्मा सत्चित् आनंदरूप श्रुति युक्ति औ अनुभवसैं सिद्ध है । औ

(२) ब्रह्म बी शास्त्र (उपनिषद्) विषै सत्चित्आनंदरूप कह्या है ।

तातैं आत्मा ब्रह्मरूप है ॥ किंवा ब्रह्मनाम व्यापकका है ॥ जिसका देशतैं अन्त न होवै सो व्यापक कहिये है ॥

(१) आत्मा जो ब्रह्मसैं भिन्न होवै तो
देशतैं अंतवाला होवैगा।
(२) जिसका देशतैं अंत होवै तिसका
कालतैं बी अंत होवै है, यह नियम है।
जिसका देशकालतैं अंत होवै सो अनित्य
होवैहै। तातैं आत्मा अनित्य होवैगा। यातैं
आत्मा ब्रह्मसैं भिन्ननहीं ।। औ
(१) आत्मासैं भिन्न जो ब्रह्म होवै तो
ब्रह्म अनात्मा होवैगा ।।
(२) जो अनात्मा घटादिक हैं सो जड़
हैं। तातैं आत्मासैं भिन्न ब्रह्म।
जड़ होवैगा।
यो वार्ता श्रुतिसैं विरुद्ध है।
यातैं आत्मासैं भिन्न ब्रह्म नहीं। तातैं
ब्रह्मरूप आत्मा है ।।

॥ १४६ प्रश्नः—स्वयंप्रकाश आत्मा कैसे है ?

उत्तरः—५

(१) जो दीपककी न्यांई आपके प्रकाशनं-विषै किसीकी बी अपेक्षा करै नहीं। औ

(२) आप सर्वका प्रकाशक होवै।

सो स्वयंप्रकाश कहियेहै॥

ऐसा आत्माहीं है। यातैं आत्मा स्वयंप्रकाश है।

अथवा

(१) जो सदा अपरोक्षरूप होवै। औ

(२) किसी ज्ञानका विषय न होवै।

सो स्वयंप्रकाश कहिये है॥

आत्मा जातैं सदाअपरोक्षरूप है औ प्रकाश-रूप होनैतैं किसी बी ज्ञानका विषय (प्रकाश्य) नहीं। यातैं आत्मा स्वयंप्रकाश है॥

* १४७ प्रश्न:—कूटस्थ आत्मा कैसें है ?

उत्तर:—६ कूट नाम लोहारके अहिरनका है। ताकी न्याईं जो निर्विकार(अचल)रूपसें स्थित होवै । सो कूटस्थ कहिये है ॥

जैसें लोहार अनेकघाट घडताहै । तौ बी अहिरन ज्यूंका त्यूं रहताहै । तैसें मनरूपलोहार व्यवहाररूप अनेकघाट घडताहै । तौ बी आत्मा ज्यूंका त्यूं रहताहै । यातें आत्मा कूटस्थ है ॥

कूटस्थ कहनेसें अचल औ अक्रिय अर्थसें सिद्ध भया ॥

* १४८ प्रश्न:—साक्षी आत्मा कैसें है ?

उत्तर:—७

(७) लोकव्यवहारविषै

(१) उदासीन कहिये रागद्वेषरहित होवै ।

(२) समीपवर्ती होवै । औ

(३) चेतन होवै ।

सो साक्षी कहिये है ॥

जातें आत्मा

(१) देहादिकसैं उदासीन है । औ

(२) समीपवर्ती है । औ

(३) चेतन कहिये अजडप्रकाश है ।

यातैं आत्मा साक्षी है ।

(२) वा अंतःकरणरूप उपाधिवाला चेतन

साक्षी कहिये है ॥

(३) वा अंतःकरण औ अंतःकरणकी वृत्ति-

नविषैं वर्त्तमान चेतनमात्र (केवल-

चेतन) साक्षी कहिये है ॥

ऐसा आत्मा है । यातैं साक्षी है ॥

* १४६ प्रश्नः—द्रष्टा आत्मा कैसैं है ?

उत्तरः—८ देखनैहारा जो होवै सो द्रष्टा कहिये है ॥

आत्मा जातैं सर्वदृश्यका जाननैहारा है। यातैं आत्मा द्रष्टा है ॥

* १५० प्रश्नः—उपद्रष्टा आत्मा कैसैं है ?

उत्तरः—९ जैसैं

(१-१५) यज्ञशालाविषै यज्ञकार्यके करनैहारे १५ ऋत्विज होवै हैं। औ

(१६) सोलवां यजमान होवै है। औ

(१७) सतरावीं यजमानकी स्त्री होवै है। औ

(१८) अठारवां उपद्रष्टा कहिये पास बैठके देखनैहारा होवै है। सो कछु बी कार्य करता नहीं ॥

तैसैं

(१–१५) स्थूलदेहरूप यज्ञशालाविषैं पांच-
ज्ञानइन्द्रिय पांचकर्मइन्द्रिय औ पांच
प्राण । ये १५ ऋत्विज हैं ।

(१६) सोलवां मनरूप यजमान है । औ

(१७ सत्रावीं बुद्धिरूप यजमानकी स्त्री है

(१८) ये सर्व आप आपके विषयके ग्रहण
करनैंरूप भोगमय यज्ञका कार्य
करतेहैं औ इन सर्वका समीपवर्ती
जाननैंरूप आत्मा अठारवां उ
द्रष्टा है ॥

* १५१ प्रश्न:—एक आत्मा कैसैं है ?

उत्तर:—१० आत्माका सजातीय कहिये
जातिवाला और आत्मानहीं है । यातैं आत्मा
एक है ।

इत्यादिक आत्माके विशेषविशेषण हैं ॥

१५२ प्रश्न–आत्मा के निषेध्य विशेषण कौन से हैं ?

उत्तर:—१ अनंत २ अखंड ३ असङ्ग ४ अद्वितीय ५ अजन्मा ६ निर्विकार ७ निराकार ८ अव्यक्त ९ अव्यय १० अचर इत्यादिक हैं ॥

१५३ प्रश्न–अनंत आत्मा कैसें है ?

उत्तर:—१

(१) आत्मा व्यापक है ॥ तातें आत्माका देशतें अंत नहीं । औ

(२) जातें आत्मा नित्य है । तातें आत्माका कालतें अंत नहीं । औ

(३) जातें आत्मा अधिष्ठान होनेतें सर्वका स्वरूप है । तातें आत्माका वस्तुतें अन्त नहीं । औ

जातें आत्माका देश काल औ वस्तुतें अंत नहीं कहिये परिच्छेद नहीं तातें आत्मा अनंत है ।

* १५४ प्रश्नः—अखंड आत्मा कैसैं है ?
उत्तरः—२
(१) जीवईश्वरका भेद । जीवन का परस्पर भेद । जीवजड़का भेद । जड़ईश्वरका भेद । जड़जड़का भेद । ये पांचभेद हैं । तिनतैं आत्मा रहित है । अथवा
(२) सजातीय विजातीय स्वगत भेदतैं आत्मा रहित है ।
यातैं आत्मा अखंड है ॥
* १५५ प्रश्नः –असङ्ग आत्मा कैसैं है ?
उत्तरः—३ सङ्ग नाम संबंध का है ॥
सो संबंध तीन प्रकारका हैः-(१) सजातीय संबंध (२) विजातीयसंबंध (३) स्वागतसंबंध
(१) अपनी जातिवालेसैं जो संबंध है । सो सजातीयसंबंध है । जैसैं ब्राह्मण का अन्यब्राह्मणसैं संबंध है ॥

(२) अन्यजातिवालेसैं जो संबंध है। सो विजातीयसंबंध है। जैसैं ब्राह्मणका शूद्रसैं संबंध है ॥

(३) अपनैं अवयवनसैं कहिये अङ्गनसैं जो जो संबंध है। सो स्वगतसंबंध है। जैसैं ब्राह्मण का अपनैं हस्तपादमस्तकादिकअङ्गनसैं संबंध है।

(१) [१] आत्मा (चेतन) एक है। तातैं ताकी जाति नहीं। औ

[२] जीव ईश्वर ब्रह्मा विष्णु शिव मैं तू इत्यादिक भेद तौ उपाधि के किये हैं। तातैं मिथ्या हैं।

यातैं आत्माका काहूके साथि सजातीयसंबंध बनै नहीं ॥

(२) तैसैं आत्मा अद्वैत है औ सत् हैतिसतैं भिन्न माया (अज्ञान) औ माया का

कार्य स्थूलसूक्ष्मप्रपंच प्रतीत होवैहैं।
सो असत् है औ असत् कछु वस्तु
नहीं। यातें आत्मा का काहूके साथि
विजातीय संबंध बनै नहीं ॥

(३) तैसें आत्मा निरवयव है औ सच्चिदा-
नंदादिक तो आत्मा के अवयव नहीं
किंतु एकरूप होनेतें आत्माके
स्वरूप हैं तातें आत्मा का काहूके
साथि स्वगतसंबंध बनै नहीं ॥

इसरीतिसें आत्मा सर्वसंबंधसें रहित है
यातें असङ्ग है।

१५६ प्रश्नः—अद्वैत आत्मा कैसें है ?

उत्तरः—४ द्वैत जो प्रपंच। सो स्वप्नकी
न्यांई कल्पित होनेतें वास्तव नहीं है। यातें
आत्मा द्वैतसें रहित होनेतें आत्मा अद्वैत है।

१५७ प्रश्नः—अजन्मा आत्मा कैसें है ?

उत्तरः—स्थूलदेहका धर्म जन्म है ॥

सूक्ष्मदेहका धर्म बी नहीं तो आमात्का धर्म जन्म कहांसें होवैगा ?

फेर जो आत्माका जन्म मानिये तौ आत्मा का मरण बी मानना होवैगा । तातैं आत्मा अनित्य सिद्ध होवैगा । सो परलोकवादी आस्तिकनकूं अनिष्ट कहिये अवांछित है । काहेतैं

(१) जन्ममरणवाला वस्तु है ताका आदि-अन्तविषैं अभाव हैं । तासैं पूर्वजन्म-विषैं आत्मा नहीं था और तिसके कर्म बी नहीं थे । तब इस जन्मविषैं आत्माकूं कर्मसैं बिना भोग होवैहै औ

(२) मरणसैं अनंतर आत्मा नहीं होवैगा। तातैं इसजन्मविषै किये कर्म का भोग मैं बिना नाश होवैगा।

तातैं वेदोक्तकर्म की व्यर्थता होवैगी। यातैं आत्मा का धर्म जन्म नहीं॥ तातैं आत्मा अजन्मा है। औ

अजन्मा कहनैंसैं अजरअमर अर्थसैं सिद्ध भया॥

* १४८ प्रश्नः—निर्विकार आत्मा कैसैं है?

उत्तरः—६ जैसैं (१) घटके जन्म (२) अस्तिपना कहिये प्रकटता (३) वृद्धि (४) विपरिणाम (५) अपक्षय (६) विनाश। ये घटधर्म हैं। परंतु घटविषैं स्थित औ घटसैं भिन्न जो आकाश। तिसके धर्म नहीं॥

तैसें

(१) "देह जन्मता है" यह जन्म ॥
(२) "देह जन्म्या है" यह अस्तिपना
(पूर्व नहीं था । अब है) ॥
(३) "देह बालक भया" यह वृद्धि ॥
(४) "देह युवा भया" यह विपरिणाम ॥
(५) "देह वृद्ध भया" यह अपक्षय ॥
(६) "देह मरणकूं पाया" यह विनाश ॥

ये षट्‌विकार देहके धर्म हैं ॥ देहकूं जाननें-हारा अरु देहसें न्यारा जो आत्मा है । तिसके धर्म नहीं ॥

इस रीतिसें षट्‌विकारनतें रहित आत्मा निर्विकार है ॥

❀ १५९ प्रश्नः—निराकार आत्मा कैसैं है ?

उत्तरः—७ (१) स्थूल (२) सूक्ष्म (३) लम्बा (४) ठुंका कहिये छोटा। यें च्यारीप्रकारके जगत्‌विषै आकार हैं॥

(१) आत्मा। इन्द्रिय औ मनका अविषय होनेतैं सूक्ष्म है। तातैं स्थूल नहीं॥

(२) आत्मा व्यापक है। तातैं सूक्ष्म नहीं॥ कहिये अणु नहीं॥

(३-४) आत्मा सर्वठिकानै ओतप्रोत है। तातैं लंबा औ ठुंका नहीं॥

यातैं आत्मा निराकार हैं॥

❀ १६० प्रश्नः—अव्यक्त आत्मा कैसैं है ?

उत्तरः—८ आत्मा। जातैं मनइन्द्रियआदिकका अगोचर होनतैं अस्पष्ट है। यातैं आत्मा अव्यक्त है।

१५१ प्रश्नः—अव्यय आत्मा कैसें है ?
उत्तरः—९ जैसे कोठे में धान्य के निकास करि धान्य का व्यय कहिये घटना होवैहै। तैसें आत्मा का व्यय होवै नहीं । यातैं आत्मा अव्यय है ॥

१५२ प्रश्नः—अक्षर आत्मा कैसें है ?
उत्तरः—१० आत्मा जातैं क्षर कहिये नाशतैं रहित है। यातैं आत्मा अक्षर है ॥ याही कूं अव्यय। अमृत औ अविनाशी बी कहै हैं ॥ इसरीतिसैं आत्माके निषेध्यविशेषण हैं ॥

१५३ प्रश्नः—ये कहे जो आत्मा के विशेषण। सो परस्पर अभिन्न किसरीति सैंहै ?
उत्तरः—सच्चिदानंदादिक जो आत्मा के गुण होवैं तौ परस्परभिन्न होवैं। औ ये आत्मा के गुण नहीं। किंतु स्वरूप हैं। यातैं परस्परभिन्न नहीं। किंतु अभिन्न हैं। औ

१ एकहीं आत्मा नाशरहित है। यातें स[त्]
कहिये है। औ
२ जड़सें विलक्षण प्रकाशरूप है। यातें चि[त्]
कहिये है। औ
३ दुःखसें विलक्षण सुखरूप प्रीतिका विषय है।
यातें आनंद कहिये हैं ॥
ऐसें सर्व विशेषणनविषै जानना ॥

दृष्टांतः—

जैसें एकहीं पुरुष
१ पिताकी दृष्टि सें पुत्र कहिये है। औ
२ पितामह की दृष्टिसें पौत्र कहिये है। औ
३ पितृभ्राताकी दृष्टिसें भ्रातृज कहियेहैं। औ
४ मातुलकी दृष्टिसें भाणीज कहिये है।

किंवा जैसें एकहीं संन्यासी ।

१ पशु स्त्री गृहस्थ अदंडी आदिकनकी दृष्टिसैं मनुष्य पुरुष त्यागी दण्डी इत्यादि विधेय-विशेषण करिके कहिये है । औ

२ घट पाषाण वृक्ष आदिक की दृष्टिसैं अघट अपाषाण अवृक्ष आदिक निषेध्यविशेषणों-करिके कहिये हैं ॥

तैसें एक ही आत्मा प्रपंच के विशेषण असत् जड दुःख औ अंग खंड संग आदिककी दृष्टिसैं सत्‌चित आनंदादिक औ अनंतआदिक कहिये हैं।

इस रीतिसैं कहे जो आत्मा के विशेषण सो परस्पर भिन्न नहीं । किंतु अभिन्न हैं ॥

इति श्रीविचार चंद्रोदये आत्मविशेषणवर्णन नामि सप्तमकला समाप्ता ॥७॥

॥ अथ अष्टमकलाप्रारंभः ॥ ८ ॥

॥सतचित आनंद का विशेष वर्णन॥

इन्द्रविजय छन्द ॥

सच्चिदनंदसरूपहि मैं यह ।
सद्गुरु के मुख सैं पहिचान्यो ॥
जागृत स्वप्न सुषुप्ति जु आदिक
तीनहुँ कालहिमें परमान्यौ ॥
जागृतआदि लयाविध तीनहुँ
कालहि हों इसतें सत मान्यो ॥
तीनहुं कालविषै सब जानहुँ ।
या हित मैं चिद्रूपहि जान्यो ॥१६॥

मैं प्रिय हुं धन पुत्र रु पुद्गल[१४०]—
आदिकतैं प्रयकाल अगान्यो[१४१] ।
आतमअर्थ सवे प्रिय आतम ।
आपहि है प्रिय दुःख नसान्यो ।।
या हित मैं सबतैं प्रियतम्म रु ।
सो परमानंद दुःखहि भान्यो ।।
देह दशादि[१४२] अतीत सु आतम ।
ब्रह्म पीतांबर गान्यो ।।१७।।

१६४ प्रश्नः—सत् सो क्या है ?
उत्तरः—तीनकाल मैं जो अबाधित होवै ।
सो सत् है ।।

१६५ प्रश्नः— चित् सो क्या है ?
उत्तरः—२ तीनकाल मैं जो सर्वकूं जानैं
सो चित् है ।।

---

१४० ॥ स्थूलशरीर ॥ १४१ नूस ॥
१४२ ॥ अवस्थाआत्रिक तैं ॥

* १६६ प्रश्नः—आनंद सो क्या है ?

उत्तरः—३ तीनकालमैं जो परमप्रेम का विषय होवै । सो आनद है ॥

* १६७ प्रश्नः—मैं सत् हूं । यह कैसें जानना ?

उत्तरः—१ तीनकालविषै मैं हूं । यातैं मैं सत् हूँ यह ऐसें जानना ॥

* १६८ प्रश्नः—तीनकाल विषै मैं हूँ । यातैं सत् हूँ यह कैसें जानना ?

उत्तरः—

१ (१) जागृतविषै मैं हूँ ।
(२) स्वप्नविषै मैं हूं ।
(३) सुषुप्तिविषै मैं हूँ ॥

२ (१) तैसें प्रातःकालविषै मैं हूं ।
(२) मध्याह्नकालविषै मैं हूँ ।
(३) सायंकालविषै मैं हूँ ॥

(१) तैसें दिवस विषै मैं हूँ।
(२) रात्रिविषै मैं हूँ।
(३) पक्षविषै मैं हूँ॥
(१) तैसें मासविषै मैं हूँ।
(२) ऋतुविषै मैं हूँ।
(३) वर्षविषै मैं हूँ।
(१) तैसें बाल्यअवस्थाविषै मैं हूँ।
(२) यौवनअवस्थाविषै मैं हूँ।
(३) वृद्धअवस्थाविषै मैं हूँ॥
(१) तैसें पूर्वदेहविषै मैं हूँ*
(२) इसदेहविषै मैं हूँ।
(३) भावीदेहविषै मैं हूँ॥

---

* या प्रकरणविषै "था" अरु "होऊँगा" तैसें
...चारण करनैं के योग्य भूत औ भविष्यत्‌कालका बा...
..." ऐसैं वर्त्तमान की न्याईं उच्चारण किया है। ...

७ (१) तैसैं युगविषै मैं हूँ ।
(२) मनुविषै मैं हूँ ।
(४) कल्पविषै मैं हूँ ।

८ (१) तैसैं भूतकालविषै मैं हूँ ।
(२) वर्त्तमानकालविषै मैं हूँ ।
(३) भविष्यकालविषै मैं हूँ ।

इसरीतिसैं तीनकालविषै मैं हूँ । यातैं
हूँ । यह जानना ॥

भूतादिकालकी कल्पनामात्रता (मिथ्यात्व) है
करनैं अर्थ है ॥ औ आत्माकी सदादिरूपताविषै
आदिक अनेकप्रमाणोंका सद्भाव है अरु ताकी
कालमैं असत्तादिकविषै प्रमाणका अभाव है यातैं
कालोंविषै आत्मा सच्चिदानंदरूप सिद्ध है । या

१६९ प्रश्नः—मेरेसैं भिन्न नामरूपवस्तुसहिततीन-काल क्या जाननैं ?

उत्तरः—मेरेसैं भिन्न नामरूपवस्तुसहित-तीनकाल असत् हैं। ऐसैं जाननैं॥

* १७० प्रश्नः— सत् औ असत् का निर्णय किसतैं होवैहै ?

उत्तरः—सत् औ असत् का निर्णय अन्वय व्यतिरेकरूप युक्तिसैं होवैहै।

* १७१ प्रश्नः— सत्असत्कं निर्णयविषै अन्वय-व्यतिरेकरूप युक्ति कैसैं जाननी ?

उत्तरः—

१ (अ) जो मैं जाग्रत्‌विषै हूँ।
सोई मैं स्वप्नविषै हूँ।
यातें मैं सत् हूँ।
(व्य) जाग्रत् मेरेविषै नहीं।
यातें यह जाग्रत् असत् है॥
(अ) जो मैं स्वप्नविषै हूँ।
सोई मैं सुषुप्तिविषै हूँ।
यातें मैं सत् हूँ।
(व्य) स्वप्न मेरेविषै नहीं।
यातें यह स्वप्न असत् है॥
(अ) जो मैं सुषुप्तिविषै हूँ।
सोई मैं प्रातःकालविषै हूँ॥
यातें मैं सत् हूँ॥
(व्य) सुषुप्ति मेरेविषै नहीं।
यातें यह सुषुप्ति असत् है॥

१ (अ) जो मैं प्रातःकालविषै हूँ ।
सोई मैं मध्याह्नकाल विषै हूँ ।
यातैं मैं सत् हूँ ॥
(व्य) प्रातःकाल मेरे विषै नहीं ।
यातैं यह प्रातःकाल असत् है ॥
(अ) जो मैं मध्याह्नकालविषै हूँ ।
सोई मैं सायंकालविषै हूँ ।
यातैं मैं सत हूँ ॥
(व्य) मध्याह्नकाल मेरे विषै नहीं ।
यातैं यह मध्याह्नकाल असत् है।
(अ) जो मैं सायंकालविषै हूँ ।
सोई मैं दिवसविषै हूँ ।
यातैं मैं सत् हूँ ॥
(व्य) सायंकाल मेरेविषै नहीं ॥
यातैं यह सायंकाल असत् है ॥

४ (अ) जो मैं दिवसविषै हूँ ।
सोई मैं रात्रिविषै हूँ ।
यातैं मैं सत् हूँ ॥
(व्य) दिवस मेरेविषै नहीं ।
यातैं यह दिवस असत् है ॥
(अ) जो मैं रात्रिविषै हूँ ।
सोई मैं पक्षविषै हूँ ।
यातैं मैं सत् हूँ ॥
(व्य) रात्रि मेरेविषै नहीं ।
यातैं यह रात्रि असत् है ।
(अ) जो मैं पक्षविषै हूँ ।
सोई मैं मासविषै हूँ ।
यातैं मैं सत् हूँ ॥
(व्य) पक्ष मेरेविषै नहीं ।
यातैं यह पक्ष असत् है ।

(अ) जो मैं मासविषै हूँ।
सोई मैं ऋतुविषै हूं।
यातैं मैं सत् हूँ॥
(अ) मास मेरेविषै नहीं।
यातैं यह मास असत् है॥
(अ) जो मैं ऋतुविषै हूँ।
सोई मैं वर्षविषै हूँ।
यातैं मैं सत् हूँ॥
(अ) ऋतु मेरे विषै नहीं।
यातैं यह ऋतु असत् है॥
(अ) जो मैं वर्षविषै हूँ।
सोई मैं बाल्यअवस्थाविषै हूँ।
यातैं मैं सत् हूँ॥
(अ) वर्ष मेरे विषै नहीं।
यातैं यह वर्ष असत् है॥

५ (अ) जो मैं बाल्यअवस्थाविषै हूँ।
सोई मैं यौवनअवस्थाविषै हूँ।
यातें मैं सत् हूँ ॥
(व्य) बाल्यअवस्था मेरेविषै नहीं।
यातें यह बाल्यअवस्था असत्॥
(अ) जो मैं यौवनअवस्थाविषै हूँ।
सोई मैं वृद्धअवस्थाविषै हूँ।
यातें मैं सत् हूँ ॥
(व्य) यौवनअवस्था मेरेविषै नहीं।
यातें यह यौवनअवस्था असत्॥
(अ) जो मैं वृद्धअवस्थाविषै हूँ।
सोई मैं पूर्वदेहविषै हूँ।
यातें मैं सत् हूँ ॥
(व्य) वृद्धअवस्था मेरे विषै नहीं।
यातें यह वृद्ध अवस्था असत्॥

सत्‌चित्‌आनंदका विशेषण-८

(अ) जो मैं पूर्वदेहविषै हूँ।
सोई मैं इसदेहविषै हूँ।
यातैं मैं सत् हूँ॥

(ब) पूर्वदेह मेरेविषै नहीं।
यातैं यह पूर्वदेह असत् है॥

(अ) जो मैं इसदेहविषै हूँ।
सोई मैं भावीदेहविषै हूँ।
यातैं मैं सत् हूँ॥

(ब) यह देह मेरेविषै नहीं।
यातैं यह देह असत् है॥

(अ) जो मैं भावीदेहविषै हूँ।
सोइ मैं युगविषै हूं।
यातैं मैं सत् हूं॥

(ब) भावीदेह मरेविषै नहीं।
यातैं यह भावीदेह असत् है॥

७ (अ) जो मैं युगविषै हूँ।
सोई मैं मनुविषै हूँ।
यातैं मैं सत् हूँ॥
(व्य) युग मेरेविषै नहीं।
यातैं यह युग असत् है॥
(अ) जो मैं मनुविषै हूँ।
सोई मैं कल्पविषै हूँ।
यातैं मैं सत् हूँ॥
(व्य) मनु मेरेविषै नहीं।
यातैं यह मनु असत् है॥
(अ) जो मैं कल्पविषै हूँ।
सोई मैं भूतकाल विषै हूँ।
यातैं मैं सत् हूँ॥
(व्य) कल्प मेरेविषै नहीं।
यातैं यह कल्प असत् है॥

८ (अ) जो मैं भूतकालविषै हूं। सोई मैं
भविष्यत्‌ कालविषै हूं। यातैं मैं सत हूं॥
(व्य) भूतकाल मेरेविषै नहीं।
यातैं यह भूतकाल असत्‌ है॥
(अ) जो मैं भविष्यत्‌कालविषै हूँ।
सोई मैं वर्तमानकालविषै हूँ।
यातैं मैं सत्‌ हूँ॥
(व्य) भविष्यतकाल मेरेविषै नहीं।
यातैं यह भविष्यत्‌काल असत्‌ है॥
(अ) जो मैं वर्तमानकाल विषै हूं।
सोई मैं सर्वकालविषै हूं।
यातैं मैं सत्‌ हूँ॥
(व्य) वर्तमानकाल मेरेविषै नहीं।
यातैं यह वर्तमानकाल असत्‌ है॥
इसरीति सैं सत असत्‌ के निर्णयविषै
अन्वयव्यतिरेकरूप युक्ति जाननी॥

१७२ प्रश्न-चित् कैसैं हूँ ?

उत्तरः—२ तीनकालविषै जानता हूं यातैं मैं चित् हूँ ॥

१७३ प्रश्नः—तीन कालविषै मैं जानताहूँ यातैं चि हूँ । यह कैसैं जानना ?

उत्तरः—

१ (१) जाग्रतकूं मैं जानताहूं ।
(२) स्वप्नकूं मैं जानताहूं ।
(३) सुषुप्तिकूं मैं जानताहूं ।

२ (१) तैसैं प्रातःकालकूं मैं जानताहूँ ।
(२) मध्याह्नकालकूं मैं जानताहूं ।
(३) सायंकालकूं मैं जानता हूं ।

३ (१) तैसैं दिवसकूं मैं जानता हूं ।
(२) रात्रिकूं मैं जानताहूँ ॥
(३) पक्षकूं मैं जानताहूं ॥

४ (१) तैसैं मासकूं मैं जानता हूं ।

(२) ऋतुकूं मैं जानताहूं ।
(३) वर्षकूं मैं जानताहूं ॥
५(१) तैसैं बाल्यअवस्थाकूं मैं जानताहूं ।
(२) यौवन अवस्थाकूं मैं जानताहूं ।
(३) वृद्धअवस्थाकूं मैं जानताहूं ॥
६(१) तैसें पूर्वदेहकूं मैं जानताहूं ।
(२) इस देहकूं मैं जानताहूं ।
(३) भावीदेहकूं मैं जानताहूं ॥
७(१) तैसैं युगकूं मैं जानताहूं ।
(२) मनुकूं मैं जानताहूँ ।
(३) कल्पकूं मैं जानताहूं ॥
८(१) तैसैं भूतकालकूं मैं जानताहूं ।
(२) भविष्यत्‌कालकूं मैं जानताहूं ।
(३) वर्त्तमानकालकूं मैं जानताहूं ॥
इसरीतिसैं सर्वकालविषै मैं जानताहूं । यातें चित् हूँ । यह जानना ॥

* १७४ प्रश्नः—मेरेसैं भिन्न नामरूपवस्तुसहित तीनकाल क्या जानने ?

उत्तरः—मेरेसैं भिन्न नामरूपवस्तुसहित तीनकाल जड़ हैं । ऐसैं जानने ॥

* १७५ प्रश्नः—चित् औ जड़ का निर्णय किससैं होवै है ?

उत्तरः—चित औ जड़का निर्णय अन्वय-व्यतिरेरूप युक्तिसैं होवै हैं ॥

* १७६ प्रश्नः—चित् औ जड के निर्णयविषै अन्वय व्यतिरेकरूप युक्ति कैसैं जाननी ?

उत्तरः—

१ (अ) जो मैं जाग्रत कूं जानता हूँ ।
सोई मैं स्वप्नकूं जानता हूँ ।
∴ यातैं मैं चित् हूँ ॥
(व्य) जाग्रत मेरेकूं जानें नहीं ।
यातैं यह जाग्रत जड़ है ॥

(अ) जो मैं स्वप्नकूं जानता हूँ ।
सोइ मैं सुषुप्तिकूं जानताहूँ ।
यातैं मैं चित् हूँ ॥

(व्य) स्वप्न मेरकूं जानै नहीं ।
यातैं यह स्वप्न जड़ है ॥

इत्यादि इसरीतिसैं चित् औ जडके निर्णय-विषै अन्वयव्यतिरेकरूप युक्ति जाननी ॥

' १७७ प्रश्न--आनंद मैं कैसैं हूं ?

उत्तरः—३ तीनकालविषै मैं परमप्रिय हूं । यातैं मैं आनन्द हूं ॥

ॐ १७८ प्रश्नः-तीनकालविषै मैं प्रिय हूं यातैं आनंद हूं । यह कैसैं जानना ?

उत्तरः—

१ (१) जाग्रत् विषै मैं प्रिय हूं ।
(२) स्वप्नविषै मैं प्रिय हूं ।
(३) सुषुप्तिविषै मैं प्रिय हूं ॥

२ (१) तैसैं प्रातःकालविषै मैं प्रिय हूं ।
(२) मध्याह्नकालविषै मैं प्रिय हूं ।
(३) सायंकालविषै मैं प्रिय हूँ ॥

३ (१) तैसैं दिवसविषै मैं प्रिय हूं ।
(२) रात्रिविषै मैं प्रिय हूँ ।
(३) पत्तविषै मैं प्रिय हूं ॥

४ (१) तैसैं मासविषै मैं प्रिय हूं ।
(२) ऋतुविषै मैं प्रिय हूँ ।
(३) वर्षविषै मैं प्रिय हूँ ॥

५ (१) तैसैं बाल्यअवस्थाविषै मैं प्रिय हूं।
(२) यौवनअवस्थाविषै मैं प्रिय हूँ ।
(३) वृद्धअवस्थाविषै मैं प्रिय हूँ ।

(१) तैसैं पूर्वदेहविषै मैं प्रिय हूँ ।
(२) इसदेहविषै मैं प्रिय हूँ ।
(३) भावीदेहविषै मैं प्रिय हूँ ॥
(१) तैसैं युगविषै मैं प्रिय हूँ ।
(२) मनुविषै मैं प्रिय हूं ।
(३) कल्पविषै मैं प्रिय हूं ॥
(१) तैसैं भूतकालविषै मैं प्रिय हूं ।
(२) भविष्यत्कालविषै मैं प्रिय हूँ ।
(३) वर्त्तमानकालविषै मैं प्रिय हूँ ॥
इसरीतिसैं तीनकालविषै परमप्रिय हूँ । यातैं मैं आनन्द हूँ । यह जानना ॥

१७२ प्रश्नः—मेरेसैं भिन्न नामरूपवस्तुसहित तीनकाल क्या जानने ?

उत्तरः—मेरेसैं भिन्न नामरूपवस्तुसहित तीनकाल दुःख हैं ऐसैं जानना ॥

* १८० प्रश्नः-आनंद औ दुःख का निर्णय किसैं होवै है ?

उत्तरः—आनन्द औ दुःख का निर्णय अन्वयव्यतिरेकरूप युक्तिसैं होवै है ॥

* १८१ प्रश्नः-आनंद औ दुःखके निर्णयविषै अन्वय-व्यतिरेकरूप युक्ति कैसैं जाननी ?

उत्तरः—

(अ) जो मैं जाग्रत्‌विषै (पर.) प्रिय हूँ।
सोई मैं स्वप्नविषै प्रिय हूँ।
१४३
यातैं मैं आनन्द हूँ॥
(व्य) जाग्रत मेरेकूं प्रिय नहीं।
यातैं यह जाग्रत् दुःख है॥

इसरीतिसैं आनन्द औ दुःख के निर्णयविषै अन्वयव्यतिरेकरूप युक्ति जाननी ॥

॥ १४३ ॥ जो जो जाग्रत्‌आदिककाल आत्माविषै

२ प्रश्न:—मैं परमप्रिय हूँ। यह कैसैं जानना?

उत्तर:—दृष्टांत:—

जैसैं पुत्र के मित्रविषै प्रीति है। सो पुत्र-
वास्ते है। औ
पुत्रविषै जो प्रीति है। सो तिसकूं मित्र-
वास्ते नहीं।
यातैं पुत्र अधिकप्रिय है॥

...ता है। सो सो काल यद्यपि दुःखरूप है। तथापि
...अभावकरिके आत्माकूं चिदाभासद्वारा प्रिय
...ता है। तब अन्यकाल प्रिय भासते नहीं। यातैं
...विषै व्यभिचारीप्रीति है। तातैं वे वास्तव
...प्रिय नहीं हैं। औ
...आत्मा मैं कहिये आपमैं अव्यभिचारी (सर्वदा)
...ति है। यातैं आत्मा आनन्दरूप है।

१ तैसें धनपुत्रादिकविषै जो प्रीति है सो
आत्मा के वास्ते है । औ
२ आत्माविषै जो प्रीति है। सो धनपुत्रादिकके
वास्ते नहीं ।
यातैं आत्मा अधिकप्रिय है ॥
इसरीतिसैं मैं परमप्रिय हूँ । यह जानना।
* १८३ प्रश्नः—प्रीतिका न्यून अधिकभाव कैसैं जानना?
उत्तरः—
१ जाग्रत्विषै सर्वसैं प्रिय द्रव्य है।
काहेतैं धनवास्ते पुरुष देश छोडिकैं परदेश
जाताहै औ अनेकनीचकर्म करता है। यातैं
द्रव्य प्रिय है ॥
२ द्रव्यतैं पुत्र प्रिय है । काहेतैं पुत्र
दुष्टकर्मकरिके राजगृहविषै बन्धनकूं पावताहै
तब तिसकूं धन देके छुडावता है। यातैं
धनतैं पुत्र प्रिय है ॥

पुत्रतैं शरीर प्रिय है । काहेतैं जब
कहिये दुष्काल होवै । तब पुत्रकूं
शरीर का निर्वाह करै है । यातैं पुत्रतैं
प्रिय है ॥

शरीरतैं इंद्रिय प्रिय है काहेतैं कोई
आवै तब इन्द्रिनकूं छुपायके "मेरे
शरीरविषै मार । परन्तु आंख कान नाक
विषै मारना नहीं" ऐसैं कहताहै । यातैं
शरीरतैं इंद्रिय प्रिय है ॥

इन्द्रियतैं प्राण (मन) प्रिय है । काहेतैं
दुष्टकर्म करनैंसैं राजा का हुकम
होवै कि "इसके प्राण लेनें" तब कहता-
कि मेरे धन पुत्र स्त्री गृह लूट ल्यो ।

परन्तु प्राण मत लेना । तौ बी राजाकी प्री
तो प्राण के लेनेविषैं हैं । तब कहता है
"मेरा कान काटो । नाक काटो । हाथ औ
पांउ काटो । परन्तु मेरे प्राण मत लेना"
यातैं इन्द्रियतैं प्राण प्रिय है ।

६ प्राणतैं आत्मा प्रिय है : काहेतैं कि
कूं अतिशयव्याधिसैं पीडा होती होवै । त
कहता है कि "मेरे प्राण जावैं तब मैं सु
होऊँ" यातैं प्राणतैं आत्मा प्रिय है ॥

इसरीतिसैं प्रीतिका न्यूनअधिक
जानना ॥

इति श्रीविचारचंद्रोदये सच्चिदानन्दवि
वर्णननामिका अष्टमकला समाप्ता ॥ ८ ॥

—————

॥ अथ नवमकलाप्रारंभः ॥ ९ ॥

॥ अवाच्यसिद्धान्तवर्णन ॥

॥ इन्द्रविजय छन्द ॥

ब्रह्म अहै मनवानि-अगोचर ।
शास्त्र रु संत कहैं अरु ध्यावैं ।
वेद वदें लछमनादिकरीति रु ।
सूचि विश्रान्ति जनां मन लावैं ॥
हैं जु सदादिविधेयविशेषण ।
ते असदादिक भिन्न कहावैं ।
सत्य अपेक्षिक आदि विरोधि[१४४] जु
अंस तजी परमार्थ लखावैं[१४५] ॥१८॥

॥ १४४ ॥ आपेक्षिकसत्य । वृत्तिज्ञान औ विषया-नंदआदिक विरोधि जो अंश है । ताकूं त्यागिके ॥
॥ १४५ ॥ वास्तवरूप जो निरपेक्षसत्य । चेतनरूपज्ञान औ स्वरूपानंद आदिक । ताकूं लक्षणा सें बोधन करैं हैं ॥

हैं जु अनंत अखण्ड असंग रु
अद्वयआदिनिषेध्य रहावैं ॥

जे परपञ्च निषेध करी अव-
शेषितवस्तु गिराविन गावैं ॥

यूं परमातम आतम देवही ।
वेद रु शास्त्र सर्वे सुरटावैं ॥

१४६
पण्डित त्यागि अभास पीतांबर ।
वृत्ति अहं अपरोक्षहि पावैं ॥१६॥

॥ १४६ ॥ पण्डितपीतांबर कहैं हैं कि—आभास (फलव्याप्तिकूं) त्यागिके अहंवृत्ति (वृत्तिव्याप्तिकरि) अपरोक्ष मानै ॥ यह अर्थ है ॥

१८४ प्रश्नः—ब्रह्मात्मा जब वाणीका विषय नहीं। तब सत्‌चित् आनंदआदिक विशेषणनसैं कैसें कहिये है।

उत्तरः-ब्रह्मात्माके कितनैंक विधेयविशेषण[१४७] हैं औ कितनैंक निषेध्यविशेषण[१४८] हैं। तिनमैं १ विधेयविशेषण जो सदादिक हैं। सो प्रपंच का निषेधकरिके अवशेप (बाकी रहे)ब्रह्मकूं लक्षणासैं[१४९] साक्षात्‌बोधन करैहैं। औ २ निषेध्यविशेषण जो अनंतादिक हैं। सो तौ साक्षात्‌प्रपञ्चकाही निषेध करैहैं औ तिसतैं विलक्षण ब्रह्मात्मा अर्थतैं सिद्ध होवैहै। तातैं ब्रह्मात्मा अवाच्य होनैंत किसी विशेषण सैं नहीं कहियेहै ॥

॥१४७॥ "सत् है"। "चित् है"। इस प्रकार विधिमुखसैं ब्रह्मके बोधकपद विधेयविशेषण हैं ॥

॥१४८ "अनंत (अंतवाला नहीं)" "अखंड-

(खंडवाला नहीं) " इस प्रकार निषेधमुखसे ब्रह्मके बोधकपद निषेध्यविशेषण हैं ।

॥ १४६ ॥

१ (वा) माया औ प्रपञ्चविषै आपेक्षिकसत्यता है औ ब्रह्मविषै निरपेक्षसत्यता है । दोनूं मिलिके 'सत्' पद का वाच्य है । औ

(ल) मायाकी सत्यताकूं त्यागिके केवल ब्रह्मकी सत्यता लक्ष्य है ।

२ (वा) अंतःकरणकी वृत्तिरूप ज्ञान औ चेतनरूप ज्ञान । दोनू मिलिके, ' चित् ' पद का वाच्य है ॥

(ल) वृत्तिज्ञानकूं छोडिके केवलचेतनरूप ज्ञान लक्ष्य है ।

३ (वा) विषयानंद । वासनानंद औ ब्रह्मानंद। तीनू मिलके 'आनद' पदका वाच्य है ॥

(ल) दोनूकूं छोडिके केवल ब्रह्मानंद आनंदपद का लक्ष्य है ॥

(वा) माया औ ताके कार्य आकाशादिकविषैं आपेक्षिकव्यापकता है अरु ब्रह्म (आत्मा) विषैं निरपेक्षव्यापकता है। दोनूं मिलिके 'ब्रह्म' (विभु) पदका वाच्य है॥

(ल) केवल ब्रह्म 'ब्रह्म' पद का लक्ष्य है॥

(वा) सामान्यबुद्धिविषैं निरपेक्षस्वप्रकाशता है औ चेतनविषैं निरपेक्षस्वप्रकाशता है। दोनूं मिलिके 'स्वयंप्रकाश' पदका वाच्य है।

(ल) केवलचेतन 'स्वयंप्रकाश' लक्ष्य है॥

(वा) रज्जुआदिकविषैं आपेक्षिकअविकारता है औ चेतनविषैं निरपेक्षअविकारिता है। ये दोनूं मिलिके 'कूटस्थ' पदका वाच्य है। औ

(ल) केवलचेतन 'कूटस्थ' पदका लक्ष्य है॥

(वा) लौकिकसाक्षी औ मायाअविद्याउपहित चेतन (ब्रह्म औ आत्मा) दोनूं मिलके 'साक्षी' पदका वाच्य है। औ

(ल) केवलमायाअविद्याउपहित चेतन 'साक्षी' पदका लक्ष्य है ॥

८ (वा) साभासअंतःकरणकी वृत्तिरूप दृष्टिकरि विशिष्ट (सहित) चेतन । 'द्रष्टा' पदका वाच्य है । औ

(ल) केवलचेतनभाग 'द्रष्टा' पद का लक्ष्य है।

९ (वा) यज्ञका उपद्रष्टा औ प्रत्यगात्मा दोनूं मिलिके उपद्रष्टा पद का वाच्य है ॥

(ल) केवलप्रत्यगात्मा 'उपद्रष्टा' पदका लक्ष्य है;

१० (वा) लोकगत एकाकीपुरुष औ सजातीयभेदरहित ब्रह्म 'एक' पदका वाच्य है ॥

(ल) केवलब्रह्म एक पदका लक्ष्य है ॥

ऐसैं अनुक्तअन्यविधेयविशेषणोंविषै बी जानीलेना। इसरीतिसैं प्रपञ्चके 'असत्' है आदिकविशेषणोंके निषेधक सदादिपदोंके अर्थविषै बी भागत्यागलक्षणाकी प्रवृत्ति है ॥

१८४ प्रश्न—सदादिकविधेयविशेषण। प्रपञ्चका निषेधकरिके अवशेषब्रह्मकूं कैसें बोधन करैहैं ?

उत्तरः—

१ सत् कहनैंसैं असत्का निषेध भया। बाकी रह्या सद्रूप। सो लक्षणासैं सिद्ध है ॥

२ चित् कहनैंसैं जड़का निषेध भया। बाकी रह्या चिद्रूप। सो लक्षणासैं सिद्ध है ॥

३ आनंद कहनैंसैं दुःखका निषेध भया। बाकी रह्या आनद (सुख) रूप। सो लक्षणासैं सिद्ध हैं।

४ ब्रह्म कहनैंसे परिच्छिन्नका निषेध भया। बाकी रह्या व्यापक। सो लक्षणासैं सिद्ध है।

५ स्वयंप्रकाश कहनैंसैं परप्रकाशका निषेध भया। बाकी रह्या स्वयंप्रकाश। सो लक्षणा से सिद्ध है ॥

६ कूटस्थ (अविकारी) कहनेंसैं विकार
निषेध भया । बाकी रह्या निर्विकारी ।
लक्षणासैं सिद्ध है ॥

७ साक्षी कहनें सें साक्ष्यकानिषेध भया
बाकी रह्या साक्षी । सो लक्षणासैं सिद्ध है
८ द्रष्टा कहनैसैं दृश्यका निषेध भया । बाकी
रह्या द्रष्टा । सो लक्षणासैं सिद्ध है ॥

९ उपद्रष्टा कहनैंसें उपदृश्यका कहिये समीप
वस्तुका निषेधभया । बाकी रह्या उपद्रष्टा
सो लक्षणासैं सिद्ध है ॥

१० एक कहनैंसैं नानाका निषेध भया । बाकी
रह्या एक । सो लक्षणासैं सिद्ध है ॥
इस रीतिसैं अन्यविधेयविशेषणनविषै जान

२८६ प्रश्नः—अनंतादिकनिषेध्यविशेषण । प्रपंचका निषे। कैसैं करैं हैं ?

उत्तरः—

अनंतकहनैसैं देशकालवस्तुकृतपरिच्छेदका शेष बाकी रह्या अनंत । सो अथसैं ...पद है ॥

इसरीतिसैं अनन्तनिषेध्यविशेषणन विषै बी जानना ॥

२८७ प्रश्नः—इन विशेषणनका ऐसैं अर्थ करनैका क्या प्रयोजन है ?

उत्तरः—इन विशेषणनका ऐसैं अर्थ करनै का प्रयोजन यह है कि । चेतनकूं मनवाणीका अविषय करनैहारी श्रुतिके अर्थ का अविरोध

होवैं है ॥ जातैं गुणक्रिया जाति औ संबंधा-
दिक जो शब्द अरु मनकी प्रवृत्तिके निमि-
त्तरूप धर्म है। सो ब्रह्ममैं नहीं है किंतु निर्धर्म
होनेतैं ब्रह्म निर्विशेष है। यातैं श्रुति बी ताकूं
मनवाणी का अविषय कहती है ॥

किंवा जो कुछ बोलना है सो द्वैत मैं ही
है। अद्वैतमैं नहीं। यातैं इन विशेषणनका
ऐसैं अर्थ करनैंमैं श्रुतिविरुद्ध द्वैतकी सिद्धि
होवै नहीं औ अद्वैत सुखसैं समझनैमैं
शून्य होवै है ॥

इति श्रीविचारचन्द्रोदये अवाच्य सिद्धां-
वर्णननामिका नवमकला समाप्ता ॥९॥

॥ अथ दशमकलाप्रारंभः ॥१०॥

॥ सामान्य विशेषचैतन्यवर्णन ॥

॥ इन्द्रविजय छन्द ॥

चेतन हैं जु समान विशेष सु ।
दोविधसत्य सुजान समानैं ॥
भ्रांति सरूप विशेष जु कल्पित ।
पमृति आश्रय सो तिहि मानैं ॥
ज्यों रविको प्रतिबिंब जलादिक ।
सो रविरूप विशेष पिछानैं ।
१५०
त्यों मतिमें प्रतिबिंब परातम ।
सो कलपीत विशेषहिं जानैं ॥२०॥

॥ १५० परमात्माका प्रतिबिंब ॥

आवत जावत लोक प्रलोक हि ।
१२१
भोगत भोग जु कर्म निपानैं ॥
१२२
सो सब चित—अभास करै अरु ।
शुद्ध समान महीं नहिं मानैं ॥

अस्ति रु भाति प्रियं सब पूरन-
ब्रह्म समान सु चेतन मानैं ।
नाम रु रूप तजी सत् चेतन ।
मोद पीताम्बर आप पिछानैं ॥ २१ ॥

॥ १२१ ॥ जो कर्म रचित भोग है ।
भोगता हैं ॥

॥ १२२ ॥ चेतनका प्रतिबिंब ॥

* १८८ प्रश्नः—विशेषचैतन्य सो क्या है ?

उत्तरः—अंतःकरण औ अंतःकरण की वृत्ति-नविषै जो सामान्यचैतन्यब्रह्म का प्रतिबिंबरूप चिदाभास । सो विशेषचैतन्य है[१५३] ॥

* १८९ प्रश्नः— चिदाभास का लक्षण क्या है ?

उत्तरः—

१ चैतन्य (ब्रह्म)के लक्षणसैं रहित होवै । औ
२ चैतन्यकी न्याई भासै ।
सो चिदाभास कहियेहै ॥

॥१५३॥ इहां चिदाभासरूप जो विशेषचैतन्य कह्याहै । सो षट्कक्षाविषै उक्त कल्पितविशेषअंशके अंतर्गत है ॥

१६० प्रश्नः—यह चिदाभास विशेषचैतन्य काहे कहियेहै ?

उत्तरः—अल्पदेश औ कालविषै जो वस्तु होवै । सो विशेष कहियेहै [१२४] ॥ जातैं चिदाभास अंतःकरणदेश औ जाग्रत्स्वप्नकाल वा अज्ञान कालविषै है यातैं विशेषचैतन्य कहिये है ।

॥ १२४ अधिष्ठान औ अध्यस्त । इन मेंसें विशेष दोप्रकारका ॥ तिनमें

१–भ्रांतिकालविषैं जाकी प्रतीति होवै नहीं किंतु जाकी प्रतीतिसैं भ्रांति की निवृत्ति होवै । अधिष्ठानका विशेष है । औ

२–भ्रांतिकालविषैं जाकी प्रतीत होवै औ अधिष्ठान के ज्ञानकाल विषैं जाकी प्रतीति होवै नहीं सो अध्यस्तरूप विशेष है ॥ याहीकूं कल्पितविशेष भी कहैहैं ॥

१६१ प्रश्नः—विशेषचैतन्यविषै दृष्टान्त क्या है ?

उत्तरः—

दृष्टांतः—

१ जैसैं सूर्यका प्रकाश सर्वत्र समान है। परंतु सर्वठिकानै प्रतिबिंब होता नहीं औ जहाँ जल वा दर्पणरूप उपाधि होवै तहाँ प्रतिबिंबरूपकरि विशेष भासता है ॥

२ किंवा जैसैं सूर्यका प्रकाश सर्वत्र समानहै। परंतु सो वस्त्रकपास आदिककूं जलावता नहीं औ जहाँ आगिआ (सूर्यकांतमणि)रूप उपाधि होवै। तहाँ अग्निरूपसैं विशेष होयके वस्त्रकपासआदिककूं जलावता है ॥

तिनमैं

१ सामान्यरूप है सो सर्वदा ज्यूंका त्यूं होनैतैं यथार्थ (बहुकालस्थायि) है। औ

२ उपाधिकरि भासता है जो विशेषरूप। सो व्यभिचारी होनेतैं अयथार्थ (अल्पकाल स्थायि) है ॥

१ तैसें सामान्यचैतन्य जो अस्ति भाति प्रिय। सो सर्वत्र समान है। परन्तु तिसमैं बोलना चालना इत्यादिकविशेषव्यवहार होता नहीं औ

२ जहाँ अंतःकरण उपाधि होवै तहाँ चिदाभासरूपसैं विशेषचैतन्य होयके बोलनाचालना। कर्त्तापनाभोक्तापना। परलोक इस लोकविषै गमनआगमन। इत्यादिक विशेष व्यवहार होवै है ॥

तिनमैं

१ सामान्यचैतन्य जो ब्रह्मसो सत्य है। औ

२ उपाधिकरि भासता है जो विशेषचैतन्य चिदाभास। सो मिथ्या है ॥ तैसें

(१) पुन्यपापका कर्त्तापना ।
(२) सुखदुःखका भोक्तापना ।
(३) परलोकइसलोकविषै गमनागमन ।
(४) जन्ममरण ।
(५) चौरासीलक्षयोनिकी प्राप्ति ।
इत्यादिकसंसाररूप धर्म बी चिदाभासके हैं।
ते मिथ्या हैं ॥

२२ प्रश्न—विशेषचैतन्य के जाननैमैं क्या निश्चय करना ?

उत्तरः—

विशेषचैतन्य जो चिदाभास । औ
तिसके धर्म ।
ते मैं नहीं औ मेरे नहीं । किंतु ये मेरेविषै
कल्पित हैं॥मैं इनका अधिष्ठान सामान्यचैतन्य
इनतें न्यारा हूं । यह निश्चय करना ॥

❀ १९३ प्रश्नः—सामान्यचैतन्य सो क्या है?

उत्तरः—
१ जो आकाशकी न्याई सर्वत्र परिपूर्ण है।
२ जो सर्वनामरूपका अधिष्ठान है।
३ जो अस्तिभातिप्रियरूप है।
४ जो निर्विकारब्रह्म है।
सो सामान्यचैतन्य है॥

❀ १९४ प्रश्नः—ब्रह्म । सामान्यचैतन्य कहिये है?

उत्तरः—अधिकदेश और कालविषै जो होवै। सो सामान्य कहिये है॥

जातैं ब्रह्म। बुद्धिकल्पित सर्वदेश औ कालविषै व्यापक है। तातैं ब्रह्म सामान्यचैतन्य कहिये है॥

॥१६५ प्रश्नः—सामान्यचैतन्य जाननैविषै दृष्टांत क्या है ?

उत्तरः—

दृष्टांत :—जैसे एकरज्जुकेविषै नानापुरुषनकूं किसीकूं दंडकी । किसीकूं सर्पकी । किसीकूं पृथ्वीके रंपाकी । किसीकूं जलधाराकी भ्रांति होवैहै । तिस भ्रांतिविषै दोअंश हैं ।

१ एक सामान्यइदंअंश है । और

२ दूसरा सर्पादिक विशेष अंश है ॥ तिनमैं

१ (१) 'यह' दंड है ॥

(२) 'यह' सर्प है ॥

(३) 'यह' पृथिवी का रंपा है ॥

(४) 'यह' जलधारा है ॥

इसरीतिसैं सर्पादिकविशेअंशनविषैं सामान्य 'इदं' अंश कहिये 'यह' अंश सर्वत्र व्यापक है औ सो रज्जुका स्वरूप है । सो सामान्य-

इदंअंश जातैं

(१) भ्रांतिकालविषै बी भासता है । औ

(२) भ्रांतिकी निवृत्तिकालविषै बी " 'यह' रज्जु है" इसरीतिसैं भासताहै ।

यातैं सामान्यइदंअंश अव्यभिचारी होनैंतें सत्य है । औ

२ परस्परव्यभिचारी जो सर्पादिकविशेषअंश सो कल्पित है ॥

सिद्धांतः—तैसैं सर्वपदार्थनविषै पाँच अंश हैं:-

१ अस्ति २ भाति ३ प्रिय ४ नाम ५ रूप।

१ "घट है" यह अस्ति [सत्]

२ "घट भासताहै" यह भाति (चित्) ।

३ "घट प्यारा है" । काहेतैं घट जल भरनैंकूं उपयोगी है । यातैं यह प्रिय (आनंद)॥ सर्प-सहआदिक बी सर्पिणी औ सिंहिणीकूं प्रियहैं ।

४ "घट" यह दोअक्षर नाम है ।

नूनगोलउदरवान् घटका रूप (आकार) है।
घटआदिकसर्वभूत औभूतन के कार्यनविष
जानना ॥
शरीरके पदार्थनविषै पाँचअंश दिखाये॥तैसें
भीतरदेहआदिकविषै—
) "मैं हूँ" यह अस्ति है।
) "मैं भासता (जानता) हूँ" यह
भाति है।
) "मैं आपआपकूं प्यारा हूँ" यह प्रिय
है। औ
) देह। इंद्रिय। प्राण। मन। बुद्धि।
चित्त। अहङ्कार। अज्ञान औ इनके
धर्म। ये नाम हैं।
) इनके यथायोग्य आकार। सो रूप है॥
भन्तरके पदार्थनविषै पाँचअंश दिखाये॥

२ इन सर्वके नामरूपके त्याग कियेसैं—

(१) 'पृथिवी है'।

(२) 'पृथिवी भासती है'।

(३) 'पृथिवी प्रिय है'। काहेतैं पृथि
रहनेकूं स्थान देती है।

(४) 'पृथिवी' ऐसा नाम है। औ

(५) 'गंधगुणयुक्त' रूप है॥

३ पृथिवीके नामरूपके त्याग कियेसैं—

(१) 'जल है'।

(२) 'जल भासता है'।

(३) 'जल प्रिय है'। काहेतै
तृषाकूं दूरी करता है।

(४) 'जल ऐसा नाम है।' औ

(५) 'शीतस्पर्शगुणयुक्त' रूप है।

४ जलकूं नामरूपके त्याग कियेसैं—

(१) 'तेज है'।

(२) 'तेज भासता है'।

(३) 'तेज प्रिय है' काहेतैं तेज शीत औ अन्धकारकूं दूरी करता है।

(४) 'तेज' ऐसा नाम है। औ

(५) 'उष्णस्पर्शगुणयुक्त' रूप है॥

५ तेजकूं नामरूपके त्याग कियेसैं—

(१) 'वायु है'।

(२) 'वायु भासता है'।

(३) 'वायु प्रिय है'। काहेतैं वायु प्रसीनाकूं दूरी करताहै।

(४) 'वायु' ऐसा नाम है। औ

(५) 'रूपरहित अरु स्पर्शगुणयुक्त' रूप है॥

६ वायुके नामरूपके त्याग कियेसें—
(१) "आकाश है"।
(२) "आकाश भासता है"।
(३) "आकाश प्रिय है"। काहेतें आका
रहनैंफिरनैंकूं अवकाश देता है।
(४) "आकाश" ऐसा नाम है। औ
(५) "शब्दगुणयुक्त" रूप है॥
७ आकाशके नामरूपके त्याग कियेसें—
(१) "पीछे क्या है सो मैं जानता नहीं"।
ऐसा अज्ञान है। सो
(२) "अज्ञान भासता है"।
(३) "अज्ञान प्रिय है" काहेतें अज्ञानी
जीवनकूं प्रिय है। औ अज्ञान पूर्वप
का कारण होनैंसें जीवन का निर्वा
करता है।

(१) "अज्ञान" ऐसा नाम है। औ
(२) "आवरणविक्षेप शक्तिवाला अनादि अनिर्वचनीय भावरूप" यह रूप है॥

अज्ञान के नामरूप के त्याग कियेसैं—

(१) 'कछु बी नहीं है' ऐसैं प्रतीयमान सर्ववस्तुनका अभाव रहता है।
(२) 'अभाव भासता है'।
(३) 'अभावशून्यध्यानीनकूं प्रिय है'। याका।
(१) 'अभाव' ऐसा नाम है। औ
(२) 'सर्ववस्तुनका अभाव (निषेधमुख-प्रतीतिका विषय)' रूप है॥

९ अभावके नामरूपके त्यागकियेसैं—

(१) अभावत्वका स्वरूपभूतअधिष्ठान। सत्वस्तुही अवशेष रहता है। सो

(२) अभावके अभावपनैकूं प्रकाशताहै। यातैं चित् है। औ

(३) दुःखसैं भिन्न है। यातैं आनंदहै।

इसरीतिसैं

१ सर्वनामरूपविषै अनुगत अव्यभिचारी नामरूपका अधिष्ठानब्रह्म सामान्यचैतन्य[१२५] है सो सत्य है। औ

॥ १२५ ॥

१ सुषुप्ति मूर्छा समाधिका प्रकाशक साक्षी चैतन्य है॥

"अहं मैं जानता हूँ" इसरीतिसे वमाता । प्रमाण
प्रमेयरूप त्रिपुटीका प्रकाशक साक्षी सामान्य-
चैतन्य है।

जाग्रदादिअवस्थाकी संधिनका प्रकाशक सामान्य-
चैतन्य है ॥

दोनों ही वृत्तिनकी संधिनका प्रकाशक सामान्य-
चैतन्य है ॥

संपुट के अग्रभाग का प्रकाशक सामान्य-
चैतन्य है ॥

देशान्तरविषै वृत्ति गई होवै । तब तिसके मध्यभाग
का प्रकाशक सामान्यचैतन्य है ॥

सूर्यचन्द्राकार वृत्ति हुयीहोवै तिसके मध्य भाग का
प्रकाशक सामान्यचैतन्य है ॥

"अहं मैं नहीं जानता हूँ" ऐसें अज्ञानविशिष्ट
... का प्रकाशक सामान्यचैतन्य है ॥

२ घटके नामरूप पटविषै नहीं औ पट
१२१
नामरूप घटविषै नहीं। तातैं परस्परव्यभि
चारी ये नामरूप मिथ्या हैं ॥

यह सामान्यचैतन्यके जाननेंविषै दृष्टांत है।

* १९६ प्रश्नः—उक्त सामान्यचैतन्यरूप ब्रह्मकी सर्वतैं अधिक सूक्ष्मता औ व्यापकता कैसैं ?

उत्तरः—

१ जो जो कार्य है। सो स्थूल औ परिच्छि
होवैहै। औ

२ जो जो कारण है। सो सूक्ष्म औ व्याप
(अधिकदेशवर्ति) होवैहै। यह नियम है।
जातैं ब्रह्म सर्वका कारण है यातैं सर्वसैं अधि
सूक्ष्म औ व्यापक है। सो अब दिखावैहैं:—

॥ १२१ ॥ जो वस्तु कहींक होवै औ कहीं
होवै। सो वस्तु व्यभिचारी है ॥

(१) जातें समुद्रजलमें कठिण फेन औ लवण होवैहै। यातें जान्याजावैहैकि पृथिवी जलका कार्य है। तातें पृथिवी-तें जल सूक्ष्म औ व्यापक है॥ किंवा

(२) पृथिवीके पाषाणआदिकअवयव वस्त्र-विषै डालेहुये निकसते नहीं। औ

(४) पृथिवीमें जहाँ जहाँ खोद के देखो वहाँ वहाँ जल निकसता है। औ

(५) पुराणोंविषै पृथिवीतें दशगुणाधिक-देशवर्ति जल कहा है।

यातें बी पृथिवीतें जल सूक्ष्म औ व्यापक है॥

२ (१) तैसें अग्निआदिकके तापसें शरीरविषे प्रस्वेद (प्रसीना) छूटताहै औ वर्षा होवै है । यातें जान्याजावैहै कि जल अग्निका कार्य है । तातें जलतें अग्नि (तेज) सूक्ष्म है औ व्यापक है ॥

किंवा

(२) जल वस्त्रविषे ठहरता नहीं परन्तु घट विषे ठहरता है । औ

(३) सूर्यादिक का प्रकाश घटविषै बी ठहरता नहीं । औ

(४) पुराणोंविषै जलतें दशगुण अधिक-देशवर्ति तेज कहा है ।

यातें बी जलतें तेज सूक्ष्म है औ व्यापक है ॥

(१) तैसैं अग्निका जन्म औ नाश पवन के आधीन है । यातैं जान्याजावैहै कि तेज वायुका कार्य है । तातैं तेजतैं वायु सूक्ष्म है औ व्यापक है ॥ किंवा

(२) सूर्यादिकका प्रकाश घटादिपात्रविषै ठहरता नहीं परन्तु नेत्रसैं दीखता है औ वायु तौ नेत्रसैं भी दीखता नहीं । अरु

(३) पुराणोंविषै तेजतैं दशगुण अधिक वायु कहा है ।

यातैं तेजतैं वायु सूक्ष्म है औ व्यापक है ॥

४ (१) तैसैं वायुकी उत्पत्ति स्थिति अरु लय आकाश (पुलार) विषैंहीं होवैंहै यातैं जान्याजावैहै कि वायु आकाशका कार्य है । तातैं वायुतैं आकाश सूक्ष्म है औ व्यापक है ॥
किंवा
(२) वायु नैत्रसैं दीखता नहीं परंतु त्वचासैं स्पर्शगुणद्वारा ग्रहण होता है औ आकाश तौ त्वचामैं बी ग्रहण होता नहीं । औ
(३) पुराणोंविषै वायुतैं दशगुण अधिक देशवर्ति आकाश कहा है ॥
यातैं बी सो आकाश वायुतैं सूक्ष्म औ व्यापक है ॥

५ (१) तैसैं "आकाशसैं आगे क्याहोवैगा।" ऐसा विचार किये हुये " मैं नहीं जानताहूँ" ऐसैं बुद्धिके कुंठीभावका आश्रय (विषय) अज्ञान प्रतीत होता है यातैं जान्याजावैहै कि आकाश अज्ञानका कार्य है। तातैं सो अज्ञान आकाशतैं सूक्ष्म औ व्यापक है ॥

किंवा

(२) आकाश त्वचासैं ग्रहण होता नहीं। परंतु मनसैं ग्रहण होता है । औ मनसैं बी ग्रहण होता नहीं। औ

(३) आकाशतैं अनंतगुणअधिक अज्ञान शास्त्रविषै कहा है।

यातैं बी सो अज्ञान आकाशतैं सूक्ष्म औ व्यापक है ॥

६ (१) तैसैं 'मैं नहीं जानताहूँ' इस अनुभव का विषय जो अज्ञान । ताका प्रकाश जाननैं वाले चेतनसे होवै है । औ
(१) "अज्ञान है ।
(२) अज्ञान भासता है ।
(४) अज्ञान अज्ञपुरुषकूं प्रिय है ॥"

इसरीतिसैं अज्ञानविषै अनुस्यूत अस्तिभाति प्रियरूप ब्रह्मचेतन भासताहै । यातैं अज्ञान ब्रह्मचेतनके आश्रित है । तातैं ब्रह्मचेतन अज्ञानतैं सूक्ष्म औ व्यापक है ॥ किंवा

(२) अज्ञान मनकरि ग्रहण होता नहीं परन्तु 'मैं नहीं जानता हूँ' इस अनुभवरूप लिंगकरि ताका अनुमान होवै है । औ ब्रह्मचेतन स्वयं प्रकाशरूप होनेंतै किसी बी प्रमाण का विषय नहीं । औ

(३) शरीरविषै तिलकी न्यांई ब्रह्मके एकदेशविषै अज्ञान स्थित है । औ अवशेष रहा ब्रह्म शुद्धस्वप्रकाश है । ऐसैं श्रुतिविषैं कहा है ।
यातें बी सो ब्रह्मचेतन अज्ञानतें सूक्ष्म औ व्यापक हैं ॥
इसरीतिसैं सामान्यचैतन्यरूप ब्रह्मकीसर्वप्रपंच सैं अधिकसूक्ष्मता औ व्यापकता है ॥

* १६७ प्रश्नः—सामान्यचैतन्य के जाननेसे क्या निश्चय करना ?

उत्तरः—
१ (१) अस्तिभाति प्रियरूप सामान्यचैतन्य जो ब्रह्म सो मैं हूँ । औ
(२) मैं सो अस्तिभातिप्रियरूप सामान्यचैतन्यब्रह्म हूँ । औ

२ नामरूपजगत् मेरविषै कल्पित है। यह निश्चय करना ।:

॥ १०८ प्रश्नः—इसरीतिसैं निश्चय कियेसैं क्या होवै है ?

उत्तरः—इसरीतिसैं निश्चय कियेसैं सर्व अनर्थ की निवृत्ति औ परमानन्दकी प्राप्ति रूपमोक्ष होवैहै ॥

इति श्रीविचारचन्द्रोदय सामान्यविशेष· चैतन्यवर्णन नामिकादशमकलासमाप्त १०

॥ अथ एकादशकलाप्रारंभः ॥११॥

॥ 'तत्त्वं' पदार्थैक्यनिरूपण ॥

* इन्द्रविजय छन्द *

वाच्य रु लक्ष्य लखी तत् त्वंपद ।
लक्ष्य दुहूंकर एक दृढावै ॥
भिन्न जु देशहि काल सु वस्तु रु ।
धर्म समेत उपाधि उड़ावै ॥
जन्मतिथी लयकारक मायिक[१५०] ।
जाननहार सभी जग भावै ॥
ईश्वर वाच्य सु है ततपादहि ।
ब्रह्म सु लक्ष्य उपाधि अभावै ॥२२॥

॥ १५० ॥ मायाद्युपाधिवान् ॥

संसृति मानत आपहिमें पर–

१५८

तन्त्र अविद्यक अल्प जनावै ॥

त्वंपद वाच्य सु जीव विवेचित ।

लक्ष्य सुसाक्षि उपाधि ढहावै ॥

वाच्य दुअर्थ हि भेद वि है पुनि ।

लक्ष्य विभेद न रञ्चक गावै ॥

ब्रह्म अहं इम भांति जु जानत ।

सोई पीतांबर ब्रह्महि पावै ॥ २३ ॥

* १६६ प्रश्न:— "तत्" पद सो क्या है ?

उत्तर:—सामवेदकी छांदोग्यउपनिषद के षष्ठ-प्रपाठक (अध्याय) विषै श्वेतकेतु नाम पुत्रके प्रति तिसके पिता उद्दालकमुनिनें उपदेश किये १५६ 'तत्त्वमसि' महावाक्यका जो प्रथमपद । सो 'तत्' पद है ॥

॥ १२८ ॥ अविद्याउपाधि वान् ॥
॥ १२६ ॥

१ इम "तत्त्वमसि" की न्यांई
२ "प्रज्ञानं ब्रह्म" यह ऋग्वेद महावाक्य है।
३ "अहंब्रह्मास्मि" यह यजुर्वेदका महावाक्य है। औ
४ "अयमात्मा ब्रह्म" यह अथर्वणवेदका महा-
वाक्य है॥

१ जो तत्पदका वाच्य अर्थ ईश्वर है औ लक्ष्यअर्थ शुद्धब्रह्म है। सोई ऊपरलिखे तीनमहावाक्यगत "ब्रह्म" शब्द का वाच्यअर्थ अरु लक्ष्यअर्थ है। औ
२ जो त्वपद का वाच्यअर्थ जीव है अरु लक्ष्यअर्थ कूटस्थसाक्षी है। सोई इस तीन महावाक्यगत "प्रज्ञानं" "अहं" "अयं" पदसहित "आत्मा" इन तीन पदन का वाच्यअर्थ औ लक्ष्यअर्थ है। औ
३ सारे "तत्वमसि" वाक्यका जो जीवब्रह्म की एकतारूप अर्थ है। सोई उक्त तीनमहावाक्यन का अर्थ है॥

* २०० प्रश्न—"त्वं" पद सो क्या है ?

उत्तरः—इसीहीं "तत्त्वमसि" महावाक्यका दूसरापद । 'त्वं' पद है ॥

* २०१ प्रश्नः—वाच्यार्थ औ लक्ष्यार्थ सो क्या है ?

उत्तरः—शब्दका अर्थके साथि जो सम्बन्ध सो शब्दकी वृत्ति कहियेहै ॥ सो वृत्ति दोप्रकार की है । १ एक शक्तिवृत्ति है औ २ दूसरी लक्षणावृत्ति है ॥

१ शब्दविषै अर्थके ज्ञान करनैका सामर्थ्यरूप जो शब्दका अर्थके साथि साक्षात्संबंध। सो शब्दकी शक्तिवृत्ति है ॥ औ

२ शक्तिवृत्तिसैं जानेहुये अर्थद्वारा जो शब्दका अर्थके साथि परम्परारूप सम्बन्ध है। सोई शब्दकी लक्षणावृत्ति है ॥

तिनमैं

१ शक्तिवृत्तिकरि जो अर्थ जानियेहै सो शब्द का वाच्यअर्थ कहियेहै । ताहीकूं शक्य: औ मुख्यअर्थ बी कहैहैं ॥ औ

२ लक्षणावृत्तिकरि जो अर्थ जानिये है । सो शब्द का लक्ष्यअर्थ कहिये है ॥

* २०२ प्रश्नः–लक्षणावृत्ति कितने प्रकारकी है ?

उत्तरः—१ जहत् • अजहत् औ ३ भागत्यागके भेदतैं लक्षणावृत्ति तीनप्रकार की है ॥

*२० प्रश्नः–तीन प्रकार की लक्षणा के लक्षण औ उदाहरण कौनसे हैं ।

उत्तरः—

१ जहाँ संपूर्णवाच्यअर्थ का त्यागकरिके शक्य अर्थ के संबंधी का ग्रहण होवै । सो जहत्लक्षणा है ॥

जैसें कोईक पुरुषनें काहूँकूं पूछ्या कि:- 'गाईका वाडा कहाँ है?' तब तिसनें कह्या कि 'गङ्गाविषै गाईका वाडा है' इहाँ गङ्गापदका वाच्यअर्थ देवनदीका प्रवाह है। तिसविषै गाई का वाडा संभवै नहीं। यातें संपूर्णवाच्य-अर्थ जो देवनदीका प्रवाह। ताका त्याग करिके। तिसके संबंधी तीर का ग्रहण है।

२ जहां वाच्यअर्थका त्याग न करिके तिसके संबंधीका ग्रहण होवै। सो अजहत्‌लक्षणा है।

जैसें किसीनें कह्या। कि:-'शोण दौडता है'।।तहाँ शोणपदका वाच्यअर्थ जो लालरंग है। तिसविषै दौडना संभवै नहीं। यातें लालरंगवाला घोडा दौडता है। ऐसें वाच्यअर्थका त्याग न करिके तिसके संबंधी घोडे-रूप अधिक अर्थ का ग्रहण होवै है॥

३ जहाँ विरोधी कछुकवाच्यभाग का त्याग करिके तिसके संबंधी अविरोधी कछुकवाच्यभाग का ग्रहण होवै । सो भागत्यागलक्षणा है ॥

जैसैं पूर्व किसी देशकालविषै देख्या पुरुष अन्यदेशकालविषै देखनैंमें आवै। तब देखनै-हारा पुरुष कहताहै कि:—'तिस (दूर)देशऔर तिस (भूत) कालविषै जो पुरुष देख्याथा सो पुरुष इस (समीप) देश औ इस (वर्तमान) कालविषै आया है' ॥ इहाँ तिस देशकाल औ इस देशकालरूप वाच्यभागकी एकताका विरोध है । यातैं तिनकी दृष्टि त्यागकरिके। 'पुरुष यहहीं है' ऐसैं अविरोधीवाच्यभागका ग्रहण होवै है ॥

• २०४ प्रश्नः—तीनप्रकारकी लक्षणामैंसैं महावाक्यविषै कौनसी लक्षणा संभवैहै ?

उत्तरः—

१ जहाँ जहत्लक्षणा होवै। तहाँ संपूर्ण वाच्य· अर्थ का त्याग होवैहै॥ जो महावाक्यविषैं जहत्लक्षणा मानिये। तौ

(१) 'तत्' 'त्वं' पद के वाच्यअर्थविषैं प्रवेश भये ब्रह्मचैतन्य औ साक्षी· चैतन्यका त्याग होवैगा। औ

(२) तिनतैं भिन्न असत्‌जड़दुःखरूप प्रपं· चका ग्रहण करना होवैगा। अथवा समष्टिव्यष्टि प्रपंच मय उपाधि (विशे· षणरूप वाच्यभाग) का बी चेतनके साथि त्याग कियेसें अवशेप रहे शून्यका ग्रहण करना होवैगा॥

तातैं महाअनर्थकी प्राप्ति होवैगी। तिसतैं पुरुषार्थ सिद्ध होवै नहीं। यातैं महावाक्य· विषैं जहत्लक्षणा संभवै नहीं॥

जहाँ अजहत्लक्षणा होवै तहाँ वाच्यअर्थका कछु बी त्याग होवै नहीं। औ अधिकअर्थका ग्रहण होवैहै ॥ जो महावाक्यविषै अजहत्लक्षणा मानिये तो 'तत्' 'त्वं' पद का वाच्यअर्थ ज्यूं का त्यूं बन्यारहैगा औ ताके साथि शून्यरूप अधिकअर्थ का ग्रहण करना होवैगा। यातैं एकता का विरोध दूरी होवै नहीं तातैं लक्षणा करनैं का कछु प्रयोजन सिद्ध होवै नहीं । यातैं महावाक्यविषै अजहत्लक्षणा संभवै नहीं ॥

जहाँ भागत्यागलक्षणा होवै तहाँ विरोधी भाग का त्याग करी के अविरोधी भाग का ग्रहण होवै है ॥ जो महावाक्यविषै भागत्यागलक्षणा मानिये तौ ।

(१) 'तत्' 'त्वं' पद के वाच्य अर्थ में सैं धर्मसहित मायाअविद्यारूप विरोधी भाग का त्याग होवैहै । औ

(२) अविरोधीसंगशुद्धचेतनभागका ग्रहण होवै है ।

तातैं

(१) तिनकी एकता बी बनैहै । औ
(२) तिसतैं परमपुरुषार्थ की प्राप्ति होवैहै
यातैं महावाक्यविषै भाग त्यागलक्षणा संभवै है ॥

* २०५ प्रश्नः—"तत्" पदका वाच्यअर्थ औ लक्ष्य अर्थ क्या है ?

उत्तरः—
१ अव्याकृत जो माया सो ईश्वरका देश है ।
२ उत्पत्ति स्थिति औ प्रलय । ये तीन ईश्वरके काल हैं ॥

३ सत्त्वगुण रजोगुण औ तमोगुण। ये तीन
१६० ईश्वरके वस्तुहैं। कहिये सृष्टिकी सामाग्री हैं॥
४ विराट् हिरण्यगर्भ औ अव्याकृत। ये तीन
ईश्वर के शरीर हैं॥
५ वैश्वानर सूत्रात्मा औ अंतर्यामी। ये तीन
ईशपनैंके अभिमानी हैं॥

॥ १६० ॥ यद्यपि माया औ तीनगुण एकहीं पदार्थ हैं। यातैं ईश्वरके देश वस्तु औ शरीरकी एकता होवै है। तथापि जैसैं कुलालकूं घट करनैं के लिये

१ मृत्तिका रूप पृथ्वी देश है। औ
२ मृत्तिका का पिंड वस्तु है। औ
३ अस्थिआदिकरूप पृथिवी का भाग शरीर है। तिनकी एकताका असंभव नहीं। तैसैं ईश्वर के बी देशआदिक की एकता का असंभव नहीं है॥

६ 'मैं एक हूँ । सो बहुरूप होऊं' ऐसी जो ईच्छा तिसकूं आदि लेके 'जीवरूपकरि प्रवेश भया' इहाँपर्यंत जो सृष्टि । सो ईश्वर का कार्य है ॥

७ (१) सर्वशक्तिपना (२) सर्वज्ञपना (३) व्यापकपना (४) एकपना (५) स्वाधीनपना (६) समर्थपना (७) परोक्षपना (८) मायाउपाधिवान्‌पना । ये आठ ईश्वरके धर्म हैं ।

१ (१) इन सर्वसहित माया । औ (२) तिसविषै प्रतिबिंबरूप चिदाभास औ (३) तिनका अधिष्ठान ब्रह्म । ये सर्व मिलिके ईश्वर कहियेहैं सो 'तत्' पदका वाच्यअर्थ है ॥

२ इन सर्वसहित माया औ चिदाभासभागका त्यागकरिके अवशेष रहा जो विराट्‌हिरण्यगर्भ औ अव्याकृतका अधिष्ठान ईश्वरसाक्षी शुद्ध ब्रह्म सो 'तत्' पद का लक्ष्य अर्थ है ॥

२०६ प्रश्नः—ब्रह्मका औ मायामैं प्रतिबिंबरूप ईश्वर का परस्परअध्यास(अन्योन्याध्यास) कैसैं है ?

उत्तरः—अविचारदृष्टिसैं

ब्रह्मकी सत्यताका ईश्वरविषै संसर्ग (तादात्म्यसंबंध) अध्यस्त है । यातैं ईश्वर सत्य प्रतीत होवैहै । औ

ईश्वर अरु ताकी कारणताका स्वरूप ब्रह्ममैं अध्यस्त है । यातैं ब्रह्म जगत् का कारण प्रतीत होवैहै ॥ याहीका अनुवाद तटस्थलक्षणके बोधक श्रुति पुराण औ आचार्यांके वचन करै हैं ॥

इसरीतिसैं ब्रह्म औ ईश्वर का परस्पर अध्यास है ॥

● २०७ प्रश्नः—उक्तअध्यासकी निवृत्ति किमसैं होवै?

उत्तरः—उक्त अध्यास की निवृत्ति विवेक-ज्ञानसैं होवैहै ॥

● २०८ प्रश्नः—"त्वं" पदका वाच्यअर्थ औ लक्ष्य क्या है ?

उत्तरः—

१ चक्षु कंठ औ हृदय। ये तीन जीवके देश
२ जाग्रत् स्वप्नऔ सुषुप्ति ये तीन जीवके काल
३ स्थूल सूक्ष्म औ कारण। ये तीन जीव वस्तु (भोगसामग्री) हैं ॥ औ
४ यहहीं शरीर है ॥
५ विश्व तैजस औ प्राज्ञ। ये तीन जीवपर्वं अभिमानी हैं ॥
६ जाग्रत्सैं आदिलेके मोक्षपर्यन्त जो भोग संसार। सो जीवका कार्य है ॥

(१)अल्पशक्तिपना (२) अल्पज्ञपना(३) परिच्छिन्नपना(४) नानापना (५) पराधीनपना (६) असमर्थपना (७)अपरोक्षपना औ (८) अविद्याउपाधिवान्‌पना । ये आठ जीवके धर्म हैं ॥

(१) इन सर्वसहित जो अविद्या । औ (२) तिसविषै प्रतिबिंबरूप चिदाभास। औ (३) तिनका अधिष्ठान कूटस्थ । ये सर्व मिलिके जीव कहियेहैं ॥ सो जीव "त्वं" पदका वाच्यअर्थ है ॥

इन सर्वसहित चिदाभासभागका त्याग करिके अवशेष रह्या जो स्थूलसूक्ष्मकारण शरीरका अधिष्ठान जीवसाक्षी कूटस्थ । आत्मा सो 'त्वं' पदका लक्ष्यअर्थ है ॥

● २०९ प्रश्न—कूटस्थ का औ बुद्धि में प्रतिबिंबरूप जीव का परस्पर अध्यास कैसे है?

उत्तर:—अविचारदृष्टिसैं

१ कूटस्थकी सत्यताका संसर्ग (तादात्म्यसंबंध) जीवमैं अध्यस्त है। यातैं जीव मिथ्या प्रतीत होवै नहीं। किंतु सत्य प्रतीत होवै है। औ

२ जीव अरु ताके कर्त्तापनै आदिक धर्म का स्वरूप। कूटस्थमैं अध्यास्त है। यातैं कूटस्थ अकर्त्ता अभोक्ता असंसारी नित्यमुक्त आनंद ब्रह्मरूप प्रतीत होवै नहीं। किंतु तातैं विपरीत प्रतीत होवैहै॥

इसरीतसैं कूटस्थ का औ जीव का परस्पर अध्यास है॥

❀ २१० प्रश्न:—उक्तअध्यास की निवृत्ति किससैं होवै?

उत्तर:—उक्त अध्यासकी निवृत्ति विवेक ज्ञानसैं होवै है॥

॥ २११ प्रश्नः—"तत्" पद औ "त्वं" पदके अर्थ की महावाक्यविषै कथन करी एकता कैसैं संभवै ?

उत्तरः—

१ यद्यपि 'तत्' पद औ 'त्वं' पदके वाच्य-अर्थ जो उपाधिसहित चैतन्य (ईश्वर औ जीव) हैं। तिनकी एकताका विरोध है।

२ तथापि 'तत्' पदका लक्ष्यार्थ ब्रह्म औ 'त्वं' पद का लक्ष्यार्थ आत्मा। तिनकी एकताका कछु बी विरोध नहीं ॥

ऐसैं 'तत्' पद औ 'त्वं' पद के अर्थ की महावाक्यविषै कथन करी एकता संभवै है॥

॥ २१२ प्रश्नः—"मैं ब्रह्म हूं" ऐसा ब्रह्मआत्मा की एकताका ज्ञान किसकूं होवै है ?

उत्तरः—यह ज्ञान चिदाभासकूं होवै है ॥

* २१३ प्रश्नः—ब्रह्मतैं भिन्न जो चिदाभास । सो आपकूं ब्रह्मरूप करीके कैसे जानै है?

१ जीवभावके अधिष्ठान कूटस्थका ब्रह्मकेसाथि मुख्यअभेद है । औ

२ बुद्धिसहित चिदाभासका ब्रह्मके साथि अपने स्वरूपकूं बाधकरीकेअभेद होवैहै ॥

यातैं

१ चिदाभास अपनैं स्वरूप का बाध करी कै आपकूं अहंशब्दके लक्ष्यअर्थ कूटस्थरू जानैं हैं । औ

२ अपनै निजरूप कूटस्थका "मैं कूटस्थ हूँ" ऐसैं अभिमान कारके "मैं ब्रह्म हूँ" । ऐसैं जानैहै ॥

इसरीतिसैं चिदाभास आपकूं ब्रह्मरूप करिके जानैंहै ॥

'२१४ प्रश्नः—इन 'तत्' औ 'त्वं' पदके लक्ष्यार्थकी एकताविषै दृष्टांत का है ?

उत्तरः—दृष्टांतः—

१ जैसें

(१) घटमठउपाधिसहित घटाकाश औ मठाकाशकी एकताका विरोध है ॥

(२) तथापि घटमठरूप उपाधिकी दृष्टिकूं छोड़िके केवलआकाशकी एकताका विरोध नहीं ॥

२ जैसें

(१) कांचकी हंडी औ मृत्तिकाकी हंडीविषै दीपक जलताहोवै । तिनकी उपाधि दोहंडीकी एकताका विरोध है ॥

(२) तथापि अग्निपनैकरि दीपककी एकताका विरोध नहीं ॥

३ जैसैं

(१) राजा औ रयारी (भेड़) होवैं। तिनकी उपाधि सेना औ अजावर्ग की एकता का विरोध है।

(२) तथापि मनुष्यपनैं की एकता का विरोध नहीं ॥

४ जैसैं

(१) गङ्गाजल औ गङ्गाजल का कलश होवै । तिनकी उपाधि नदी औ कलश की एकताका विरोध है।

(२) तथापि केवलगङ्गाजलकी एकता का विरोध नहीं ॥

१ जैसें

(१) सागर औ जलका बिंदु होवै। तिनकी उपाधि सागर औ बिंदु की एकता का विरोध है ॥

(२) केवल जलकी एकताका विरोध नहीं॥

२ जैसें—

(१) कोई एक पुरुषकूँ पिता की अपेक्षासैं पुत्र कहते हैं औ पितामह की अपेक्षासैं पौत्र कहते हैं। तिनकी उपाधि पिता औ पितामह की एकता का विरोध है॥

(२) केवलपुरुष की एकता का विरोध नहीं॥

७ जैसें कोई काशीका राजा था। सो हस्ती
पर बैठिके सवारीमें निकस्याथा। ताहि
कोई यात्रावासी पुरुषनैं अच्छीतरहें
देख्याथा॥ पीछे सो स्वदेशकूं गया औ
काशीके राजाकूं कोई अन्यराजानैं राज
छीनके निकासदिया। तबभी लंगोटी पहरि
अङ्गमें विभूति लगायके हाथमें तुम्बी औ
दंड लेके नग्नपादसें तीर्थयात्राकूं गया।
फिरते फिरते तिस यात्रावासी पुरुषके
ग्राममें गया। तब तिसकूं देखिके
यात्रावासीपुरुष अन्ययात्रावासीपुरुषकूं
कहता भया कि:—अपननैं काशीविषै
राजा देख्याथा। 'सो यह है'॥

अन्ययात्रावासीपुरुष कहतेभये किः—
(१) सो देश अन्य। यह देश अन्य॥
(२) ताका काल (अवस्था) अन्य। याका काल अन्य॥
(३) तिसकी वस्तु (सामग्री) अन्य। याकी वस्तु अन्य॥
(४) तिसका अभिमान अन्य। इसका अभिमान अन्य॥
(५) तिसका कार्य अन्य। इसका कार्य अन्य॥
(६) तिसके धर्म अन्य। इसके धर्म अन्य॥
तौ तिस काशी के राजाकी औ इस भिक्षु-कोकी एकता कैसें बनै?
तब सो प्रथमयात्रावासीपुरुष कहताभया किः—'तिसके औ इसके (१) देश

(२) काल (३) वस्तु (४) अभिप्राय
(५) कार्य औ (६) धर्मका त्याग करीके
दोनूं विषै अनुगत (अनुस्यूत) जो पुरुषमात्र
सो एकहीं है' ॥
सिद्धांतः—तैसैं जीवईश्वरके बी देशकालआदि
ऋका त्याग करी कै । दोनूं विषै अनुगत जो
चेतनमात्र ब्रह्म औ आत्मा सो एकहीं है। यातें
'ब्रह्म सो मैं हूं' औ 'मैं सो ब्रह्म हूं' ऐसा
दृढ़ निश्चय करन ॥ सोई तत्त्वज्ञान है ॥
याहीतें सर्वदुःखकी निवृत्ति औ परमानंद
की प्राप्तिरूप मोक्ष होवै है ॥
इति श्रीविचारचन्द्रोदये 'तत्त्वमसि'
महावाक्यगत 'तत्त्व' पदार्थैक्यनिरूपणनाम
का एकादशकला समाप्ता ॥ ११ ॥

॥ अथ द्वादशकलाप्रारंभः ॥ १२ ॥

ज्ञानी के कर्मनिवृत्तिका प्रकारवर्णन।

[१६१]

॥ तोटकछन्द ॥

[१६२] जिन आतमरूप पयो जु भले।
तिय त्रैविधकर्म मिटें सकले ॥
[१६३] तम आवृत्ति आश्रित संचित ले।
निज बोध सु पावक सर्व जले ॥ २४ ॥
जड़ चेतन गांठ विभेद बले।
दृढ़राग द्वेष कषाय गले ॥
[१६४] जलमें जिम लिप्त न कञ्जदले।
परसे न अगामि जु कर्म मले ॥ २५ ॥

॥ १६१ ॥ ठुमरी में गाया जावै हैं ॥
॥ १६२ ॥ देख्यो ॥
॥ १६३ ॥ अज्ञानकी आवरणशक्तिके आश्रितसंचित
[illegible] ॥ १६४ ॥ कमलका पत्र ॥

इस जन्म अरंभक कर्म फले।
सुखदुःखहि भोगत होत प्रले।
इस भांति जु होवत जन्म विले।
१६५
पिख रूप पीतांबर स्वं विमले ॥२६॥

* २१५ प्रश्नः—कर्म सो क्या है?

उत्तरः—शरीर वाणी औ मनकी जो क्रिया सो कर्म है ॥

* २१६ प्रश्नः—कर्म कितने प्रकार का है?

उत्तरः—१ संचित २ प्रारब्ध औ ३ क्रियमाण (आगामि) भेदतें कर्म तीन प्रकार का है ॥

* २१७ प्रश्नः—संचितकर्म सो क्या है?

उत्तरः—१ अनेकअतीतजन्मोंविषै संचय किया जो कर्म। सो संचितकर्म है ॥

२१८ प्रश्नः—प्रारब्धकर्म सो क्या है ?

उत्तरः–२ अनेकसंचितकर्मनके मध्यसैं परिपक्व भया औ ईश्वरकी इच्छासैं इस वर्त्तमानदेहका आरम्भक जो कोईएक संचितकर्म। सो प्रारब्धकर्म है ।

२१९ प्रश्नः—क्रियमाणकर्म सो क्या है ?

उत्तरः–३ ज्ञानतैं पूर्व वा पीछे इस वर्त्तमानदेहविषै मरणपर्यंत करियेहै जो कर्म। सो क्रियमाणकर्म है ॥

२२० प्रश्नः—ज्ञानी के कर्मकी निवृत्ति किसरीतिसैं होवै है ?

उत्तरः–१ ज्ञानसैं अज्ञानके आवरणअंशकी निवृत्ति होवैहै ॥ आवरणकी निवृत्तिके भये आवरणकूं आश्रयकरिके स्थित संचित कहिये पूर्वके अनेकजन्मविषै किये कर्मकी निवृत्ति (नाश) होवैहै । औ

२ ज्ञानके आगेपीछे इसजन्मविषै किये कि
माणकर्मका 'मैं अकर्त्ता अभोक्ता असंग सू
इस निश्चयके बलसैं अपने आश्रय अनज्ञ ता
त्म्यके नाश करिके औ रागद्वेषके अभावतें
विषै स्थित कमलपत्र की न्यांई ज्ञानीकूं
होवै नहीं। किंतु ज्ञानी के क्रियमाण जो
जन्मविषै किये शुभ औ अशुभकर्म का
सुहृद कहिये सकामीभक्त औद्वेषी कहियेनिंद
जन ग्रहण कर हैं।

३ औ अज्ञानकी विक्षेपशक्तिके आश्रित ज्ञा
के प्रारब्ध कहिये पूर्वके किसी एकजन्मविषै
इसजन्मके आरंभ कर्मकीभोगसैं निवृत्ति हो

तातैं ज्ञानी सर्वकर्मसैं मुक्त है॥ याहीतैं
रचितजन्मादिक संसारसैं बी मुक्त है॥

इसरीतिसैं ज्ञानीके कर्मकी निवृत्ति होवै

इति श्रीविचारचन्द्रोदये ज्ञानीकर्मनिवृत्ति
प्रकारवर्णन नामिका द्वादशकला समाप्ता

अथ त्रयोदशकलाप्रारंभ ॥ १३॥

❀ सप्तज्ञानभूमिका वर्णन ❀

❀ तोटकछन्द ❀

निज बोधकि भूमि सु सप्त अहैं ।
इस भाँति वसिष्ठ मुनीश कहैं ॥ [१६६]
शुभसाधन सम्पति आदि लहैं ।
श्रवणादिविचार द्वितीय वहैं ॥२७॥
निदिध्यासन तीसरभूमि गहैं ।
अपरोक्ष निजातम चौथि चहैं ॥
ममता ममता बिन पंचम हैं ।
छटवी सब वस्तु अकार दहैं ॥ २८ ॥

॥ १६६ ॥ योगवसिष्ठविषै

सतमी तुरिया जु वरिष्ठित है।
सबवृत्ति विलीन चिदात्म रहै ॥
१६७
इव गाढसुपुप्ति न जागत है।
परमानंद मत्त पीतांबर है ॥२६॥

* २२१ प्रश्नः—सर्वज्ञानिनकानिश्चयतौ एकहीं है परन्तु स्थितिका भेद काहेतैं है ?

उत्तरः—सर्वज्ञानिनकी स्थितिका भेद ज्ञानभूमिकाके भेदतैं है ॥

* २२२—प्रश्नः—सो ज्ञानभूमिका कितनी है ?

उत्तरः—१ शुभेच्छा २ सुविचारणा ३ तनुमानसा ४ सत्त्वापत्ति ५ असंसक्ति ६ पदार्थाभाविनी ७ तुरीयगा। ये सात ज्ञानभूमिका हैं॥

॥ १६७ ॥ गाढसुषुप्ति (वत्) ॥

'२२३ प्रश्न:—शुभेच्छा सो क्या है ?

उत्तर:–१ पूर्वजन्मविषै अथवा उसजन्मविषै किये निष्कामकर्म औ उपासनासैं शुद्ध औ एकाग्रचित्तवाले पुरुषकूं विवेकवैराग्यषट्संपत्ति औ मोक्षइच्छा । ये च्यारीसाधन होय कै जो आत्माके जाननैं की तीव्रइच्छा होवै है । सो शुभेच्छा नाम ज्ञानकी प्रथमभूमिका है ।

* २२४ प्रश्न:—सुविचारणा सो क्या है ?

उत्तर:–२ आत्माके जाननैंकी तीव्रइच्छासैं ब्रह्मनिष्ठगुरुके विधिपूर्वक शरण जायके। गुरुके मुखसैं जीवब्रह्मकी एकता के बोधक वेदांत-वाक्यकूं श्रवण करीके । तिसैं श्रवण किये अर्थ-कूं आपके मनविषैं घटावनैंवास्ते अनेकयुक्ति-योंसैं मनन (विचार) करना सो सुविचा-रणा नाम ज्ञानकी दूसरी भूमिका है ॥

❀ २२५ प्रश्नः—तनुमानसा सो क्या है ?

उत्तरः–३ स्वरूपके साक्षात्कार कहिये अपरोक्षअनुभवअर्थ श्रवणमनद्वारा निर्णय किये ब्रह्मात्माकी एकतारूप अर्थके निरंतर चिंतनरूप निदिध्यासनसैं जो स्थूलमनकी कहिये बहिर्मुखमनकी सूक्ष्मता नाम अंतर्मुखता होवैहै । सो तनुमानसा नाम ज्ञानकी तीसरी भूमिका हैं ॥

❀ २२६ प्रश्नः—सत्त्वापत्ति सो क्या है ?

उत्तरः–४ श्रवणमनननिदिध्यासनसैं संशय औ विपर्ययसैं रहित स्वरूपसाक्षात्काररूप निर्विकल्पस्थितिकूं भयेतैं । तत्त्वज्ञानयुक्त मनरूप सत्त्व (शुद्धअंतःकरण) की जो प्राप्ति होवैहै । सो सत्त्वापत्ति नाम ज्ञानकी चतुर्थभूमिका है ॥

* २२७ प्रश्नः—असंसक्ति सो क्या है ?

उत्तरः—५ निर्विकल्पसमाधिके अभ्यास कं परिपक्वतासैं देहविषै सर्वथा अहंताममता गलित होयके । देहादिकविषै जो सर्वथा आसक्तिका नाम प्रीतिका अभाव होवैहै । सो असंसक्ति नाम ज्ञानकी पंचभूमिका है ॥

* २२८ प्रश्नः—पदार्थाभाविनी सो क्या है ?

उत्तरः—६ अतिशयनिर्विकल्पसमाधि के अभ्याससैं देहादिकसर्वपदार्थनका अधिष्ठान-ब्रह्मरूपसैं प्रतीति होनैकरि जो अभाव कहिये अप्रतीति होवैहै । पदार्थाभाविनी नाम ज्ञान-की षष्ठमभूमिका है ॥

* २२९ प्रश्नः—तुरीयगा सो क्या है ?

उत्तरः—७ ज्ञाताज्ञान औ ज्ञेयरूप त्रिपुटीकी चतुर्थपंचमभूमिकाकी न्याई भावरूपकरि औ षष्ठभूमिकाकी न्याई अभावरूपकरि प्रतीतिकी

जहाँ होवै नहीं। ऐसी जो स्वपरमैं उत्थानरहित तुरीयपदविषै मनकी स्थिति। सो तुरीयगा, नाम ज्ञानकी सप्तमभूमिका है।

॥ २३० प्रश्नः-ये सप्तभूमिका किसके साधन हैं?

उत्तरः—

१-३ प्रथम द्वितीय औ तृतीयभूमिका। तत्त्वज्ञानके साधन हैं। औ

१६८

४ चतुर्थभूमिका तौ तत्त्वज्ञानरूप होनैतै जीवन्मुक्ति औ विदेहमुक्ति के साधन है। औ

५-७ पंचम षष्ठ औ सप्तमभूमिका जीवन्मुक्ति के विलक्षणआनंदके साधन हैं॥

इति श्रीविचारचन्द्रोदये सप्तज्ञानभूमिकावर्णननामिका त्रयोदशकला समाप्ता ॥ १३ ॥

॥ १६८ ॥

१ कृतोपासन कहिये ज्ञानतैं पूर्व करी है पूर्ण उपासना जिसनें सो औ

२ अकृतोपासन कहिये ज्ञानतैं पूर्ण नहीं करीहै उपासना जिसनें सो

इस भेदतैं चतुर्थभूमिकारूप ज्ञानका अधिकारी दोप्रकारका है ॥ तिनमैं

१ कृतोपासन जो है सो तौ सम्यक्वैराग्यादिसाधन- करि संपन्न होवैहै औ ज्ञानके अनंतर अल्पाभ्यास- सैं झटिति पंचमआदिक भूमिकाविषै आरूढ़ होवैहै ॥

२ औ अकृतोपासन जो है तामैं सर्वसाधन स्पष्ट प्रतीत होते नहीं किंतु एकदो साधन प्रकट होवै हैं औ अन्यसाधन गोप्य रहते हैं । यातैं सो बुद्धिमान् होवै तौ चतुर्थभूमिकारूप तत्त्वज्ञानकूं पावताहै । परन्तु बहुकालके अभ्याससैं कदाचित् कोईक पंचमआदिकभूमिकाविषै आरूढ होवै है । झटिति नहीं ॥

॥ अथ चतुर्दशकलाप्रारंभः ॥१४॥

॥ जीवन्मुक्तिविदेह मुक्तिवर्णन ॥

—:(०):—

॥ तोटक छन्द ॥

जब जानत है निजरूपहिकूं ।
तब जीवनन्मुक्ति समीपहिकूं ॥
भ्रमवंद निवृत्ति सदेहहिकूं ।
सुखसंपत्ति होवत गेहहिकूं ॥३०॥
विद्वान तजे इस देहहिकूं ।
तब पावत मुक्ति विदेहहिकूं
तम लेश भजे सद नाशहिकूं ।
तज दैत प्रपंच अभासहिकूं ।

॥ १६६ ॥ तब शरीरसहित पुरुषकूं भ्रमरूप बंध की निवृत्तिस्वरूप जीवन्मुक्ति समीपहीकूं कहिये तत्काल होवै है । यह अर्थ है ॥

१३०
सरिता इव सागर देशहिकूं ।
चिनमात्र मिलाय विशेपहि कूं ॥ १३१
चिद होय भजे अवशेषहिकूं ।
नहिं जन्म पीतांबर शेषहिकूं ॥

२३१ प्रश्न – जीवनमुक्ति सो क्या है ?

उत्तर—देहादिकप्रपञ्चकी प्रतीत के होते जो ब्रह्मस्वरूपमैं स्थिति । सो जीवनमुक्ति है ॥

२३२ प्रश्नः—जीवनमुक्तिविषै प्रपञ्चकी प्रतीति काहेतैं होवै है ?

उत्तरः—आवरण औ विक्षेप । ये दो

॥ १३० ॥ सागरदेशविषैकूं सरिता इव (नदीकी न्याई)
॥ १३१ ॥ स्थूलसूक्ष्मप्रपञ्चसहित चिदाभासरूप विक्षेपकूं ॥

अविद्याकी शक्तिय हैं तिनमें
१ आवरणशक्तिका ज्ञानसैं नाश होवैहै । तातें ज्ञानीकूं अन्यजन्म होवै नहीं ।
२ परंतु प्रारब्धके बलसैं दग्धधान्यकणकी न्याई विक्षेपशक्ति (अविद्यालेश) रहैहै । तातें जीवन्मुक्तिविषै प्रपञ्चकी प्रतीति होवैहै

* २३३ प्रश्नः—जीवन्मुक्तिविषै प्रपञ्चकी प्रतीति कैसे होवैहै ?

उत्तरः—
१ जैसें रज्जुके ज्ञानसैं सर्पभ्रांतिकी निवृत्ति भये पीछे कंपादिक भासतेहैं । औ
२ जैसें दर्पणके ज्ञानीकूं प्रतिबिंब भासताहै। औ
३ जैसें मरुस्थलके ज्ञानीकूं मृगजल भासताहै तैसें तत्त्वज्ञानीकूं जीवन्मुक्तिदशाविषै बाधितभये प्रपञ्चकी प्रतीति होवै है ॥

'२३४ प्रश्न---बाधित भये प्रपंचकी प्रतीतिविषै अन्यदृष्टांत क्या है?

उत्तरः--दृष्टांतः--जैसें महाभारत के युद्ध में द्रोणाचार्य के मरण भये पीछे अश्वत्थामा-आदिक के साथि युद्ध भया है ॥ तब सत्य-सङ्कल्पश्रीकृष्णपरमात्मानै यह सङ्कल्प किया कि:-"इस युद्धकी समाप्तिपर्यंत यह रथ औ घोड़े ज्यूंकेत्यूंहीं बनैं रहैं"। यह चिंतन-करिके युद्धभूमिमें आये ॥ तहां अश्वत्थामा आदिकोंनै ब्रह्मास्त्र (अग्निअस्त्र) आदिकका प्रयोग डारचा। तिसकरि तिसीं क्षणविषै अर्जुनके रथ औ घोड़े भस्मीभूत भये। तौ बी श्रीकृष्णपरमात्मारूप सारथि के सङ्कल्पके बलसें ज्यूं केत्यूं बनेरहै। जब युद्ध समाप्त भया तब भस्मी का ढेर होगया ॥

सिद्धांतः—तैसें

१ स्थलदेहरूप रथ है।

२ ताके पुण्यपापरूप दोचक्र हैं। औ

३ तीनगुणरूप ध्वज है। औ

४ पाँचप्राणरूप बंधन है। औ

५ दशइन्द्रियरूप घोड़े हैं। औ

६ शुभअशुभशब्दादिपाँचविषयरूप मार्ग हैं

७ मनरूप लगाम है। औ

८ बुद्धिरूप सारथि (श्रीकृष्ण) औ

९ प्रारब्धकर्मरूप ताका संकल्प है। औ

१० अहंकाररूप बैठने का स्थान है। औ

११ आत्मारूप रथी (अर्जुन) है।

१२ ताके वैराग्यादिसाधनरूप शस्त्र हैं।

सो रथपर आरूढ़ होयके सत्सङ्गरूप रणभूमि में गया। ताकूं गुरुरूप अश्वथामाआदिक महावाक्यका उपदेशरूप ब्रह्मास्त्रआदिक मार्ग

तिसकरि ज्ञानरूप अग्नि उदय होय के तिसी क्षणविषै देहादिप्रपंचरूप रथादिकसर्वका बाध भया। तौ बी श्रीकृष्णरूप सारथिस्थानी बुद्धिके प्रारब्धकर्मरूप संकल्पके बलसैं देहादिकका नाश [१७२] होता नहीं। किंतु पीछे बी देहादिककी प्रतीति [१७३] होवैहै ॥ याहीकूं बाधितानुवृत्ति कहै हैं ॥

॥ १७२ ॥ जिसका नाश होवै सो नाशका प्रतियोगी है ॥

१ ना प्रतियोगी की नाशविषै प्रतीति होवै है ॥ औ
२ बाधविषै प्रतियोगी की प्रतीति होवै नहीं। किंतु
तीनकालअभाव प्रतीत होवै है।
यह नाश औ बाधका भेद है ॥

॥ १७३ ॥ जैसे कुलालका चक्र। दंडसैं फेरनै का यत्न छोडेहुये पीछे बी वेगके बलसैं फिरताहै। तैसे बाध हुये पीछे बी प्रारब्धकर्मसैं देहादिप्रपंच की जो प्रतीत होवै। सो बाधितानुवृत्तिहै ॥

इसरीतिसैं यह बाधित भये प्रपंच की
प्रतीतिविषै दृष्टांत है ।।

* २३५ प्रश्न—विदेहमुक्ति सो क्या क्या है ?

उत्तरः—
१प्रपंचकीप्रतीतिरहित ब्रह्मस्वरूपसैं स्थिति।
२प्रारब्धकर्म के भोगसैं नाश भये पीछे स्थूल-
सूक्ष्म शरीरके आकारसैं परिणामकूं प्राप्त
चेतनविषै विलय ।
सो विदेहमुक्ति है ।।

* २३६ प्रश्नः—प्रारब्ध के अन्त भये कार्यसहित
अज्ञानलेशका विलय किस साधनसैं
होवै है ?

उत्तरः—प्रारब्धके अंत भये अधिक वा न्यून
मूर्छाकालमैं यद्यपि ब्रह्माकारवृत्तिका असंभव
औ विद्वानकूं विधि बी नहीं है। तथापि सुषुप्ति

न्यांई। ता मूर्छाकालमैं बी ब्रह्मविद्या का संस्कार है तामैं आरूढ़ चेतनसैं कार्य सहित अज्ञानलेशका विलय (नाश) होवै है ॥ औ काष्ठआरूढ़ अग्निसैं तृणादिकका दाहहोय के आपके बी दाहकी न्यांई। ता संस्कार-आरुढ़ चेतनसैं प्रपंचका विनाश होयके आप (ज्ञान के संस्कार)का बी विनाश होवैहै। पीछे असङ्ग शुद्ध सच्चिदानन्द स्वप्रकाश अपने आप ब्रह्म अवशेष रहता है ॥

इति श्रीविचारचंद्रोदये जीवनमुक्तिविदेह-मुक्तिवर्णन चतुर्दशकला समाप्ता ॥१४॥

———

॥ अथ पंचदशकलाप्रारंभः ॥ १५ ॥

॥ वेदांतप्रमेय[१०४] (पदार्थ) वर्णन ॥

-:(:o:):-

ललितछन्द ॥ (गोपिकागीतवत्)

जन तु जानिले[१०५] ज्ञेय अर्थकूं ।
सकल छेद सं-दे अनर्थकूं ॥
मुगति कौन है हेतु ताहिको ।
जनक बीचको[१०६] कौन वाहिको ॥ २३ ॥
त्रिपय बोधको कौन जानिले ।
मतक ईशको तत्व मानिले ॥
अहमत्र[१०७] थकूं खूब सोजिले ।
"तत" पदार्थकूं शुद्ध खोजिले ॥ २४ ॥

॥ १७४ ॥
वेदांतशास्त्ररूप प्रमाणतैं जन्य जो यथार्थज्ञान । सो
प्रमा है ॥

ता प्रमातैं जाननैं योग्य जो पदार्थ । सो प्रमेय है ॥
तिनका इहां कथन है ॥ यातैं इस (पंचदशम) कला
के विचारतैं प्रमेयगतसंशयकी निवृत्ति होवै है ॥

प्रमेयगतसंशय का कथन हमारे किये बालबोधिनी-
टीका सहित ।बालबोधनामकग्रन्थ के नवमउपदेशविषै
किया है । तहां देखलेना ॥

॥ १७५ ॥ वेदांत के प्रमेयरूप पदार्थनकूं जानिलेनेका॥
॥ १७६ ॥ वाहिकी (मोक्षके हेतु ज्ञानकी) वांचका
साधक (अवांतरसाधन) कौन है ?
॥ १७७ ॥ अहं (त्वं) पदके अर्थकूं ॥
वि० १४

१७८
परमआतमा एक मानिले।
तहँ सदादि ऐश्वर्य आनिले॥
१७९
सत चिदात्म सो सर्वदा अहै।
इस पीतांबरो ज्ञानकूं गहैं ॥ ३५ ॥

• २३७ प्रश्न:—मोक्षका स्वरूप क्या है?

उत्तर:—

१ कार्यसहित अज्ञानरूप अनर्थ की कहिये बंधन की निवृत्ति। औ

२ परमानंदरूप ब्रह्म की प्राप्ति।
यह मोक्ष का स्वरूप है॥

॥ १७८ ॥ ब्रह्म ॥
॥ १७९ ॥ सच्चिदानंदस्वरूप सो (ब्रह्मआत्मा की एकता) सर्वदा (तीनोंकाल में) है॥

• २३८ प्रश्नः —तिस मोक्षका साक्षात् साधन क्या है?

उत्तरः—ब्रह्म औ आत्मा की एकताका अपरोक्षज्ञान। मोक्ष का साक्षत्साधन है।

• २३९ प्रश्नः—मोक्ष का अवांतर (ज्ञान द्वारा) साधन क्या है?

उत्तरः—निष्कामकर्म औ उपासनादिक अनेक मोक्षकूं अवांतरसाधन हैं॥

* २४० प्रश्नः —तिस ज्ञान का विषय क्या है?

उत्तरः—आत्मा औ ब्रह्म की एकता ज्ञान का विषय हैं॥

• २४१ प्रश्नः—आत्मा का स्वरूप क्या है?

उत्तरः—१ देह-इंद्रिय—प्राण—मन—बुद्धि-अज्ञान औ शून्यसें भिन्न। २ अकर्ता। ३ अभोक्ता। ४ असंग। ५ व्यापक। औ ६ चेतन। आत्मा का स्वरूप है॥

* २४२ प्रश्नः—ब्रह्म का स्वरूप क्या है ?

उत्तरः-१ निष्प्रपच । २ असंग । ३ परिपूर्ण । और ४ चेतन । ब्रह्मकास्वरूप है॥

* २४३ प्रश्नः—ब्रह्मआत्माकी एकता कैसी है ?

उत्तरः—१ सच्चिदानंद । ऐश्वर्यस्वरूप । २ सदाविद्यमान । ब्रह्म आत्माकी एकता है॥

* २४४ प्रश्नः—ज्ञान का स्वरूप क्या है ?

उत्तरः—जीवब्रह्मके अभेदका निश्चय । ज्ञानका स्वरूप है ॥

* २४५ प्रश्नः—ज्ञान का साक्षात्अंतरंग (समीपका) साधन क्या है ?

उत्तरः-ब्रह्मनिष्ठगुरुके मुखसें महावाक्य के अर्थका श्रवण । ज्ञानका साक्षात्अंतरंग साधन है ॥

२६ प्रश्नः–ज्ञानके परंपराअंतरंगसाधन कौनसें हैं ?

उत्तरः–१ विवेक । २ वैराग्य । ३ षट्-संपत्ति (शम । दम । उपरति । तितिक्षा । श्रद्धा समाधान) । ४ मुमुक्षुता । ५ 'तत्' पद औ 'त्वं' पदके अर्थका शोधन । ६ श्रवण । ७ मनन औ ८ निदिध्यासन । ये आठ ज्ञान-परंपरासें अंतरंगसाधन हैं ॥

२७ प्रश्नः—ज्ञानके बहिरंग दूरके) साधन कौनहैं ?

उत्तरः–निष्कामकर्म औ निष्कामउपासना आदिक । ज्ञानके बहिरंगसाधन हैं ॥

२८ प्रश्नः—ज्ञानके सर्व मिलिके कितने साधन हैं ?

उत्तरः—ज्ञान के सर्वमिलिकै एकादश (११ वा कछु अधिक) साधन हैं ॥

इति श्रीविचारचंद्रोदये वेदांतप्रमेयनिरूपण-नामिका पंचदशकला समाप्ता ॥ १५ ॥

मंगलाचरणम्

—:(०):—

चैतन्यशाश्वतं शांतं व्योमातीतं निरंजनम्
नादबिंदुकलातीतं तस्मै श्रीगुरवे नमः ।
सर्वश्रुतिशिरोरत्नविराजितपदांबुजम् ।
वेदांतांबुजमार्तंडं तस्मै श्रीगुरवे नमः ।
अज्ञानतिमिरांधस्य ज्ञानांजनशलाकया ।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः
गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुरेव परंब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥
अखंडमंडलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ।
अखंडानंदबोधाय शिष्यसंतापहारिणे ।
सच्चिदानन्दरूपाय रामाय गुरवे नमः ।

॥ इति मङ्गलाचरणम् ॥

॥ अथ षोडशकलाप्रारंभः ॥ १६ ॥

॥ अथ श्रीश्रुतिषड्लिंगसंग्रहः ॥

—※(:०:)※—

* उपोद्घातकीर्त्तनम् *

स्मृत्वाऽद्वैतपरात्मानं शङ्कर परमं गुरुम् ।
तात्पर्यसंविदे वक्ष्ये श्रुतिषड्लिंगसंग्रहं ॥१॥

टीका:—अद्वैतपरमात्मारूप जो परमगुरु शङ्कर हैं। तिनकूं स्मरण करिके। श्रुतिनके तात्पर्यके ज्ञानअर्थ। मैं श्रुतिषड्लिंगसंग्रह नामक लघुग्रन्थकूं कहताहूँ ॥१॥

विषयासक्ति मानस्थ-मेयस्थ-संशय-भ्रमाः ।
चत्वारःप्रतिबंधाः स्युर्ज्ञानादार्ढ्यस्यहेतवः ॥

टीका;—१ विषयासक्ति २ प्रमाणगतसंशय ३ प्रमेयगतसंशय औ ४ भ्रम कहिये विपर्यय। ये च्यारी ज्ञानकी अदृढताके हेतु प्रतिबंध होवै हैं ॥ २ ॥

आद्यस्य विनिवृत्तिः स्याद्वैराग्यादिचतुष्टयात् । श्रवणेन द्वितीयस्य मननाच्चा-
यस्य च ॥ ३ ॥

टीकाः—प्रथमकी निवृत्ति । वैराग्य है आदि जिसके ऐसे साधनोंके चतुष्टयतैं होवै है औ द्वितीयकी निवृत्ति श्रवणसैं होवैहै और तृतीयकी निवृत्ति मननतैं होवै है ॥

ध्यानेन तु चतुर्थस्य विनिवृत्तिर्भवेद्ध्रुवम् ।
पूर्वपूर्वानिवृत्त्या नैवोत्तरोत्तरनाशनम् ॥ ४ ॥

टीकाः—औ चतुर्थप्रतिबन्धकी निवृत्ति निदिध्यासनसैं निश्चित होवैहै ॥ पूर्वपूर्व की अनिवृत्तिकरिके उत्तर उत्तर का नाश कहिये निवृत्ति नहीं होवै है ॥ ४ ॥

विषयासक्तिनाशेन विना नो श्रवणं भवेत्

श्रवणामृते न मननं न ध्यानं तैर्विना भवेत्

टीकाः—विषयासक्तिके नाशसैं विना श्रवण होवै नहीं औ तिन दोनूं विना मनन नहीं होवै है औ इन तीनूंसैं विना निदिध्यासन होवै नहीं ॥ ५ ॥

स्ववर्णाश्रमधर्मेण तपसा हरितोषणात् ।
साधनं प्रभवेत्पुंसांवैराग्यादिचतुष्टयम् ॥६॥

टीकाः—स्व कहिये मिथ्यात्मा-शरीर । ताके वर्ण अरु आश्रमसंबंधी धर्म करि औ कृच्छ्रचांद्रायणादितपकरि औ हरिजन किंवा सर्वभूतन पर दयादिरूप हरिके सतोषकारक कर्मनें पुरुषनकूं वैराग्यादिकका चतुष्टयरूप साधन प्रकर्षकरि होवै है ॥ ६ ॥

तीव्रमुमुक्षुः सन्मुक्ते ...

ज्ञानो त्पत्त्यैमहा वाक्यश्रुतिं कुर्यात्
तन्मुखात् ॥

टीकाः—तिन च्यारी साधनोंकी सिद्धि
हुये ब्रह्मवेत्ताओंविषैं उत्तम कहिये निर्दोष
के प्रति उपसत्तियुक्त कहिये शरणागत हु
ज्ञानकी उत्पत्तिअर्थ तिस गुरुके मुखतैं वेद
प्रसिद्ध अर्थसहित महावाक्यके श्रवणकूं क
तत्सिद्धौ द्वापरभ्रांतिप्रहाणाय मुमुक्षुभिः
श्रवणं मननं ध्यानमनुष्ठेयं फलावधि ॥

टीकाः—ता ज्ञानकी सिद्धि कहिये उत्पत्ति
हुये । मुमुक्षुनकरि द्वापर जो द्विविध
औ भ्रांति जो विपरीतभावना । तिनके
अर्थ प्रमाणसंशयादिविविध प्रतिबंधके नाश
फल पर्यंत जैसें होवै तैसें श्रवण मनन
निदिध्यासन करनेकूं योग्य है ॥ ८ ॥

नस्य प्रसिद्ध्यर्थं वभवतोऽस्त्येतथासति ।
मूलं तु श्रवणं कर्त्तव्य तद्विधीधनैः।६।
टीका:—श्रवणकी पूर्वकरि सिद्धिसैंहीं
के दो जे मनन अरु ध्यान वे होवैं हैं ।
हुये तिन दोनूंका प्रसिद्धमूल जो श्रवण ।
तो बुद्धिरप धनवानोंकरि पृथमकर्तव्य
॥ ९ ॥
वेदांतानामशेपाणामादिमध्यावसानतः ।
ब्रह्मात्मन्यवतात्पर्यमितिधीःश्रवणं भवेत् ।
टीका: —तात्पर्यके निर्णायक षड्लिंगरूप
युक्तिनकरि "सर्व वेदांत जे उपनिषद् । तिन
के आदि मध्य औ अंततें ब्रह्मरूप आत्मा
विषैहीं तात्पर्य है" ऐसी जो बुद्धि कहिये
निश्चय । सो श्रवण होवैहै । यह श्रवण का
शास्त्रउक्त लक्षण है ॥ १० ॥

१ २ ३
उपक्रमोपसंहारावभ्यासोऽपूर्वता फलम्।
४ ५ ६
अर्थवादोपपत्ती च लिंगं तात्पर्यनिर्णये।
टीकाः—तिन षट्लिंगनकूं अब न
करि निर्देश करैं हैं-१ उपक्रम अरुउपसं
इन दोनूंकी एकरूपता। २ अभ्यास।
अपूर्वता। ४ फल। ५ अर्थवाद। ६ औंर उप
यह प्रत्येक तात्पर्यके निर्णयविषै लिंग हैं॥१

॥ १ ॥ उपक्रम औं उपसंहार॥
वस्तुनः प्रतिपाद्यस्यादावंते प्रतिपादनम्
उपक्रमोपसंहारौ तदैक्यं कथितं बुधैः॥१
टीकाः—अब षट्श्लोकनकरि प्रत्येक लिं
के लक्षणकूं कहैंहैं:—प्रकरण करिके प्रतिपा
करनेकूं योग्य जो ब्रह्मरूप अद्वितीयवस्तु
ताका प्रकरणके आदिविषै तथा अंतविषै

प्रतिपादन । सो उपक्रम अरु उपसंहार है ॥ तिनमैं आदिविषै जो प्रतिपादन । सो उपक्रम है । औ अंतविषै जो प्रतिपादन । सो उपसंहार है ॥ तिन दोनूं की एकलिंगरूपता पंडितोंने कही है ॥ १२ ॥

॥ २ ॥ अभ्यास ॥

वस्तुनः प्रतिपाद्यस्य पठनं च पुनः पुनः । अभ्यासः प्रोच्यते प्राज्ञैः स एवावृत्तिशब्दभाक् ॥ १३ ॥

टीकाः—प्रकरणकरि प्रतिपादन करनेयोग्य अद्वितीयवस्तु का तिसप्रकरण के मध्यविषै जो पुनः पुनः पठन । सो पंडितनकरि अभ्यास कहिये है । सोई अभ्यास आवृत्तिशब्द का वाच्य है ॥ १३ ॥

॥ ३ ॥ अपूर्वता ॥

श्रुतिभिन्नप्रमाणेनाविषयत्वमपूर्वता ।
कुत्रचित्स्वप्रकाशत्वमप्यमेयतयोच्यते ॥

टीकाः—प्रकारणकरि प्रतिपाद्य अद्वितीय वस्तुकी जो श्रुतितैं भिन्न कहिये प्रत्यक्षादि लौकिकप्रमाणकरि अविषयता है। सो अपूर्वता है। औ कहीक ता अद्वितीयवस्तुकी स्वप्रकाशताबी अमेयता कहिये सर्वप्रमाणनकी अविषयतारूप हेतुकरि अपूर्वता कहिये है ॥१४॥

॥ ४ ॥ फल

श्रूयमाणंतु तज्ज्ञानात्तत्प्राप्त्यादिप्रयोजनम्
फलं प्रकीर्तितं प्राज्ञैर्मुख्यं मोक्षैकलक्षणम् ॥

टीकाः- औ प्रकरणकरि प्रतिपाद्यअद्वितीयवस्तुकेज्ञानतैंप्रकरणविषै श्रूयमाणकहियेसुन्या जो तिसकीप्राप्ति आदिक प्रयोजन । सोपंडितोंने मोक्षरूपएकलक्षणवाला मुख्य फल कहाहै १५

॥ ५ ॥ अर्थवाद ॥

वस्तुनः प्रतिपाद्यस्य प्रशंसनमथापि वा ।
निंदातद्विपरीतस्यह्यर्थवादः स्मृतोबुधैः ।१६।

टीकाः—प्रकरणकरि प्रतिपाद्य अद्वितीय-वस्तुका जो प्रशंसन कहिये स्तुति अथवा तिससैं विपरीति कहिये द्वैत की निंदा वी पंडितोंनैं अर्थवाद कहा है ॥१६॥

॥६॥ उपपत्ति ॥

वस्तुनःप्रतिपाद्यस्त युक्तिभिः प्रतिपादनम् ।
उपपत्तिः प्रविज्ञेया दृष्टांतद्याद्यअनेकधा॥१७॥

टीकाः—प्रकरणकरि प्रतिपाद्य अद्वितीय-वस्तु का युक्तिसैं जो प्रतिपादन। सो दृष्टांत-आदिक अनेक प्रकारकी युक्तिरूप उपपत्ति जाननेकूं योग्य है ॥१७॥

एतल्लिंगविचारेण भवेत्तात्पर्यनिर्णयः ।
तात्पर्यं यस्य शब्दस्य यत्र सः स्यात्तदर्थकः

टीकाः—उक्तप्रकारके पट्‌लिंगनकं उपनिषद
विषै विचारसैं उपनिषदनका अद्वैत कहि
प्रत्यक्‌अभिन्नब्रह्मविषै जो तात्पर्य है । ताका
निश्चय होवैहै ।। औ जिस शब्दका जिस अर्थ
विषै तात्पर्य होवै । सो ता शब्दका अर्थ होवै
है । अन्य कहिये केवल वाच्य अर्थ नहीं ।।१८

मंदानां श्रुतिसंसिद्ध्या मानस शयनुत्तये ।
करोम्यवर्निानिच्छिम निधिवल्लिंग कीर्त्तनम् ॥

टीकाः—मंद कहिये अपंडितजनोंकं "वेदांतन
के अद्वितीयब्रह्मविषैं तात्पर्य कं निश्चयरूप"
श्रवणकी सिद्धिकरि 'वेदांत अद्वैतब्रह्म के
प्रतिपादक हैं वा अन्यअर्थके प्रतिपादक हैं?"
इस ज्ञानरप प्रमाणसंशय के नाश अर्थ ।

भूमिविषैगाडेहुये निधिके सिद्धिकरि कीर्त्तनकी न्याई। मैं लिंगनके कीर्त्तनकूं करूंहूँ ॥१६॥

तत्त्वालोके विशेषोऽपिविचारस्तददर्शनात्।
मयात्त्वेपांसमासेनक्रियतेदिक्प्रदर्शनम् ॥२०॥

टीकाः—यद्यपि आनंदगिरिस्वामीकृत तत्त्वालोकनामकग्रन्थविषैं इन लिंगन का विशेष विचार कियाहैं। यातैं इस लघुग्रंथका प्रयोजन नहीं है। तथापि ता तत्त्वालोक के अदर्शनतैं। मुजकरि तो संक्षेपसैं इन लिंगनकी दिशामात्रका प्रदर्शन करिये है ॥ २० ॥

सर्वेपूपनिपद्ग्रन्थेयूपासनमनेकधा।
ज्ञानशेषंतुतज्ज्ञेयं चित्तशुद्धिकरंयतः ॥२१॥

टीकाः—सर्व उपनिषद्रूप ग्रंथनविषैं अनेक प्रकारका उपासन कहिये ध्यान कहा हैं। सो तो ज्ञानका शेष कहिये उपकारक जाननेकूं

योग्य है । जातैं चित्तकी शुद्धिका करने हारा है । यातैं उपनिषदविषै जो उपासना भाग है । ताके पृथक् लिंगनके विचारका उपयोग नहीं है । यातैं सो इहां नहीं किया ॥ २१ ॥

इति श्रीश्रुतिपड्लिंगसंग्रहे उपोद्घातकीर्तनं नाम प्रथमं प्रकरणं समाप्तम् ॥ १ ॥

अथेशावास्योपनिषल्लिंगकीर्त्तनम्।

ईशावास्यमुपक्रम्योसंहारः स पर्यगात् ।
अनेजदेकमित्याद्योऽभ्यासस्तस्याद्वयस्य च ॥

१ उपक्रमउसंहारः— (१) "ईशावास्यमिदँ सर्वं" । कहिये "यह सर्व जगत् । ईश्वरकरि आवास्य कहिये आच्छादन करनेकूं योग्य है" । ऐसैं प्रथममन्त्रसैं उपक्रम करिके । (२) "स पर्यगात्शुक्रमकायं" कहिये

'सो च्यारीऔरतैं जाताभया औार शुद्ध है'।
इस मन्त्रनकरि उपसंहार है ॥
२ अभ्यासः—औं "अनेजदेकं मनसो
जवीयो"। कहिये "अचंचल एक मनसैं
वेगवान् है"। इसआदि अर्थरूप तिस अद्वैत
का अभ्यास है ॥ इहां आदि शब्द करि
'तदन्तरस्य सर्वस्य' कहिये 'सो इस सर्व के
अन्तर है'। इस मन्त्रका ग्रहण है ॥१॥
नैनद्देवा अपूर्वत्व फलं मोहाद्यभावकम्।
कुर्वन्नित्यनुवाद्यैं वासूर्यभेदविनिंदनम् ॥
३ अपूर्वताःनैनद्देवा आप्नुवन् पूर्वमर्शत्।
कहियं इसकूं देव जे इन्द्रिय वे न प्राप्त होते
भये। सो पूर्व गया है। इस ४ मन्त्रकरि
उपनिषद्नतैं अन्य प्रत्यक्षादि प्रमाणन की
अविषयतारूप अपूर्वता कही है ॥

४ फलः—औ 'तत्रको मोहः कः शोक एकत्वमनुपश्यतः कहिये "तहाँ एकता देखनेहारेकूं कौन मोह है कौन शोकहै"। इस ७ मन्त्रसैं मोहआदिकका अभावरूप फल कहा है ॥

५ अर्थवादः—कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः'। कहिये "इहां कर्मनकूं करताहुया शतवर्ष जीवनेकूं इच्छे"। इस २ मंत्रसैं जीवनेकी इच्छावाले भेददर्शीकूं कर्म करनेका अनुवाद करिकेहीं। पीछे "असूर्या नाम ते लोका.'। कहिये "वे असुरनके लोक प्रसिद्ध है'। इन ३ मन्त्रसैं भेदज्ञानकी निंदा अरु अर्थात् अभेदज्ञान की स्तुतिरूप अर्थवाद कहा है ॥ २ ॥

तस्मिन्नपो मातरिश्वेत्युपपत्तिः प्रदर्शिताएतै
रीशोपनिषदोऽद्वैते तात्पर्यमिष्यते ॥ ३ ॥
६ उत्पत्तिः—श्रो 'तस्मिन्नपो मातरिश्वा
दधाति" । कहिये "ताके होते वायु जलकूं
धारता है" । ऐसें इस ४ मन्त्रसें उपपत्ति
कहिये अभेदबोधनकी युक्ति दिखाई ॥ इन-
लिंगोंकरि ईशोपनिषद्का अद्वैतब्रह्मविषै
तात्पर्य अङ्गीकार करिये है ॥ ३ ॥

इति श्री० ईशोपनिषल्लिंगकथन द्वितीयं
प्रकरणं० ॥ २॥

अथ केनोपनिषल्लिंगकीर्तनम्॥३॥

श्रोत्रस्येत्याद्युपक्रम्यप्रतिबोधादिवाक्यतः
१ उपक्रमउपसंहारः—(१) "श्रोत्रस्य

श्रोत्रं' । कहिये 'श्रोत्रका श्रोत्र है' इत्यादि १ खंडके २ वाक्यसैं उपक्रमकरिके ॥ (२) 'प्रतिबोधविदितं' । कहिये 'बोधबोधकं प्रति विदित हैं' इत्यादि १।?२ वाक्यतैं उपसंहार ही कहा है । इन दोनूंकी एकता पंडितनकरि जानिये हैं ॥ १ ॥

तदेव ब्रह्म त्वं विद्धीत्याद्यभ्यास उदीरितः।
न तत्रेत्याद्यपूर्वत्वं प्रेत्यास्मादितिवैं फलम्॥

२ अभ्यासः—'तदेव ब्रह्म त्वं विद्धि'। कहिये 'ताहीकूं तू ब्रह्म जान' इत्यादि १।४।= अभ्यास कहा है ॥

३ अपूर्वताः—औ 'न तत्र चक्षुर्गच्छति'। कहिये 'तिसविषै चक्षु गमन करता नहीं'। इत्यादि १।३ उपनिषदनतैं भिन्न प्रमाणकी अविषयतारूप अपूर्वता है ॥

४ फल:—'भूतेषु भूतेषु विचित्य धीराः।
कहिये 'धीर। सर्वभूतनविषे जानिके'। ऐसें
आत्मज्ञानकूं अनुवादकरिके 'प्रेत्यास्माल्लोका
दमृता भवंति'। कहिये 'इस लोकतैं देह
अरु प्राणके वियोगकूं पायकें अमृतरूप होवैहै'।
ऐसें ३-५ प्रसिद्धफल कहा है ॥ २ ।.
ब्रह्महेत्याद्यर्थवादोऽविज्ञातमिति चांतिमम्।
एतैः केनोपनिषदोऽद्वैते तात्पर्यमिष्यते ॥३॥
५ अर्थवाद:—श्रौ "ब्रह्म ह देवेभ्यो
विजिग्ये" कहिये 'ब्रह्म देवनकं अर्थ विजय
देताभया'। इत्यादि इन ३।१ वाक्यनसें
आख्यायिकारूप अर्थवाद कहा है ॥
६ उपपत्ति:—श्रौ "अविज्ञातं तस्य मतं"
कहिये 'जिसकूं अज्ञात है तिसकूं ज्ञात
है'। इत्यादिरूप इस २।३ स्वयंप्रकाश अद्वैत-
ब्रह्मके साधक वाक्यकरि अंतिम कहिये 'उपपत्ति

कहिये तर्कमययुक्तिरूप पष्ठलिंग कहाहै" ॥ इनलिंगोंकरि केनउपनिपद्का अद्वैतब्रह्ममें तात्पर्य अङ्गीकार करिये है ॥ ३ ॥

इति श्री० केनोपनिषल्लिंगकीर्त्तन नाम तृ० प्र० समाप्तम् ॥३॥

अथ कठोपनिषल्लिंगकीर्तनम् ॥४॥

येयं प्रेते मनुष्ये त्वित्यादिः सामान्यतस्तथा अन्यत्र धर्मनस्त्वित्यादिवाक्याच्च विशेषतः

१ उपक्रमः उपसंहारः—(१) "येयं प्रेते विचिकित्सा मनुष्ये"। कहिये 'मरे मनुष्यविषे जो यह संशय है'इत्यादि१।१।२० सामान्यतैं उपक्रम् है। तथा 'अन्यत्र धर्मादन्यत्रा धर्मादन्यत्रास्मात्कृताकृतात्' कहिये'धर्मतैं भिन्न अरु अधर्मतैं भिन्न औ इस कार्य कारणतैं भिन्नहै' इत्यादि १।२।१४ वाक्यतैं विशेषकरि उपक्रम है ॥१॥

उपक्रमोऽगुष्ठमात्र इत्यारभ्योपसहृतिः ।
न जायतेऽशरीरंच नित्यानां नित्य एव सः॥२॥
चेतनोऽचेतनानां च बहूनामेक एव च ।
अस्तीत्येवोपलब्धव्य इत्याद्यभ्यास ईरितः॥३॥

(२) औं 'अंगुष्ठमात्रः पुरुषोंऽतरात्मा' । कहिये "अङ्गुष्ठमात्र पुरुष अंतरात्मा है' । ऐसैं आरंभ करिके इस २ । ६ । १७ वाक्यसैं उपसंहार कहा है ॥

२ अभ्यासः—औं "न जायते म्रियते वा' । कहिये 'जन्मता नहीं वा मरता नहीं' । १ । २ । १८ औं 'अशरीरूँ शरीरेष्वनवस्थेष्व-वस्थितम्' । कहिये अस्थिर शरीरनविषै स्थित अशरीरकूं' २ । २ । २१ औं 'नित्यो नित्यानां' । कहियं 'सो नित्योंका नित्य है' । २ । ५ । १३ ॥ २ ॥

औ 'चेतनश्चेतनानामेको बहूनां विदधाति कामान्' । कहिये "चेतनों का चेतन है। बहुतन के मध्य एक हुया कामोंकूं करता है' । २ । ५ । २३ औ 'अस्तीत्येवोपलब्धव्यः' । 'है' ऐसैंही जाननेकूं योग्य है। २ । १३ इत्यादि बहुकरिके अभ्यास कहा है ॥ ३ ॥

नैव वाचा न मनसेत्याद्यपूर्वत्वमिंगितम् मृत्युप्रोक्तां त्वेवमाद्यात्फलं श्रुत्या समीरितम् ॥

३ अपूर्वता:—"नैव वाचा न मनसा प्राप्तुं शक्यो न चक्षुषा'कहिये 'नहीं वाणी करि न मनकरि न चक्षुकरि जाननेकूं शक्य है' । १ । ६ । १६ इत्यादि अपूर्वता अभिप्रेत है ॥

४ फल:—औ 'मृत्युप्रोक्तां नचिकेतोऽथ लब्ध्वाविद्यामेतां योगविधिं च कृत्स्नम् । ब्रह्म प्राप्तो विरजोऽभूऽद्विमृत्युरन्योऽप्येवं यो विदध्यात्ममेव' । कहिये 'अनन्तर नचिकेता। यमकरि कही इस विद्याकूं औ सम्पूर्णयोग विधिकूं पायके ब्रह्मकूं प्राप्त निर्मल मृत्यु-रहित होताभया । अन्य बी जो अध्यात्मकूं ही जानैंगा सो ऐसे होवैगा' । इत्यादि "१ अध्यायकी ६ षष्ठवल्लीके १८ वाक्यतें । श्रुतिमें फल सम्यक् कहा है ॥४॥

सं लब्ध्वा मोदनीयं वै फलं प्रोक्तं स्फुट तथा
ब्रह्म चत्रं च युगलमोदन त्वेचमादितः ॥५॥

तैसें 'स मोदते मोदनीयं हि लब्ध्वा' । कहिये 'सो मोदरूपसें अनुभव करने योग्यकूं पायके मोदकूं पावता है' १ । २ । १३ इस वाक्यकरि ऐसें यह बी स्पष्ट फल कहा है ॥

५ अर्थवादः—औं "यस्य ब्रह्म च क्षत्रं च उभे भवत ओदनः" । कहिये "जाका ब्राह्मण औ क्षत्रिय दोनूं ओदन होवैहै" ।१।२।२४ इत्यादि वाक्यतैं ॥ ५ ॥

अर्थवादश्च युक्तिवैं त्वग्निरित्यादिवाक्यतः
एभिः कठोपनिषदोऽद्वैते तात्पर्यमप्यतं ।

अद्वैतब्रह्मकी स्तुतिरूप अर्थवाद कहा है। तैसैं 'मृत्योः स मृत्युमाप्नोति य इह नानेव पश्यति' कहिये 'जो इहाँ नानाकी न्याईं देखता है सो मृत्युकूं पावता है' इस १।४।१० आदिक १।४।११ वाक्य-नसैं भेदज्ञानकी निंदारूप जो अर्थवाद कहाहै। सो बी "च" शब्दकरि सूचन किया ॥ औ

६ उपपत्तिः—" अग्निर्यथैको भुवनं प्र-
ष्टो रूपंरूपं प्रतिरूपो बभूव" । कहिये
जैसें एक अग्नि भुवन के प्रति प्रविष्ट हुवा
—रूपके तांई प्रतिरूप होताभया" ।२।५।
-१? इत्यादि तीनमन्त्ररूप वाक्यनकरि औ
कारसें 'येन रूपं रसं गंधं' कहिये 'जिस-
रि रूपकूं रसकूं गंधकूं जानताहै। इस २।
। ३ आदिक अनेकवाक्यनसें वो युक्तिशब्द
वाच्य उपपत्ति कहीहै ॥ इन लिंगोंकरि
वल्लीउपनिषद्का अद्वैतब्रह्मविषै तात्पर्य
कार करिये है ॥ ६ ॥

इति श्री० कठोपनिषल्लिंगकी च०

प्र० समाप्तम् ॥४॥

अथ प्रश्नोपनिषल्लिंगकीर्तनम् ।५।

ब्रह्मपरा हि वै ब्रह्मनिष्ठा इत्युपक्रम्य तत्
तान्होवाचैतावदेवोपसंहारस्तदेकता

१ उपक्रमउपसंहारः—(१) 'ब्रह्मपरा
ब्रह्मनिष्ठा पर ब्रह्मान्वेषमाणाः' । कहिये
'ब्रह्मविपॆतत्पर ब्रह्मनिष्ठपर ब्रह्मकूं खोजतेहुयें
१ । ऐसैं तिस परब्रह्मकूंही उपक्रमकरिके
(२) 'तान्होवाचैतावदेवाहमेतत्पर,
वेदनातः परमस्ति' कहिये 'तिनकूं कहता
भयाः—इतनाही मैं इस परब्रह्मकूं जानताहूं
इसतैं पर नहीं है । ६ प्रश्नके ७ वाक्य
ऐसैं उपसंहार है । इन दोनूं की एकलि-
रूपता है ॥ १ ॥

एतद्वै सत्यकामेति यदभ्यास उच्यते।

इहैवांतःशरीरे तु सोम्य ! चेत्याद्यपूर्वता ॥
३ अभ्यासः—ओं ' एतद्वै सत्यकाम् !
परं चापरं च यदोंकारः ' कहिये ' हे सत्य
काम ! यह निश्चयकरि परब्रह्म औ अपरब्रह्म
है। जो ॐकार है' । ५ । २ ऐसैं औ
' यत्तच्छांतमजरममृतमभयं परं च '
कहिये 'जो सो शांत अजर-अमृत-अभय अरु
परब्रह्म है ।५।७ ऐसैं अभ्यास कहियेहै ॥ औ
३ अपूर्वताःइहैवांतःशरीरे सौम्य ! स
पुरुषो यस्मिन्नेताः षोडशकलाःप्रभवंति
कहिये 'हे सौम्य ! इसीहीं शरीरके भीतर सो
पुरुष है। जिसविषै ये षोडशकला ऊपजतीयां
हैं' । इस ६ । २ वाक्यसैं शरीरविषै स्थित-
काहीं उपदेशविना अनुपलंभ कहिये अप्रतीति
रूप अपूर्वता सूचन करी ॥ २ ॥

तं वेद्यं पुरुषं वेदेत्यादितः फलमुच्यते।
तदच्छायमदेहंचेत्यादिभिः कथितास्तुतिः।

४ फलः—औ "तं वेद्यं पुरुषं वेद यथा।
मा वो मृत्युपरि व्यथा इति"। कहिये
'तिस वेद्यपुरुषकूं जैसा है तैसा जानना।
तुमकूं मृत्युकी पीडा मति होहूँ" ऐसें ६।
६ इत्यादि वाक्यतें फल कहिये है॥ औ

५ अर्थवादः—"तदच्छायमशरीरमलो हितं
शुभ्रमक्षरं वेदयते यस्तु सोम्य। स सर्वज्ञः
सर्वोभवति"। कहिये "हे सोम्य! जो
कोईक तिस अज्ञानरहित अशरीर—अलोहित-
शुद्ध—अक्षरकूं जानता है। सो सर्वज्ञ अरु
सर्व होवैहै"। इत्यादि ४। १० वाक्यनकरि
अर्थवादरूप स्तुति कही है॥ ३॥

नदीसमुद्रदृष्टांतादुपपत्तिः प्रदर्शिता ।
एतैः प्रश्नोपनिषदोऽद्वैते तात्पर्यमिष्यते ॥४॥

६ उपपत्तिः—औ 'स यथेमा नद्यः' कहिये 'सो जैसें ये नदीयां' इस । ६ । ५ आदिक ६ । ६ । वाक्यगत दृष्टांततें परमात्मातें षोडशकलाओंकी उत्पत्ति अरु विनाशके उपन्यासतें उपपत्ति दिखाई ॥ इन लिंगोंकरि प्रश्नोपनिषद्का अद्वैतब्रह्मविषै तात्पर्य अङ्गीकार करियेहै ॥ ४ ॥

इति श्री० प्रश्नोपनिषल्लिंग० पंचमं प्र० समाप्तम् ॥५॥

अथ मुंडकोपनिषल्लिंगकीर्त्तनम ॥६॥

अथ परेत्युपक्रम्य यो ह वै परमं च तत् ।
ब्रह्म वेदेत्यादिवाक्यादुपसंहार ईरितः ॥१॥

१ उपक्रमउपसंहारः—(१) "अथ परा यया तदक्षरमधिगम्यते यत्तदद्रश्य"। कहिये "अब पराविद्या कहिये हैः-जिसकरि सो अक्षर जानिये है जो सो अदृश्य है।" इत्यादि १।१।५-६ वाक्यकरि उपक्रमकरिके (२) "स यो ह वै तत्परमं ब्रह्म वेद"। कहिये "सो जोई तिस परम ब्रह्मकूं जानता है" इत्यादि ३। २। ९ वाक्यतैं उपसंहार कहा है ॥ ९ ॥

आविःसन्निहितं चेति तदेतदक्षरं त्विति।
अभ्यासोऽत्रतेनैवचक्षु पेत्याद्यपूर्वता ॥ २ ॥

२ अभ्यासः—औ "आविः सन्निहित" कहिये "प्रत्यक्ष है अरु समीपमें है" २।२। १ औ 'तदेतदक्षरं ब्रह्म' कहिये " सो यह

अक्षररूप ब्रह्म हूँ" । २ । २ । २ ऐसैं तो
अभ्यास कहा है ॥ ओं

३ अपूर्वताः—"न चक्षुषा गृह्यते नापि
वाचा ।" कहिये "न चक्षुकरि ग्रहण करिये-
है अरु वाक्करि बी नहीं ।" इत्यादिरूप ३
मुंडकके १ खंडके ८ वाक्यकी अर्थरूप अपूर्वता
कहिये प्रमाणांतरकी अविषयता है ॥ ३॥

भिद्यते हृदयग्रंथिरित्याद्यात्फलमीरितम् ।
यं यं लोकं चहेत्याद्यैरर्थवादःप्रघोषितः ॥ ५॥

४ फलः—"भिद्यते हृदयग्रंथिः ।"
कहिये तिस परावरकूं देखे हुये । "हृदयग्रंथि
भेदकूं पावता है ।" इस ३।२ । ८ आदिक
३ । २ । ८-९ वाक्यवें फल कहा है ॥

५ अर्थवादः—औ 'यं यं लोकं मनसा संविभाति विशुद्धसत्त्वः कामयते यांश्चकामान् तं तं लोकं जायते तांश्च कामांस्तस्मादात्मज्ञं ह्यर्चयेद्भूतिकामः।' कहिये "निर्मल मन-वाला जिस जिस लोककूं मनसैं चितवता है औ जिन भोगनकूं इच्छता है। तिसतिस लोककूं औ तिन भोगनकूं पावता है। तातैं विभूति की इच्छा वाला आत्मज्ञानीकूं पूजन करै।' इस ३। १। १० आदिक वाक्यनतैं अर्थवाद कहा है ॥ ३ ॥

सुदीप्ताग्नेर्यथेत्यादिनोपपत्तिः प्रकाशिता।
एतंमुंडकतात्पर्यमद्वैतेऽङ्गीकृतं बुधैः ॥ ४ ॥

७ उपपत्तिः—औ 'यथा सुदीप्तात्पावकाद्विस्फुलिंगाः सहस्रशः प्रभवंतेसरूपाः।

तथाऽक्षराद्विविधा सौम्य ! भावाः प्रजायंते तत्र चैवापियंति' कहिये 'जैसें प्रज्वलित अग्नितें हजारो हजार सरूप विस्फुलिंग उपजते हैं। तैसें हे सौम्य ! अक्षरतें विविध पदार्थ उपजते हैं औ तहां हीं लीन होतेहैं।' इस २।१।१ आदिक वाक्यतें उत्पत्ति प्रकाश करीहै। इन लिंगोंकरि मुंडकोपनिषद् का अद्वैतविषै तात्पर्य पंडितों ने अंगीकार किया है ॥४॥

इति श्री० मुंडकोपनिषत्संग्र० षड्‌लिं० प्र० समाप्तम् ॥६॥

अथ मांडूक्योपनिषल्लिंगकीर्तनम् ॥७॥

ॐ मित्येतदुपक्रम्यामात्र इत्युपसंहृतिः ।
प्रपंचोपशमं शांतिमित्याद्यभ्यासईरितः १

१ उपक्रमउपसंहारः—(१) "ॐ मित्येतदक्षरमिदँ सर्वं" कहिये "यह सर्व ॐ ऐसा यह अक्षर है।" इस १ वाक्यसैं उपक्रम करिके। (२) "अमात्रश्चतुर्थो ।" कहिये "अमात्ररूप चतुर्थपाद है।" इत्यादिरूप १२ वाक्यसैं उपसंहार है ॥ औ

२ अभ्यासः—"प्रपंचोपसमं शांतं" कहिये "निष्प्रपंच अरु शांत है" १२ इत्यादि अभ्यास कहा है ॥ १ ॥

अदृष्टमाद्यपूर्वत्वं विशत्यात्मना फलम् ।
अवांतरफलोक्तिस्तु ह्यर्थवादोविदांमते २

३ अपूर्वताः—औ "अदृष्टमव्यवहार्यं

कहिये "अदृष्ट है अरु अन्यथदार्थ है । ७
...मादिप्रमाणांतरकी अविषयतारूप अपूर्वता
है॥ श्री

३ फलः—"संविशन्यात्मनात्मानम् एवं
दे"। कहिये "आत्माकूं जो ऐसें जानताहै
सो आत्माके साथि प्रवेश करताहै"। इस
१२ वाक्यकरि फल कहाहै ॥ श्री

४ अर्थवादः—"आप्नोति ह वै सर्वान
कामान्"। कहिये "सर्व कामोंकूं पावताहै"।
इस ६ आदिक १० वाक्यनमें जो अवांतर-
फलकी उक्ति है। सो तो विद्वानोंके मतविषें
प्रसिद्ध अर्थवाद है ॥ २ ॥

अद्वैत च प्रवेशाद्योपपत्तिः पादकल्पना ।
माण्डूक्योपनिषद्भाव एवंमेरिष्यतेऽद्वये । ३ ।

...आर्थ ...त ...विषें प्रवेश

अर्थ १–१२ वें वाक्यपर्यंत जो ४ पादनकी कल्पना है । सो उपपत्ति कहियेयुक्तिहै ॥[८] लिंगोंकरिहों मांडूक्योपनिषद्का मात्र कहिये तात्पर्य अद्वैतब्रह्मविषै अङ्गीकार करियेहै॥३॥

इति श्रो॰मांडूक्योपनिषल्लिंग॰सप्तमं॰ प्र॰समाप्तम्॥

अथ तैत्तिरीयोपनिषल्लिंगकीर्तनम्

ब्रह्मविदित्युक्रम्य यथाय' तूपसंहृतिः । तस्माद्वाइत्यथोवाक्य'य दाद्यं वेतिचापरम् ॥ भीषाऽस्मादित्यथोऽभ्यासोयतो वाचोन पूर्वता । सोऽश्नुते ब्रह्मणा कामान् सहेत्वादि फलंश्रुतम् ॥ २ ॥

१ उपक्रमउपसंहारः—(१) 'ब्रह्मविदाप्नोति परं' कहिये 'ब्रह्मवित् परब्रह्मकूं पावताहै' । २ । १ ऐसें उपक्रम करिके

(२) 'सयश्चायं पुरुषे । यश्चासावादित्ये । स एकः' । कहिये 'सो जो यह पुरुषविषै है औ जो यह आदित्यविषै है । सो एक है'। इत्यादिरूप इस २ । ८ वाक्यकरि उपसंहार है । औ

२ अभ्यासः—'तस्माद्वा एतस्मादात्मन आकाशः संभूतः' । कहिये "तिस इस आत्मातैं आकाश उपज्या" । २ । १ ऐसैं औ 'यदा ह्येवैष एतस्मिन्नदृश्येऽनात्म्येऽनिरुक्तेऽनिलयने' कहियं 'जबहीं यह इस अदृश्य—अशरीर—अवाच्य—अनाधारविषै' । यह २ । ७ अपर वाक्य है ॥ १ ॥

· औ 'भीषास्माद्वातः पवते' । कहिये इस परमात्मातैं भयकरि वायु बहता है' ।२। ८ ऐसैं अभ्यास है ॥ औ

३ अपूर्वता:—यतो वाचो निवर्त्तंते अप्राप्य मनसा सह"। कहिये "मनसहित वाणीयां अप्राप्त होयके तिसतैं निवर्त्त होवैहैं" इस २। ४ वाक्यसैं मनवाणीकार उपलक्षित सकलप्रमाणोंकी अगोचरतारूप अपूर्वताकही॥ ४ फल:-श्री "सोऽश्नुते सर्वान् कामान् सह ब्रह्मणा विपश्चिता" कहिये "सो ज्ञानी ज्ञानरूप ब्रह्मके साथि एक हुआ सर्व कामोंकूं भोगता है। २। १ इत्यादि २ वल्लीके ४थे अनुवाकसैं फल कहाहै ॥ २ ॥
अर्थवादोऽतरं कुर्यादुदरं भेदनिंदनम्।
गायत्रास्तेऽशिसामतद्विद्यादिर्विदुपःस्तुतिः
५ अर्थवाद:-यदुदरमंतरं कुरुते। अथ तस्य भयं भवति" कहिये "जो यत् किंचित् भेदकूं करताहै। अनंतर ताकूं भय होवैहै"

२ । ७ ऐसैं भेदज्ञानकी निंदा है औ "गाय-
न्नास्ते हितत्साम० अहमन्नमहमन्नमहम-
न्नम् । अहमन्नादोऽहमन्नादोऽहमन्नादः" ।
कहिये "विद्वान् इस सामकूं गायन करता हुआ
स्थित होवै हैः—मैं (सर्व) भोग्य हूँ । मैं भोग्य
हूँ । मैं भोग्य हूँ । मैं (सर्व) भोक्ता हूँ । मैं
भोक्ता हूँ । मैं भोक्ता हूँ" इत्यादि ३ । १०
विद्वान्की स्तुति है । सो अर्थवाद है ॥३॥
यतो भूतानि जायंतेतत्सृष्ट्वा त्यादितोऽतिमम्
तैत्तिरीयश्रुतेर्मात्र एवंमेरिष्यतेऽद्वये ॥ ४ ॥
६ उत्पत्तिः—औ "यतो वा इमानि
भूतानि जायंते" । कहिये "जिसतैं ये भूत
उपजतेहैं" । ३ । १ औ "तत्सृष्ट्वातदेवा-
नुप्राविशत्" । कहिये "ताकूं सृजिके ताहीके
विषै प्रवेश करतभया" ६ इत्यादिकार्य-

कारणके अभेदके बोधक सृष्टिः वाक्यतैं औ। प्रवेष्टा प्रविष्ट अरु प्रवेश्यके अभेद के बोधक प्रवेशवाक्यतैं अंतका उपपत्तिरूप लिंग कह्या। इन लिंगोंकरिहीं तैत्तिरीयोपनिषद् का भाव कहिये तात्पर्य अद्वैतविषै अंगीकार करियेहै॥८॥

इति श्री० तैत्तरीयोपनिषल्लिंग० नामाष्टम प्रकरणं समाप्तम् ॥८॥

अथैतरेयोपनिषल्लिंगकीर्तनम् ॥९॥

आत्मावा इत्युपक्रम्योपसंहारस्तु चांतिमे प्रज्ञानब्रह्म वाक्येन महतोक्तो हिधाघनैः॥१॥

१ उपक्रमउपसंहारः—(१) "आत्मा वा इदमेक एवाग्र आसीत्" कहिये "यह आगे आत्माहीं होता भया।" । १ । १ । ऐसैं उपक्रम करिके । (२) "प्रज्ञानं ब्रह्म

कहिये 'प्रज्ञान जो जीव सो ब्रह्म है' । इस ग्रंतके ३ अध्यायविषै स्थित ५ खंड के ३ ऋक्‌गत महावाक्यकरि बुद्धिमानोंनैं प्रसिद्ध उपसंहार कहा है ॥ १ ॥

स इमानसृजल्लोकान्स ईक्षत सृजा इति ।
तस्मादिदंद्र इत्यादिवाक्यैरभ्यासईरितः॥२॥

२ अभ्यासः—औं " स इमाँल्लोकानसृजत्' । कहिये "सो इन लोकनकूं सृजता भया' । १ । १ । २ औं 'स ईक्षतेमे नु लोका लोकान्नु सृजा इति' कहिये " सो ईक्षण करताभयाः–ये लोक हैं। लोकपालोंकूं सृजो ऐसैं' । १ । १ । ३ औं । 'तस्मादिदंद्रो नाम' कहिये 'तातैं इदंद्र नाम है' । १ । ३ । १४ इत्यादि वाक्योंकरि अभ्यास कहा है ॥ २ ॥

स जात इत्यपूर्वत्वं अज्ञानेत्रं तदित्यपि।
स एतेनेतिवाक्येन फलं स्पष्टमुदीरितम् ३

३ अपूर्वता:—औं "स जातो भूतान्यभिव्यैच्चत्"। कहिये "सो प्रकटहुआ भूतनकूं स्पष्ट जानता भया" इस १ । ३ ।१३ वाक्यसैं सर्व भूतनका प्रकाशक होनेकरि तिनकी अविषयतारूप किंवा:—"सर्वं तत्प्रज्ञानेत्रं" कहिये "सर्वजगत् स्वप्रकाश चैतन्यरूप निर्वाहकवाला है" इस २ अध्यायके ५ खंडके ३ वाक्यसैं ऐसें स्वप्रकाशतारूप बी अपूर्वता कहीहै ॥ औं

४ फल:—स एतेन प्रज्ञेनात्मनाऽस्माल्लोकादुत्क्रम्यामुष्मिन् स्वर्गे लोके सर्वान्कामानाप्त्वाऽमृतः समभवत् समभवत् इत्योम्" कहिये "सो इस ज्ञानरूपसैं इस लोकतैं एल्लंघन करीके उस मोक्षरूपलोकविषै

सर्वकार्मोकूं पायके अमृत होता भया। ऐसें
सत्य है"। इस ३ अध्यायके ५ खंडकै
४ वाक्यकरि स्पष्ट फल कहा है ३॥
ता एतादेवताः सृष्टास्तथागर्भे नुसन्निति।
स्तुतियुक्तिस्तुसईमानित्यारभ्यविदार्यसः
एतंसीमानमित्यादिश्रुतिवाक्यात्प्रकीर्तिता
इमेंरुक्तैस्तु षड्लिंगैरैतरेयश्रुतौ गतम् ५
तात्पर्यं ज्ञायतेऽद्वैते तन्निष्ठैर्वेदपारगैः।
तथा मुमुक्षुभिः सर्वपरि विज्ञेयमादरात् ६
५ अर्थवादः—औ "ता एता देवताः
सृष्टा।" कहिये "वे ये उत्पादित देवता स्तुति
करती भई" ।१।२।१ औ "गर्भेनु सन्नन्वे
षामवेदमहं देवानांजनिमानि विश्वा"।
कहिये "माताके गर्भस्थानविषैंही हुआ मैं इन
देवनके सर्व जन्मोंकूं जानता हूँ ।२।४। ५ऐसें
अद्वैतपरमात्माकीस्तुतिरूप अर्थवादकहाहै॥औ

६ उपपत्तिः—स इमाँल्लोकानसृजत'। कहिये "सो इन लोकनकूं सृजताभया'॥ १। १। २ इहाँसैं आरंभ 'करिके ॥४॥ स एतमेव सीमानं विदार्य्यैतया द्वारा प्रपाद्यत'। कहिये "सो इसीही मस्तकगत सीमाकूं विदारण करिके इस द्वारकरि शरीरविषै प्राप्त होता भया। इत्यादि १।३।१२ वाक्यतैं श्रुतिनैं युक्ति' कहिये उपपत्ति कही है॥ उक्त इन षट्‌लिंगोंसैं तो ऐतरेयउपनिषद्‌विषै स्थित॥ ५॥

अद्वैतविषैं जो तात्पर्य है। सो वेदके पारकूं प्राप्त भये कहिये श्रोत्रिय औ तिसविषै निष्ठावाले कहिये ब्रह्मनिष्ठनकरि जानियेहै। तैसैं सर्व मुमुक्षुनकरि बी आदरसैं जाननेकूं योग्यहै॥६॥

इति श्रो० ऐतरेयोपनिषल्लिंग० नवमं प्रकरणं समाप्तम्॥ ९॥

अथ श्री छांदोग्योपनिषल्लिंग-कीर्त्तनम् ॥१०॥

तत्र षष्ठाध्याय-लिंगकीर्त्तनम् ॥६॥

सदेवेत्युपक्रम्यैवैतदात्म्यमिदमित्यतः ।
उपसंहृतिरभ्यासो नवकृत्व उदीरितः ॥१॥
तत्त्वमसीतिवाक्यस्यावर्त्तनाद्बुद्धिमत्तमैः
अत्रैवसोम्य!सन्नेत्यपूर्वतोक्ताहिपंडितैः ॥२॥

१ उपक्रमउपसंहारः—' सदेव सोम्ये-दमग्र आसीदेकमेवाद्वितीयं' । कहिये "हे सोम्य ! सृष्टितैं पूर्व एकहीं अद्वितीय सत् हीं होता भया" । ६ । २ ।१ ऐसैं उपक्रम करिके 'एतदात्म्यमिदं सर्वं' कहिये यह

सर्व इस सत्‌रूप आत्मभाव वाला है , । ऐसैं इस ६ अध्याय के १६ खण्डकं ३ वाक्यतैं उपसंहार कहा है ॥

२ अभ्यासः—नववार कहा है ॥ 'तत्त्वमसि' कहिये 'सो तूं है' इस ६ । ८ । १६ वाक्यके आवर्त्तनतैं पंडितोंनैं कहा है ॥

३ अपूर्वताः—ओं अत्र वाव किलसत्सोम्य ! न निभालयसेऽत्रैव किलेति कहिए ऐसैं हे सौम्य ! इस शरीरविषै आचार्यके उपदेश तैं विना सत्‌रूप ब्रह्म विद्यमान है ताकूं इंद्रियनसै नहीं जानताहै । इहांहीं विद्यमान सत्कूं गुरुउपदेशरूप अन्य उपायसैं जान ६।१३।२ ऐसैं पंडितोंनैं गुरुउपदेशसैं विना प्रमाणांतरकी अविषयतारूप प्रसिद्ध अपूर्वता कही है ॥ १-२ ॥

तावदेवचिरंतस्यत्यादिवाक्यात्फलंस्मृतम्
तंमादेशमुताप्रेच्य इत्यादेःस्तुतिरीरिता ३
४ फलः—आचार्यवान् पुरुषो वेद। तस्य
तावदेव चिरं यावन्न विमोच्येऽथ संपत्स्ये
कहिये आचार्यवान् पुरुष जानताहै। तिस
ज्ञानीकूं तहांलगिहीं विदेहमोक्षविषैं विलंब
हैं जहांलगि प्रारब्धके क्षयकरि देहका अंत
भया नहीं अनंतर जगत्रूप ब्रह्मकूं पावताहै।
इत्यादि ६। १४। २ वाक्यसैं फल कहाहै ॥
५ अर्थवादः—उत तमादेशमप्राक्ष्यो
येनाश्रुत ॅ श्रुतंभवत्यमतं मतमविज्ञातं
विज्ञातं कहिये हे श्वेतकेतो ! तिस आदे-
शकूं बी आचार्यके प्रति तू पूछताभया है।

जिसकरि नहीं सुन्यासुन्या होवैहै।।नहीं मनन-क्रिया मनन क्रिया होवैहै। नहीं जान्याजान्या होवैहै। इत्यादि ६।१।१। वाक्यतैं अर्थ-वादरूप अद्वैतके ज्ञानकी स्तुति कही है॥३॥

उपपत्तिर्यथा सौम्यैकेनेत्यादिनिदर्शनम् ।
एतैश्छांदोग्यतात्पर्यं षष्ठगं त्विष्यतेऽद्वये॥४॥

टीकाः उपपत्तिः—श्रौ यथा सौम्यैकेन मृत्पिडेन सर्वं मृन्मयं विज्ञातँ स्यात् कहिये हे सोम्य! जैसें एक मृत्तिका के पिंडकरि सब घटादि कार्य मृत्तिकामय जान्या जावै है। इत्यादि ६।१।१–३ वाक्यगत दृष्टांतरूप उपपत्ति है ।। इन लिंगोंकरि षष्ठ-ध्यायगत छांदोग्यउपनिषद्का तात्पर्य अद्वैत-विषै अङ्गीकार कहिये है ।। ४ ।।

अथ सप्तमाध्यायलिंगकीर्त्तनम् ॥ ७ ॥
शोकं तरति तद्वेत्ते—त्युपक्रम्योपसंहृतिः ।
तस्य ह वेति वाक्येन तदैक्यमनुभूयताम्

१ उपक्रमउपसंहारः—(१) "तरति शोकमात्मवित्' । कहिये "आत्मज्ञानी शोककूं तरताहै' । ७ । १ । ३ ऐसें उपक्रम करिके (२) तस्य ह वा एतस्यैवं पश्यत एवं मन्वानस्यैवं विजानत आत्मतः प्राण आत्मत आशा' । कहिये "तिस इस ऐसें देखनेवालेके औ ऐसें मनन करनेवाले के औ ऐसें जाननेवालेके आत्मातें प्राण औ आत्मातें आशा होवैहै' । इस ७ अध्यायके २६खंडके १ वाक्यकरि उपसंहार कहाहै । तिन दोनूं की एकता अनुभव करना ॥ ५ ॥

अधस्ताच्च स एव स्यात्तथाऽथातस्त्वहंकृतेः
आदेशश्च स्मृतोऽभ्यासोऽथात आत्मोप-
देशयुक् ॥६॥

२ अभ्यासः —औ ' स एवाधस्तात्स उपरिष्टात्' कहिये 'सोई नीचे है। सो उपरि है' तैसें 'अथातोऽहंकारादेश एवाह मधस्ता-दहमुपरिष्टात्' कहिये ' अब अहंकारका उपदेश ही है कि:—मैं नीचे हूँ। मैं उपरि हूँ ' तैसें 'अथ। आत्मादेश एवात्मैवाधस्ता दात्मोपरिष्टात्' कहिए ' अब आत्माका उपदेश है कि:—आत्माहीं नीचे है । आत्मा उपरि हैं , इस आत्माके उपदेशकरि युक्त। उक्त ७ अध्यायके २५ खण्डके १-२ [illegible] है ॥६॥

ऋगादिसर्वविद्यानामगोचरतयाऽऽत्मनः ।
अपूर्वता फलं पश्यो नैव मृत्यु हि पश्यति

३ अपूर्वताः—श्रौ ' स होवाचर्ग्वेदंभगवो ऽध्येमि ' कहिये ' नारद सनत्कुमारकूं कहै हैः-हे भगवन् ! ऋग्वेदकूं पढ्या हूँ ' । इत्यादि ७ । १। २–३ वाक्यकरि आत्माकी ऋग्वेदआदि सर्व विद्याओंकी अगोचरता करि गुरुउपदेशकरि वेद्यतारूप अपूर्वता की है ॥
४ फलः—श्रौ ' न पश्यो मृत्यु पश्यति ' कहिये 'ज्ञानी मृत्युकूं देखता नहीं' । इत्यादि ७।२६।२ वाक्यकरि फल कहा ॥७॥

पश्यः पश्यति सर्वं हीत्यर्थवादः सुसूचितः
ज्ञाता वा आत्मनःप्राणादयो युक्तिःप्रदर्शिता८

५ अर्थवादः—श्रौ ' सर्वं ह पश्यः

पश्यति । सर्वमाप्नोति सर्वः' कहिये "ज्ञानी सर्वकूं देखता है। सर्व तर्फ सैं सर्वकूं पावता है' । ७ । २६ । २ ऐसैं अर्थवाद सूचन किया है ॥ ७ ॥

६ उपपत्तिः—'आत्मतः प्राण आत्मत आशा' कहिये "आत्मातैं प्राण । आत्मातैं आशा' । इत्यादि ७ । २६ । १ वाक्यकरि हेतु आत्मैकताबोधक युक्ति कहिये उपपत्ति दिखाई ॥ ८ ॥

छांदोग्यश्रुतितात्पर्यं सप्तमाध्यायगं बुधैः।
इष्यतेचाद्वयेभूम्निषड्भिर्लिङ्गैरिमैःस्फुटम् ।

पंडितोंनैं इन षट्लिंगोंकरि सप्तमाध्यायगत छांदोग्य उपनिषद्का तात्पर्य । अद्वैत ब्रह्मविषै स्पष्ट अङ्गीकार करियो है ॥ ६ ॥

अथाष्टमाध्यायलिंगकीर्त्तनम् ॥८॥

य आत्मेत्युपक्रम्यैव तं वा एतमुपासते ।
इत्यादिनोपसंहार एव आत्मेतिवाक्यतः

१ उपक्रमउपसंहारः-(१) "य आत्मापहतपाप्मा"। कहिये "जो आत्मा पापरहित है"। ८।७।१ ऐसैं उपक्रम करिके हीं। (२) "तं वा एतं देवा आत्मानमुपासते" कहिये तिस इस आत्माकूं देव निश्चयकरि उपासते हैं"। इत्यादि ८।१२।६ रूप वाक्यकरि उपसंहार कहा है ॥

२ अभ्यासः-"एष आत्मेति होवाचैतदमृतमभयमेतद्ब्रह्मेति"। कहिये "यह आत्मा। यह अमृत अभय। यह ब्रह्म है। ऐसैं क ३।१३।८१' इस ८ अध्यायकं १० खंड के १ वाक्यतैं अभ्यास कहा है ॥१०॥

अभ्यासोऽपूर्वत ब्रह्मचर्य्येणेत्यादितःफलम् पुन-
रावर्त्तते नैव स इत्यादिरवेरितम् ॥

अपूर्वता:—' तद्य एवैतं ब्रह्मलोकं ब्रह्मचर्य्येणानुविंदंति तेषामेवैष ब्रह्मलोकः कहिये ' तातें जेई इस ब्रह्मरूप लोककूं ब्रह्मचर्य्य करि शास्त्र अरु आचार्य्यके उपदेशके पीछे प्राप्त करतेहैं। तिनहीकूं यह ब्रह्मरूप लोक प्राप्त होवैहै। इस ८।४।३ आदिक वाक्यनतैः अपूर्वता ध्वनित करीहै ॥

४ फलः—' ब्रह्मलोकमभिसंपद्यते । न च पुनरावर्त्तते ' कहिये ' ब्रह्मरूप लोककूं पावताहै और पुनावृत्तिकूं पावता नहीं ' । इत्यादि ८ । १५ । १ वाक्यकरि फल कहा है ॥११ ॥

आख्यायिकार्थवादः स्यादिंद्रस्यासुर-

स्वामिनः अशरीरो वायुरभ्रमित्यादिषु-
क्तिरीरिता ॥१२॥

५ अर्थवादः—इन्द्र अरु विरोचनकी आ
ख्यायिका अर्थवाद होवैहै ॥

६ उपपत्तिः—' अशरीरो वायुरभ्रं
विद्युत्स्तनयित्नुरशरीराण्येतानि ' कहिये
'वायु अशरीर है । मेघ वीजली मेघगर्जन ये
अशरीर हैं ' । इत्यादि ८।१२।२ अभेदक
युक्तिरूप उपपत्ति कहीहै ॥१२॥

छांदोग्यश्रुतितात्पर्यमष्टमाध्यायगं स्विमैः
दृश्यतेऽद्वय एवास्मिन्ब्रह्मण्येतत्प्रदर्शितम्
इन लिंगोंकरि तो अष्टमाध्यायगत छांदोग्य
उपनिषद्का तात्पर्य । इस अद्वैतब्रह्मविषैही
अंगीकार करिये है । यह दिखाया ॥१३॥

इति श्री० छांदोग्योपनिषल्लिंग० दशमं
प्रकरणं समाप्तम् ॥ १० ॥

अथ श्रीबृहदारण्यकोपनिषल्लिंग-कीर्त्तनम् ॥११॥

तत्र प्रथमाध्यायलिंगकीर्त्तनम् ॥ १ ॥

आत्मेत्येवेत्यादिवाक्यादुपक्रम्योपसंहृति ।
लोकमात्मानमेवोपासीतेत्यादिसमीरणात् ।

१ उपक्रमउपसंहारः—(१) "आत्मेत्येवोपासीत'। कहिये "आत्मा ऐसेंही जानना'। इत्यादि १ । ४ । ७ रूप वाक्यतें उपक्रम करिके। (२) "आत्मानमेव लोकमुपासीत'। कहिये "आत्मारूपही लोककूं जानना' इत्यादि १ अध्यायके ४ ब्राह्मणके १५ वें वाक्यतें उपसंहार कहा है ।। १ ॥

तदेतत्पदनीयं च तदेतत्प्रेय इत्यपि । वाक्यमारभ्य संप्रोक्तोऽभ्यासस्तस्य परात्मनः ॥

२ अभ्यासः—औ "तदेतत्पदनीयमस्य सर्वस्य यदयमात्मा' कहिये "सो यह प्राप्त

ग्रनेकूं योग्यहै। जो यह इस सर्वका आत्मा
है'। १। ४। ७ ऐसें औ "तदेतत्प्रेयः
पुत्रात्प्रेयो वित्तात्'। कहिये 'सो यह पुत्रतैं
प्रिय है। वित्ततैं प्रिय है'। इसी १।४।८
वी वाक्यकूं आरंभकरिके। आगे (१।४।
१० विषै) दोवार 'अहं ब्रह्मास्मि'। इस
महावाक्यके कथनपर्यन्त तिस परमात्मा का
अभ्यास कहा है ॥ २ ॥

तदाहुर्यदितीरया अपूर्वत्वं समिगितम्।
य एव वेद वाक्येन सर्वात्मत्वं फलस्मृतम् ॥

३ अपूर्वता:—'तदाहुर्यद् ब्रह्मविद्ययासर्व
भविष्यन्तो मनुष्या मन्यंते'। कहियें "सो
कहतेहैं:—जो ब्रह्मविद्याकरि सर्वरूप होने
वाले मनुष्य मानते हैं'। इस १। ४। ९
इक्ति कहिये वाक्यतैं प्रमाणांतर की अविषय
जीवनकी सर्वात्मतारूप अपूर्वता अभिप्रेत है॥

तेऽहं त्वा ब्रवाणीति' कहिये "ब्रह्मतेरेताई कहता हूँ । २ । १ । १ । यह सामान्यउपक्रम है औ ज्ञेव त्वा ज्ञपयिष्यामि । कहिये 'ब्रह्म तेरेताई जनावैगाहीं' । २ । ३ । १५ यह तो विशेष उपक्रम है ॥ ६ ॥ (२) औ 'स एषः पुरुषो विज्ञानमयः' । कहिये 'जो यह पुरुष विज्ञानमय है' । २ । १ । १६ यह तो सामान्यतें उपसंहार है औ 'तदेतब्रह्मा-पूर्वमनपरं' कहिये 'सो यह ब्रह्मकारण रहित अरु कार्यरहित है' । २ । ५ । १९ यह विशेषकरि उपसंहार है ॥ ७ ॥

सत्य सत्यस्य चाथात आदेशो नेति नेति च
स योऽयमिति चाभ्यासो बहुकृत्वउदीरितः ।

२ अभ्यासः—'सत्यस्य सत्यं' ।
कहिये 'सत्यका सत्य है ।, २ । १ । २० । ३

॥६ श्रौ "अर्थात् आदेशो नेति नेति"
हिये "कि अथ 'नेति नेति' ऐसा आदेश
।२।२।६ श्रौ "स योऽयमात्मेद-
मृतमिदं ब्रह्मेदं सर्वम्" कहिये "सो जो
है आत्मा है। यह अमृत है। यह ब्रह्म है।
है सर्व है"।२।५।१–१५ ऐसा बहु-
रिके अभ्यास कहा है ॥ ८ ॥

विज्ञातारमरे ! केनेत्यादिनाऽपूर्वता मता
न वास्य ह्यभूदात्मैव सर्वं चादितःफलम्

२ अपूर्वताः—"विज्ञातारमरे ! केन
विजानीयात्" कहिये "अरे! मैत्रेयि! विज्ञा-
ताकूं किमकरि जानै"। इत्यादि २।४।१४
सेयकरि प्रमाणांतरकी अविषयतारूप अपू-
र्वता मानी है ॥

४ फलः—यत्र वा अस्य सर्वमात्मैवाभूत्तत्केन कं जिघ्रेत्" कहिये "जहाँ (जिस मोक्षविषै) इस विद्वानकूं सर्व आत्माहीं होता भया । तहाँ किसकरि किसकूं सूंघे" । इत्यादि २ अध्यायके ४ ब्राह्मणके १४ वाक्यतें निष्प्रपंचब्रह्मरूपसैं अवस्थिरूप अद्वैतज्ञानका फल कहाहै ॥ ६ ॥

परादाब्रह्म ते चैवाख्यायिका बहवोऽपि च
अर्थवादस्तूपपत्तिरूर्णनाभ्याद्यनेकशः ॥

५ अर्थवादः—"ब्रह्म तं परादाद्योऽन्यत्रात्मनो ब्रह्म वेद" । कहिये "ब्राह्मणजातिवाकूं तिरस्कार करैहै जो आत्मातैं अन्य ब्राह्मणजातिकूं जानताहै" ।२।४।६ ऐसैं भेदज्ञानकी निंदा औ बहुतआख्यायिका बी अर्थवाद है ॥ १० ॥

ं उपपत्तिः—" स यथोर्णनाभिस्तंतुनो-
द्यथाऽग्नेः क्षुद्रा विस्फुलिंगा व्युच्च-
ि" । कहिये "सो जैसें ऊर्णनाभि तंतु करि
गमन करैहै औ जैसें अग्नितें अल्पअग्निके
पव विविध उच्चगमन करहैं" । इस २ ।
। २० । आदिक २।४।६–१२ वाक्य-
विषै अनेकदृष्टांतरूप उपपत्ति है ॥ १० ॥

दारण्यकस्यैव द्वितीयस्याद्वितीयके ।
पर्यंतिविष्यते प्राज्ञैरभिर्लिंगैः समिंगितैः

दारण्यक उपनिषद्के द्वितीयअध्यायका
द्वोंकरि इन सूचन किये लिंगोंसें अद्वितीय-
विषै तात्पर्य अङ्गीकार करियेहै ॥११॥

अथ तृतीयाध्यायलिंगकीर्तनम् ॥ ३ ॥

यत्साक्षादित्युपक्रम्योपसंहारस्तु वाक्यतः
विज्ञानमित्यतः प्रोक्त आवृत्तिरेपते स्वात्

१ उपक्रमउपसंहारः—(१) "यत्साक्षादपरोक्षाद्ब्रह्म" कहिये "जो साक्षात अपरोक्ष ब्रह्म है" ।३ ४। १ ऐसें उपक्रमकरिके । (२"विज्ञानमानंदंब्रह्म"। कहिये "विज्ञान आनन्दरूप ब्रह्म है" ऐसें इस ३ । ६ । २८ वाक्यतें तो उपसंहार कहाहै ॥

२ अभ्यासः—एष त आत्मांतर्याम्यमृतः" । कहिये "यह तेरा आत्मा अन्तर्यामी अमृतरूप है" । इस ३ । ७ । ३-२३ वाक्यतें आवृत्तिका वाच्य अभ्यास कहाहै॥

तं त्वौपनिषदं चाहं पृच्छामिती त्वपूर्वता
फलं परायणं चैतत्तिष्ठमानस्य तद्विदः ॥

३ अपूर्वता:—"तं त्वौपनिषदं पुरुषं पृच्छामि"। कहिये "तिस उपनिषदनकरि गम्य पुरुषकूं (मैं याज्ञवल्क्य) तुज (शाकल्यके) त्यांईं पूछता हूं" । ३।६ ।२६ ऐसैं तो उपनिषदनकीहीं विषयतारूप अपूर्वता कहीहै ॥

४ फल:—"परायणं तिष्ठमानस्य तद्विदः" कहिये "यह ब्रह्म अद्वैतत्वविषै स्थित तत्ववेत्ताका परमगति है" । ३ । ६ । २८ ऐसैं फल कहा है ॥ १३ ॥

यो वै तत्काप्य ! सूत्र तंविद्याच्चं त्यादितोऽपि च। यो वै एतच्च न ज्ञात्वाऽक्षरं गार्गीति च स्तुतिः ॥ १४ ॥

५ अर्थवादः—यो वै तत्काप्य ! सूत्रं विद्यात्तं चांतर्यामिणमिति स ब्रह्मवित्" । कहिये "हे काप्य ! जोई तिस सूत्रकूं औ तिस अंतर्यामीकूं जानता है। सो ब्रह्मवित् है" यह । ३ । ७ । १ वी । औ यो वा एतदक्षरं गार्ग्यविदित्वास्मिँल्लोके जुहोति" । कहिये "हे गार्गि ! जोई इस अक्षरकूं न जानिके इस लोकविषै होमता है" इस ३।८।१० आदिक वाक्यतैं अभेदज्ञानकी स्तुति औचकार-करि भेदज्ञानकी निंदारूप अर्थवाद कह्या है ॥

…स्य वा अक्षरस्येत्यादितो युक्तिरीरिता
…स्थलक्षणस्योपन्यासेन परमात्मनः ॥

६ उपपत्तिः—"एतस्य वा अक्षरस्य
…सने गार्गि ! सूर्यचंद्रमसौ विधृतौ
…तः"। कहिये " हे गार्गि ! इस अक्षरकी
…ज्ञाविषै सूर्यचंद्र धारण किएहुये स्थित होवै
"। इत्यादि ३। ८। ९ रूप वाक्यतैं
…त्मा के तटस्थलक्षणके उपन्यासकरि उप-
…न कहीहै ॥ १५ ॥

…दारण्यकश्रुत्यास्तृतीयस्य समिष्यते ।
…र्यमद्वये लिंगैरभिस्तु परमात्मनि ॥
…दारण्यकोपनिषद्के इस तृतीय अध्यायका
… लिंगोंकरि अद्वयपरमात्माविषै तात्पर्य ।
…न् अङ्गीकार करियेहै ॥ १६ ॥

अथ चतुर्थाध्यायलिंगकीर्तनम् ।४।

इन्धश्च किमुपक्रम्याभयं स उपसंहृतिः ।
सामान्यतो विशेषेण यत्र त्वस्येति वाक्यतः

१ उपक्रमउपसंहारः—(१) "इन्धो ह वै नाम"। कहिये "इन्ध ऐसा प्रसिद्ध नाम है"।४।२।२ ऐसैं सामान्यतें "किं-ज्योतिरयं पुरुष इति"। कहिये "किम ज्योतिवाला यह पुरुष है"।४। ३।२ ऐसैं विशेषकरि उपक्रमकरिके। (२) "अभयं वै जनक! प्राप्तोऽसि"। कहिये "हे जनक! तू अभयकूं प्राप्त भया है" ।४।२।४ ऐसैं वा "स वा एष महानज आत्मा"। कहिये

सोई यह महान्–अज–आत्मा' । ४ । ४
२५ ऐसें सामान्यतैं उपसंहार है औ 'यत्र
त्वस्य सर्वमात्मैवाभूत्' कहिये 'जहाँ तो
सर्व आत्माहीं होताभया' इस ४ । ५ । १५
वाक्यतैं विशेषकरि उपसंहार है ॥ १७ ॥

तद्देवा ज्योतिषांज्योतिरायुर्होपासतेऽमृतम् ।
इत्यादिबहुभिर्वाक्यैरभ्यासः स्पष्टमीच्यते ॥

२ अभ्यासः–'तद्देवा ज्योतिषांज्योतिरायु-
र्होपासतेऽमृतम्' । कहिये " इस ब्रह्मकूं देव
ज्योतिनका ज्योति आयु अरु अमृतरूप
उपासते हैं" । ४ । ४ । १६ इत्यादि बहुत
वाक्यनकरि अभ्यास स्पष्ट देखिये है ॥१८॥

विज्ञातारमगृह्यो च न तं पश्यन्त्यपूर्वता।
अथाकामयमानो य इत्यादिबहुभिः फलम्

२ अपूर्वताः—"विज्ञातारमरे ! केन विजानीयात्"। कहिये "अरे मैत्रेयि! विज्ञाताकूं किसकरि जानना"। ४। ५। १५ औ "अगृह्यो न हि गृह्यते"। कहिये "जातें ग्रहण करनेकूं अयोग्य है। तातें नहीं ग्रहण करिये है"।४।४। २२ औ "न तं पश्यति कश्चन"। कहिये "ताकूं शास्त्रगुरुके उपदेश विना कोईबी नहीं देखता है" ४।३।१४ इत्यादि वाक्यनसें सिद्ध प्रमाणांतरकी अविषयतारूप अपूर्वता है॥

४ फलः—"अथाकामयमानो यो"। कहिये "औ जो निष्काम है"। इत्यादि ४। ४। ६–८ बहुतवाक्यनकरि फल कहा है॥ १६ ॥

मृत्योःस मृत्युमाप्नोति यइह नानेव पश्यति। एत एतसु हैवेत्यादिवाक्याच्च स्तुतिः स्मृता ॥२०॥

अर्थवादः—"मृत्योः स मृत्युमाप्नोति य इह नानेव पश्यति"। कहिये "सो मृत्युतैं मृत्युकूं पावताहै। जो इहां नानाकी न्याईं देखताहै"। ४। ४। १६ ऐसें औ "एतमु हैवेत न तरतः"। कहियें "इस ज्ञानीकूं ये पुण्यपाप तरते नहीं" ४। ४। २२–२३ इत्यादि वाक्यतैं अर्थवादरूप निंदा अरु स्तुति कहीहै ॥२०॥

यद्वै तन्नेति प्राणस्य प्राणं चैव न वा अरे !
पत्युः कामाय नैवाद्यं पतिर्हि भवति प्रियः
इत्यादिवाक्यजातेनोपपत्तिः परिकीर्तिता
बृहदारण्यकश्रुत्याश्चतुर्थाध्यायगं बुधाः।
तात्पर्यमद्वये षड्भिरेवेमै लिंगकैर्विदुः।
अग्नेर्धूम इवेमानि लिंगान्यस्य परात्मनः॥

६ उपपत्तिः—"यद्वै तन्न पश्यति"। कहिये "जहां सुषुप्तिविषै तिसरूपकूं नहीं देखताहै"। ४। ३। २३–३० ऐसैं। औ 'प्राणस्य प्राणमुत'। कहिये "प्राणके बी प्राणकूं जानतेहैं" ४। ४। १८ ऐसैं। औ "न वा अरे ! पत्युः कामाय पतिः प्रिय भवत्यात्मनस्तु कामाय पतिः प्रियो भवति"। कहिये "अरे मैत्रेयि ! पति के काम अर्थ पति प्रिय नहीं होवैहै। आत्मा के तो काम

र्वं पति प्रिय होवै' ॥ २१ ॥ इस ४।५।६
आदिक ४।५। ८–१३ वाक्यनकेसमूहकरि
ब्रह्मरूप आत्माके बोधनकी युक्तिरूप उपपत्ति
कहींहै ॥ पंडित इस बृहदारण्यकरूपउपनिषद्-
भागके चतुर्थाध्यायगत ॥ २२ ॥ अद्वैतविषै
तात्पर्यकूं इन षट्लिंगोंसैं जानतै हैं॥ औ अग्नि
के निश्चायक धूमरूप लिंगकी न्यांई इस प्रत्यक्
अभिन्न ब्रह्मके निश्चायक ये लिंगहैं। (ऐसैं
जानना) ॥ २३ ॥

इति संक्षेपतः प्रोक्ता षड्लिंगानां विचारणा। दशोपनिषदां तद्वत्तामन्यास्वपि योजयेत् ॥ २४ ॥

इसरीतिसैं संक्षेपतैं दशउपनिषदनके षट्लिंगनका विचार कहा। ताकी न्यांई ता (विचार) कूं अन्यउपनिषदनविषै बी जोड़ना ॥२४॥

दोषोऽप्यत्रोपयुक्तत्वाद्गुण एवेति चिंत्यताम्
सारग्रहणशीलैस्तु पितृभ्यां बालवाक्यवत् ॥
इसग्रंथविषै क्वचित् दोष बी उपयोगी होनैतैं "गुणहीं है" ऐसैं साराग्राही स्वभाववाले कविनकरि विचारनेकूं योग्य है ॥ माता पिताकरि विनोदअर्थ उपयोगी बालककै फल-वाक्यकी न्यांई ॥ २५ ॥

इति श्री बृहदारण्यकोपनिषल्लिंगकीर्त्तनं नामैकादशं प्रकरणं समाप्तम् ॥ ११ ॥

इति श्रीविचारचंद्रोदये श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाऽऽचार्यबापु सरस्वती-पूज्यपाद-शिष्य पीतांबरशर्मविदुषा विरचिता-सटीकश्रुतिषड्लिंगसंग्रहनामिका षोडशीकलायाः प्रथमविभागः समाप्तः ॥

॥ अथ षोडशकलाद्वितीयविभाग-प्रारंभः ॥ १६ ॥

॥ वेदांतपदार्थसंज्ञावर्णन ॥

अथवा

॥ लघुवेदांतकोश ॥

॥ ललितछंदः ॥

निष्कलं निजं वेदशीं वदे ।
षटदशं कला ब्रह्ममें नदे ।
निरचयेव जो निष्कलङ्क सो ।
इकरसं सदा अंगता न सो ॥ २६ ॥

हिरण्यगर्भ औ श्रद्धया नभो ।
पवन तेज कूं भूमि इंद्रिभो ।
मन अनाज औ शक्ति[१८०] सत्तशो ।
करमलोक नामामनूजपो[१८१] ॥ ३७ ॥
षटदशं कला एहि जानिले ।
जडउपाधिको धर्म मानिले ।
अनुगताश्रयोपुष्पसूत्रवत् ।
निज चिदात्म पीतांबरो हि सत् ॥३८॥

॥ १८० ॥ बल ॥

॥ १८१ ॥ मन्त्र का जप ॥

॥ पदार्थ द्विविध । २ ॥

अध्यात्मताप २—आत्माकूं आश्रय करके वर्तमान जो स्थूलसूक्ष्मशरीरसोअध्यात्म है। तद्गत जो ताप (दुःख) सो अध्यात्म-ताप है॥

१ आधिताप:—मानसताप ॥

२ व्याधिताप:—शरीरताप ॥

अध्यास २-भ्रांतिज्ञानका विषय औ भ्रांति-ज्ञान ॥

१ अर्थाध्यास—भ्रांतिज्ञान का विषय जो सर्पादि वा देहादिप्रपंच सो ॥

२ ज्ञानाध्यास—भ्रांतिज्ञान (सर्पादिक का वा देहादिप्रपंचका ज्ञान) ॥

असंभावना २ --- असंभव का ज्ञान ॥

१ प्रमाणगत असंभावना—प्रमाण (वेद) गत असंभव का ज्ञान ॥

२ प्रमेयगत असंभावना—प्रमेय (प्रमाण के विषय मोक्षआदिक) गत असंभवका ज्ञान॥

अहंकार २—

१ शुद्धअहंकार—स्वस्वरूपका अहंकार ॥

२ अशुद्धअहंकार—देहादिअनात्माका अहंकार ॥

१ सामान्यअहंकार—देहादिधर्मके उद्देशसैं रहित। केवल "अहं (मैं)" ऐसा स्फुरण ॥

२ विशेषअहंकार—देहादिधर्म (नामजातिआदिक) का उद्देश करिके 'अहं (मैं)' ऐसा स्फुरण ॥

१ मुख्यअहंकारः—देहादियुक्त चिद्भास और कूटस्थ (साक्षी) का एकीकरण करिके। मूढ़करि सारे संघातविषै 'अहं' शब्दकूं जोडिके 'अहं (मैं)' ऐसा स्फुरण होवै सो मुख्य (शक्तिवृत्तिसैं जान योग्य अहंशब्दके अर्थकूं विषय करनेवाला) अहंकार है॥

२ अमुख्यअहंकारः—विवेकीकरि (१) व्यवहारकालमें केवल देहादियुक्त चिदाभासविषै औ (२) परमार्थदशा में केवलकूटस्थ विषै 'अहं' शब्दकूं जोड़िके जो "अहं (मैं)" ऐसा स्फुरण होवै सो दोभांती का अमुख्य (लक्षणावृत्तिसैं जानने योग्य अहं शब्द के अर्थकूं विषय करनेवाला) अहंकार है॥

अज्ञान २—

१ समष्टिअज्ञान—वनकी न्याईं वा जातिकी न्याँईं वा जलाशय (तडाग) की न्याईं एक बुद्धि का विषय ॥

२ व्यष्टिअज्ञान—वृक्षनकी न्याईं व व्यक्ति· नकी न्याँईं वा जलबिंदु की न्याँईं अनेक बुद्धिन का विषय ॥

१ मूलाज्ञान —शुद्धचेतनका आच्छादक (ढाप· नेवाला) अज्ञान ॥

२ तूलाज्ञान—घटादिअवच्छिन्नचेतनका आ· च्छादिक अज्ञान ॥

अज्ञानकीशक्ति २—अज्ञानका सामर्थ्य ॥

१ आवरणशक्ति—अधिष्ठान के ढांपनेवाली जो अज्ञानविषै सामर्थ्य है सो ॥

२ विक्षेपशक्ति—प्रपंच औ ताकूं ज्ञानरूप विक्षेपकी जनक जो अज्ञानविषै सामर्थ्यहै सो॥

उपासना २—

१ सगुणउपासना—कारणब्रह्म (ईश्वर) औ कार्यब्रह्म (हिरण्यगर्भआदिक) की उपासना

२ निर्गुणउपासना—शुद्ध ब्रह्मकी उपासना ॥

गन्ध २—१ सुगन्ध ॥ २ दुर्गंध ॥

जाति २—अनेकधर्मि (आश्रय) नविषै अनुगत जो एकधर्म सो ॥

१ परजाति—'घट है' ऐसें सर्वत्र अनुगत जो सत्ता है। ताकूं न्यायमतमें पर (श्रेष्ठ) जाति कहते हैं ॥

२ अपरजाति—सत्तासें भिन्न घटत्व आदिक जातिकूं न्यायमत में अपर (अश्रेष्ठ) जाति कहते हैं ॥

१ व्याप्यजाति—व्यापक जाति के अन्तर्गत (न्यूनदेशवर्ती) जो जाति। सो व्याप्यजाति है। जैसें मनुष्यजातिके अन्तर्गत (एकदेश-

गत) ब्राह्मणत्व क्षत्रित्व आदिक जातियाँ हैं। ये व्याप्यजातियाँ हैं॥

२ व्यापकजाति—व्याप्यजातितैं अधिकदेशविषै स्थित जो जाति सो व्यापकजातिहै। जैसैं ब्राह्मणत्वआदिकव्याप्यजातितैं अधिक देशविषै स्थित मनुष्यत्वजाति है सो व्यापकजाति है। ये व्याप्य औ व्यापक दो भेद अपरजातिके हैं॥

निग्रह २—

१ क्रमनिग्रह—यमनियमआदिकअष्टयोगकेअङ्गोंकरि क्रमसैं जो चित्तका निरोध होवैहै। सो क्रम निग्रह है॥

२ हठनिग्रह—प्राणनिरोधरूप हठकरिके वा सांभवीआदिकमुद्रानके मध्य किसी एकमुद्राके अभ्यासकरि जो चित्त का निरोध होवैहै। सो हठनिग्रह है॥

निःश्रेयस २—मोक्ष ॥

१ अनर्थनिवृत्ति ॥ २ परमानन्द प्राप्ति ॥

परमहंस संन्यास २—

१ विविदिषासंन्यास—जिज्ञासाकरि के ज्ञानप्राप्तिअर्थ किया जो संयास सो विविदिषासंन्यास है ॥

२ विद्वत्संन्यास —ज्ञानकूं अनन्तर वासनाक्षय मनोनाश और तत्त्वज्ञानाभ्यासद्वारा जीवनमुक्ति के विलक्षण आनंदअर्थ किया जो संन्यास सो विद्वत्संन्यास है ॥

प्रपञ्च २–१ बाह्यप्रपञ्च ॥ २ आंतरप्रपञ्च ॥

प्रज्ञा २-१ स्थितप्रज्ञा ॥ २ अस्थितप्रज्ञा॥

लक्षण २—

१ स्वरूपलक्षण—सदाविद्यमान हुआ व्यावर्तक लक्षण ॥

२ तटस्थलक्षण—कदाचित् हुया व्यावर्तक
लक्षण ॥
वाक्य २—१ अवांतरवाक्य ॥ २ महावाक्य॥
वाद २-१ प्रतिबिंबवाद ॥ २ अवच्छेदवाद॥
विपरीतभावना २-१ प्रमाणगत विपरीत-
भावना ॥ २ प्रमेयगत विपरीतभावना ॥
शब्द २-वर्णरूपशब्द ॥ २ ध्वनिरूपशब्द ॥
शब्दसङ्कृति २-१ शक्तिवृत्ति ॥ लक्षणावृत्ति॥
संपत्ति २-१ दैवीसंपत्ति ॥ आसुरीसंपत्ति ॥
संशय २-१ प्रमाणगतसंशय ॥ २ प्रमेय-
गतसंशय ॥

समाधि २-१ सविकल्प ॥ २ निर्विकल्प ॥
सूक्ष्मशरीर २-१ समष्टि ॥ २ व्यष्टि ॥
स्थूलशरीर २ १ समष्टि ॥ व्यष्टि ।

॥ पदार्थ त्रिविध ॥ ३ ॥

अध्यात्मादि ३—१ इंद्रिय (अध्यात्म) ॥ २ देवता (अधिदैव)॥ ३ विषय (अधिभूत) ॥

अन्तःकरणदोष ३—

१ मलदोष—जन्मजन्मांतरों के पाप ॥

२ विक्षेपदोष—चित्तकी चंचलता ॥

३ आवरणदोष—स्वरूपका अज्ञान ॥

अर्थवाद ३—निंदाका वा स्तुतिका बोधक वाक्य ॥

१ अनुवाद—अन्यप्रमाणकरि सिद्धअर्थका बोधकवाक्य। जैसें "अग्नि हिमका भेषज है" यह वाक्य है ॥

२ गुणवाद—अन्यप्रमाणविरुद्ध विधेयअर्थका गुणद्वारा स्तावकवाक्य। जैसें प्रकाशरूप

गुणकी समताकरि स्तावक 'यूप (यज्ञका खंभ) आदित्य है' यह वाक्य है ॥

३ भूतार्थवाद—स्वार्थविषै प्रमाण हुआ लच्चणामैं विधेयार्थकी श्लाघाका बोधकवाक्य। जैसैं 'वज्रहस्त पुरंदर' यह वाक्य है ॥

अवधि ३—सीमा (हद्) ॥

१ बोधकी अवधि ॥ २ वैराग्यकी अवधि ॥ ३ उपरामकी अवधि—चित्तनिरोधरूप उपरांत (उपशम) की ॥

अवस्था ३-तीनदेह के व्यवहार के काल ॥

१ जाग्रत्अवस्था ॥ २ स्वप्नअवस्था ॥ ३ सुषुप्तिअवस्था ॥

आत्मा ३—

१ ज्ञानात्मा—बुद्धि ॥

२ महानात्मा—महत्तत्त्व ॥

३ शांतात्मा—शुद्धब्रह्म ॥

आत्मा के भेद ३—

१ मिथ्यात्मा—स्थूलसूक्ष्मसंघात ॥

२ गौणात्मा—पुत्र ॥

३ मुख्यात्मा—साक्षी (कूटस्थ) ॥

आनन्द ३—

१ ब्रह्मानन्द—समाधिविषै आविर्भूत वा सुषुप्तिगत जो बिंबभूत आनंद है सो ॥

२ विषयानन्द—जाग्रत्स्वप्नविषै विषय की प्राप्तिरूप निमित्तसैं एकाग्र भये चित्तविषै आत्मास्वरूपभूत आनंदका जो क्षणिकप्रतिबिंबहोवैहै सो ॥ याहीकूं लेशानन्द औ मात्रानन्द बी कहते हैं ॥

३ वासनानन्द—सुषुप्तितें उत्थान आदिक उदासीनदशाविषै जो आनन्द अनुभूत होवै है सो ॥

आन्ध्यादि ३-अंधताआदिक नेत्रके धर्म॥
इहां आन्ध्य (अंधता) रूप नेत्रका धर्म जो है सो बधिरतामूकताआदिक अन्यइंद्रियन के धर्मका भी सूचक है। औ मांद्य अरु पटुत्व तौ सर्वइन्द्रियनके तुल्य जानने॥

१ आन्ध्य—चक्षुकरि सर्वथा स्वविषयका अग्रहण॥
२ मांद्य—इंद्रियकरिस्वविषयका स्वल्पग्रहण
३ पटुत्व-इन्द्रियकरि स्वविषयका स्पष्टग्रहण

उद्देशादि ३—
१ उद्देश्य—नामका कीर्तन॥
२ लक्षण—असाधारणधर्म। (एकविषै वर्तनैवाला धर्म)॥
३ परीक्षा-पदकृति (अतिव्याप्तिआदिक दोषनका विचार)॥

एषणा ३—इच्छा वा वासना ॥
　१ पुत्रैषणा ॥ वित्तैषणा ॥
२ लोकैषणा—सर्वलोक मेरी स्तुति करें । कोइबी मेरी निंदा करे नहीं । ऐसी इच्छा वा परलोककी इच्छा ॥
कारण ३—कर्मके साधन ॥
　१ मन ॥ २ वाणी ॥ ३ काय ॥
कर्तव्यादि ३–
१ कर्तव्य–करनेकूं योग्य ज्ञानके साधन ॥
२ ज्ञातव्य–जाननेकूं योग्य ज्ञानका विषय (ब्रह्म अरु आत्माका एकत्व) ॥
३ प्राप्तव्य–प्राप्त करनेकुं योग्य ज्ञानका फल मोक्ष ॥
कर्म ३—१ पुण्यकर्म ॥ २ पापकर्म ॥ ३ मिश्रकर्म ॥

कर्म ३ —
१ संचितकर्म —जन्मांतरोंविषै संचय कियेकर्म
२ आगामिकर्म -वर्तमानजन्मविषैक्रियमाणकर्म
३ प्रारब्धकर्म—वर्तमानजन्म का आरंभ कर्म

कर्मादि ३—
१ कर्म —वेदविहितकर्म ।।
२ विकर्म —वेदसैं विरुद्धकर्म ।।
३ अकर्म—वेदविहित औ वेदविरुद्ध उभय-
विधकर्म का अकरण ।

कारणवाद ३—
१ आरंभवाद—जैसैं पितामहआदिक के किए
पुराणे गृहका जब नाश होवै तब तिसविषै
स्थित ईंटआदिकसामग्रीसैं फेर नवीनगृहका
आरंभ होवैहै। तैसैं कार्यरूप पृथ्वीआदिक-
के नाशताके कारण परमाणु ज्यूं के त्यूं रहते
हैं। तिनतैं फेर अन्यपृथ्वीआदिकका आरंभ

होवैहै ॥ ऐसैं न्यायमतसैं आरंभवाद मान्याहै॥ यामैं कार्य अरु कारण का भेद है ॥

२ परिणामवाद--जैसैं दुग्ध का परिणाम (रूपान्तर) दधि होवै है। तैसैं सांख्यमत मैं प्रकृतिका परिणाम जगत् है। औ उपासकोंके मतमैं ब्रह्मका परिणाम जगत् के जीव हैं॥ ऐसैं तिनोंनैं परिणामवाद मान्या है। यामैं कार्य अरु कारण का अभेद है ॥

३ विवर्तवाद-जैसैं निर्विकाररज्जु विषै रज्जु-रूप अधिष्ठानतै विषमसत्तावाला अन्यथास्वरूप सर्प होवैहै। सो रज्जुका विवर्त (कल्पित-कार्य) है ॥ तैसैं निर्विकारब्रह्मविषै अधिष्ठान ब्रह्मतैं विषमसत्तावाला अन्यथास्वरूप जगत् होवैहै ॥ सो ब्रह्मका विवर्त (कल्पितकार्य)है॥ ऐसैं वेदांतसिद्धांतमैं विवर्तवाद मान्याहै। यामैं कार्य अरु कारणका बाधकृत अभेद है ॥

काल ३—१भूतकाल ॥ २ भविष्यत्काल ॥
३ वर्तमानकाल ॥

जाग्रत् ३—
१ जाग्रत्जाग्रत्—वर्तमानजाग्रत्विषै जो स्वरूपका साक्षात्कार होवै सो ॥
२ जाग्रतस्वप्न—जाग्रत्विषै जो भूत वा भविष्य अर्थका चिंतनरूप मनोराज्य होवै है सो ॥
३ जाग्रत्सुषुप्ति—जाग्रत्विषै श्रमकरि जडीभूत वृत्ति होवै सो ॥

जीव ३—
१ पारमार्थिकजीव—साक्षी (कूटस्थ) चेतन ॥
२ व्यवहारिकजीव—साभासअंतःकरणरूपजीव
३ प्रातिभासिकजीव—साभासअंतःकरणरूप व्यावहारिकजीवमैं स्वप्नविषै अध्यस्तजीव॥
१ विश्व—जाग्रत्विषै तीन देहका अभिमानीजीव।

२ तैजस—स्वप्नविषै स्थूलदेहके अभिमानकूं छोडिके सूक्ष्म औ कारण इन दो देहका अभिमानी वही जीव ॥

३ प्राज्ञ—सुषुप्तिविषै स्थूलसूक्ष्मदेहके अभिमानकूं छोडिके एक कारणदेहका अभिमानी वही जीव ॥

ताप ३—दुःख ॥

१ अध्यात्मताप—स्थूलसूक्ष्मशरीरविषै होता जो है आधि औ व्याधिरूप दुःख । सो अध्यात्मताप है ॥

२ अधिदैवताप—देवताकरि जो शीत उष्ण अतिवृष्टि अनावृष्टि विद्युत्पात भूकंपआदिक दुःख होवैहै । सो अधिदैवताप है ॥

३ अधिभूतताप—स्वशरीरतैं भिन्न चतुर्विधभूतप्राणि (चोर व्याघ्र शत्रु आदि) नकरि होता है जो दुःख । सो अधिभूतताप है ॥

नादादि ३—

१ नाद—ॐकार वा शब्दगुण वा पराआदिक ४ वाणी ॥

२ बिंदु— ॐकार अलक्ष्यअर्थरूप तुरीयपद॥

३ कला-ॐकारकी अकारादि मात्रा परा-वाणीरूप अङ्ग (शब्द का अवयव) ॥

निवृत्ति ३ (तादात्म्यकी निवृत्ति):—

१ भ्रमजकी निवृत्ति—ज्ञानसैं भ्रांति (अविवेक) के नाशकरी भ्रमजतादात्म्यकी निवृत्ति होवै है।

२ सहजकीनिवृत्ति—सहजतादात्म्यका ज्ञानसैं बाध भयो ज्ञानीके देहपातके अनंतर नाश होवैहै।

३ कर्मजकी निवृत्ति—कर्मजतादात्म्यप्रारब्ध-भोगके अंत भये ज्ञानीकी निवृत्ति होवैहै।

पापकर्म ३—१ उत्कृष्टपापकर्म। २ मध्यम-पापकर्म। ३ सामान्यपापकर्म।

पुण्यकर्म ३—१ उत्कृष्टपुण्यकर्म । २ मध्यम पुण्यकर्म । ३ सामान्यपुण्यकर्म ।

प्रपञ्च ३—१ स्थूलप्रपञ्च । २ सूक्ष्मप्रपञ्च । ३ कारणप्रपञ्च ।

प्राणायाम ३—१ पूरक । २ कुंभक । ३ रेचक ।

प्रारब्ध ३—१ इच्छाप्रारब्ध । २ अनिच्छा प्रारब्ध । ३ परेच्छाप्रारब्ध ।

ब्रह्म ३—१ विराट् । २ हिरण्यगर्भ । ३ ईश्वर ।

मिश्रकर्म ३—१ उत्कृष्टमिश्रकर्म । २ मध्यम मिश्रकर्म । ३ सामान्यमिश्रकर्म ।

मूर्ति ३—१ ब्रह्मा । २ विष्णु । ३ शिव ।

लक्षणदोष ३—
१ अव्याप्तिदोष—लक्ष्यके एकदेशविषै लक्षण का वर्तना ॥

२ अतिव्याप्तिदोष—लक्ष्यके तांई व्यापिके अलक्ष्यविषै बी लक्षणका वर्तना ॥

३ असंभवदोष—लक्ष्यविषैलक्षणकानवर्तना।

लोक ३—१ स्वर्ग ॥ २ मृत्यु ॥ ३ पाताल ॥

वादादि ३—

१ वादः—गुरुशिष्यका संवाद ॥

२ जल्प—युक्तिप्रमाणकुशलपंडितनका परमत-खंडक स्वमतमंडक वाद ॥

३ वितंडा—मूर्खनका प्रमाणयुक्तिरहित वाद । किंवा स्वपक्षका स्थापन करीकें पर-पक्षकाहीं खंडन सो। जैसें श्रीहर्षमिश्राचार्यने खंडन ग्रंथविषै कियाहै ॥

विधिवाक्य ३—

१ अपूर्वविधिवाक्य—अलौकिकक्रियाका विधायकवाक्य ॥

२ नियमविधिवाक्य—प्राप्त दोषदर्शनविषै एकका विधायकवाक्य ॥

३ परिसंख्याविधिवाक्य—उभयपक्षविषै एकके निषेधका विधायकवाक्य ।

वेदके कांड ३—१ कर्मकांड ॥ २ उपासनाकांड ॥ ३ ज्ञानकांड ॥

शरीर ३—१ स्थूलशरीर ॥ २ सूक्ष्मशरीर ॥ ३ कारणशरीर ॥

श्रवणादि ३—१ श्रवण ॥ २ मनन ॥ ३ निदिध्यासन ॥

श्रवणादिफल ३--१ प्रमाणसंशयनाश (श्रवणफल)॥ २ प्रमेयसंशयनाश (मननफल) ॥ ३ विपर्ययनाश (निदिध्यासनफल) ॥

संबंध ३-१ संयोगसंबंध ॥ २ समवायसंबंध ॥ ३ तादात्म्यसंबंध ॥

सुषुप्ति ३—

१ सुषुप्तिजाग्रत्—सात्त्विकवृत्तिपूर्वक सुख-सुषुप्ति।

२ सुषुप्तिस्वप्न—राजसवृत्तिपूर्वक दुःखसुषुप्ति।

३ सुषुप्तिसुषुप्ति—तामसवृत्तिपूर्वकगाढसुषुप्ति।

सुषुप्त्यादि ३—१ सुषुप्ति। २ मूर्छा॥ ३ समाधि।

स्वप्न ३—

१ स्वप्नजाग्रत—सत्यअर्थका स्वप्नविषै दर्शन।

२ स्वप्नस्वप्न—स्वप्नविषै रज्जुसर्पादिभ्रांति का दर्शन।

३ स्वप्नसुषुप्ति -- दृष्टस्वप्न का अस्मरण।

हेत्वादि ३—१ हेतु। २ स्वरूप। ३ फल।

ज्ञातादि ३—१ ज्ञाता। २ ज्ञान। ३ ज्ञेय।

ज्ञानप्रतिबंधक ३—१ संशय। २ असंभावना। ३ विपरीतभावना।

ज्ञानादि ३—१ ज्ञान ॥ २ वैराग्य ॥
३ उपशम ॥

॥ पदार्थ चतुर्विंज॥ ४ ॥

अनुबंध ४—अपने ज्ञानके अनंतर पुरुषकूं ग्रन्थविषै जोडनै वाला ॥

१ अधिकारी—मलविक्षेपरूप दोषरहित औ अज्ञानरूप दोषरहित हुवा विवेकादिच्यारी साधनकरि सहित पुरुष वेदांत का अधिकारी है ॥

२ विषय—ब्रह्म अरु आत्मा की एकता। वेदांतशास्त्र का विषय (प्रतिपाद्य) है ॥

३ प्रयोजन—सर्वदुःखनकी निवृत्ति औ परमानन्द की प्राप्तिरूप मोक्ष ॥

४ संबंध—ग्रन्थका औ विषयका प्रतिपादक-प्रतिपाद्यतारूप संबंध हैं ॥

अन्तःकरण ४—
१ मन—संकल्पविकल्परूप वृत्ति ॥
२ बुद्धि—निश्चयरूप वृत्ति ॥
३ चित्त—चिंतन (स्मरण) रूप वृत्ति॥
४ अहंकार—अहंतारूप वृत्ति ॥
आर्तादिभक्त ४—
१ आर्त—अध्यात्म आदिकदुःखकरिव्याकुल ।
२ जिज्ञासु—भगवत्तत्त्वके जाननैकी इच्छावाला ॥
३ अर्थार्थी—यालोक या परलोकके भोगकी इच्छावाला ॥
४ ज्ञानी—जीवनमुक्त विद्वान् ॥
आश्रम ४—१ ब्रह्मचर्य ॥ २ गृहस्थ ॥
३ वानप्रस्थ ॥ ४ सन्यास ॥

उत्पत्त्यादिक्रिया ४—इहां क्रियाशब्दकरि क्रिया जो कर्म। ताका फल कहिये है ॥
१ उत्पत्ति—आद्यलक्षण (जन्म)। जैसें कुलाल-की क्रियाका फलरूप घट की उत्पत्ति है ॥
२ प्राप्ति—गमनरूप क्रियाका वांछित देशकी प्राप्तिरूप फल है ॥
३ विकार—अन्यरूप की प्राप्ति। जैसें पाक (रसोई) रूप क्रियाका फलरूप अन्न का विकार (पलटना) है ॥
४ संस्कार—(१) मलकी निवृत्ति औ (२) गुणकी प्राप्ति। इस भेदतें संस्कार दो प्रकार-का होवैहै ॥ (१) जैसें वस्त्र के प्रक्षालन-रूप क्रिया का फलरूप मलनिवृत्ति है सो प्रथम है औ। (२) कुसुंभमें वस्त्रकेमज्जन-रूप क्रिया का फलरूप रक्तगुण की उत्पत्ति है सो द्वितीय है ॥

चित्तनिरोधयुक्ति ४—१ अध्यात्मविद्या ॥
२ साधुसंग। ३ वासनात्याग। ४ प्राणायाम।
धर्मादि ४—च्यारीपुरुषार्थ ॥
१ धर्म—सकाम वा निष्काम जो भोग सो।
२ अर्थ—इसलोक औ परलोकविषैं जो
भोग के साधन धनादिक हैं सो ॥
३ काम—इसलोक औ परलोकका जो पुण्य सो।
४ मोक्ष—दुःखनिवृत्ति औ सुखप्राप्ति ॥
पुरुषार्थ ४—१ धर्म। २ अर्थ। ३ काम।
४ मोक्ष।
पूजापात्र ४—१ ब्रह्मनिष्ठ ॥ २ मुमुक्षु ॥
३ हरिदास। ४ स्वधर्मनिष्ठ॥
प्रमाण ४—प्रमाज्ञानका कारण प्रमाण है॥
इहां च्यारीप्रमाणोंका कथन न्यायरीतिसैं है।
१ प्रत्यक्षप्रमाण। २ अनुमान प्रमाण ॥
३ उपमानप्रमाण। ४ शब्दप्रमाण ॥

ब्रह्मविदादि ४—
१ ब्रह्मवित्—चतुर्थभूमिकाविषै आरूढज्ञानी॥
२ ब्रह्मविद्वर—पंचभूमिकाविषै आरूढज्ञानी॥
३ ब्रह्मविद्वरीयान् षष्ठभूमिकाविषै आरूढज्ञानी
· ब्रह्मविद्वरिष्ठ—सप्तमभूमिकाविषैआरूढज्ञानी

भूतग्राम ४—
१ जरायुज—मनुष्यपशुआदिक।
२ अंडज—पक्षीसर्पआदिक।
३ उद्भिज्ज—वृक्षादिक।
स्वेदज—यूकामत्कुणआदिक।

मैत्र्यादि ४—
१ मैत्री-धनवान् वा गुणकरि समान वा ईश्वरभक्त वा विषयी (कर्मी उपासक) पुरुष इनविषै "ये मेरे हैं" ऐसी बुद्धि॥
२ करुणा-दुःखी वा गुणकरि निकृष्ट वा अज्ञान वा जिज्ञासु। इन विषै दया॥

३ मुदिता—पुण्यवान् वा गुणकरि अधिक वा ईश्वर वा । मुक्त । इनविषै प्रीति ॥
४ उपेक्षा—पापिष्ठ वा अवगुण युक्त वा द्वेषी वा पामर । इनविषै रागद्वेषकरि रहिततारूप उदासीनता ॥
मोक्षद्वारपाल ४—१ शम ॥ २ संतोष ॥ ३ विचार (विवेक) ॥ ४ सत्संग ॥
योगभूमिका ४—१ वाणीलय ॥ २ मनोलय ॥ ३ बुद्धिलय ॥ ४ अहंकारलय ॥
वर्ण ४-१ ब्राह्मण ॥ २ क्षत्रिय ॥ ३ वैश्य ॥ ४ शूद्र ॥
वर्त्तमानज्ञानप्रतिबन्धनिवृत्तिहेतु ४—
१ शमादि—यह विषयासक्तिका निवर्तक है ॥
२ श्रवण—यह बुद्धिकी मंदताका निवर्तक है ॥
३ मनन—यह कुतर्कका निवर्तक है ॥
४ निदिध्यासन—यह विपरीतभावना विषै दुराग्रह होवैहै ताका निवर्तक है ॥

वर्तमानज्ञानप्रतिबन्ध ४-१ विषयासक्ति ॥ २ बुद्धिमांद्य ॥ ३ कुतर्क ॥ ४ विपर्ययासक्ति दुराग्रह ॥

विवेकादि ४-१ विवेक ॥ २ वैराग्य ॥ ३ षट्संपत्ति ॥ ४ मुमुक्षुता ॥

वेद ४-१ ऋग्वेद ॥ २ यजुर्वेद ॥ ३ सामवेद ॥ अथर्वणवेद ॥

शब्दप्रवृत्तिनिमित्त ४-१ जाति ॥ २ गुण ॥ ३ क्रिया ॥ ४ संबंध ॥

संन्यास ४-१ कुटीचकसंन्यास ॥ २ बहूदकसंन्यास ॥ ३ हंससंन्यास ॥ ४ परमहंससंन्यास ॥

समाधिविघ्न ४-१ लय ॥ २ विक्षेप ३ कषाय ॥ ४ रसास्वाद ॥

स्पर्श ४-१ शीत ॥ २ उष्ण ॥ ३ कोमल॥ ४ कठिन ॥

पदार्थ पंचविध ॥ ५ ॥

अभाव ५–नास्तिप्रतीतिका विषय ॥

१ प्रागभाव—कार्यकी उत्पत्तितैं पूर्व जो कार्य का अभाव है सो ॥

२ प्रध्वंसाभाव—नाशके अनंतर जो अभाव होवै है सो ॥

३ अन्योन्याभाव—परस्परविषै जो परस्पर-का अभाव है सो। जैसें रूपभेद । जैसें घटपट का भेद है सो ॥

४ अत्यंताभाव—तीनिकाल विषै जो अभाव है सो। जैसें वायुविषै रूप का है ॥

५ सामयिकाभाव—किसी (उठाय लेनेके) समयविषै जो भूतलादिक में घटादिक का अभाव होवैहै सो ॥

अज्ञानके भेद ५ ··· अज्ञानविषै वेदांतआचार्यन के मत रूं भेद।

१ मायाअविद्यारूपअज्ञान—केइक (विद्यारण्यस्वामी) अज्ञानकूं माया (समष्टिअज्ञानमयईश्वर की उपाधि) औ अविद्या (व्यष्टिअज्ञानमय जीवन की उपाधि) रूप मानते हैं ॥

२ ज्ञानक्रियाशक्तिरूपअज्ञान—केइक अज्ञानकूं ज्ञानशक्ति औ क्रियाशक्ति मानतेहैं।

३ विक्षेपआवरणरूपअज्ञान—केइक अज्ञानकूं आवरणरूप अरु विक्षेप (की हेतुशक्ति) रूप मानते हैं ॥

४ समष्टिव्यष्टिरूपअज्ञान—केइक अज्ञान कूं समष्टि (ईश्वर की उपाधि) औ व्यष्टि (जीवकी उपाधि) रूप मानते हैं ॥

५ कारणरूपअज्ञान—केइक अज्ञानकूं जगत्‌का उपादानकारण मूलप्रकृतिमय ईश्वरकी उपाधिरूप मानतेहैं औ तिस पक्ष मैं कार्य (अंतःकरण) उपाधिवाला जीव मान्याहै।

उपवायु ५—

१ नाग—उद्‌गार का हेतु वायु ॥
२ कूर्म—निमेषउन्मेष का हेतु वायु ॥
३ कृकल—छींकका हेतु वायु ॥
४ देवदत्त—जमुहाई का हेतु वायु ॥
५ धनंजय—देहपुष्टि का हेतु वायु ॥

कर्म ५—

१ नित्यकर्म—सदा जाका विधान होवैहै ऐसा कर्म (स्नानसंध्याआदिक) ॥

२ नैमित्तिककर्म—किसी निमित्त कूं पायके जाका विधान होवैहै ऐसा कर्म (ग्रहण-श्राद्ध आदिक) ॥

३ काम्यकर्म—कामना के लिये विधान किया कर्म (यज्ञयागादिक) ॥

४ प्रायश्चित्तकर्म—पाप की निवृत्ति के लिये विधान किया कर्म ॥

५ निषिद्धकर्म—नहीं करने के लिये कथन किया कर्म (ब्रह्महत्यादिक) ॥

कर्मइंद्रिय ५—१ वाक् ॥ २ पाणि ३ पाद ॥ ४ उपस्थ ॥ ५ गुद ॥

कोश ५—१ अन्नमयकोश। २ प्राणमयकोष। ३ मनोमतकोश। ४ विज्ञानमयकोश। ५ आनन्दमयकोश।

क्लेश

१ अविद्या—

(१) दुःखविषै सुखबुद्धि॥

(२) अनात्माविषै आत्मबुद्धि॥

(३) अनित्यविषै नित्यबुद्धि॥

(४) अशुचिविषै शुचिबुद्धि॥

यह च्यारीप्रकारकी कार्य अविद्या॥

२ अस्मिता—साक्षी (आत्मा) औ बुद्धिकी एकताका ज्ञान (सामान्यअहंकार)।

३ राग—दृढआसक्ति (आरूढप्रीति)

४ द्वेष—क्रोध॥

५ अभिनिवेश—मरणका भय॥

ख्याति ५–प्रतीति औ कथनरूप व्यवहार।
१ असत्ख्याति–शून्यवादी। असत् (निःस्वरूप) सर्प की रज्जुदेशविषै प्रतीति औ कथन मानतेहैं सो।
२ आत्मख्याति–क्षणिकविज्ञानवादी। क्षणिक बुद्धिरूप आत्माकी सर्परूपसैं प्रतीति औ कथन मानतेहैं सो।
३ अन्यथाख्याति- नैयायिक। वंबी (राफडा) आदिक दूरदेशविषैं स्थित सर्पकी दोषके बलसैं रज्जुदेशविषै प्रतीत औ कथन मानतेहैं सो। अथवा रज्जुरूपज्ञेयका सर्परूपसैं ज्ञान मानतेहै। सो।
४ अख्यातिख्याति—सांख्यप्रभाकर मतके अनुसारी। "यह सर्प है" "यह" अंश तो रज्जुके इदंपनैका प्रत्यक्षज्ञान है औ "सर्प" यह पूर्व देखे सर्प का स्मृति-

ज्ञान है । ये दोज्ञान हैं । तिनका दोष के बलसैं अख्याति कहिये अविवेक (भेद· प्रतीतिका अभाव) होवैहै । ऐसैं मानतेहैं ॥

५ अनिर्वचनीयख्याति—वेदांतसिद्धांतमैंः— रज्जुविषै ताकी अविद्याकरि अनिर्वचनीय (सत्असत्सैं विलक्षण) सर्प औ ताका ज्ञान उपजे है । ताकी ख्याति कहिये प्रतीति औ कथन होवै है ॥ ऐसैं मानते· हैं । सो ॥

जीवनमुक्तिके प्रयोजन ५—यद्यपि जीवन्· मुक्ति तो ज्ञानीकूं सिद्ध है । तथापि इहां जीवन्मुक्ति शब्दकरि जीवन्मुक्तिके विलक्षण· आनंदकी अवस्था (पञ्चमआदिकभूमिका) का ग्रहण है । ताके प्रयोजन कहिये फल· पांच प्रकार के हैं ॥

१ ज्ञानरक्षा—यद्यपि एकवार उपजे दृढ़-बोधका नाश नहीं होवैहै। यातैं ज्ञानरक्षा आपहीं सिद्ध है। तथापि इहां निरंतर ब्रह्माकारवृत्तिकी स्थिति। ज्ञानरक्षाशब्द का अर्थ है।

२ तप—मन औ इन्द्रियन की एकाग्रता वा शरीर वाणी औ मनका संयम ॥

३ विसंवादाभाव—जल्प औ वितंडवाद का अभाव ॥

४ दुःखनिवृत्ति—दृष्ट (प्रत्यक्ष) दुःख की निवृत्ति ॥

५ सुखप्राप्ति निरावरण परिपूर्ण औ प्रवृत्ति-
ार जीवन्मुक्ति के विलक्षण आनंदकी प्राप्ति

दृष्टांत ५—जगत्के मिथ्यापनैंविषै दृष्टांत पंचविध हैं।

१ शुक्तिविषै रजतका दृष्टांत ॥
२ रज्जुविषै सर्पका दृष्टांत ॥
३ स्थाणुविषै पुरुषका दृष्टांत ॥
४ गंगनविषै नीलता का दृष्टांत ॥
५ मरीचिकाविषै जलका दृष्टांत-मध्याह्न कालमैं मरुभूमि(ऊषरभूमि विषैप्रतिबिंबित-सूर्यके किरण मरीचिका कहियेहैं। तिनविषै जो जल भासताहै। ताकूं मृगजल औ जांजूजल कहतेहैं। सो ॥

नियम ५—

१ शौच। २ संतोष। ३ तप।
४ स्वाध्याय—स्वशाखाके वेदभागका वा गीताआदिका जो नित्य पाठ करना सो।
५ ईश्वरप्रणिधान—ॐकारादिद्वारा[illegible]

प्रलय ५—

१ नित्यप्रलय—क्षणक्षणविषै सर्वकार्यनका जो दीपज्योतिकी न्यांई नाश होवैहै सो। वा सुषुप्ति ॥

२ नैमित्तिकप्रलय—ब्रह्माकी रात्रिरूप निमित्तकरि होता जो है भूरआदि नीचेके तीन-लोकनका नाश सो ॥

३ दिनप्रलय—ब्रह्माके दिनमैं चतुर्दशमन्वंतर होतेहैं। तिस प्रत्येकका जो नाश। सो ॥ याहीकूं अवांतरप्रलय औ मन्वंतरप्रलय बी कहते हैं॥ कोई तो याहीकूं नैमित्तिकप्रलय कहतेहैं।

४ महाप्रलय—ब्रह्माके शतवर्षके अनन्तर जो होता है ब्रह्मदेवसहित अकाशादिसर्वभूतनका नाश सो।

५ आत्यंतिकप्रलय—ज्ञानकरि जो होता है कारणसहित सकलजगत्का बाध (अत्यंतनिवृत्ति) सो ॥

प्राणादि ५–१ प्राण ॥ २ अपान ॥ ३ व्यान॥ ४ उदान ॥ ५ समान ॥

भेद ५–१ जीवईश्वरका भेद ॥ २ जीवजीवका भेद ॥ ३ जीवजड़का भेद ॥ ४ ईशजडका भेद ॥ ५ जडजड का भेद ॥

भ्रम ५–(देखो षष्ठकलाविषै) १ भेदभ्रम॥ २ कर्तृत्वभ्रम ॥ ३ संगभ्रम ॥ ४ विकारभ्रम ५ सत्यत्वभ्रम ।

भ्रमनिवर्तकदृष्टांत ५—(देखो षष्ठकलाविषै) १ बिंबप्रतिबिंब ॥ २ लोहितस्फटिक। ३ घटाकाश । ४ रज्जुसर्प ॥ ५ कनककुण्डल।

महायज्ञ ५–१ देव ॥ २ ऋषि ॥ ३ पितर ४ मनुष्य ॥ ५ भूतयज्ञ ॥

यम ५—
१ अहिंसा ॥ २ सत्य ॥ ब्रह्मचर्य ॥
४ अपरिग्रह—निर्वाहसैं अधिकधनका असंग्रह
५ अस्तेय—चोरीका अभाव ॥
योगभूमिका ५—
१ क्षेप—रागद्वेषादिकरि चित्त की चंचलता ॥
२ विक्षेप—बहिर्मुखचित्तकी जो कदाचित् ध्यानयुक्तता ॥ सो क्षेपत विशेष विक्षेप है ॥
३ मूढ़—निद्रातंद्रादियुक्तता ॥
४ एकाग्र ॥ ५ निरोध ।
वचनादि ५—१ वचन ॥ २ आदान ॥
३ गमन ॥ ४ रति ॥ ५ मलत्याग ॥
शब्दादि ५—१ शब्द ॥ २ स्पर्श ॥ ३ रूप
४ रस ॥ ५ गन्ध ॥
स्थूलभूत ५—१ आकाश ॥ २ वायु ॥
३ तेज ॥ ४ जल ॥ ५ पृथ्वी ।

हेत्वाभास ५—हेतुके लक्षण (साध्यकी साधकता)से रहित हुआ हेतुकी न्यांईभासै। ऐसा जो दुष्टहेतु सो। वा हेतुका जो आभास। (दोप) सो

१ सव्यभिचार—साध्य (अग्नि) के आश्रय (पर्वत) औ ताके अभावके आश्रय (ह्द) विषै वर्तनेवाला हेतु। सव्यभिचार है। जैसैं पर्वत अग्निमान् है "प्रमेय हानैतैं" यह हेतु है। याहीकूं अनैकांतिहेतु बी कहते हैं।

२ विरुद्ध—साध्यके अभावकरि व्याप्त हेतु विरुद्ध है जैसैं "शब्द नित्य है कृतक (क्रियाजन्म) होनैतैं" यह हेतु है सो साध्य नित्यता) के अभावरूप अनित्यता करि व्याप्त है। काहेतैं जो कृतक है सो अनित्य है। घटवत्। इस नियमतैं।

३ सत्प्रतिपक्ष—जाके साध्यके अभावका

साधक अन्यहेतु होवैसो । जैसें शब्द नित्य है। "श्रवण होनेतें" इस हेतुके साध्य (अनित्य है "कार्य होनेतें" घटकी न्यांई।यह हेतु है। जो कार्य होवै सो अनित्यहींहोवैहै।

४ असिद्ध - शब्द गुण है । "चाक्षुप होनेत" रूपकी न्यांई ॥ इहां चक्षुपत्वरूप हेतुका स्वरूप शब्दरूप पक्षविषै नहीं है । काहेतें शब्दकूं श्रवणजन्य ज्ञानका विषय होनेतें

५ बाधित —जाकूं साध्यका अभाव अन्य प्रमाणकरि निश्चित होवै सो । जैसें अग्नि उष्ण नहीं है "द्रव्य (वस्तु) होनेतें" । इस हेतुकं साध्य (अनुष्णता) के अभाव (उष्णता) का ग्रहण त्वकइंद्रियकरि होवैहै ।

ज्ञानइंद्रिय ५—१ श्रोत्र ॥ २ त्वक् ॥ ३ चक्षु ॥ ४ जिह्वा ॥ ५ घ्राण ॥

॥ पदार्थ षड्विध ॥ ६ ॥

अजिह्वत्वादि ६—यति (संन्यासी) के धर्म विशेष ॥

१ अजिह्वत्व— रसविषयकी आसक्तिरहितता
२ नपुंसकत्व —कुमारी । किशोरी (१६ वर्षकी) अरु वृद्धास्त्रीविषै समता (निर्विकारिता) रूप ॥
३ पंगुत्व--एकदिनमैंयोजनातें अधिकअगमन
४ अंधत्व—एकधनुष पर्यंतत अधिक दृष्टिका अप्रसरण ।
५ बधिरत्व—व्यर्थालापका अश्रवण ॥
६ मुग्धत्व—व्यवहारविषै शून्यता (मूढता)॥

अनादिपदार्थ ६— उत्पत्तिरहित पदार्थ ॥
१ जीव ॥ २ ईश ॥ ३ शुद्धचेतन ॥ ४ अविद्या ॥ ५ चेतन अविद्यासम्बन्ध ॥ ६ तिनका भेद ॥

अरिवर्ग ६—परलोकके विरोधी आंतर (भीतरस्थिति) शत्रुनका समूह ॥
१ काम—प्राप्तवस्तुकी भोगकी इच्छा ॥
२ क्रोध—द्वेष ॥
३ लोभ—अप्राप्त वस्तुकी प्राप्तिकी इच्छा ॥
४ मोह—आत्माअनात्माका वा कार्य (शुभ) अकार्य (अशुभ) का अविवेक ॥
५ मद—गर्व (अहंकार) ॥
६ मत्सर—परके उत्कर्षका असहन ॥
अवस्था ६—स्थूलदेहके काल ॥
१ शिशु—एकवर्षके देहका काल ॥
२ कौमार—पांचवर्षके देह का काल ॥
३ पौगंड—पट्सैं दशवर्षके देहका काल ॥
४ किशोर—एकादशसैंपंचदशवर्षके देहकाकाल
५ यौवन—षोडशमैं चालीसवर्षके देहका काल
६ जरा—चालीससैं ऊपरके देहका काल ॥

ईश्वरके भग ६—१ समग्रऐश्वर्य। २ समग्र
धर्म । ३ समग्रयश । ४ समग्रश्री ॥
५ समग्रज्ञान ॥ समग्रवैराग्य ॥

ईश्वरकेज्ञान ६—
१ उत्पत्ति । २ प्रलय। ३ गति ।
४ आगति—इस लोकविषैं जीवका आगमन·
रूप आगति है ताका ज्ञान ।
५ विद्या । ६ अविद्या ।

ऊर्मि ६—संसाररूप सागरकी लहरियां।
१ जन्म । २ मरण । ३ क्षुधा । ४ तृषा ।
५ हर्ष । ६ शोक ।

कर्म ६—नित्यकर्म ॥
१ स्नान । २ जप । ३ होम ।
४ अर्चन—देवपूजन ।

५ आतिथ्य—भोजनके समय आये अभ्यागतके अर्थ अन्नदान ॥
६ वैश्वदेव—अग्निविषै हुतद्रव्यका होम ॥
कौशिक ८—अन्नमयकोश (देह) विषै होनैवाले पदार्थ ॥
१ त्वक् । २ मांस । ३ रुधिर । ४ मेद । ५ मज्जा । ६ अस्थि ।
प्रमाण ६—
१ प्रत्यक्षप्रमाण—प्रत्यक्षप्रमाका जो करण सो प्रत्यक्षप्रमाण है । ऐसैं श्रोत्रआदिक पांचज्ञानेंद्रिय हैं ॥
२ अनुमानप्रमाण—अनुमितिप्रमाणका करण जो लिंगका ज्ञान सो अनुमानप्रमाण है । जैसैं पर्वतविषै अग्निके ज्ञानका हेतु धूमरूप लिंगका ज्ञान है ॥

३ उपमानप्रमाण—उपमितिप्रमाका करण जो सादृश्यका ज्ञान सो उपमानप्रमाण है। जैसें गवय (रोझ) में गौके सादृश्यका ज्ञान है ॥

४ शब्दप्रमाण—शाब्दीप्रमाका करण जो लौकिकवैदिकशब्द। सो ॥

५ अर्थापत्तिप्रमाण—अर्थापत्तिप्रमाका करण जो उपपाद्यका ज्ञान। सो अर्थापत्तिप्रमाण है ॥ जैसें दिनमें अभोजीस्थूलपुरुषके रात्रिमें भोजनके ज्ञानरूप अर्थापत्तिप्रमाका हेतु स्थूलता (उपपाद्य) का ज्ञान है ॥

६ अनुपलब्धिप्रमाण—अभावप्रमाका करण जो पदार्थकी अप्रतीति। सो अनुपलब्धि-प्रमाण है। जैसें गृहमें घटके अभावके ज्ञानकी हेतु घटकी अप्रतीति है ॥

भ्रम ६—१ कुल। २ गोत्र। ३ जाति।
४ वर्ण। ५ आश्रम। ६ नाम।
रस ६—१ मधुरस। २ आम्लरस॥
३ लवणरस। ४ कटुकरस। ५ कषायरस।
६ तिक्तरस।
लिंग ६—वेदवाक्यके तात्पर्यके निश्चायकलिंग।
१ उपक्रमउपसंहार—आदिअंतकीएकरूपता।
२ अभ्यास—वारंवार पठन।
३ अपूर्वता—अलौकिकता।
४ फल—मोक्ष।
५ अर्थवाद—स्तुति।
६ उपपत्ति—अनुकूलदृष्टांत।
विकार ६—१ जन्म।
२ अस्तिता—पूर्व अविद्यमानका होना।
३ वृद्धि। ४ विपरिणाम। ५ अपक्षय।
६ विनाश।

वेदअङ्ग६—१ शिक्षा। २ कल्प। ३ व्याकरण। ४ निरुक्त। ५ छंद। ६ ज्योतिष॥

शमादि ६—१ शम। २ दम। ३ उपरति। ४ तितिक्षा। ५ श्रद्धा ६ समाधान।

शास्त्र६—१ सांख्यशास्त्र। २ योगशास्त्र। ३ न्यायशास्त्र। ४ वैशेषिकशास्त्र। ५ पूर्वमीमांसाशास्त्र। ६ उत्तरमीमांसाशास्त्र।

समाधि ६—१ बाह्यदृश्यानुविद्धसमाधि। २ आंतरदृश्यानुविद्धसमाधि। ३ बाह्यशब्दानुविद्धसमाधि। ४ आंतरशब्दानुविद्धसमाधि। ५ बाह्यनिर्विकल्पसमाधि। ६ आंतरनिर्विकल्पसमाधि।

सूत्र ६—१जैमिनीयसूत्र। २ आश्वलायनसूत्र। ३ अपस्तंबसूत्र। ४ बौधायनसूत्र। ५ कात्यायनसूत्र। ६ वैखानसीयसूत्र।

॥ पदार्थ सप्तविध ॥ ७ ॥

अतलादि ७—१ अतल ॥ २ वितल ॥ ३ सुतल ॥ ४ तलातल ॥ ५ रसातल ॥ ६ महातल ॥ ७ पाताल ॥

अवस्था—७ चिदाभासकी क्रमतैं तीन बंधकी औ च्यारी मोक्षकी हेतु दशा ॥

१ अज्ञान-"नहिं जानता हूं" इस व्यवहार-का हेतु जो आवरणविक्षेपहेतुशक्तिवाला अनादि अनिर्वचनीयभावरूप पदार्थ सो।

२ आवरण—"नहीं है। नहीं भासता है" इस व्यवहारका हेतु अज्ञानका कार्य ॥

३ विक्षेप—धर्मसहितदेहादिप्रपंच औ ताका ज्ञान ॥

४ परोक्षज्ञान ॥ ५ अपरोक्षज्ञान ॥

६ शोकनाश—विक्षेपनाश (भ्रांतिनाश) ॥

७ तृप्ति—ज्ञानजनित हर्ष ॥

चेतन ७—

१ ईश्वरचेतन—मायाविशिष्ट चेतन ।

२ जीवचेतन—अविद्याविशिष्ट चेतन ।

३ शुद्धचेतन—निरुपाधिक चेतन ।

४ प्रमाताचेतन—प्रमाता जो अंतःकरण तिसकरि अवच्छिन्नचेतन । प्रमाताचेतन है ।

५ प्रमाणचेतन—इंद्रियद्वारा शरीरसैं बाहिर निकसिके घटादिविषयपर्यंत पहुँची जो वृत्ति । सो प्रमाण है । तिसकरि अवच्छिन्नचेतन । प्रमाणचेतन है ।

६ प्रमेयचेतन—प्रमेय जो घटादिविषय तिसकरि अवच्छिन्न (अन्योंसे भिन्न किया) चेतन । प्रमेयचेतन है ।

७ प्रमाचेतन—घटादिविषयाकार भई जो वृत्ति सो प्रमा है तिसकरि अवच्छिन्न चेतन वा तिसविषै प्रतिबिंबित चेतन प्रमाचेतन है । याहीकूं प्रमितिचेतन औ फलचेतन भी कहतेहैं ।

द्रव्यादिपदार्थ ७—नैयायिकमतमैं जे द्रव्य-आदिसप्तपदार्थ मानेहैं। वे।

१ द्रव्य—न्यायमतमैं [१] पृथ्वी (२) जल (३) तेज (४) वायु (५) आकाश (६) काल (७) दिशा (८) आत्मा (९) मन। ये नव द्रव्य (गुणनके आश्रयरूप पदार्थ) मानेहैं। वे॥

२ गुण—न्यायमतमैं रूपसैं आदिलेकेसंस्कार पर्यंत २४ गुण मानेहैं। वे।

३ कर्म—न्यायमतमैं (१) उत्क्षेपण (ऊंचे फेंकना) (२) अपक्षेपण (नीचे फेंकना) (३) आकुंचन (४) प्रसारण औ (५) गमन। ये पंचविधकर्म मानेहैं ॥

४ सामान्य—न्यायमतमैं पर (सत्ता) औ अपर (घटत्वादिक) इस भेदतैं द्विविध त मानीहै। सो।

५ समवाय—वेदांतमतमैं जहां जहां तादात्म्यसंबंध मान्याहै तहां तहां न्यायमतमैं संबंधविशेष (नित्यसंबंध) मान्याहै। सो।
६ अभाव (१) प्रागभाव (२) प्रध्वंसाभाव (३) अन्योन्याभाव (४) अत्यंताभाव औ (५) सामयिकाभाव। यह पंचविध नास्तिप्रतीतिके विषयरूप पदार्थ।
७ विशेष—न्यायमतमैं जे परमाणुनके मध्यगत अनंतअवकाशरूप पदार्थ मानैहैं। वे।

धातु ७—

१ रस—सूक्ष्म (पुण्यपाप)। मध्यम (अन्नकासार) औ स्थूल (मल) भेदतें तीनप्रकारके जो भुक्त अन्नके विभाग होवैहैं। तिनमैंसैं मध्यमविभाग है। सो।
२ रुधिर। ३ मांस।
४ मेद—श्वेतमांस (चर्बी)।

५ मज्जा — अस्थिगत सचिक्कणपदार्थ ।
६ अस्थि । ७ रेत ।
भूरादिलोक ७–१ भूर्लोक । २ भुवर्लोक ।
३ स्वर्लोक । ४ महर्लोक । ५ जनलोक ।
६ तपलोक । ७ सत्यलोक ।
मौनादि ७—१ मौन । २ योगासन ।
३ योग । ४ तितिक्षा । ५ एकांतशीलता ।
६ निःस्पृहता । ७ समता ।
रूप ७—१ शुक्ल । २ कृष्ण । ३ पीत ।
४ रक्त । ५ हरित । ६ कपिश । ७ चित्र ।
व्यसन ७–१ तन । २ मन । ३ क्रोध । ४ विषय ।
५ धन । ६ राज्य । ७ सेवकव्यसन ।
ज्ञानभूमिका ७–(देखो या ग्रंथकी त्रयोदश-
कलाविषै) १ शुभेच्छा । २ सुविचारणा ।
३ तनुमानसा । ४ सत्त्वापत्ति । ५ असं-
सक्ति । ६ पदार्थाभाविनी । ७ तुरीयगा ।

॥ पदार्थ अष्टविध ॥ ८ ॥

पाश ८—१ दया । २ शङ्का । ३ भय । ४ लज्जा । ५ निंदा । ६ कुल । ७ शील । ८ धन ॥

पुरी ८—१ ज्ञानेंद्रियपंचक । २ कर्मेंद्रियपंचक । ३ अंतःकरणचतुष्टय । ४ प्राणादिपंचक । ५ भूतपंचक । काम । ७ त्रिविधकर्म । ८ वासना ।

प्रकृति ८—१ पृथ्वी । २ जल । ३ अग्नि । ४ वायु । आकाश ।

६ मन इहां मनशब्दकरि समष्टि मनरूप अहंकारका ग्रहण है ।

७ बुद्धि—इहां बुद्धिशब्दकरि समष्टिबुद्धिरूप महत्तत्त्वका ग्रहण है ।

८ अहङ्कार—इहां अहङ्कारशब्दकरि महत्तत्त्वतैं पूर्व शुद्ध अहङ्कारके कारणअज्ञानरूप मूल प्रकृतिका ग्रहण है।

ब्रह्मचर्यके अङ्ग ८—

१ स्त्रीका दर्शन ॥२॥ स्पर्शन ।
केलिः—चोपड आदिकक्रीडा
(खेल) ।
४ कीर्तन । ५ गुह्यभाषण ।
६ संकल्प—चिंतन (स्मरण)
७ निश्चय । ८ इनका त्याग ।

॥ इन आठमैथुनसैं विपरीत ॥

मद ८—१ कुलमद । २ शीलमद । ३ धनमद । ४ रूपमद । ५ यौवनमद । ६ विद्यामद । ७ तपमद । ८ राज्यमद ।

मूर्तिमद—

१ पृथ्वीमद-अस्थिमांसादिपृथ्वीके तत्त्वनका अभिमान।

२ जलमद-शुक्रशोणितआदिक जलके तत्त्व-नका अभिमान।

३ तेजमद-क्षुधाआदिकतेजतत्त्वनकी अधिकता

४ पवनमद—चलन (विदेशगमन) धावन आदिक वायुके तत्त्वोंकरि युक्तता।

५ आकाशमद—कामक्रोधादिक आकाशके तत्त्वोंकरि युक्तता।

६ चंद्रमद—शीतलतारूप चंद्र के गुणकरि युक्त होना।

७ सूर्यमद—संताप (क्रोधादि) रूप सूर्य के गुणकरि युक्त होना।

८ आत्ममद-विद्याधनकुलआदिक आत्मा के संबंधिन का अभिमान

शब्दशक्तिग्रहणहेतु ८—१ व्याकरण ॥
२ उपमान ॥ ३ कोष ॥ ४ आप्तवाक्य ॥
५ वृद्धव्यवहार । ६ वाक्यशेष ७ विवरण।
८ सिद्धपदकी सन्निधि ॥

समाधिके अङ्ग ८—१ यम । २ नियम ।
३ आसन । ४ प्राणायाम । ५ प्रत्याहार।
६ धारणा । ७ ध्यान । ८ सविकल्पसमाधि।

॥ पदार्थ नवविध ॥ ९ ॥

तत्त्व ९—किसी महात्मा के मत में लिंगदेहके नवतत्त्व माने हैं वे ॥
१ श्रोत्र । २ त्वक् । ३ चक्षु । ४ जिह्वा।
५ घ्राण । ६ मन । ७ बुद्धि । ८ चित्त ॥
९ अहङ्कार ॥

संसार ९—१ ज्ञाता । २ ज्ञान । ३ ज्ञेय ॥
४ भोक्ता । ५ भोग्य । ६ भोग ॥ ७
कर्ता । ८ करण । ९ क्रिया ।

॥ पदार्थ दशविध ॥१०॥

नाडिका औ देवता १०—

इडा (चन्द्र) वामनासिकागत चंद्रनाडी । हरि देवता ॥

२ पिंगला (सूर्य) दक्षिणनासिकागत सूर्य-नाडी । ब्रह्मा देवता ।

३ सुषुम्णा (मध्यमा) नासिकाके मध्यगत-नाडी । रुद्र देवता ॥

४ गांधारी (दक्षिणनेत्र) इन्द्र ।

५ हस्तिजिह्वा (वामनेत्र) वरुण ॥

६ पूर्षा (दक्षिणकर्ण) ईश्वर ॥

७ यशस्विनी (वामकर्ण) ब्रह्मा ॥

८ कुहू (गुदा) पृथिवी ॥

९ अलंबुषा (मेढ़) सूर्य ॥

१० शंखिनी (नाभि) चन्द्र ॥

श्रृङ्गारादिरस १०–१ श्रृङ्गाररस ॥ २ वीर-
रस । ३ करुणारस ॥ ४ ॥ अद्भुतरस ॥
५ हास्यरस । ६ भयानकरस । ७ वीभत्स
रस । ८ रौद्ररस । ९ शांतिरस । १०
प्रेमभक्ति वा ज्ञानरस ॥

। पदार्थ एकादशविध ॥११॥

ज्ञानसाधन ११—
१ विवेक । २ वैराग्य । ३ षट्संपत्ति ।
४ मुमुक्षुता ॥
५ गुरुपसत्ति—विधिपूर्वक गुरु के शरण
जना ॥
६ श्रवण ॥ ७ तत्त्वज्ञानाभ्यास ॥ ८
मनन ॥ ९ निदिध्यासन ॥
मनानाश—इहां मनशब्दकरि रजतमसें
सत्त्वगुण का तिरस्काररूप मनका स्थूलभाव

कहिये है । ताका नाश कहिये ब्रह्माभ्यासकी प्रबलतासैं रजतम के तिरस्कारकरि जो सत्वगुण का आविर्भाव होवै है । सो ॥ ११ वासनाक्षय ॥

॥ पदार्थ द्वादशविधि ॥१२॥

अनात्मा के धर्म १२—

१ अनित्य ॥ २ विनाशी ॥ ३ अशुद्ध ॥ ४ नाना ॥ ५ क्षेत्र ॥ ६ आश्रित ॥ ७ विकारि ॥ ८ परप्रकाश्य॥ ९ हेतुमान्॥ १० व्याप्य—परिच्छिन्न (देशकालवस्तु का परिच्छेदवाला)

११ संगी ॥ १२ आवृत ॥

आत्मा के धर्म १२—

१ नित्यः—उत्पत्ति अरु नाशतैं रहित ॥ अव्यय—घटनैबढ़नैसैं रहित ॥

३ शुद्धः—मायाअविद्यारूप मलरहित ॥

४ एकः—सजातीयभेदरहित ॥

५ क्षेत्रज्ञः—शरीररूप क्षेत्र का ज्ञाता ॥

६ आश्रयः—अधिष्ठान।

७ अविक्रियः—अविकारी।

८ स्वप्रकाशः—अपने प्रकाशविषै अन्य (स्वपर) प्रकाशकी अपेक्षासैं रहित हुया सर्वका प्रकाशक ॥

९ हेतुः—जाले के कारण उर्णनाभिकी न्यांई औ नख अरु रोम (केश) नके कारण पुरुषकी न्यांई जगत् का अभिन्ननिमित्त (विवर्त) उपादन कारण है ॥

१० व्यापकः—अपरिच्छिन्न (परिपूर्ण) ॥

११ असंगी—सजातीय विजातीय औ संबंध रहित ॥

१२ अनावृतः—सर्वथा आवरणतैं रहित ॥

ब्राह्मण के व्रत १२—

१ ज्ञान। २ सत्य। ३ शम। ४ दम।

५ श्रुत—शास्त्राभ्यास।

६ अमात्सर्य—परके उत्कर्ष का असहनरूप जो मत्सर तिसतैं रहितपना।

७ लज्जा। ८ तितिक्षा।

९ अनसूया—गुणों के विषै दोष का आरोपरूप असूयासैं रहितता।

१० यज्ञ। ११ दान।

१२ धैर्य—काम औ क्रोध के वेगका रोकना

महत्ताहेतुधर्म १२-१ धनाढ्यता।

२ अभिजन—कुटुम्ब। ३ रूप। ४ तप।

५ श्रुत—शास्त्राभ्यास॥

६ ओज—इन्द्रियन का तेज॥

७ तेज। ८ प्रभाव। ९ बल।

१० पौरुष। ११ बुद्धि। १२ योग॥

॥ पदार्थ त्रयोदशविध ॥ १३

भागवतधर्म १३-भगवत्‌भक्तनके धर्म ।

१ सकामकर्मके फलका विपरीत दर्शन ।

२ धनगृहपुत्रादिविषै दुःखबुद्धि औ चलबुद्धि

३ परलोकविषै नश्वरबुद्धि ।

४ शब्दब्रह्म औ परब्रह्मविषै कुशलगुरुप्रति गमन ।

५ गुरुविषै ईश्वरबुद्धि औ निष्कपटसेवा ।

६ परमेश्वरविषै सर्व कर्म समर्पण ।

७ भक्तिवैराग्यसहित स्वरूपानुभव। साधुसंग

८ शौच । तप । तितिक्षा । मौन ।

९ स्वाध्याय । आर्जव (सरलस्वभाव) ब्रह्मचर्य अहिंसा औ द्वंद्वसमत्व (शीतउष्ण आदिक द्वंद्वधर्मके सहनका स्वभाव) ।

१० सर्वत्रआत्मारूप ईश्वरका दर्शन ।

११ कैवल्य (एकाकी रहना)। अनिकेत

गृह न बांधना)। एकांत (विविक्त) चीरवस्त्र। संतोष।

१२ सर्वभूतनविषै आत्माके भगवद्भावका दर्शन औ भगवद्रूप आत्माविषै सर्वभूतनका दर्शन।

१३ जन्मकर्म वर्णाश्रमादिकरि देहविषै निरभिमान औ स्वपरबुद्धिका अभाव।

॥ पदार्थ चतुर्दशविधि। १४ ॥

त्रिपुटी १४—

ज्ञानेन्द्रियनकी त्रिपुटी।

इंद्रिय	देवता	विषय
अध्यात्म	अधिदैव	अधिभूत
१ श्रोत्र।	दिशा।	शब्द।
२ त्वचा।	वायु।	स्पर्श।
३ चक्षु।	सूर्य।	रूप।
४ जिह्वा।	वरुण।	रस।
५ घ्राण।	अश्विनीकुमार	गंध

कर्मेन्द्रियनकी त्रिपुटी ॥

६ वाक् । अग्नि । वचन (क्रिया) ।
७ हस्त । चंद्र । लेनादेना ।
८ पाद । वामनजी । गमन ।
९ उपस्थ । प्रजापति । रतिभोग ।
१० गुद । यम । मलत्याग ।

अंतःकरणकी त्रिपुटी ।

११ मन । चंद्रमा । संकल्पविकल्प ।
१२ बुद्धि । ब्रह्मा । निश्चय ।
१३ चित्त । वासुदेव । चिंतन ।
१४ अहङ्कार । रुद्र । अहंपना ।

॥ पदार्थ पंचदशविध ॥ १५ ॥

मायाके नाम १५—१ माया । २ अविद्या । ३ प्रकृति । ४ शक्ति । ५ सत्या । ६ मूला । ७ तूला । ८ योनि । ९ अव्यक्त । १० अव्याकृत । ११ अजा । १२ अज्ञान ।

१३ तमः। १४ तुच्छा। १५ अनिर्वचनीया।

पदार्थ षोडशविधि ॥ १६ ॥

कला–१ हिरण्यगर्भ । २ श्रद्धा। ३ आकाश। ४ वायु। ५ तेज। ६ जल। ७ पृथ्वी। ८ दशेंद्रिय। ९ मन। १० अन्न। ११ बल। १२ तप। १३ मन्त्र। १४ कर्म। १५ लोक। १६ नाम।

इति श्रीविचारचन्द्रोदय वेदांतपदार्थ-संज्ञावर्णननामिका षोडशीकला—द्वितीय-विभागः समाप्तः।

॥ संस्कृत दोहा ॥

श्रीविचारचंद्रोदयं शुद्धां धियं समाप्य।
विचार्येति परानंदं तत्त्वज्ञानमवाप्य ॥१॥

१ पूर्वमीमांसा	स्वरूपसे अनादि अनन्त प्रवाहरूप संयोगवियोगवान्	जीव अदृष्ट औ परमाणु	०	जड़चेतनात्मक विभु नाना कर्ता भोक्ता
२ उत्तरमीमांसा (वेदांत)	नामरूपक्रियात्मक माया का परिणाम चेतन का विवर्त	अभिन्ननिमित्तोपादानईश्वर	माया विशिष्ट चेतन	अविद्याविशिष्ट चेतन
३ न्याय	परमाणु आरम्भित संयोगवियोगजन्य आकृतिविशेष	परमाणुईश्वरादिनव	नित्यइच्छाज्ञानादिगुणवान विभुकर्त्त विशे	ज्ञानादिचतुर्दशगुणवान् कर्ता भोक्ता जड विभु नाना
४ वैशेषिक	न्याय अनुसार	न्याय अनुसार	न्याय अनुसार	न्याय अनुसार
५ सांख्य	प्रकृतिपरिणामरूपो विंशतितत्त्वात्मक	त्रिगुणात्मक प्रकृति	०	असङ्ग चेतन विभु नाना भोक्ता
६ योग	प्रकृतिपरिणामरूपो विंशतितत्त्वात्मक	कर्मानुसार प्रवृत्तियाँ तन्नियामक ईश्वर	क्लेशकर्मविपाकआसय असम्बद्ध पुरुषविशेष	असङ्ग चेतन विभु नाना कर्त्ता भोक्ता

षट्दर्शन	५ बंधहेतु	६ बन्ध	७ मोक्ष	८ मोक्षसाधन
१ पूर्वमीमांसा	निषिद्धकर्म	नरकादिदुःखसंबंध	स्वर्गप्राप्ति	वेदविहितकर्म
२ उत्तरमीमांसा (वेदांत)	अविद्या	अविद्यातत्कार्य	अविद्यातत्कार्यनिवृत्तिपूर्वक परमानंद-ब्रह्मप्राप्ति	ब्रह्मात्मत्वज्ञान
३ न्याय	अज्ञान	एकविंशतिदुःख	एकविंशतिदुःखध्वंस	इतरभिन्नात्मज्ञान
४ वैशेषिक	अज्ञान	एकविंशतिदुःख	एकविंशतिदुःखध्वंस	इतरभिन्नात्मज्ञान
५ सांख्य	अविवेक	आध्यात्मादि-त्रिविध दुःख	त्रिविधदुःखध्वंस	प्रकृतिपुरुषविवेक
६ योग	अविवेक	प्रकृतिपुरुषसंयोगाजन्य अविद्यादि-पञ्चक्लेश	प्रकृतिपुरुषसंयोगाभावपूर्वक अविद्यादिपञ्चक्लेशनिवृत्ति	निर्विकल्पसमाधिपूर्वक विवेक

१० प्रकट- १२ आत्म

षट्दर्शन	९ अधिकारी	१० प्रकट-कर्ता-आचार्य	११ प्रधानकांड	१२ वाद	परिणाम संज्ञा
१ पूर्वमीमांसा	कर्मफलासक्त	जैमिनी	कर्मकांड	आरंभवाद	विभु नाना
२ उत्तरमीमांसा (वेदांत)	मलविक्षेपदोषरहित चतुष्टयसाधनसंपन्न	वेदव्यास	ज्ञानकांड	विवर्तवाद	विभु नाना
३ न्याय	दुःखजिहासु कुतर्की	गौतम	ज्ञानकांड	आरंभवाद	विभु नाना
४ वैशेषिक	दुःखजिहासु कुतर्की	कणाद	ज्ञानकांड	आरंभवाद	विभु नाना
५ सांख्य	संक्षिप्त विरक्त	कपिल	ज्ञानकांड	परिणामवाद	विभु नाना
६ योग	विक्षिप्तचित्तवान	पतंजलि	उपासनाकांड	परिणामवाद	विभु नाना

षट्दर्शन	१४ प्रमाण	१५ ख्याति	१६ सत्ता	१७ उपयोग
पूर्वमीमांसा	षट् (६)	अख्याति	जीवजगत् परमार्थ-सत्ता	चित्तशुद्धि
२ उत्तरमीमांसा (वेदांत)	षट् (६)	अनिर्वचनीय	परमार्थरूपात्मसत्ता व्याहारिक औ प्रातिभासिकजगत्सत्ता	तत्त्वज्ञानपूर्वक मो
३ न्याय	प्रत्यक्ष अनुमान उपमान शब्द(४)	अन्यथा	जीवजगत् परमार्थ-सत्ता	मनन
४ वैशेषिक	प्रत्यक्ष अनुमान (२)	अन्यथा	जीवजगत् परमार्थ-सत्ता	मनन
५ सांख्य	प्रत्यक्ष अनुमान शब्द (३)	अख्याति	जीवजगत् परमार्थ-सत्ता	'त्वं' पदार्थ शोधन
६ योग	प्रत्यक्ष अनुमान शब्द (३)	अख्याति	जीवजगत् परमार्थ-सत्ता	चित्तैकाग्र्य

श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण

आदि कवि वाल्मीकि द्वारा देव भाषा संस्कृत में प्रणीत इस विशाल धर्म ग्रन्थ को वर्षों के निरन्तर परिश्रम के पश्चात् सरल हिंदी भाषा में प्रकाशित किया है। भगवान राम का ऐसा सुन्दर और सच्चा चरित्र अन्यत्र नहीं मिल सकता। पक्की जिल्द, बढ़िया कागज, सुन्दर छपाई, अनेकों चित्र, न्यौछावर १२) मात्र।

सचित्र सुखसागर

श्री मद्भागवत बारहों स्कन्ध का भाषानुवाद। सनातन धर्म का यह महान् ग्रन्थ

चारों वेद और १८ पुराणों का सार है। आनन्दकन्द भगवान् श्रीकृष्ण की समस्त लीलाओं का ऐसा सुन्दर और रोचक वर्णन अन्य किसी भी पुस्तक में नहीं मिलेगा। सजिल्द १०) मात्र।

रामायण तर्ज राधेश्याम

मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् राम का चरित्र चित्रण जो राधेश्याम की तर्ज में है जितना रोचक और मधुर इस पुस्तक में बन पाया है वैसा अन्य किसी में नहीं है। क्या गायक और क्या श्रोता सभी आनन्द में झूमने लगते है। २५ भाग सजिल्द पुस्तक का मूल्य ५) मात्र।

सनातन भजन दीपका

इसमें सूर, तुलसी, मीरा और कृष्ण लीला के कई सौ उत्तम २ भजन और पदों का संग्रह है। सनातन धर्म के प्रेमी और भक्त जनों को इसमें भक्ति और प्रेम का अनुपम आनन्द मिलेगा। १॥)

व्रजविलास दोहा चौपाइयों में

इसमें श्रीकृष्ण भगवान के रासलीला, बालचरित्र, प्रेम लीला वगैरह सब भक्ति भाव से रचा गया है जिसको पढ़कर मन प्रसन्न होता है। मूल्य केवल ७) डाक खर्च अलग।

वैराग्य शतक भाषा ।

कविवर हरदयालजी कृत, यह महाराज भर्तृहरि कृत "वैराग्य शतक" का कविता में सरल हिन्दी-पद्यात्मक अनुवाद है। इसकी कविता ऐसी सरस, हृदयग्राहिणी और भाव पूर्ण है कि जिसके पढ़ने से हृदय सुखमय वैराग्य से परिप्लुत हो जाता है। सजिल्द कीमत १।)

विचार-सागर (बड़ा)

वृत्ति रत्नावली सहित सटीक-चित्र

यह ग्रन्थ वेदान्त के भाषा ग्रन्थों में सर्वोत्तम है। इसमें अंक युक्त पारिग्राफ (विभागों) की नवीन रूढ़ि प्रविष्ट की है। श्री पीताम्बर जी ने इसमें ५०४ टिप्पणी दी हैं तथा पण्डित जी रचित

श्रुति रत्नावली ग्रन्थ भी इसमें लगाया गया है इनमें अक्रयुत प्रसङ्ग, दर्शक वाक्य, और बड़ी अकारादि अनुक्रमणिका निर्गुण उपासना चक्र का चित्र श्री पञ्चदशीगत महा वाक्य विवेक और नाटक तथा श्री सुन्दर विलास गत ग्रन्थ स्वप्नबोध और षटदर्शनसार दर्शक पत्र भी रखे गये हैं। बड़ी साइज में ४५६ पृष्ठ चिकना कागज बढ़िया जिल्द मूल्य ८) रु०

श्री श्रुति रत्नावलि—पीताम्बरजी रचित मू० १)

श्री वेदान्त विनोद—इसमें वेदान्त के अनेक स्तोत्र आदिक अन्वयांक युक्त सरल भाषा सहित हैं। मूल्य ~)॥

श्री वेदान्त संग्रह—पं० विरधीचन्द्र शास्त्री

कृत भाषा टीका सहित वेदान्त विषय की अत्युत्तम पुस्तक [गुटका] मूल्य ≡)

श्री वेदान्त स्तोत्र संग्रह—श्री मच्छंकराचार्य श्री श्रीकृष्णानन्द सरस्वती श्रीब्रह्मानन्दजी इत्यादि प्रसिद्ध वेदान्ताचार्यों द्वारा रचित २८ स्तोत्रों का अपूर्व संग्रह है। मूल्य ≡)

भर्तृहरिशतकत्रयम्—तीनों शतक भाषा टीका सहित मूल्य ।।।≡)

विचार सागर—स्वामी निश्चलदास कृत मू०४)

योग वाशिष्ट—भाषा सम्पूर्ण ६ प्रकरण दो जिल्दों में १०)

योग वाशिष्ठ—भाषा सिर्फ दो प्रकरण (वैराग्य और मुमुक्ष) मूल्य ३)

नियमानुसार कमीशन भी दिया जाता है। बड़ा सूचीपत्र मँगाइये।

मिलने का पता—

(१) रघुनाथदास पुरुषोत्तमदास अग्रवाल,
छत्ता बाजार, मथुरा।

(२) किशन बुकडिपो,
माता गली, मथुरा।

पृष्ठ १६५ से अंत तक
मुद्रक : प्रभुदयाल मीतल,
अग्रवाल प्रेस, मथुरा।